

बंगला (भाषा और साहित्य) पर हिन्दी (भाषा और साहित्य) का प्रभाव

(भारत विश्वविद्यालय की पी-एच०डी० उपाधि के
लिए स्वीकृत शोध प्रबन्ध)

लेखक

डॉ० प्रह्लानन्द एम० ए० पी-एच० डी०
ग्राम्यापठ हिन्दी-विभाग
रू पर कालेज, बोकारो

प्रकाशक

अशोक प्रकाशन

नई सड़क, दिल्ली ।

प्रकाशक
जयवीरचन्द्र गुप्त
अशोक प्रकाशन
नई दिल्ली ११००१६

प्रथम संस्करण फरवरी १९६९
मूल्य ₹ २००

मुद्रक
निरंजन इन्कर्स सप्लायर्स
डीपार्टमेंट प्रेस
दिल्ली ११००१६

भूमिका

'बादू उसे कहते हैं जो सिर पर बड़ कर बोसे' यह उक्ति गुरदेव रवीन्द्र नाथ ठाकुर के संबंध में पठ-प्रतिपठ चरितार्थ होती है, निःसन्देह उनकी गीतांजलि के माध्यम से उनके व्यक्तित्व एवं कृतिरत्न का बादू भारत पर ही नहीं, प्रस्तुत सारे विश्व पर हुआ है।

प्रायः से बस वर्ष पूर्व जब सैन्सक १९३० में इन्टरमिडियट श्रेणी का विद्यार्थी था, तब गीतांजलि के हिन्दी अनुवाद रूपी बाठामन से ही उदात्त-भावना का समन्वित आत्मकारिक-माया-सम्भ्रम रबीन्द्र साहित्य रत्नाकर की एक भस्मक पा सका। सेन्सक गीतांजलि के भावपल्ल से ही रबीन्द्रनाथ के प्रति प्रभावित हुआ और रवीन्द्रनाथ के माध्यम से ही गौरवमयी बगभारती के दर्शन कर भाव-विमोह हो गया।

यह सन् १९३१ की बात है कि जब साहित्यरत्न के एक प्रश्न-पत्र के सिद्ध प्रांतीय भाषाओं में से किसी एक को चुनने का विकल्प था। घट-बैंगना से सहज प्रेम होने के कारण इसी को चुना।

जब प्रायः विश्वविद्यालय हिन्दी-विद्यापीठ में शोध-कार्य के लिये प्रवेश लिया तब विषय चुनने के कई सुझाव मिले। तुलनात्मक अध्ययन का भी एक सुझाव था। तब पूर्व सकारोत्पन्न सेन्सक ने बैंगना को ही इस अध्ययन का विषय बनाया और स्वर समझा।

बैंगना के प्रति सेन्सक का सहज मोह था और इस कार्य के लिये विद्यापीठ तथा पूज्य श्री इन्द्रसाह बागची महोदय का निजी बाड़ी मंदिर पुस्तकालय, बैंगना साइबेरी प्रादि उपयुक्त साधन भी मिल गये।

अज्ञेय बाबू गुमाबचम भी और जिन जिन बंगाली विद्वानों से सेन्सक ने शिक्षा पढ़ी की उनसे पूर्ण प्रोत्साहन मिला।

मण्डलीयत्वा मुस्वर डॉ० सत्येन्द्र जी की देखरेख में यह शोध-कार्य करना विचिंत हा गया।

घटः प्रस्तुत अनुसंधान कार्य में बैंगना और हिन्दी की आदान-प्रदान की मुल-मुवीन विस्मृत एवं प्रच्छन्न कड़ी को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है। सेन्सक का उद्देश्य किसी एक भाषा एवं साहित्य की श्रेष्ठता दिखाना नहीं है, वरन् घटनाओं और तत्त्वों के आचार पर बैंगना और हिन्दी दोनों का निकट सम्पर्क और भारत की आत्मास्वरूप व्यापक विचारों और भावों के मिले-जुले तन्तुओं को दिखाना है। दोनों ही व्यापक भारतीय साहित्य के पुष्ट और प्रबल अंग हैं। दोनों ही भारतीय विचारधारा और काव्य-परम्पराओं से अनुप्राणित हैं। दोनों ही एक दूसरे

के आदान प्रदान से पनपे और पुष्ट हुए हैं। अतः मेधाक का इसी आदान प्रदान के सम्बन्धन में सिये यह खोज प्रथम एक प्रयास है।

भारत में अत्युत्तम सांस्कृतिक एकता है इसी विज्ञान वेद को एक सूत्र में पिरोने वाली भारतीय संस्कृति ही है। इस संस्कृति का खोल संस्कृत भाषा एवं साहित्य के रूप में भारतीय भाषाओं में प्रवाहित होता रहा है।

संस्कृत एक इसकी परबर्ती भाषाएं मध्यदेशीय भाषा होने पर समग्र वैश्व को उत्प्रेरित और प्रभावित करती रही हैं। यह एक इतिहास का सत्य है जैसा कि स्वनाम-धन्य भारत के प्रसिद्ध भाषाचार्य डॉ० सुनीतिकुमार बटर्जी का कथन है 'मध्यदेश ही (हिन्दी भाषा का प्रदेश) सर्व से भारत में संस्कृति का प्रप्रवृत्त राजनीति और प्रशासन का केन्द्र भाषा और साहित्य का दुर्ग और प्रेरणास्त्रोत रहा है। संस्कृत की परबर्ती समस्त मध्यदेशीय भाषाएं क्रमशः पानी प्राकृत और सेनी अपभ्रंश ब्रजभाषा (पश्चिमी हिन्दी) एवं व्यापुनिक हिन्दी या उर्दू (सबू बोरी के दो रूप) सर्व से भारतीय जीवन के हर पहलू पर गभीर और निरन्तर प्रभाव छोड़ती आई हैं। मध्यदेश को भारत का हृदय कह सकते हैं और इसकी भाषाओं के साहित्य को इसका युग युगीन स्वप्न।

हिन्दी का धन्य प्राचीन भाषाओं पर प्रभाव एवं भारतीय गणराज्य की राष्ट्र भाषा होने का रहस्य भी इसी में निहित है।

एक भाषा का प्रभाव दूसरी भाषाओं पर यों ही (प्रकस्मात्) नहीं पड़ता है। उसके पीछे गंभीर एवं ठोस सांस्कृतिक राजनीतिक साहित्यिक तथा ऐतिहासिक कारण और बटनाएँ छुपा करती हैं।

यह विद्वान इतिहास से सिद्ध हो चुका है कि संस्कृति एवं साहित्य के क्षेत्र में सर्वत्र आदान प्रदान होता रहता है। पारस्परिक आदान प्रदान का सिद्धांत भारतीय भाषाओं पर भी लागू होता है।

हिन्दी भाषा और साहित्य का प्रभाव मुग-युगांतर से बंगला मराठी पुनः राठी और पंजाबी भाषा इसकी अवधियों पर रहा है। उक्त भाषाओं का प्रभाव भी मूलतः साहित्यिक रूप में हिन्दी पर पड़ा है।

हिन्दी का प्रभाव बंगला भाषा और साहित्य पर उसके अग्रिम काम से लेकर व्यापुनिक-काल तक दृष्टिगोचर होता है। बंगाल के सम्प्रतिष्ठ विद्वान बंगला भाषा एवं साहित्य के इतिहासकार सखी डॉ० बीनेशचन्द्र सेन डॉ० सुनीतिकुमार बटर्जी डॉ० मुकुन्दर सेन डॉ० मोहम्मद अली हुस्ना डॉ० सुनील कुमार दे डॉ० अविभूषण दास मुख्य डॉ० उत्प्रेरणाक घोषाल डॉ० उपेन्द्रनाथ भट्टाचार्य प्रायः महानुभाव हिन्दी का बंगला पर प्रभाव मुक्तकण्ठ से स्वीकार करते हैं।

कुछ लोगों की धारणा है कि बंगला का प्रभाव ही हिन्दी पर है। हिन्दी का बंगला पर नहीं प्रतीत होता। यह विचार ठीक नहीं है। क्याकि संस्कृति और भाषा के क्षेत्र में एक रूप से तानी नहीं बजती? क्योंकि प्रत्येक भाषा प्रत्येक भाषाओं की विशिष्ट होती है। प्रत्येक साहित्य प्रत्येक भाषाओं के साहित्यों से कुछ न कुछ आयात एवं प्रेरणा लेकर निर्मित होता है। उद्यम के इतिहास में ऐसी कोई भाषा नहीं है जो शिबन्त अन्य भाषाओं के प्रभाव से बच सकी हो।

उत्ते प्रामाण्य विचार दोनों भाषाओं के साहित्य एवं इतिहास की समन्वितता तथा अन्य कारणों से उत्पन्न होते हैं। कुछ भी हो हिन्दी का बँगला पर प्रभाव ऐतिहासिक घटना है।

अतः इस प्रभाव का परिचय देने के लिए प्रस्तुत प्रबन्ध के बँगला साहित्य के इतिहासानुसार कास बिम्बान के अनुसार चार अध्याय किये गये हैं। तथा प्रत्येक अध्याय के साथ ही उसका परिशिष्ट भी दे दिया गया है।

प्रथम अध्याय पृष्ठभूमि तथा प्रारम्भिक काल (सैतम्य पूर्वयुग) (८००-१४०० ई०)
 द्वितीय अध्याय प्रारम्भिक मन्त्रि घान्दोसन का इतिहास (सैतम्य सैव्यय युग) (१४००-१७०० ई०)
 तृतीय अध्याय सैतम्योत्तर (सैव्ययोत्तर) कास (इस्लामिक सैयसता) परम्परा साहित्य की
 चतुर्थ अध्याय धातुनिक काल (१७००-१८२० ई०)
 (१९०० से)

यह कासक्रम धकड़ों कास तक जाता है। अतः प्रत्येक युग की कोई मन्त्रिय टोर सीमारेखा निर्धारित नहीं हो सकती। अतः प्रत्येक युग की साहित्यिक एवं भाषायी धारायें समानांतर भी चलती रहती हैं। एक दूसरी की सीमा को पार (overlap) भी कर जाती हैं। किन्तु किसी एक की प्रधानता होने पर युग का नामकरण उसी प्रवृत्ति के आधार पर होता है।

प्रथम अध्याय में दोनों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि एवं एकता और प्रारम्भिक कास पर कुछ प्रकाश डाला गया है। अतः प्रथम अध्याय साहित्य भाषा साहित्य संबंधी भाषा या विद्यापति साहित्य के विषय में कुछ विवेचन किया गया है। इसी अध्याय के परिशिष्ट में कुछ पत्रों की प्रतिलिपियाँ भी दी गई हैं।

द्वितीय अध्याय में बँगला के पीढ़ीय सैव्यय साहित्य पर हिन्दी का प्रभाव पाँच बयों में दिखाया गया है। यह प्रभाव मन्त्रि घान्दोसन का कुछ परिचय देते हुए स्पष्ट किया गया है। क्योंकि मन्त्रि घान्दोसन के परिणामस्वरूप ही हिन्दी का प्रभाव बँगला पर पड़ा है। यह पञ्चमुखी प्रभाव इस प्रकार है—

- १—सम्पन्न हिन्दी प्रभाव।
- २—बाक्यविन्यासगत हिन्दी प्रभाव।
- ३—पदगत हिन्दी प्रभाव।
- ४—भाषागत (अनुसृतियत) हिन्दी प्रभाव।
- ५—हिन्दी अक्षरमास का प्रभाव।

इस अध्याय के परिशिष्ट में गौड़ीय सैव्यय पञ्चबली में हिन्दी उच्चारण की सूची भी दी गई है।

तृतीय अध्याय में इस्लामिक बँगला साहित्य की परम्परा पर हिन्दी प्रभाव की बर्णना की गई है। दौसत काबी भासाधौत मुसलमानी बँगला साहित्य एवं मुसलमानी बँगला भाषा साहित्य पर राज तथा राजनिधि गुप्त पर हिन्दी प्रभाव का विश्लेषण है। इसी अध्याय के परिशिष्ट में बँगला रामायण पर तुसली रामायण के प्रभाव के बारे में कुछ प्रकाश डाला गया है, और अन्य राजकार (राज प्रवृत्तियों) पर हिन्दी प्रभाव का विश्लेषण किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में भी प्रायुक्तिक बंगला भाषा और साहित्य पर हिन्दी के प्रखर प्रभाव की कल्पना प्रस्तुत करने की चेष्टा की गई है। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर पर हिन्दी संगीत और संत साहित्य के प्रभाव के विषय में विशेषरूप से लिखा गया है।

इसी अध्याय के परिशिष्ट में बंगला में हिन्दी शब्दावली हिन्दी शोकोक्तियों का प्रभाव बंगला शोकोक्तियों और कुछ मर्दान-मर्दानों पर और हिन्दी संगीत का बंगला संगीत और साहित्य पर प्रभाव का कुछ विश्लेषण किया गया है। अन्त में कुछ अनुवादों की विशेषतः हिन्दी से बंगला में जो अनुवाद हुए हैं उदाहरण के लिए उनकी छोटी सी सूची भी दी गई है। सहायक प्रश्नों की सूची भी दी गई है।

लेखक की ऐसी कहीं-कहीं प्रस्तुत प्रबन्ध में बंगला से प्रभावित हो गई है। अतः उच्च जगह से अवचेतन अवस्था में कुछ शब्दों का प्रयोग इस प्रकार हो गया है। जैसे—ईस्वी सन् के लिए क्रीष्णाब्ज शोकोक्ति के लिए प्रभाव भोजनान के लिए अवधान साहित्यिक भाषा के लिए साधु भाषा बोलचाल की भाषा के लिए अविज्ञान भाषा आस्थीय हिन्दी संगीत के लिए उच्चम हिन्दी संगीत प्रादि शब्दों के प्रयोग हुए हैं।

प्रस्तुत प्रबन्ध में यह दिखाने का प्रयत्न किया गया है कि हिन्दी का प्रभाव भारत की धारणा का प्रभाव है। भारत की धारणा की बंगला में प्रचुर मात्रा में अपनाया है। हिन्दी भारतीय धारणा का सर्वस्य एवं माध्यम है। इसी माध्यम से इन दोनों बहनों का परस्पर मिलन हुआ है। भूतकाल की तरह भविष्य में भी इनमें आदान-प्रदान होता रहेगा और ये भविष्यता के आतिथ्य में आबद्ध हो जाएंगी।

इस प्रबन्ध का निर्माण करने में लेखक को विकटतम परिस्थितियों का सामना करना पड़ा है। इस प्रबंध के सूचन का भेष भारत के दो बड़े ऐतिहासिक नदरों को है। यदि प्रबंध की धारणा कमकृता (बंगमूढि) की है तो निस्सन्देह इसका सुन्दर ढरीर धारण (बंगमूढि) का है।

इस प्रबन्ध के अनुसंधान काम के लिए लेखक को दो सप्ताह तक कमकृता में रहना पड़ा है। वहाँ बंगला के छोटी के विद्वानों का सहयोग और स्नेह प्रचुर मात्रा में उसे प्राप्त हुआ है। प्रस्तुत प्रबन्ध उनके बरदान और धासीर्वाह का फल है। इस प्रबन्ध की रचना के लिए जिन-जिन लोगों का सहयोग और प्रेरणा प्राप्त हुई है लेखक उनके प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता है। इस प्रबंध के निर्माण में दो महापुरुषों डॉ॰ सुकुमार सेन और डॉ॰ उत्प्रेमजी का सर्वाधिक सहयोग और धासीर्वाह रहा है। यह दोनों विभिन्न विद्वान् पंथी और बहिष्णी भूष के समान हैं। जिन्होंने अनेक भ्रमणवादों के मध्य में भी लेखक को दिग्भ्रमित नहीं होने दिया।

सर्वप्रथम लेखक उन संस्थाओं का धन्यवाद करता है जिन्होंने इस प्रबंध की सामग्री जुटाने में भरपूर सहायता की है। नैशनल सायन्सरी कमकृता एशियाटिक सोसाइटी भाबू बंगाल बंगीय साहित्य परिषद कमकृता, कमकृता विश्वविद्यालय का केन्द्रीय पुस्तकालय तथा बंगला विभाज विश्वभारती विश्वविद्यालय का केन्द्रीय पुस्तकालय तथा पुषि शाखा; श्री जामान स्मृति मन्दिर पुस्तकालय कमकृता धारण विश्वविद्यालय की केन्द्रीय सायन्सरी धारण विश्वविद्यालय की हिन्दी विद्या

पोठ सायबेरी दिस्सी विश्वविद्यालय का पुस्तकालय साहित्य प्रकाशनी का पुस्तकालय भी माथरी प्रचारिणी समा धामरा का पुस्तकालय, श्री हरप्रसाद बागधी की निजी बाणी मन्डिर पुस्तकालय प्रादि संस्थाओं द्वारा पर्याप्त सामग्री प्राप्त हुई। उक्त संस्थाओं के कार्यकर्ताओं ने धनस्य सहयोग प्रदान कर सेसक का उत्साह बढ़ाया। जिन संस्थानों ने पुस्तक या सूचना सन्बन्धी धन्य प्रकार की सहायता प्रदान की सेसक उनका अत्यन्त धामारी है।

अंगजगत् के विद्वानों सर्वेधी डॉ० सुनीतिकुमार चटर्जी डॉ० सुकुमार सेन डॉ० सधिमूपणबास गुप्त डा० सत्येन्द्रनाथ घोषाम डॉ० उपेन्द्रनाथ मट्टाचार्य और श्री मुदेब चौधरी प्रादि ने प्रोत्साहन प्रदान किया तथा धन्य प्रकार की सहायता की।

भारत के सुप्रसिद्ध कसाकार नरभास बोस और संत-साहित्य के मर्मज्ञ स्वर्गीय धाधाय सिधिमोहन सेन (मृतपूर्व उपकुसपति बिरवमारठी धाम्ति निकेतन) के वात्सल्य को भी सेसक नहीं भूल सकता।

हिन्दी जगत् के विद्वानों सर्वेधी महापंडित राहुल सांस्कृत्यान, डॉ० मुसाबराम डॉ० विद्वनाथ प्रसाद जी (हिन्दी विद्यापीठ धामरा विश्वविद्यालय के संचालक महोदय) डॉ० सत्येन्द्र जी, डॉ० महादेव प्रसाद छाहा, पंडित प्रवर उदयचंकर छास्त्री जी ने अनुपिठत भाव से सेसक की सहायता की है। हिन्दी जगत् के प्रसिद्ध विद्वान डॉ० बीरेन्द्र वर्मा, डॉ० शामुदेबगरण धमवाल धाधाये हजारीप्रसाद द्विवेदी डॉ० बाबुराम सक्सेना, डॉ० इन्द्रनाथ मदान प्रादि ने पत्र-ध्वबहार द्वारा मूस्यवान सहायता की और सुझाव देकर सेसक को अनुमोदीत किया है।

धन्याम्य विद्वान श्री हरप्रसाद बागधी डॉ के० धार० जी० रूप डॉ० कमसेर डॉ० केसकर प्रादि ने भी सेसक की भी लोसकर सहायता की है। सम्बन्धितों धाधायों और समजसकों में श्री बुद्धदेव मट्टाचार्य, श्री भवतोपदत श्री राजेन्द्र यादव डॉ० कंसाधपत्र माटिया डॉ० अन्नमान रायत डॉ० गणपतिचन्द्र गुप्त श्री मया प्रसाद पाठक और सेसक के सुहृदवर कसाकार धर्मेश का नाम भी उल्लेखनीय है।

सेसक गुस्बनों के धाधीबाई और बंधुधों की सद्भावनाओं के साथ धपना यह प्रबन्ध विद्वत्जगत के समज प्रस्तुत करता है।

विषय सूची

| | |
|------------------|-------|
| विषय | पृष्ठ |
| भूमिका | १ |
| सांकेतिक चिह्न | १० |
| संक्षेप और संकेत | ११ |

प्रथम अध्याय

| | |
|--|-------|
| पृष्ठभूमि और धारम्भ काल | ११-१२ |
| १ भारतीय संस्कृति की सामान्य पृष्ठभूमि | १३ |
| २ हिन्दी और बंगला की सामान्य पृष्ठभूमि एवं सांस्कृतिक एकता | १४ |
| ३ अणुप्र घ-साहित्य (२००-१४०० ई०) | १६ |
| ४ नाय-सम्प्रदाय का साहित्य | १८ |
| ५. मैथिली (विद्यापति ठाकुर १३२०-१४२०) | २० |
| ६ उपसंहार, परिशिष्ट (पत्रों की प्रतिनिधियाँ) | १० |

द्वितीय अध्याय

| | |
|---|--------|
| प्रारम्भिक-सहित धाम्नीसम का इतिहास | ११-२०६ |
| १ मध्यकाल (चैतन्य-बप्पुब-युग) | १३ |
| २ बंगाली गौड़ीय-बैष्णव परावसी में उद्भवत हिन्दी प्रभाव | ७२ |
| ३ बंगला-गौड़ीय-बैष्णव-परावसियों में भाषण-विन्यासगत हिन्दी प्रभाव | ८७ |
| ४ बंगला-गौड़ीय-बैष्णव परावसियों में उद्भवत हिन्दी प्रभाव | ९० |
| (१) हिन्दी क्षेत्रीय कवियों के उद्भव पर | ९१ |
| (२) बंगला बैष्णव परावसियों के पर | ९२ |
| (३) कुछ विशेष बंगाली गौड़ीय-बैष्णव-परावसी और उद्भवत हिन्दी प्रभाव | १०६ |
| (४) गौड़ीय-बैष्णव परावसी (ग्रंथ) विशेषगत हिन्दी प्रभाव | ११२ |
| ५ भाषामत प्रभाव (निमित्त माया-ब्रह्मकुमि) | ११२ |
| ६ अनुवादपरतगत (पी मधुसूदन) हिन्दी प्रभाव | १२४ |
| ७ उपसंहार (१) बंगला बैष्णव-परावसियों में उद्भवत हिन्दी प्रभाव | १३८ |

तृतीय अध्याय

| | |
|---|---------|
| बैंगलाओत्तर-बतम्योत्तर काल | २१० २६६ |
| १ इस्लामिक-बैंगला-साहित्य की परम्परा (१७००—१९०० ई०) | २१० |
| २ दीनत काबी | २१२ |
| ३ महाकवि सयब आसाफोस | २१६ |
| ४ मुसलमानी बंगला साहित्य | २३२ |
| ५ मुसलमानी बैंगला भाषा | २४० |
| ६ भारतभन्नेरय गुलाकर (१७२२ १७९० ई०) | २४३ |
| ७ रामनिधि गुप्त (१७४१ १८३६ ई०) | २४८ |
| ८ उपसहार, परिशिष्ट | २५१ |
| (१) बैंगला रामायणों पर तुलसी रामायण का प्रभाव | २५२ |
| (२) भाषामूलक प्रभाव | २६७ |

चतुर्थ अध्याय

| | |
|--|---------|
| साधुनिक काल (१८३०) | २७० ३६७ |
| १ हिन्दी बैंगला का सादान प्रभाव और पारस्परिक प्रभाव | २७० |
| २ बर्मोपदेष्टा राजा राममोहनराय (१७७४ १८३३ ई०) | २७१ |
| ३ पंडित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर (१८२० १८९७ ई०) | २७२ |
| ४ गीतिकाव्यकार बंकिमचन्द्र चटोपाध्याय १८३८ १८९४ ई०) | २७३ |
| ५ संगीतकार तथा साधनिक कवि गुरुदेव रबीन्द्रनाथ ठाकुर (१८६१ १९४१ ई०) | २७५ |
| (१) हिन्दी संगीत का प्रभाव | २७५ |
| (२) भाषारूपगत (ब्रजबुलि का) प्रभाव | २८८ |
| (३) हिन्दी संत-साहित्य का प्रभाव | २९२ |
| ६ उपसहार, परिशिष्ट | ३१७ |
| साहित्यिक एवं अन्य विषयों पर प्रभाव | ३१८ |
| (१) बैंगला में हिन्दी शब्दावली | ३१८ |
| (२) बैंगला प्रवाहों और भाषाव्ययों पर हिन्दी कथावर्तों एवं मुहावरों का प्रभाव | ३१९ |
| (३) हिन्दी पद्यावतरण और पद्यावतरण | ३३९ |
| १ हिन्दी पद्यावतरण | ३३९ |
| २ हिन्दी पद्यावतरण | ३४१ |
| (४) हिन्दी संगीत का बैंगाली संगीत पर प्रभाव | ३४४ |
| (५) अनुवादार्थक (बैंगला में अनुचित हिन्दी ग्रन्थ) | ३६३ |

सहायक ग्रंथों की सूची

| | |
|---|-----|
| अधेबी | ३६६ |
| बैंगला | ३७३ |
| हिन्दी | ३८८ |
| पद्य पद्य | ३९८ |
| संस्कृत | ३९८ |
| सहायक-ग्रन्थों की अतिरिक्त सामूहिक सूची | ३९९ |

सांकेतिक चिह्न

- > परिसुति ज्ञापक या विकास या विकार की यति-द्योतक चिह्न, जैसे—संस्कृत हस्त> प्राकृत हस्त> हिन्दी हाथ> ।
- + धन या संयोजक चिह्न—मायोदय = माय्य + उदय ।
- > उत्पत्ति ज्ञापक या पूर्ववर्ती या यतिद्योतक चिह्न जैसे—सहृह < समठि < समते ।
- । पूर्णविराम
- कामा
- समीकालन
- = तुलनात्मक चिह्न—हि० लङ्गु = संस्कृत लङ्गु
- ✓ करणी या भातुवाचक चिह्न—मम्बाटु ✓ मम्
- * तारक चिह्न
- () कौष्ठ
- “ ” इनपट्टेड कौमा
- अर्धचन्द्र बिन्दु
- % प्रतिघट
- अक्षरोप चिह्न जैसे—ई यति मानति मान निवारो
- ? प्रयोजक चिह्न
- उपयोजक चिह्न या हाइफन
- ' ऐक चिह्न
- ' द्विरेक चिह्न
- पठएव
- यू कि कारण हेतु
- × काकपद चिह्न अमक चिह्न
- अल चिह्न
- ' दीर्घ कौमा

संक्षेप और संकेत

| संक्षिप्त रूप | पुस्तक | लेखक | प्रकाशक और सन् व तक |
|---------------|-------------------------------|------------------------|---|
| ध० | अध्याय | | |
| ध० मं० | धम्मदार्मणस | भारतचन्द्र राय | ब्रह्मेन्द्रनाथ मुत्तोपाध्याय सजनी कौतुबास वंशीय साहित्य परिषद्, कलकत्ता प्रथम संस्करण, १९३८ बंगाल । |
| ध० प्र० प० र० | धर्मकावित्त-पत्र रत्नावली | श्री सतीशचन्द्र राय | बंगीय साहित्य परिषद्, कलकत्ता १९३८ बंगाल । |
| धष्ट० छा० ब० | धष्टसाय और वन्द्य-संप्रदाय | डॉ० शीमसुन्दर गुप्त | हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग २००४ वि० । |
| धप० सा० | धर्मसं-साहित्य | डॉ० हरचन्द्र कौशिक | भारतीय-साहित्य मंदिर, फम्बारा, दिल्ली, सन् १९३७ ई० । |
| इ० डॉ० सा० | इस्लामिक-बायना साहित्य | डॉ० सुकुमार सेन | बद मास-साहित्य सभा प्रथम संस्करण १९३८ बंगाल । |
| ई० | ईसवी | | |
| क० वि० | कल्याण-विशेषांक | | मीताप्रेस गोरखपुर । |
| गी० प्र० | गीतांबलि | रवीन्द्रनाथ ठाकुर | विद्यमभारती छांति निकेतन १९१३ ई० । |
| पी० ब० | पीठचन्द्रोदय | स्वामी हरिदास दास | हरिबोल कुटीर, नदिया । |
| पी० ब० वि० | पीठपरिच चिन्तामणि | सरहरि चक्रवर्ती | , |
| पी० प० त० | पीठपरिचरंगिणी | जयचंद्रभूषण | |
| पी० पी० सा० | पीठपरिच-वैष्णव साहित्य | स्वामी हरिदास दास | श्रीधाम-नवद्वीप, हरिबोल कुटीर, ४९१ कोटा । |
| पी० पी० प० | पीठपरिच-वैष्णव पदावली | | |
| पी० सा० | पीठपरिचवाणी | पीठपरिच | पीठपरिचरत्न ब्रह्मनाथ, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग । |
| पी० ब० | पीठपरिच-वैष्णव कवित्त | कविदास | राधागोविन्दनाथ, मक्ति प्रंत प्रचार संघ, ११ नं० सुदेन ठाकुर रोड कासिगंज, कलकत्ता १९३६ बंगाल । |

| सहित रूप | पुथ रूप | कैलक | प्रकाशक और तन् ब संबन्ध |
|--------------------|-------------------------------|----------------------------|---|
| जा० प्र० | बायसी प्रंपाबनी | रामपन्त्र गुप्त | |
| दु० प्र० | दुमसी प्रंपाबनी | | नागरी प्रचारिणी समा कापी २००४ वि० । |
| दु०श०शा० | दुमसी दब्ध सामर | हरमोबिब ठिबारी | श्री भोतानाब ठिबारी हिन्दु स्थानी एकेडेमी, उत्तर प्रदेश १९१४ ई० । |
| दो० को० | दोहा कोद | राहुम सांस्कृत्यायन | राष्ट्रभाषा परिषद् पटना प्रथम संस्करण १९२७ ई० । |
| नं० प्र० | नदबास प्रंपाबनी ब्रह्मरत्नबास | | कापी नागरी प्रचारिणी समा, कापी प्रथम संस्करण सं० २००६ वि० । |
| ना०प्र०स० का० | नागरी प्रचारिणी समा कापी | | |
| पद्० | पद्यावत | बायसी | डॉ० बासुदेवचरण प्रप्रबास साहित्य सदन, बिरसाब मंडी प्रथमावृत्ति २०१२ वि० । |
| प० ज० | परमचरित | स्वयंभू | शाचार्य जिनिकिचय मुनि डा० हरिबस्मय जुनीभास-भाषाणी, सिन्धी वैन शास्त्र विद्यापीठ, भारतीय विद्या भवन बंबई, प्रथम भाग सं० २००६ वि० । |
| प०क०ठ० | पद्मप्रवत | | श्री सतीसचन्द्र राय बंगीय साहित्य परिषद् मंदि, १९१८ बंयल । |
| पु० | पुण्ड | | |
| पु० न० | पुण्डवत निर्बंभाबनी | राहुम सांस्कृत्यायन | इंडियन प्रेस लिमिटेड प्रयाग १९१७ ई० । |
| पु० हि० | पुण्डनी हिन्दी | श्री बंरवर शर्मा मुमेरी | नागरी प्रचारिणी समा कापी । |
| ब० | बर्ष | | |
| बं मा० प्रो सा० | बंयभाषा प्रो साहित्य | डॉ० बीनेसचंर सेन | कमकता विश्वविद्यालय १९१४ ई० । |
| बं०सा०प० | बंय-साहित्य परिचय | " | कमकता विश्वविद्यालय १९१४ ई० । |

| संक्षिप्त रूप | पूर्ण रूप | लेखक | प्रकाशक और सन् ध संवत् |
|---------------------|--|------------------------------------|--|
| बी०सा०इ० प्र०ध० | वांगसा-साहित्येर इतिहास, प्रथम खंड | डॉ० सुकुमार सेन | मडान-बुक एजेन्सी, १० स्ववायर कमकता १२, १९४८ ई० । |
| बी०मा०प्र० | बांगला भाषार अभिधान | शानेन्द्रमोहनदास | डी इडिपन पब्लिशिंग हाउस २२।१, कान्वासिस स्ट्रीट, कमकता । |
| बी०मा०मू० | बांगसा भाषा एलेर भूमिका | डॉ० सुनीतिकुमार चटर्जी | कमकता विश्वविद्यालय १३३२ ई० । |
| बि०सा० बू०हि०को० | विभिन्न साहित्य बृहत्-संहिताकोश | डॉ० सुकुमार सेन | ज्ञानमण्डल मिमिटेड कबीर चौरा, बाराणसी १ । |
| बी०मा०प्री०दो० | बौद्धिक धी दोहा | म०म० हृत्प्रसाद घास्त्री | बंगीय-साहित्य-परिपद् १९११ प्रथम बार । |
| म०क०ध्या० | धनकवि ध्यासनी | वासुदेव गोस्वामी प्रभुदयाल मीतल | धनबास प्रेस मयुरा २००९ बि० प्रथम संस्करण । |
| म०ध० | मन्वन्तमान ग्रंथ संपत्ता | सासदास (हृत्पुत्रदास) बाबाजी | उपेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय बसुमती साहित्य मंदिर, द्वितीय संस्करण चैतन्यार ४३७ । |
| म०र० | मन्त्रि रत्नाकर | मरहुरियास चक्रवर्ती | स्वामी हरिवासास मन्त्रीय हरिबोल कुटीर चैतन्यार ४२६ । |
| म०हि० | मन्वन्तमान द्वितीय | नामासास प्रियादास | मन्त्र कियोर प्रेस सखमठ पंचम बार १९४० ई० । |
| भा०स० | भारतीय साहित्य | डॉ० विश्वनाथ प्रसाद | हिंदी विद्यापीठ भागरा विश्व विद्यालय भागरा । |
| भा०च०धं० | भारतचंद्र प्रकाशनी | भारतचन्द्र | बुजेंद्रनाथ बंधोपाध्याय सखनी काठ दास बंगीय साहित्य परिपद् कमकता, १३३७ बंगार । |
| भा०ठा०प० | भानुसिंह ठाकुरैर पदावली | रबीन्द्रनाथ ठाकुर | रबीन्द्र रचनावली विश्वभारती, शांति निकेतन । |
| मा०स०सा० | मानस शब्द सागर | बद्रीदास धनबास | काशीप्रसाद विजयकुमार धनबास २३ बीदन स्ट्रीट, कमकता ९, १९४२ ई० । |
| मि०धं०बि० | मिश्रबंधु विनोद | | |
| मै०गी० | मैमनसिंह पीठिका | डॉ० दीनेशचंद्र सेन | |

| सहित रूप | पूज रूप | लेखक | प्रकाशक और सन् व संवत् |
|----------------|------------------------------|--------------------------------|--|
| मै० स० | मैनासठ | श्री हृदिहरनाथ द्विवेदी | श्री उदय द्विवेदी विद्या मन्दिर प्रकाशन, आसिसर प्रथम संस्करण १९२९ ई० । |
| र०का०प० | रवीन्द्र काव्य परिष्कार | उपेन्द्रनाथ मट्टाचार्य | |
| र०भी० | रवीन्द्र बीवनी | श्री प्रभातकुमार भुञ्जोपाध्याय | विरहभाष्ठी छांति निकेतन । |
| र० र० | रवि रविम | बादराम्ब बंधोपाध्याय | ए० मुखर्जी एण्ड को कसकत्ता । |
| उ०ब०म० | रामपरिमाणस | गुरुसीदास | डा०माताप्रसाद मुष्ट हिंदुस्तानी एकेडेमी इसाहाबाद छत्तरप्रदेश । |
| उ० र० | रामरसामण | रघुनंदनदास बो० | साहिती टोला कामार पाड़ा स्ट्रीट १०, विद्यारत्नचन्द्र । |
| बं०सा०प०क० | बंभीय-साहित्य परिपद् कसकत्ता | | |
| बं०सा०प०प० | बंभीय साहित्य परिपद् पत्रिका | | |
| वि० प० | विनय पत्रिका | गुरुसीदास | श्री बियोमिहरि, रामदास पीठुवाल साहित्य-सेवा-सदन, बाटसुधी २०१३ । |
| वि० प० | विद्यापति परावसी | विद्यापति | बालेन्द्र मिश्र विपिनबिहारी मजूमदार । |
| वि०मा०प० स० | विरहमारती पत्रिका छांति | निकेतन | |
| वि० स० | विष्णु संवत् | | |
| वि० सा० ब्रं० | विद्यासामर संवावली | ईस्वरचन्द्र विद्या सापर | बालेन्द्रनाथ बंधोपाध्याय सखी काठ दास बंभीय साहित्य परिपद् कसकत्ता । |
| सं० सा० | संपीठ-सास्त्र | के०बापुदेव सास्त्री | प्रकाशन छात्रा सूचना-विभाग छत्तर प्रदेश प्र० सं० १९३५ । |
| स०मै जो व | सतीमयना और सौख्यकाशी | श्रीरामनाथ | विरहभाष्ठी, छांति निकेतन । |
| सं रा क० | संपीठ राय कल्पद्रुम | | नगेन्द्रनाथ मुष्ट बंभीय साहित्य परिपद्-कसकत्ता १९३९ । |
| स मै | सती मैना | | |

| संक्षिप्त रूप | पूर्ण रूप | लेखक | प्रकाशक और सन् व सखत् |
|----------------|---|------------------------------|---|
| स० प० | सम्मेलन पत्रिका | | हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग । |
| सू०इ०भा०क० | सुर ब्रजभाषा कोश | डॉ०वीनय्यामु पुष्ट | संस्कृत विश्वविद्यालय मदनलाल । |
| स०हि०घ०सा० | संक्षिप्त हिंदी शब्द-सागर | रामधन्य बर्मन | संबलपुरी बाजपेयी नागरी प्रचारिणी सभा, काशी प्र० स० संवत् २००७ वि० । |
| ह०नि० प्र० | हस्तलिखित ग्रंथ | | |
| हि०का०धा० | हिंदी-काव्य-भाष्य | राहुल सांकृत्यायन | क्रिस्ताब महत् प्रकाशन इसाहाबाद १९४१ ई० । |
| हि०बी०धमि० | हिंदी बीपसा अभिधान | वी मोपाननर वीरान्त घाल्बी | बंयास मास एड्यूकेसन सोसाइटी, १९।१९, कार्नवालिस स्ट्रीट घाम बाजार, कलकत्ता । |
| हि० भा० इ० | हिंदी भाषा का इतिहास | डॉ० श्रीरेन्द्र बर्मन | हिंदुस्तानी एकेडेमी उत्तरप्रदेश प्रयाग १९३३ । |
| हि०मु०कोप० | हिंदी मुहावर कोष | मोसालाब तिवारी | क्रिस्ताब महत् इसाहाबाद १९३१ । |
| हि०सा०भा० इ० | हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास | डॉ० रामकुमार बर्मन | रामनारायणसाल इसाहाबाद चतुर्थ संस्करण १९३८ । |
| हि०सा०इ० | हिंदी साहित्य का इतिहास | आचार्य रामचंद्र शुक्ल | नागरी प्रचारिणी सभा काशी संस्करण छठा २००७ । |
| हि० सा० | हिंदी-साहित्य का इतिहास | आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी | अंतराष्ट्र कपुर एंड संघ देहली अंबाला, घामरा १९३२ ई० । |
| हि०का०नि० स० | हिंदी काव्य में निर्गुण सम्प्रदाय | डॉ० पीठावरदत्त बड़प्पास | |
| हि०वि०प्र० वि० | हिंदी-विद्यापीठ ग्रंथ बीपिका | डॉ० विश्वनाथ प्रसाद | हिंदी विद्यापीठ घामरा विरव विद्यालय घायर । |
| हि०वि०को० | हिंदी विश्व-कोष | डॉ० नयेन्द्रनाथ बसु | |
| हि०घ०सा० | हिंदी अक्षरशास्त्र | | नागरी प्रचारिणी सभा काशी । |
| हि०स०बू०इ० | हिंदी-साहित्य का बृहत् इतिहास (प्र०भाष) | | सम्पादक राजबन्सी पांडेय नागरी प्रचारिणी सभा काशी, सं० २०१४ वि० । |
| हि०सा०स०प्र० | हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग । | | |

| संक्षिप्त रूप | पूरा रूप | लेखक | प्रकाशक और तन् संबंध |
|---------------|-------------------------------|--------------------------------|--|
| मे० स० | मैनासत | श्री हृदयहरनाथ द्विवेदी | श्री उदय द्विवेदी बिद्या भण्डार प्रकाशन ग्वालियर प्रथम संस्करण १९२६ ई० । |
| र०का०प० | रवीन्द्र काव्य परिष्कार | उपेन्द्रनाथ भट्टाचार्य | |
| र० बी० | रवीन्द्र बीवनी | श्री प्रभातकुमार मुञ्जोपाध्याय | बिस्वभारती धाति निकेतन । |
| र० र० | रवि रश्मि | बादशान्द बंगोपाध्याय | ए० मुञ्जोपाध्याय को कलकत्ता । |
| प०ब०म० | रामपरितमानस | तुमसीदास | डा०माताप्रसाद गुप्त हिन्दुस्तानी एकेडेमी इलाहाबाद उत्तरप्रदेश । |
| प० र० | रामरसामण | रघुनंदनदास यो० | घाहिरि टोला कामार पाड़ा स्ट्रीट १० बिहारप्लान्ड । |
| ब०सा०प०क० | बंगीय-साहित्य परिपक्व कलकत्ता | | |
| ब०सा०प०प० | बंगीय साहित्य परिपक्व पत्रिका | | |
| बि० प | बिजय पत्रिका | तुमसीदास | श्री बियोगिहृदि, रामदास पीढ़नाथ साहित्य-सेवा-सदन, बाराणसी २०१२ । |
| बि० प० | बिद्यापति पत्रिका | बिद्यापति | बालेन्द्र मिश्र विपिनबिहारी मन्मथार । |
| बि०मा०प० | बिस्वभारती पत्रिका | धाति निकेतन | |
| बि० स० | बिष्कमी संघ | | |
| बि० सा० प्र० | बिद्यासागर प्रकाशनी | ईश्वरचन्द्र बिद्या सागर | उपेन्द्रनाथ बंगोपाध्याय सजनी काठ दास बंगीय साहित्य परिपक्व कलकत्ता । |
| सं० सा | संपीठ-शास्त्र | के०वासुदेव शास्त्री | प्रकाशन शाखा सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश प्र० सं० १९२४ । |
| स०मी० जो० | सदीमयना धीर | बीमठकाशी | सत्येन्द्रनाथ घोषाल बिस्वभारती, धाति निकेतन । |
| सं०रा० क० | संपीठ-राज कल्पद्रुम | | उपेन्द्रनाथ गुप्त बंगीय साहित्य परिपक्व-कलकत्ता १९३१ । |
| स० मी० | सदी मैना | | |

संक्षिप्त रूप पुन रूप

लेखक

प्रकाशक और सन् व वर्ष

सं० प० सम्मेलन पत्रिका
सू० ह० भा० क० सूर ब्रजभाषा कोष

डॉ० शीतलरमानु मुष्ट रामचन्द्र वर्मा

हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग ।
संस्कृत विश्वविद्यालय
संस्कृत ।

स० हि० प० सा० संक्षिप्त हिंदी शब्द-सागर

मंददुतारे वाजपयी नागरी
प्रचारिणी मना काशी प्र० स०
संवत् २००७ वि० ।

हि० बी० पमि० हिंदी बाँसना पत्रिका
श्री गोपालचन्द्र बेदान्त शास्त्री

किताब महल प्रकाशन
इसाहाबाद १९४२ ई० ।
बंगाल मास एडुकेशन सोसाइटी
२९।१९, कार्मनासिध स्ट्रीट
कान बजार, कलकत्ता ।
हिन्दुस्तानी एकेडेमी उत्तरप्रदेश
प्रयाग १९२३ ।

हि० मा० इ० हिंदी भाषा का इतिहास

डॉ० श्रीरेन्द्र वर्मा
किताब महल इसाहाबाद
१९२१ ।

हि० मु० कोप० हिंदी मुहावरों का कोष

रामनारायणनाथ इसाहाबाद
चतुर्थ संस्करण १९२८ ।

हि० सा० पा० हिंदी साहित्य का प्रामोचनार्थक कोष

डॉ० रामकुमार वर्मा
रामनारायणनाथ इसाहाबाद
चतुर्थ संस्करण १९२८ ।

हि० सा० इ० हिंदी साहित्य का भाषासंग्रह इतिहास

नागरी प्रचारिणी मना काशी
संस्करण सन् २००७ ।
पठरबंद कन्नूर एट मंड ईस्टी
कलामा प्रायण १९३२ ई० ।

हि० सा० हिंदी-साहित्य सूक्त भाषासंग्रह

हिंदी विद्यालय प्रकाशन
विद्यालय प्रकाशन ।

हि० का० नि० हिंदी काव्य में स० निरुण संप्रदाय

हि० वि० प० वि० हिंदी-विद्यापीठ ग्रंथ बीचिका

हि० वि० को० हिंदी विरल-कोष

हि० प० सा० हिंदी शब्द-सागर

हि० स० क० इ० हिंदी-साहित्य का बहुर इतिहास (प्र० भाष्य)

हि० सा० स० प्र० हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग ।

- A.B.D.O.E.C. Anglo Bengali Dictionary of Colloquial Expressions. R.P. Das, 22/53 Shamapooker Lane Calcutta, 1927
(ए०बी०डी०सी०ई०सी०)
- B.R. (बी० प्रार०) Bengali Ramayanas Dr Dineshchandra Sen Calcutta University 1920
- B.S.R.B.L. Beginning of secular Romance in Bengali Literature Dr S. N. Ghoshal, Vishwabharti Shanti Niketan, First Edition 1959
(बी०एस०प्रार०बी०एस०)
- G.H.L. Grammar of Hindi Language Rev S.H. Kellogg. Routledge and Kegan Paul Ltd. Broadway House 68 74 Carter Lane London E.C.4, 1955
(जी०एच०एस०)
- H.B.L. (एच०बी०एस०) History of Brijbali Literature Dr Sukumar Sinha, University of Calcutta, 1935
हिंदु लि
- H.B.L.L. History of Bengali Language and Literature Dr. Dineshchandra Sen, University of Calcutta Edition 1954
(एच०बी०एस०एस०)
हिंदी लिंग
- H.M.L. The History of Maithili Literature Dr Jal Kanta Misra Tripathi Publications Allahabad Sir P C Banerji Road 1949
(एच०एम०एस०)
- K.S.L.L. Kaleidoscopic Survey of Indian Languages, Madras 1959
(के०एस०आई०एस०)
- J.D.L.C.U. Journal of Department of Letters Calcutta University
(जे०डी०एस०सी० यू०)
- L.S.L. Linguistic Survey of India George Grierson. Language, Edward Spi, Harcourt Brace and Company, New York 1921
(एस०एस०आई०)
L. (एस०)
- M.V.L.H. Modern Vernacular Literature of Hindustan, George Grierson, Asiatic Society of Bengal. 57 Park Street Calcutta 16, 1889
(एम०वी०एस०एस०)
- O.D.B.L. Origin and Development of Bengali Language I and II Volumes. University of Calcutta 1926
(ओ०डी०बी०एस०)
- O.R.C. Obscure Religious Cults as the background of Bengali Literature, Dr S B Das Gupta, Calcutta University 1946.
(ओ०प्रार०सी०)
Vishwa Bharti Quarterly
- V.B.Q. (वी०बी०क्यू०)

नोट—इसके आदि पृष्ठ १६ पर हैं।

प्रथम-अध्याय
 पृष्ठभूमि तथा आरम्भ काल

1
 भारतीय संस्कृति की सामान्य पृष्ठभूमि

पृष्ठभूमि—बौद्धता और हिन्दी एक ही भाषा-परिवार की छायाएँ हैं^१ और दोनों का जन्म भी प्रायः साथ ही हुआ है^२। दोनों ही एक दूसरे की पड़ोसिन हैं एवं दोनों के क्षेत्रों में पारस्परिक आदान-प्रदान रहा है। साथ ही ये दोनों भाषाएँ भारत की प्रसन्न सांस्कृतिक परंपरा की भी उत्तराधिकारिणी बनी हैं।
 क्या जीवन-दर्शन, क्या पौराणिक-कथा संपत्ति क्या भाषावैश्विक प्रकृति और क्या सांस्कृतिक प्राण प्रतिष्ठा सभी में प्रायःतद्वाचिक नाम से ही एक साम्य भारत के प्रायः सभी क्षेत्रों में दिखायी पड़ता है। वही साम्य हिन्दी-बँगला में भी प्रतिष्ठित हुआ है।

जीवन-दर्शन—भारत बार्थनिकों का देश कहलाता है पारलौकिक कस्मात् कर्मवाद एवं मर्म के प्रति यहाँ के लोगों का विशेष आकर्षण बिस्वात् एव मोह रहा है। यहाँ लौकिक अन्मुदय को सर्वत्र परमाप्त से गौण-स्थान प्रदान किया गया है। इसीलिए धार्मिक तथा नास्तिक सभी दर्शन जीवन का ध्येय हुआ और उससे छुटकारा या मुक्ति मानते हैं। मुक्ति की साधना के भी अनेक पथ बँपकितक-मेधा बन्धि देश-काल तथा पात्र के अनुसार निमित्त हुए हैं, किन्तु सभी की धारणा एक ही है।

काश्मीर से कुमायी अन्तरीप तक एवं अरबसागर से बंग देश तक प्रत्येक भारतीय के जीवन-दर्शन का मर्म एक ही है। पर भारत की एकता मूल में यहाँ की संस्कृति एवं यहाँ के जीवन-दर्शन में है। दूसरे शब्दों में इस देश को 'अपिर्षों का देश' सम्भारम-प्रधान कहा जाता है। नास्तिक संस्कार जीवन की प्रत्येक क्रिया के साथ संमल हैं। यही इसकी सांस्कृतिक एकता का कारण है।

पौराणिक कथाएँ—इस सांस्कृतिक एकता का एक सूत्र पौराणिक-कथाओं में भी देखा जा सकता है। ये कथाएँ समान रूप से समस्त देश में प्रचलित हैं। बहिर-अपिर्षों की यात्राएँ समान रूप से चारे देश की संपत्ति हैं। रामायण

१ ब० मा० मू० पृ० २८।
 २. वही

महाभारत के पात्र अखिल भारतीय समाज के धारक हैं। राम-कृष्ण कौरव-याजुषों की भाषाएँ भी समान रूप से एक श्रेण से दूसरे श्रेण तक बोल में व्याप्त हैं। सभी श्रेणों और भक्तों की कहानियाँ भी समस्त देश में एक ही संधि बसी हुई हैं और एक सा सम्मान पाती हैं।

भाषा—भारत में अनेक धार्य धनार्य और देशी विदेशी भाषाओं का सम्मिश्रण रहा है। हिन्दू इस देश को ऐतिहासिक भौगोलिक साहित्यिक एवं सांस्कृतिक, सामाजिक राजनीतिक एवं भाषायी एकता संस्कृत ही प्रदान करती रही है। समान रूप से धार्मिक-धनाय समस्त उत्तरी और दक्षिणी भारत की भाषाएँ संस्कृत की श्रेणी हैं और इससे अत्यन्त प्रभावित हैं। संस्कृत भाषा और साहित्य भारत की महान् ऐतिहासिक सांस्कृतिक सामाजिक साहित्यिक एकता तथा अखण्डता की परंपरा का प्रतीक है।

२

हिन्दी और बंगला की सामान्य पृष्ठभूमि एवं सांस्कृतिक एकता

संस्कृत भाषा तथा साहित्य एवं उसमें प्रतिबिम्बित भारतीय संस्कृति को पुरातन-काल से एकता एवं अखण्डता प्रदान करती आई है। भौगोलिक दृष्टि से उत्तरी और दक्षिणी भारत में जो भेद किया जाता है, उस भेद में यह सांस्कृतिक अन्तर्भाव है। तब उत्तरी भारत में तो सबसे से ऐतिहासिक एवं भौगोलिक एकता रही है। जब कभी भी कोई धार्मिक-धनाय उत्तरी भारत के किसी भी कोने में किया है उसका प्रभाव सारे प्रदेश पर पड़ा है। धार्य-संस्कृति एवं भारतीय धार्य भाषा परिवार ने उसको अखण्ड-भूख में अन्तर्भाव रखा है।

इसी कारण हिन्दी प्रदेश (पंजाब का हरियाणा प्रदेश पश्चिमी-प्रदेश, राजस्थान उत्तर प्रदेश बिहार एवं मध्य प्रदेश) और बंग प्रदेश (पूर्वी एवं पश्चिमी बंगाल) में अद्भुत सांस्कृतिक एकता रही है। इसे निम्नलिखित रूपों में सूत्रबद्ध किया जा सकता है —

- (१) सीमा संबंधी या भौगोलिक एकता
- (२) ऐतिहासिक एकता
- (३) जनसंख्या का आदान-प्रदान
- (४) धार्मिक एकता
- (५) वैश्वरूपा एवं आचार-विचार की एकता
- (६) साहित्यिक एवं भाषा-वैज्ञानिक-सामाजिक परस्पर प्रभाव एवं आदान-प्रदान।

(१) सीमा संबंधी या भौगोलिक एकता इस एकता का धर्मिप्राय यह नहीं है कि इन दोनों की सीमाएँ धर्मिन्न हैं। वस्तुतः भौगोलिक दृष्टि से हिन्दी प्रदेश और बंग प्रदेश में कोई बिभाजक रेखा नहीं है। दोनों का प्रादेशिक बिभेद कृत्रिम है। हिन्दी प्रदेश (बिहार) की पूर्वी एवं बंग प्रदेश की पश्चिमी सीमाएँ मिली हुई हैं*। जो गया हिन्दी-क्षेत्र को सींचती है; वही बंग-क्षेत्र को भी सींचती है। जो हिमालय हिन्दी क्षेत्र को जलवायु को अनुवाचित करता है वह बंगला क्षेत्र की जलवायु का भी नियंत्रण करता है।

(२) ऐतिहासिक एकता ऐतिहासिक एवं राजनीतिक दृष्टिकोण से भी हिन्दी प्रदेश एवं बंग प्रदेश युग-युगों से एकानेक बार एक ही शासन में बंधे हैं। मुस्लिम काल में दोनों ही प्रदेश एक-सी परिस्थितियों से गुजरे हैं। धार्मिक सामाजिक एवं भक्ति संबंधी धान्दोसनों ने समय-समय पर दोनों को ही समान रूप से प्रभावित किया है।

(३) जनसंख्या का आदान-प्रदान जनसंख्या का आदान-प्रदान सर्वत्र से होता आया है मुस्लिम काल (मध्यकाल) में आर के बंगाली बाह्यणों के पुनर्काल्य-काल में बहुत से बंगाली मधुप कुम्हारों में रहने लगे थे। बंगाल का आदान-प्रदान तो बहुत पुराना है*।

(४) धार्मिक एकता दोनों ही प्रदेशों के निवासी मुक्त एक से धर्म को मानते हैं धर्मिण्य-काल में बहुत से बंगाली मधुप कुम्हारों में रहने लगे थे। बंगाल का आदान-प्रदान तो बहुत पुराना है*।

दोनों ही प्रदेशों के निवासी मुक्त एक से धर्म को मानते हैं धर्मिण्य-काल में बहुत से बंगाली मधुप कुम्हारों में रहने लगे थे। बंगाल का आदान-प्रदान तो बहुत पुराना है*।

वह देवी-पूजा के रूप में धर्मार्थाय की भाँति व्याप्त है।

सर्वप्रथम धर्म का प्रभाव दोनों प्रदेशों में समान रूप से रहा है। ऐतिहासिक क्रम से भी दोनों ही प्रदेशों पर हिन्दू धर्म इस्लाम ईसायत एवं पश्चिमी संस्कृति और सम्भवा का गंभीर प्रभाव है। सिद्धों के सहज माय का प्रभाव बंगाल पर विशेष रहा है। सौं धारत एवं ताप सम्प्रदाय का प्रभाव पूर्वी भारत में धार्मिक रहा है। दोनों ही प्रदेशों में तीर्थ-स्नान हैं। अधिकांश हरिद्वार वहीनायण मधुरा-कुम्हार काशी (बाराणसी) प्रयाग, पनाछागर लखनौ एवं तारकेसर के धर्मों के लिए दोनों ही प्रदेशों के लोग आसायित करते हैं।

(५) ज्ञान-सहज वेद्य भूया आचार-विचार की एकता ज्ञान-सहज वेद्य भूया आचार-विचार एवं नीतिकता के प्रति दोनों

* ब० म० धो० सा० पृ० २५७।

* देखिये धर्म में मानसिक (ध)

२ ब० भा० धो० सा० पृ० २२६।

क्षेत्रों में समान बिचार एवं सम्मान रहा है। बंगाल के प्रख्यात विद्वान डा० बीनेचण्ड सेन लिखते हैं—केवल भाषा में ही नहीं किन्तु बेषमूपा प्रीर धारकों में भी उस समय के बंगाली अपने से ऊपर के बेषवासी भाइयों से अधिक मिलते-जुलते थे। साफ़ पहना करते थे। बोली कभी नाय सनाकर प्रायः के हिन्दुस्तानी लोगों की तरह पहना करते थे^१।

(१) साहित्यिक एवं भाषा-बैज्ञानिक समानता

इन दोनों क्षेत्रों में परस्पर प्रभाव एवं एक दूसरे के साथ घाबान प्रदान भी निरंतर होता रहा है। साहित्य समाज का प्रतिबिम्ब है। घट हिन्दी साहित्य एवं बंगला-साहित्य की वे परिस्थितियाँ समान ही रही हैं। बिन्होंने समस्त उत्तरी भारत को प्रभावित किया है। वे परिस्थितियाँ ऐतिहासिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक हैं। इसी कारण हिन्दी एवं बंगला साहित्यों के युगों में कुछ सामान्य भन्तर होते हुए भी बहुत कुछ समानता है। हिन्दी एवं बंगला के इतिहासों के काल-विभाजन में भी अत्युत्त समानता है। उदाहरण से स्पष्ट करते हैं—मह काल विभाजन हिन्दी साहित्य का पंडित रामचन्द्र शुक्ल एवं बंगला साहित्य का डा दीनेचण्ड सेन के अनुसार है^२।

| | हिन्दी | | बंगला | |
|----------------------------------|--------------|------------------|--------------|---------|
| युग-भाग | कालावधि | युग-भाग | | कालावधि |
| सिद्ध-सामंत साहित्य (प्राकाल) | ८०-१४०० ई० | प्राचीन काल | ८००-१४०० ई० | |
| मध्यकाल (भक्तिकाल) | १४००-१७०० ई० | बैप्युन काल | १४००-१७०० ई० | |
| रीतिकाल | १७००-१८०० ई० | इस्लामिक साहित्य | १७००-१८०० ई० | |
| | | परम्परा | | |
| धार्मिक काल | १८०० ई० | धार्मिक काल | १८२० ई० | |

भाषा-बैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी दोनों भाषाओं का उद्गम एवं विकास का क्रम सामान्य सूत्र से हुआ है^३। बिसे यों समझ जा सकता है—

१ Not only in the language but also in costumes and habits, the Bengalls of past times were more like their brethren of the up-country They used to wear a turban and tuck up the Dhoti tightly between the legs as the Hindustani people do now

२ हि० सा० ६ पृ० १ बं० सा० ५० प्र० ७० पृ० १६।

* हेबिए चार्ट—परिचिष्ट (१)।

| | |
|---------------------------------|----------------------------------|
| (क) प्राचीन भारतीय धार्य भाषाएँ | वहिक (साहित्यिक) तथा जनभाषाएँ |
| (ख) मध्यकालीन ,, ,, | संस्कृत (शैक्षिक) ,, |
| (ग) उत्तर मध्यकालीन ,, ,, | प्राची प्राकृत (भाषा) ,, ,, |
| (घ) शैक्षिकयुगीन ,, ,, | अपभ्रंश (अपभ्रंशकालीन जन भाषाएँ) |

मावर अपभ्रंश शौरसेनी धर्मभाषणी मायणी

(ख) साधुनिककालीन

भारतीय धार्य भाषाएँ राजस्थानी पश्चिमी हिंदी पूर्वी हिंदी बंगला

१६ भाषा की दृष्टि से दोनों ही भाषाएँ पूर्ववर्ती भाषाओं से विकसित हुई

हैं। संस्कृत प्राची, प्राकृत और अपभ्रंश का साहित्यिक एवं भाषा मुक्तक प्रभाव दोनों ही भाषाओं पर है। ये सभी इन दोनों को पूर्वज हैं और इनकी संपत्ति दोनों की अपनी संपत्ति है।

अपभ्रंशोत्तर काल में उत्तरी भारत की समस्त भारतीय धार्य-भाषाओं में बहुत कुछ सादृश्य था। कालान्तर में प्रत्येक भाषा ने अपना स्वतंत्र अस्तित्व बना लिया है। उस काल में शौरसेनी अपभ्रंश मध्यदेशीय एवं जनभाषा होने के कारण दूसरी अपभ्रंशों पर अपना कुछ प्रभाव डालती रही है। शौरसेनी अपभ्रंश पश्चिमी हिंदी का पूर्ववर्ती रूप माना जाता है।*

परस्पर प्रभाव की दृष्टि से हिन्दी का प्रभाव अन्य साधुनिक भारतीय धार्य भाषाओं (बंगला, मुजराठी, पंजाबी) पर विशेष रहा है। बंगला पर हिन्दी के प्रभाव के कारण मुख्यतया ये हैं —

(१) हिन्दी मध्यदेश बसबा उस प्रदेश की भाषा थी जिसकी मूर्धन्य भाषा संस्कृत ने समस्त भारत में साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गौरव प्राप्त किया था। वास्तव में वह संस्कृत की उत्तराधिकारिणी बनी।

(२) साधु-समाज, विद्वानाज, त्रिगुणी-संतों मादि ने भी हिन्दी को देश के एक कोने से दूसरे कोने तक बहुत पहुँचे ही पहुँचा दिया था।

(३) मध्ययुगीन प्रथम वैष्णव भक्ति आन्दोलन के दोनों इष्ट महापुरुषों की पुण्यभूमि भी हिन्दी-क्षेत्र ही है। कृष्ण और राम के भक्त प्रब और धरम की धोर धारकपित होते रहे हैं। कृष्णभक्ति ने इस सम्पर्क को बहुत महान बनाया है। इससे वही की भाषा का प्रभाव और भी बढ़ गया।

(४) मुस्लिम साम्राज्य ने भी अतिक्रिंत हिन्दी को अतिम भारतीय भाषा का रूप प्रदान किया।

(२) बलिष्ठ सार्वबाहों से इसके प्रचार प्रसार में पूरा सहयोग मिला ।

(१) बँसला और हिन्दी के भाषा-साहित्य की परम्परा एक थी । दोनों एक ध्रुव से सम्बन्ध रखीं ।

हिन्दी भाषा एवं साहित्य का इसी कारण प्रभाव बँसला भाषा और साहित्य पर बीरवंकामीन है । यह साहित्यिक भी है एवं भाषामूलक भी है ।

(१) हिन्दी मध्ययुग की भाषा है यह इतिहास सिद्ध तथ्य है कि मध्ययुग ही संस्कृति साहित्य तथा राजनीति के क्षेत्र में सर्वत्र से समस्त देश का प्रेरणास्रोत रहा है । यह वन संस्कृत पानी प्राकृत औरसैनी अपभ्रंश एवं ब्रजभाषा साधुनिक हिन्दी या उर्दू (बड़ी बोली) के प्रसार एवं प्रभाव से प्रकट है^१ । संस्कृत भाषा ने सभी भारतीय भाषाओं को अत्यधिक प्रभावित किया है । ब्रजभाषा उसी के क्षेत्र की है व जयकी प्रतिनिधि बन गयी है । मध्ययुग में संस्कृत में निष्ठा होने के लिए काशी आना अनिवार्य था, इससे काशी प्रचलित भारतीय शिष्या-केन्द्र था ।

(२) हिन्दी साधुओं की भाषा मानी जाती है । प्राचीनकाल से ही धर्मान् मुस्लिम-युग से ही साधुओं के साथ-साथ भारत के विभिन्न स्थानों में फैली । अतः इसका प्रभाव अन्य साधुनिक भाषाओं पर भी पड़ा है । बँसला पर भी इसका प्रभाव पड़ा है ।

(३) मध्ययुग के सभी प्रमुख शैक्षणिक भक्ति-आन्दोलनों का केन्द्र हिन्दी-क्षेत्र ही गया । शैतन्य संप्रदाय में बृम्बाबन को जो प्राध्यापिक महत्त्व मिला उससे बृम्बाबन बंगाल का एक उपनिवेश बन गया । इससे हिन्दी बँसला क्षेत्रों की पारस्परिक अनिच्छता बहुत बढ़ गयी^२ ।

(४) मुस्लिम शासकों के कर्ता-वर्ता प्रायः हिन्दी-क्षेत्र से होकर भारत के साहित्यी-क्षेत्रों में गये । उनके साथ उनकी निजी भाषा भी गयी । इससे हिन्दी राजकीय स्तर पर भी अन्य क्षेत्रों में पहुँची । इनकी विद्यालय सेनाओं में अधिकतर हिन्दी क्षेत्रीय होते थे । फलतः जहाँ-जहाँ मुस्लिम-शासक्य फैला जहाँ-जहाँ हिन्दी भी प्राकर्षण का विषय बनी ।

(५) सानु-समाज पर्यटनशील समाज था उसी शक्ति मध्ययुग में बलिष्ठों के सार्वबाह भी देश भर में बूमते थे । बिस्नी-प्रायण इसके केन्द्र थे । समस्त क्षेत्रों के पञ्चसामी और बलिष्ठ-सेमी इन सार्वबाहों में सम्मिलित होकर बिस्नी-प्रायण प्राते या बिस्नी से विभिन्न भारतीय क्षेत्रों को जाते थे । इनके निजी बाजारों की भाषा हिन्दी ही होती थी । प्राय के कमकता में रहने वाले मारवाड़ी समाज एवं बिहार निवासियों की भाषा भी हिन्दी है ।

१ धो की की० एन० पृ० ११ ।

२ धो की की० एन० पृ० ११ ।

(१) इसका प्रमाण अपभ्रंस भाषा है। दोनों का मूल अपभ्रंस है। घोर संज्ञा अपभ्रंस की पहलूक पृष्ठ में विद्यमान है*। इसके विवेचन के लिए घाते अपभ्रंस पर इसी अध्याय में कुछ पृष्ठ दिये गये हैं।

३

अपभ्रंस-साहित्य (८००-१४०० ई०)

वर्षिक संस्कृत तथा पाली एवं प्राकृत के प्रभाव की परम्परा पर बहो विस्तारपूर्वक चर्चा करना अनावश्यक माना जा सकता है, अपभ्रंस भाषाओं के प्रभाव की परम्परा का अनुसन्धान स्वयं ही एक महान् विषय है। किन्तु अपभ्रंस तो हिन्दी बोलचाल भाषाओं से पनिकृतः सम्बन्धित है। अतः उस पर एक दृष्टि डालना समीचीन होगा।

ऐतिहासिक दृष्टि से अपभ्रंस नाम ईसा की पहली तथा दूसरी शताब्दी पूर्व से सुनाई पड़ता है* किन्तु भाषा-विज्ञान के पंडित* प्रकृति ११० या छठी शताब्दी ईसवी से मानते हैं। साहित्य में अपभ्रंस के उल्लेख छठी शताब्दी से मिलने लगते हैं। मामह (छठी शताब्दी ईसवी*) अपभ्रंस को काव्योपयोगी भाषा और काव्य का एक विशेष रूप मानते हैं—'काव्य शब्द घोर अर्थ को लेकर होता है यह पद्य-पद्य में दो प्रकार का है। संस्कृत, प्राकृत तथा अपभ्रंस को लेकर तीन प्रकार का है तथा इन तीन भाषाओं में काव्य रचना होती है*। बन्धी (सातवीं शताब्दी ईसवी*) समस्त वाङ्मय को संस्कृत, प्राकृत अपभ्रंस और मिथ इस प्रकार चार तरह का मानते हैं*। अट्ट (नवीं शताब्दी ईसवी*)—वेद्य-विशेष से भाषा कहीं प्राकृत संस्कृत, मागधी तथा पेंचाची एवं घोरक्षेत्री तथा अपभ्रंस आदि छः भाषों

* सां० भा० प० मू० पृ० १३

१ मर्षुहरि—वाचस्पतीयम् प्रथम काव्य कारिका १४८, माहौर संस्करण सं० प० आदेश सास्त्री।

२ हि० भा० पृ० पृष्ठ ४७।

३ सं० सा० पृ० १०१।

४ छायाओं संज्ञिता काव्यं गद्य पद्य च तद्द्विधा।

संस्कृतं प्राकृतं वाचस्पत्यस्य इति त्रिधा ॥ काव्यालंकार—१ १६-२८।

५ सं० सा० पृ० १०१।

६ तथेत् वाचस्पय मूयं संस्कृतं प्राकृतं तथा।

अपभ्रंस मिथ चैत्याहुरपि चतुर्विधम् ॥ —काव्यालंकार, १ १ ३२।

७ सं० सा० पृ० ११४।

से प्रयुक्त होती है^१। स्वयंभू (यही शैली सताब्दी ईसवी) अथवा स क कवि हैं, इन्होंने पञ्चम-चरित (पञ्चम-चरित) और रिष्टल्लोमि चरित (रिष्टल्लोमि-चरित) या हरिबन्ध पुराण इतमें ही लिखा है। पञ्चम चरित में इसका अंतरण प्रमाण है^२। पुष्पक (पञ्चम सताब्दी ईसवी) लिखते हैं अथवाकृत पायल पुष्प या हंसल चरित उष्पा हल अथसंस^३। अमिनब गुप्त (१७०-१०५० ई०) द्वारा दी गयी विभाषा विषयक विवृति से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि अथवा स भाषा विभाषा के अन्तर्गत इस समय में बोली जाती होगी।

इस प्रमाणों से प्रकट होता है अथवा स की परम्परा बहुत प्राचीन है। इसको बैपभाषा भी कहा गया है। ८०० से १४०० ई० तक अथवा स का अथिक प्रचार था। भारतीय भाषा-विकास में अथवा स प्राथमिक भाषाओं के पूर्व की (संज्ञिकास) भाषा है। इसका साहित्य बहुत विद्याम है। अथवा स का योरप हमें अमी गानुम हुआ है। जबकि प्राथमिक बैपी विदेशी विद्वानों ने इस पर अनेक आत्मक कार्य किया है^४। म० प० ह्यप्रसाद शास्त्री एवं राहुन साङ्करवायन आदि ने अब इसके नये अर्थों का अनुसंधान किया है। यह एक और संस्कृत-भाषी प्राकृत से अथवा स भाषा जोड़ी है। क्योंकि अथवा स कमजोर संस्कृत पासी प्राकृत तथा उत्कृष्टतम अथवा स भाषाओं से विकसित हुई है। अतः इसका नाता उनके पास है। यह उनकी जीवित परंपरा की प्रतीक है। उनकी भाषा-साहित्य एवं साहित्यिक आचार्यों इतमें प्रतिबिम्बित हुई हैं। दूसरी ओर यह हमारी प्राथमिक भारतीय आर्य भाषाओं की जननी है। ऐतिहासिक-दृष्टि से यह संस्कृत पासी प्राकृत तथा प्राथमिक भारतीय आर्य-भाषाओं के बीच की कड़ी है। हमारी प्राथमिक भारतीय आर्य भाषाओं अथवा स की भाषा-वैज्ञानिक एवं साहित्यिक परंपरा का सीधा विकास है। अथवा स-साहित्य के विषय में विद्वानों में मतभेद है। बंगाली हिन्दी उड़िया एवं आसामी आदि प्राचीन भाषाओं के विद्वान अथवा स को अपनी भाषा का पूर्व रूप मानते हैं^५। (पृष्ठ ४१ पर देखें)

अथवा स के विषय में भारत के विभिन्न विद्वानों का मत अस्तेजनीय है। अथवा स का सर्वप्रथम अर्थ 'अद्वैतान्मयो बोद्धा है'। सर्वप्रथम म० प० ह्यप्रसाद

१ प्राकृत संस्कृत मानव विद्याय भाषावय औरशैली

पञ्चम-चरित शूरिदेवी देव विषेयाम अथवा २१२।

२ शैल-अमास-अमाहासिक-सक-पायल पुमिशासकिय ॥

बैपभाषा-अथवा-उत्कृष्टतम कवि बुक्कर अथवा अथवा सिलायत।

पञ्चम-चरित (१२) (१४)

३ महापुराण २१८६।

४ हि० का० वा० भूमिका।

| विभाग का नाम | विभाग की भाषा का प्रालय | प्रब | उपयुक्त उद्धरण | सर्गों के आधारपुस्तक संघ |
|---------------------------------|-------------------------|--|-------------------|--|
| १ म० म० इच्छादर धारमी | बंगाल | बोधगान श्री बोहा युमिका | बंगला | बोधगान श्री बोहा |
| २ डा० मोहम्मद सहीदुल्ला | हिन्दी | साधना मिश्री के व काव्य ऐव सप्त [बोहाकोष] पुस्तकालय निकत्यावली, हिन्दी काव्य धारा भविष्य पृ० ११ बोहाकोष पृ० ८ । बोहाकोष पृ० ३० । बोहाकोष पृ० ११ । पुस्तकालय इन्डस फॉर्मेशन एव डेवलप मेन्ट पृ० ८ व० सा० स० १० पृ० ३ डाकार्णव पृ० १८ धौल्य बंगाली टैक्स पृ० ४४ । पुस्तकी हिन्दी मिथबन्धु विनोद वि० सा० १० पृ० १८ हिन्दी साहित्य का स्वयम् एव विकास वि० सा० १० पृ० २७ मे० भाई० के० स० पृ० ३२ | मपप्र व हिन्दी | बोधगान श्री बोहा बोहाकोष एव धौलकाव्य । बोहाकोष |
| ३ राहुल सांकृत्यायन | बंगाल | | | |
| ४ प्रबोधचन्द्र बागची | बंगाल | | | |
| ५ डॉ० सुनीतिकुमार चटर्जी | बंगाल | | | |
| ६ विद्यालय सद्दाचार्य | बंगाल | | | |
| ७ डा० बालीकांत ककाठी | मसमी | | | |
| ८ रायबहादुर धार्वकसम मधुली । | उडिया | | | |
| ९ डॉ० मंगेश्वरामण चौधरी । | बंगाल | | | |
| १० डॉ० सुकुमार सेन | बंगाल | | | |
| ११ श्री चन्द्रधर धर्मा गुप्तेरी | हिन्दी | | | |
| १२ मिथबन्धु विनोद | | | | |
| १३ प० रामचन्द्र सुक्सा | | | | |
| १४ डा० श्यामीप्रसाद द्विवेदी | | | | |
| १५ डा० रामकुमार धर्मा | | | | |
| १६ डा० विद्यानाथप्रसाद | | | | |

पर्याप
डाकार्णव
मपप्र व पर्यागीतिका
मपप्र व साहित्य

साक्षीकी को यह बोहा संग्रह नेपाल में मिला है। उन्होंने इसका नामकरण 'हजार बखरेर पुरान बंगला भाषाम बोडवान श्री बोहा'१ अर्थात् "हजार वर्ष पुरानी बंगला भाषा में बोडवान श्री बोहा" किया है। दूसरे विद्वान डॉ० खड़ीदुस्सा ने ठिम्बरी प्रमुखाय से मूस को मिलाकर 'भासा' मिसरी के ह कान्ह ऐद घरह' बोहाकोय प्रबंध रूप में प्रकाशित किया है। इसकी भाषा अपभ्रंस बतलाई गई है। तीसरे विद्वान डॉ० प्रबोधचन्द्र बागची हैं इन्होंने ठिम्बरी के साम मूस को दिया है। इसका परिचय अपभ्रंस भाषा के नाम से दिया है। चौथे विद्वान महापण्डित राहुत सांकर्यायन हैं, जिन्होंने छिद्य-कवियों का संग्रह हिन्दी-काम्यबारा के नाम से किया है। उनका दूसरा ग्रंथ बोहाकोय संस्कृत पर प्रकाशित हुआ है। राहुत जी ने पहले इसकी भाषा को बिहारी 'प्राचीन मगही एवं मैथिली भाषा है'। साथ ही राहुत जी समस्त उत्तरी भारत की आर्य-भाषाओं का पूर्व रूप भी अपभ्रंस को मानते हैं२। श्री जगन्नाथ शर्मा कुसेरी अपभ्रंस को पुरानी हिन्दी मानते हैं३। प्राचार्य रामचन्द्र शुक्ल अपभ्रंस को प्राकृत्याभास हिन्दी मानते हैं४। डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी भी अपभ्रंस मठों का सर्वजन करते हैं५। डॉ० रामकृष्ण शर्मा भी अपभ्रंस को हिन्दी की पूर्ववर्ती मानते हैं६। डॉ० विश्वनाथप्रसादजी का भी यही मत है७। डॉ० जिनपतीप मट्टाचार्य संस्कृत को बंगला का सर्वप्रथम कवि मानते हैं। राम बहादुर चार्तवस्सर्भ महन्ती ने इसको पुरानी उर्दिया कहा है८। डॉ० वाचीकांत कर्नाठी ने इसको भाषामी कहा है९। डा० सुनीलकुमार चटर्जी ने केवल बोडवान श्री बोहा' में ही संग्रहीत बोहाकोयों और अर्यापदों में ही दो तरह की भाषाओं की घोर संकेत किया है। अर्यापदों की भाषा पूर्व की है वे उसे प्राचीन बंगाली कहते हैं। क्योंकि किया रूप तथा मुहावरे ऐसे हैं जिनकी परंपरा पुरानी बंगला में है। बोहाकोय की एक ही भाषा है पश्चिमी (घोरखेरी अपभ्रंस) किन्तु पूर्व भारत में

१ श्री या श्री० बोहा मूमिका।

२ भासा मिसरी के ह कान्ह ऐद घरह, प्रबंध—डि० मिट मूमिका पृष्ठ ११।

३ पु० स० मि० पु० १९७। हि० का० भा० पु० ११।

४ श्री० को पु० ८।

५ पु० हि०।

६ हि० सा ह पु० ११।

७ हि० सा (उद्भव एवं विकास) पु० १६।

८ हि० सा० भा० ह पु० १७।

९ मे० ह के स० पु० १३।

१ स० सा स ह पु० ३।

११ कर्नाठी भाषामीय इंस फारमोसन एन्ड डेवलपमेंट पु० १।

दिने जाने के कारण इसमें कुछ पूर्वी मुहावरों एवं रूप भी मिल गये हैं^१। डॉ० नगेन्द्रनाथयण चौपरी डाकाएण्ड की भाषा का आधार खौरसेनी अपभ्रंस मानते हैं किन्तु इसमें पूर्वी बंगाल के सन्दों, रूपों उच्चारणों तथा मुहावरों का समावेश मानते हैं^२। डॉ० मुकुन्दर सेन हेवण्ड की बय वीतियों एवं साधनमात्रा की भाषा खौरसेनी अपभ्रंस मानते हैं। बर्मापदों की भाषा को धमय (पूर्वी) मानते हैं^३।

किन्तु उपयुक्त मतों के आधार पर अपभ्रंस के बारे में यह निष्कर्ष निकलता है कि अपभ्रंस-साहित्य समस्त प्राच्य भारतीय धर्म भाषाओं की सामे की सम्पत्ति है। १. बर्मापद हर भाषा इसको धमय प्रवर्ती मानती है। २. खौरसेनी अपभ्रंस तत्कालीन दूसरी अपभ्रंसों पर प्रभावशाली रही है। ३. यद्यपि हिन्दी की कई विज्ञान खौरसेनी अपभ्रंस का परवर्ती रूप मानते हैं। इन तीनों सिद्धांतों का स्पष्टीकरण इस प्रकार हो सकता है।

(१) अपभ्रंस साहित्य एवं भाषा प्राच्य धर्म भाषाओं की सामूहिक (सामे की) सम्पत्ति है। विज्ञानों का एक समन्वयकारी दृष्टिकोण भी है जो अपभ्रंस-साहित्य को प्राच्य भारतीय धर्म-भाषाओं के सामे की सम्पत्ति समझता है। डॉ० नगेन्द्रनाथ सेन लिखते हैं, 'केवल धर्मों के धम्मपत्र की अपेक्षा प्रत्यय जो कारण खौर किया रूप बताते हैं वे भाषायी श्रेष्ठ के अधिक यज्ञानिक आधार हैं। यद्यपि प्रथम जो इन गीतों खौर दोहों में प्रयुक्त हुये हैं यह विश्वरूपीय विषय है वे सामान्यतः मैथिली, हिन्दी, उड़िया, भासासी, बंगला मारवाड़ी खौर नेपाली में भी मिलते हैं। किसी एक भाषा का एकाधिपत्य इन पर (रूपों) नहीं हो सकता'। राहुस की हिन्दी के पक्ष की बात करते हुए अपनी हिन्दी काव्यधारा खौर बोहाकोप में स्पष्ट करते हैं। "यहाँ एक बात की हम खौर साक्षर कर देना चाहते हैं, हम जब इन पुष्पले कवियों की भाषा को हिन्दी कहते हैं तो इस पर मराठी उड़िया बगसा

१. प्रो० डी० बी० ऐल०, पृ० ११२।

२. डाकाएण्ड पृ० ११।

३. प्रो० व० ई०, पृ० ५५। डॉ० सा० इ०, पृ० ५६।

४. The post-positions to denote cases and forms of verbal inflexions are a far more scientific basis for linguistic differentiation than a mere study of words. In regard to most of the post-positions denoting cases used in these Songs and Dohas it is to be observed that they are those found in common in Maithili Hindi Oriya Assamese Bengali and even Marwari and Nepalese. No one language in particular can claim any of these forms as peculiarly its own.

भाषानी, गोरखा पंजाबी एवं गुजराती भाषाभाषियों को आपत्ति हो सकती है। लेकिन हमारा यह धर्मिभाव हरबिज नहीं है कि ये पुरानी भाषा मराठी आदि की अपनी साहित्यिक भाषा नहीं है। उन्हें भी उसे अपना कहने का उतना ही अधिकार है जितना हिन्दी भाषाभाषियों को। बस्तुतः ये धार्ये धातुनिक भाषाएँ १९वीं १९वीं शताब्दी में अपना सव प्रभव होती रीखती हैं। जिस समय (८वीं सदी में) अपना सव का साहित्य पहले-पहल रीखर होने लगा था। उस समय बंगला आरि उससे प्रखन प्रखितरव नहीं रखती थी।" धाये फिर सिखते हैं "बस्तुतः यह सिख समंत-मुनीन कबियों की धारी भाषाओं की सम्मिन्धित निधि है। धर्यात १९वीं १९वीं शताब्दी तक आरिध भाषाभाषी धाधर तमिल कैरस धीर कखरिठक को धोड़कर भारत के सभी प्रान्तों की एक सम्मिन्धित भाषा भी थी।"

डोहाकोष में सिखते हैं 'अपना सव रीसे केवल हिन्दी की अपनी रीख नहीं है। उस पर उत्तर भारतीय या भारत की हिन्दू (धाय) सभी भाषाओं का एक समान अधिकार है। वह मराठी गुजराती पंजाबी हिन्दी-खेज की भाषाधार्थी—रखस्थानी मालवी बुन्देली हरियाणी खौरवी (मूल हिन्दी) पहाड़ी खज धरवी भोजपुरी रीखिणी मगही असमिया बंगला धीर उड़िया की अपनी निधि है। इन सभी भाषाधार्थों के खेज में अपना सव-साहित्य की रखता हुई, उसको अपना समख्य गया धीर यह सभी को अपने साहित्यिक धाय भाष के रूप में निती। डॉ० सखेखर की का मत है, 'सिखों की भाषा एक सामान्य लोकभाषा थी जो विभिन्न प्रान्तीय उखों को लेकर निन्धित हुई थी'। उस सामान्य लोकभाषा में प्रान्तीय उखों का धमावेध था जहाँ से हिन्दी धीर बंगला का एक ही मूल धीर खोत निखसाई पड़ता है। सिख लोग विभिन्न स्थानों से एकनिधित होते थे धीर उस सामान्य भाषा में स्थानीय स्वरूपों का भी धमावेध हो जाता था।

२ किन्तु इस सामान्य भाषा में धर्येप्रखन उख धीरखनी-अपना सव का ही था। निखानों का मत है कि खौरखनी अपना सव का खुररी अपना सवों पर प्रभाव रखा है। यह एक इतिहास सिख उख्य है कि मध्यखेल खरैय से धारे खेध को प्रभावित करवा रखा है। यहाँ की भाषा खरैय से खेध की धान्य भाषाधार्थों पर अपना प्रभाव कासती रही है। क्योंकि रीसा डा० मुनीठिखुमार खटखी ने बताया है, 'अपनी मंग प्रवेध इतिहास के उखयकाल से ही धासकृतिक एवं रखनीठिक खीखन का कैखर रखा है। स्वभावतः यहाँ की भाषाधार्थ कमात, संखुत पानी खौरखनी प्राखत तथा अपना

१ हि का० धा पू ११।

२ खो को० सु० पू ८।

३ मध्यमुनीन हिन्दी के प्रेमभाषा काख्य तथा भन्धिकाख्य में लोकधार्थ-उख, पूठ ८१ (अपनाधधित खी० निठ० प्रखंख) १९१७ प्रकाधित पू ।

अस के रूप में, अथर्ववेद के रूप में राजभाषा के रूप में तथा हिन्दुस्तानी के रूप में भारत के इतिहास भर में एक शक्ति रहेगी^१ । डॉ. अटर्नी प्रायः फिर मिसते हैं कि यह पश्चिमी अथर्व वेद साहित्यिक भाषा के रूप में पूर्वी भारत में प्रचलित थी^२ । डॉ. मुकुमार सेन मध्यवेद की भाषा घोरसेनी के प्रभुत्व के बारे में लिखते हैं "घाठवी घाठामी से घोरसेनी अथर्व वेद समस्त उत्तरी भारत (उत्तरांचल) की साहित्यिक (साधु) भाषा रही है । अंतियों द्वारा लिखे हुए अनेक वेद मिलते हैं । बंग देश के बौद्ध साहित्यिक संहारपंथी एवं ईश-योगी वाचपंथी सिद्धाचार्य इसी भाषा में अपने कड़वा प्रथम एवं सहायान लिख गये हैं^३ । घोरसेनी का प्रभुत्व दो कारणों से हुआ था जैसा कि विद्वान मानते हैं । डॉ. अटर्नी राजपूतों के राजनीतिक प्रभुत्व को घोरसेनी अथर्व वेद के प्रचार एवं प्रसार का कारण मानते हैं^४ । डॉ. सत्येन्द्र जी सोरमाजस को घोरसेनी अथर्व वेद के प्रसार का कारण मानते हैं^५ । घोरसेनी-अथर्व वेद में तीन स्वरूप धारण किये । प्रथम अथर्व वेदों के समरूप थी । दूसरे अनेक अथर्व वेद कारण किया जिसमें बिद्यारथि की कीर्तिसता, कीर्तिसताका एवं प्राकृत-वेदगन्तु की रचना हुई । तीसरे बड़ हिन्दी के अधिक पास था यह । जिसे पुरानी हिन्दी भी कहते हैं^६ । घोरसेनी अथर्व वेद का प्रभाव पूर्वी अथर्व वेद पर रहा है । बसता पूर्वी अथर्व वेद (मागधी अथर्व वेद) से विकसित हुई है । हिन्दी घोरसेनी अथर्व वेद का ही एक

१ घो. डी. बी. एम. पृष्ठ १३ ।

२ The upper gangetic valley has been the centre of culture and political life in India since the dawn of history and it is in the nature of things that its language successively as Sanskrit as Pali as Sauraseni prakrit and Apbhramas as Avahatta as Brajbhakha and as Hindustani should be a force through out the history of India.

(O D B. I. pp 13.)

३ अष्टम घाठामी हुइते घोरसेनी अथर्व वेद समस्त उत्तरांचलमें साधु भाषा हुइया दाहाय । एही भाषाय जैनदेर लेखा कई अनैक पाद्योमा गियाई । बिसादेदेर बौद्धसाहित्यिक संहारपंथी एवं ईशयोगी, माचपंथी सिद्धाचार्यस एही भाषा ठाहा बेर कड़वा कई एक सहायान लिखिया दियायेन ।

(बा. सा. इ. म. अ. पृ. ३३)

४ घो. डी. बी. एम. मध्ययुगीन हिन्दी के प्रेमभाषा तथा अतिशय में लोकाचार्यो तत्त्व (प्रथम प्रकाशित) ।

५ डॉ. मिट प्रथम प्रकाशित पृ. ७१ ।

६ देखिये चार्ट पृ. १० लेखक का प्रथम ।

परवर्ती रूप है। यी मूवेक बीपरी महासय इस रूप में हिन्दी का प्रभाव प्राचीन बंगाली पर जोड़ा ही मानते हैं^१।

निष्कर्ष यह है कि अथवा सहाय्य को समस्त सामुहिक भारतीय भाषाओं के साहित्य की सामान्य निधि मानना अधिक ऐतिहासिक एवं भाषा-वैज्ञानिक दृष्टिकोण से संगत है। आनुपातिक दृष्टि से औरसेनी अथवा मध्यदेशीय भाषा होने के कारण राजनीतिक सहायता एवं-परम्परा प्राप्त कर अधिक प्रसार एवं प्रचार पा सकी फिर भी उसके साथ ही दूसरी अथवा भाषाओं भी बसती रही और अपना योगदान देती रही। एक ओर बोहाकोणों में औरसेनी अथवा का प्रभाव है^२ तो दूसरी ओर पूर्वी अथवा के रूप अर्थात् में मिलते हैं^३। वास्तव में अथवा साहित्य अखिल उत्तर-भारतीय जनता का साहित्य है। जिस प्रकार हम हिन्दी की परम्परा अथवा में मानते हैं उसी तरह बंगला आसामी उड़िया गुजराती, मराठी सिंधी पंजाबी एवं नेपाली आदि अन्य भाषाओं की भाषा-वैज्ञानिक एवं साहित्यिक परम्परा अथवा में या उसके किसी न किसी रूप में ही मिलती है। इसके सम्बन्ध में ऊपर मत दिये जा चुके हैं।

हिन्दी-बंगला में तो यह सामान्य-स्रोत की बात उनके इतिहासकारों के लेखों से विशेषतः पुष्ट हो जाती है। यहाँ एक उदाहरण से उसे स्पष्ट देखा जा सकता है। हिन्दी और बंगला दोनों के प्रामाणिक इतिहासकारों ने हम्मीर रासो को अपनी भाषा का माना है। उसके पद दोनों में उद्धृत हैं। दोनों इतिहासों में कुछ पाठ का ही भेद है। जैसे हिन्दी पाठ यह है—

बोला मारिय इहिति मू मुञ्जिय मेख्य शरीर ।
 पुर अञ्जला मतिबर अतिब बीर हम्मीर ॥
 अतिब बीर हम्मीर पापपर मेइवि कंषइ ।
 विमसय बहु अंवार धूमि सुररह आञ्जाइहि ॥

१ बंगला साहित्य के इतिहास के लेखक यी मूवेक बीपरी से मध्यम सायबेरी में इस विषय पर अर्थात् हैं। लेखक के सामने उन्होंने इस उच्च को स्पष्ट शब्दों में स्वीकार किया "प्राकृत-वेदना के कई पदों को पुरानी हिन्दी का रूप माना जा सकता है"।

२ बोहाकोण ।

३ वा सा० इ प्र अ पृ० ४० देखिये अर्थात् का मूला—

अतिब गुण परमाचर पाठ
 कर्म सुरग समाधि कपाट ।
 कमल विकसित कहूँ अ अमरा
 कमल मनु पिबि घोके अ अमरा ।

दियमग यह अघार धाय पुर ताबुक उस्ता ।
 दरमरि बनसि विपन्न भाक डिस्ती मह डोस्ता^१ ॥
 पर्यादि दिल्ली में डोस बनाया गया, स्नेह्यों के शरीर मूर्च्छित हुए । धाये
 मंत्रिवर जजबल को करके वीर हुम्मीर बसे । चरणों के मार से पुम्बी कांपती है ।
 बिद्याधों के मागों धीर धाकाधों में प्रवेश हो गया है भूम सूर्य के रथ को पाश्चात्त
 करती है । घोस में सुरासानी से धाए । विपक्षियों को दस मस कर दबाया दिल्ली
 में डोस बनाया ।

धीर बैंगला के इतिहाय में यह पाठ है —

डोस मारिब डिस्तिमह-मुभिन्न मेधु शरीर ।
 पुर जजबल मस्तबर जलित वीर हुम्मीर ॥
 जलित वीर हुम्मीर पात्रमर मेहनि कम्पइ ।
 दियमग यह अघार भुमि सुएह रह धामइ ॥
 दियमग यह अघार धात्रु सूर धाक उस्ता ॥
 बलबलि बनसि विपन्न मारम डिस्ति मह डोस्ता^२ ॥

पर्यादि डोस मारिस दिस्ति मामे, स्नेह्य शरीर मूर्च्छित हुइम मस्तबर
 जजबलके पुर धर करिया वीर हुम्मीर जालियाधे । वीर हुम्मीर जलियाधे, मेदिनी
 कापितेधे, दिक् मार्यधो मम अयकार, भूमाय सुयर रथ भ्रूपियाधे, दिक् मार्य धो
 मम अयकार सौराछानेर उस्ता भाशाबिस दसबसे निपओ दमग कर, दिस्तिमामे
 डोस पिटीयो ।

दोनों ही साहित्यों के इतिहासकार इन पदों को अपनी माया एक साहित्य का
 धर्मिण्य ग्रंथ मानते हैं । इस प्रकार दोनों ही इतिहासों में अपभ्रंश का प्रबल प्र
 प्रकरण में ऐसे बहुत से पद हैं जो समान हैं । अपभ्रंश का पूर्ववर्ती स्वरूप सभी दोनों
 में अधिक भेद से युक्त नहीं है । किन्तु उत्तरकामीन अपभ्रंशों में नग्न भारतीय
 धार्य भाषाओं के बीच अंकुरित हो उठे हैं । पर सभी के रूप धाम-धाम चलते दीखते
 हैं । ऐतिहासिक सत्य तो यह है कि इन भाषाओं में पहले कोई अधिक भाषामूलक
 एक साहित्यिक अन्तर नहीं था । उस नाम में इन भाषाओं की कोई कठोर सीमा
 रेखा निर्धारित नहीं थी । अतः अपभ्रंश को वीरसेनी अपभ्रंश अथवा पुरानी हिन्दी
 से प्रभावित (परिमित) अपभ्रंश नग्न भारतीय धार्य भाषाओं के धामे की (पतुक)
 सम्पत्ति कहा जा सकता है । साथ ही यह बात भी दुष्टव्य है कि यह अपभ्रंश
 वीरसेनी अपभ्रंश से अत्यधिक प्रभावित है । अतः हिन्दी के प्रभाव का मूल इसी युग से
 दिखाई पड़ने लगता है ।

१ दि० छा० ६० पृ० २३ ।

२ वी० छा० ६० पृ० ३६ ।

नाथ-सम्प्रदाय का साहित्य (१००० ई० से १८०० ई० तक)

२६ अथप्रथम माया के अंतिम छोर पर जब पुरानी हिन्दी तथा धार्मिक ग्रन्थ वैद्यक-सम्प्रदाय के अन्तर्गत प्रथम रूप ग्रहण कर रही थीं। तब भारत भर में नाथ-सम्प्रदाय प्रबल था। नाथ-सम्प्रदाय विषयक प्रभूत-साहित्य हिन्दी में लिखा गया। इस सम्प्रदाय का प्रभाव बंगाली-साहित्य पर बहुत था। डॉ० अच्युतचरण दास मुत्त ने लिखा है—“नाथ-सम्प्रदाय एक अत्यन्त प्राचीन धार्मिक-सम्प्रदाय है जिसने बैंगला साहित्य के विकास को अत्यधिक-रूप में उसके प्रादिकाल से ही प्रभावित किया है। नाथ-सम्प्रदाय एक अत्यन्त भारतीय धार्मिक आन्दोलन के रूप में अत्यधिक लोकप्रिय रहा है और अब भी है। प्रादिकाल और मध्यकाल में इसके कई अत्यन्त भारतीय साहित्यों को भी प्रभावित किया है। नाथ-सम्प्रदाय का इतिहास प्राचीन एवं साहित्यिक रूप में भारत के अनेक प्रदेशों और हिमाचल के भागों में प्राप्त और विभिन्न के साथ भी अनिष्ट रूप में सम्बन्धित रहा है। यह जानना सरल है कि इसका सहज नहीं है जो सहज बीड़-संज्ञों बीड़नामों और दोहों में अस्तित्व है। बहुधा नाथ-सम्प्रदाय के धार्मिक भाषाओं के साथ में और विशेषकर पुरानी हिन्दी के अनेक और अनेक और इसी तरह के अनेक और अनेक-साहित्य में इसी सहज के वर्णन होते हैं।”

यह भारतव्यापी सम्प्रदाय था। इसके माध्यम से पश्चिम और पूरव का पारस्परिक आदान-प्रदान भी बढ़ा। गोरखनाथ के अनेक हिन्दी में इस सम्प्रदाय के विविध ग्रंथ हैं। इनके एक हिन्दी-ग्रंथ का प्रभाव बंगाली-ग्रन्थ पर स्पष्ट है। जिसे उस भाषा के विद्वान इतिहासकार भी स्वीकार करते हैं। उदाहरणार्थ डॉ० सुकुमार सेन ने लिखा है—“उर्दू आदान प्रदान एक उदात्त हय नाई। भारतेर अन्ध आन्दे

- २ Another obscure religious cult that has influenced the growth of Bengali Literature to a considerable extent from an early period of its history is Nathism. As an all India religious movement Nathism enjoyed and is still enjoying immense popularity and it influenced the growth of many other modern Indian Literatures in the early and the middle periods. The religious and literary history of Nathism in Bengal is therefore, intimately connected with that of many other provinces of India as also of the Himalayan regions like Nepal and Tibet. It is very easy to see that this saha is the same as the saha described in the Buddhist tantras and the Buddhist Dohas and Songs. In the vernacular Literature of the Nath cult we frequently meet with this conception of Saha particularly in the old Hindi text Gorakh bodh and in the similar Literature of Carpati and other Siddhas.

गोरख पंथी केर छहार प्रभाव को बायाला देखेर नाथ मोमीदेर निबन्धे पाइभासि ।
उत्तर बने सेखा एकटि बुद्ध प्रथीम निबन्ध भी मोसैं-संहिताय छहार भाषाय को
छन्दे गोरख-पंथी हिन्दी छहार स्पष्ट-प्रभाव रहियाछे ।^१ इसके निर्दशन के लिये यह
सुसमायक संस किया जाता है —

बैपसा (भी मोसैं संहिता)

गोरखनाथ—सुनि गुरु घामि
चित्त्य सभके पुछो गुरु मनेते ना करिह
रोय

बाबेशर कौन उपदेशा, सुन्दर
कथा बसा रहे ज्ञानेर कौन परिचय

महदसि नाथ बाब—भवनु
बाबेशर भय उपदेशा, सुन्दर निरस्तक
वासा, ज्ञानेर धक्यय मुदा सुन मोसैं
मिनेर बेसा गोरखनाथ बाब—गुरु
पोसाई, केमन गुरु केमन बेसा केमन
मूल, केमन बेसा केमन तन मेके फेरे
भकेसा ।

महदसि नाथ बाब—भवनु मन
मूल पवन बेसा सबद गुरु सुरत बेसा
निर्मस तन मेके फेरे भकेसा । कहै
महदसि गुरु मोसैं बेसा ।

गोरखनाथ बाब—गुरु पोसाई
कौन सरोवर बानि बिनो,
कौन मूल बिनो बाल
कौन परिमल बासा बिनो,

कौन मस्तु बिनो काल ।

महदसि नाथ बाब—भवनु
मन सरोवर बानि बिनो मूल
पवन बिनो बाल

बासा परिमल बासा बिनो निश
सस्तु बिनो काल ।

हिन्दी (महिन्द्र गोरखबोध)

गोरखो बाब—स्वामी तुम्हें गुरु
गुसाईं धरुं पु छिय (सबद एक पुछिम्ना)
वया करि कहिवा मन ही में करिवा रोय
गोरख स्वामी बाबेशे का कौन
उपदेश सुनि का कर्ष बास सबद का
कौन गुरु, कर्षत महिन्द्रनाथ ।

महिन्द्र—भवधु बाबेश का
धनुपम उपदेश सुनि का निरन्तर वास ।
सबद का परवा गुरु कवत महिन्द्रनाथ ।
गोरख स्वामी कौण मूल कौण बेसा ।
कौण गुरु कौण बेसा, कौण होय कौण
बेसा ।

महिन्द्र—भवधु मन मूल पवन
बेसा सबद गुरु सुरति बेसा त्रिकुटी बैष
जसटि बेसा नृबाण तत्र से रमो भकेसा ।

गोरख

स्वामी कौण वैदि बिन बाल,
कौण पंथि बिन सूबा,
कौण पाबि बिन मीर कौण बिन

कालहि सूबा ।

महिन्द्र—भवधु
पवन वैदि बिन बाल
मन पंथि बिन सूबा

धीरज पाबि बिन मीर, विद्या
बिन कालहि सूबा

नाथ-सम्प्रदाय का साहित्य (१००० ई० से १८०० ई० तक)

२१ अथवा च माया के प्रतिम छोर पर जब पुरानी हिन्दी तथा धार्मिक ग्रन्थ रस-भाषाओं कुछ-कुछ अपना रूप ग्रहण कर रही थीं। तब भारत भर में नाथ सम्प्रदाय प्रबल था। नाथ-सम्प्रदाय विषयक प्रगुत-साहित्य हिन्दी में लिखा गया। इस सम्प्रदाय का प्रभाव बंगाली-साहित्य पर बहुत था। डॉ० अक्षिभूषणशास्त्र गुप्त ने लिखा है— 'नाथ-सम्प्रदाय एक ग्रन्थ स्पष्ट धार्मिक-सम्प्रदाय है, जिसने बंगला साहित्य के विकास को अत्यधिक-रूप में इसके धार्मिकता से ही प्रभावित किया है। नाथ-सम्प्रदाय एक अतिशय भारतीय धार्मिक धान्दोमन के रूप में अत्यधिक लोकप्रिय रहा है और अब भी है। धार्मिकता और मध्यकाल में इसने कई ग्रन्थ भारतीय साहित्यों को भी प्रभावित किया है। नाथ-सम्प्रदाय का इतिहास धार्मिक एवं साहित्यिक रूप में भारत के ग्रन्थ प्रदेशों और हिमाचल के भागों नेपाल और तिब्बत के साथ भी घनिष्ठ रूप में सम्बंधित रहा है। यह जानना सरल है कि इसका सहज नहीं है जो सहज बौद्ध-उत्तों बौद्धगानों और बौद्धों में बसित है। बहुधा नाथ-सम्प्रदाय के धार्मिक भाषाओं के साथ में और विशेषकर पुरानी हिन्दी के संघ गीरसबोध और इसी तरह के चर्चों और सिद्ध-साहित्य में इसी सहज के दर्शन होते हैं'।

यह भारतव्यापी सम्प्रदाय था। इसके माध्यम से पश्चिम और पूर्व का पारस्परिक आदान प्रदान भी बढ़ा। पौरखाना के संघ हिन्दी में इस सम्प्रदाय के विशिष्ट संघ हैं। इनके एक हिन्दी-ग्रन्थ का प्रभाव बंगाली-ग्रन्थ पर स्पष्ट है। जिसे उद्योग माया के विद्वान इतिहासकार भी स्वीकार करते हैं। उदाहरणार्थ डा० मुकुमार सेन ने लिखा है— 'उर्ध्व आदान प्रदान एक तरफा रूप नहीं। भारतीय ग्रन्थ प्रायः

१ Another obscure religious cult that has influenced the growth of Bengali literature to a considerable extent from an early period of its history is Nathism. As an all India religious movement Nathism enjoyed and is still enjoying immense popularity and it influenced the growth of many other modern Indian literatures in the early and the middle periods. The religious and literary history of Nathism in Bengal is therefore intimately connected with that of many other provinces of India as also of the Himalayan regions like Nepal and Tibet. It is very easy to see that this sahaj is the same as the sahaj described in the Buddhist tantras and the Buddhist Dohas and Songs. In the vernacular literature of the Nath cult we frequently meet with this conception of Sahaaj particularly in the old Hindi text Gorakh bodh and in the similar literature of Carpat and other Siddhas.

गोरख पंथी केर छद्धार प्रभाव प्रो बागिना दीयेर नाथ योगीदेर निबन्धे पाइयाछि ।
उत्तर बंभे सेका एकटि बुद्ध प्राचीन निबन्ध श्री मोर्ले-संहिताय छद्धार भाषाय प्रो
छन्दे गोरख-पंथी हिन्दी छद्धार स्पष्ट-प्रभाव रहियाछे ।' इसके निर्वचन क सिये यह
तुलनात्मक संक्षेप बिया जाता है —

बैपसा (श्री गौर्ख संहिता)

गोरखनाथ—तुमि गुरु धामि
सिष्य सबके पुछो गुरु मनेते ना करिह
रोप

घादेघेर कौन उपदेशा सुनैर
कथा बसा रसे ज्ञानेर कौन परिचय

महदसि नाथ बाच—भवभू
घादेघेर भय्य उपदेशा सुनैर निरन्तर
बासा ज्ञानेर भक्त्यय मुवा सुन गौर्ख
मिनेर बेसा गोरखनाथ बाच—गुरु
गोसाई, कमल गुरु केमन बेसा केमन
मूस केमन बेसा केमन तंत्र लेके केरे
भकेसा ।

महदसि नाथ बाच—भवभू मन
मूस पवन बेसा सबद गुरु सुरत बेसा
निर्मल तंत्र लेके केरेरे भकेसा । कहे
महदसि पुन मोर्ख बेसा ।

गोरखनाथ बाच—गुरु गोसाई
कौन सरोवर पानि बिनो,
कौन मूख बिनो ज्ञान
कौन परिमल बासा बिनो

कौन मूखु बिनो ज्ञान ।

महदसि नाथ बाच—भवभू
मन सरोवर पानि बिनो मूस
पवन बिनो ज्ञान

घासा परिमल बासा बिनो भिद्रा
मस्यु बिनो ज्ञान ।

हिन्दी (महिन्द्र गोरखबोध)

गोरखो बाच—स्वामी तुम्हें गुरु
गुसाई भम्हें बु सिष्य (सबद एक पुछिम्बा)
दया करि कहिबा मन ही में करिबा रोप
गोरख स्वामी घादेघे का कौन
उपदेश, सुनि का कथ बास सबद का
कौन गुरु, कथत महिन्द्रनाथ ।

महिन्द्र—भवभू घादेघे का
अनुपम उपदेश सुनि का निरन्तर बास ।
सबद का परचा गुरु, कथत महिन्द्रनाथ ।
गोरख स्वामी कौण मूस कौण बेसा ।
कौण गुरु कौण बेसा कौण क्षेत्र कौण
बेसा ।

महिन्द्र—भवभू मन मूस पवन
बेसा सबद गुरु सुरति बेसा भिकृटी बंभ
उसटि बेसा नृबाण तत्र ले रमो भकेसा ।

गोरख

स्वामी कौन पैड़ि बिन ज्ञान,
कौन पपि बिन मूबा

कौन पासि बिन मीर, कौन बिन

कालहि मूबा ।

महिन्द्र—भवभू

पवन पड़ि बिन ज्ञान

मन पपि बिन मूबा

धीरख पासि बिन मीर, भिद्रा
बिन कालहि मूबा

यह मस्तिष्क मोरखबोध हिन्दी का ग्रंथ है और श्री गोरख संहिता ग्रंथ बंगला का है।

पहले कहा जा चुका है कि भारत में सबसे एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में प्रादान-प्रदान होता प्राया है अतः मोरखनाथ प्रभावशाली व्यक्ति थे उनका प्रभाव बंगला पर होना स्वाभाविक है। इसी तरह यह प्रयोगकर्ता हींसी संवनाथ पंथियों की एक विशेषता है। बंगला में अब भी इस तरह की हींसी (पहेलियाँ) चलती हैं^१। हिन्दी का प्रभाव बंगला के नाटक-साहित्य पर भी कुछ-कुछ है। यह लोक-साहित्य का उदाहरण मुख्यतः रवीन्द्रनाथ ठाकुर संकलित पुर्बीर नाम से है।

| प्रश्न | उत्तर |
|------------------------|---------------------------|
| कौन देश में राजा भासा | उत्तर में राजा भासा |
| कौन देश में रानी | बखिण में रानी |
| कौन देश में कापड़ भासा | पश्चिम देश में कापड़ भासा |
| कौन देश में पानी | पूर्व देश में पानी। |

इस प्रकार के सम्बाध कुछ तो सम्बानुवाद कुछ यावानुवाद एवं कुछ हींसी का अनुकरण मात्र हैं। इस एक शकैत से हम इस युग में इस संप्रभाम द्वारा पड़े प्रभाव के कुछ रूप को समझ सकते हैं।

३

मैथिली (विद्यापति ठाकुर १३५०-१४५०)

हिन्दी का प्रभाव बंगला भाषा पर बिन परंपरागत स्रोतों से पड़ा है उनका कुछ विवरण ऊपर किया जा चुका है। यहाँ मैथिली का प्रश्न भी हमारे सामने प्राता है। हिन्दी भासे मैथिली को हिन्दी के अन्तर्गत मानते हैं जन्हीं के साथ वैज्ञानिक अज्ञान के बाव यही मत समीचीन चलता है। इस स्थिति में मैथिली का प्रभाव भी हिन्दी का ही प्रभाव माना जाएगा। विद्यापति मैथिली के महाकवि हैं। उनका प्रभाव बंगला पर इतना है कि पहले मैथिली को बंगला ही माना जाने सया था। जैसे तो यह विषय हमारे प्रबंध के विषय से सीधा संबंध नहीं रखता फिर भी वस्तुस्थिति का परिचय देने के लिये यह आवश्यक है कि मैथिली विषयक तीन मतों की कुछ चर्चा करनी चाय। ये तीन मत ये हैं—(१) मैथिली बंगला के अन्तर्गत है। (२) मैथिली स्वतंत्र प्राया है। (३) मैथिली हिन्दी है। इस विचार को इस तालिका से समझ जा सकता है^१ —

^१ देखिये बी० सा ६ प्र० ख० पुनरुप १०३४—१०३६।

बंगलावासी

| समय | विद्वान | धर्ममत के तरह |
|--|--|---|
| (१८६६-१९३९) सर्वत्र से बंगाली विद्या- पति का बपला का कवि मानते आये हैं। | डॉ० बीनेषचन्द्र सेन एवं अन्य बंगाली विद्वान | बंगला भाषा मो-साहित्य पृष्ठ २२३, हि० ब० सी० लि० पृ० १३४ ज़हीदात एवं विद्यापति प्रकरण। बंगला और मजिरी एक ही भाषा की समुदाय की भाषाएँ हैं। |

स्वतंत्र-मस्तिष्क

| | |
|---|--|
| हनिम चार्ज प्रियर्षन, डॉ० मुनीठिकुमार पटवर्दी डॉ० मुमत्र म्म डॉ० जय कांत मिश्र | अन्य धार्मिक भारतीय भाषाओं की तरह मजिरी की भी अपनी प्राचीन साहित्यिक स्वतंत्र परंपरा है। हि० मे० लि० पृ० ४७। |
|---|--|

हिन्दीवासी

| | |
|---|--|
| डॉ० जैसीध रबीन्द्रनाथ अनुर, आचार्य रामचन्द्र मुकुम राहुत जी डॉ० धीरेन्द्र वर्मा डॉ० राम कुमार वर्मा, डा० बाबू पुलाचराम विष्णुनाथ, डॉ० सत्येन्द्र, डॉ० वासुदेव दरएण अण्णास डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी डॉ० बाबू राम सक्सेना, डा० विश्व नाथप्रसाद प० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र | हिन्दी धारण, पृ० ६२ देखिये अन्य-तरह नामक-अर्थक हि० सा० इ० पृ० १७ अथ-अन्य हार पृ० ७० नि० पृ० २१२, हि० भा० इ० पृ० २४, हि० सा० भा० इ० पृ० ३६, हिन्दी काव्य विमर्श में निबंध, साहित्य सन्देश अथ-अन्यहार, हिन्दी साहित्य, पृ० ७३, अथ-अन्यहार, एन० आइ० के० स० पृ० ३२ हिन्दुस्तान १२ जून १९ १९ ई० में हिन्दी के धारण कवि विद्यापति धर्मिमापण। |
|---|--|

साहित्य का कुछ स्पष्टीकरण भी आवश्यक है। कुछ समय पूर्व लोगों की यह
धारणा थी कि विद्यापति बंगाली कवि हैं किन्तु अब यह विचारधारा बदलती जा

रही है। डॉ० बीनेयचन्द्र सेन एक घोर विद्यापति पर बंगाली का दावा मानते हैं^१। उनका कथन है कि सर्वत्र से बंगाल विद्यापति से प्रेरणा मिला था। किन्तु वे उनको वास्तव में मीथिल कवि ही मानते हैं। उड़िया भाषामी व बंगला की तरह मीथिली भी मापधी में अपभ्रंश प्रसूत है। अतः मीथिली घोर विद्यापति का सम्बन्ध इनके साथ बनिष्ठ है। कुछ क्रिया रूपों में मीथिली का इन पूर्वी भाषाओं के साथ मेल है। किन्तु अब विद्वान् इस बात को मानने लगे हैं कि विद्यापति बंगला कवि नहीं हैं^२। यह मीथिली का सर्वश्रेष्ठ कवि है। अतः यह स्पष्ट और सिद्ध है कि मीथिली भाषा बंगला के अन्तर्गत नहीं आती है। विद्यापति भी बंगाली कवि नहीं हैं।

अब विद्वान् मीथिली को स्वतंत्र भाषा का पर प्रमाण करते हैं। उनमें से प्रमुख विद्वान् जार्ज प्रियर्सन डॉ० सुनीतिकुमार चटर्जी डॉ० सुमद्र झा और डॉ० जयकांत मिश्र हैं जो इसको स्वतंत्र भाषा मानते हैं। उनका तर्क है कि भाषा-विज्ञान की दृष्टि से मीथिली मागधी अपभ्रंश प्रसूत है। जिस प्रकार मागधी अपभ्रंश प्रसूत अथ्य भाषायें उड़िया बंगला एवं आसामी स्वतंत्र हैं वही प्रकार मीथिली भी स्वतंत्र भाषा है। मीथिली का संबंध पश्चिमी भाषाओं की अपेक्षा पूर्वी भाषाओं के साथ बनिष्ठ है। यह हिन्दी और बंगला की मध्यवर्तिनी भाषा है।

किन्तु अथ्य विद्वान् मीथिली को हिन्दी की उपभाषा मानते हैं, उनका कथन है कि मीथिली हिन्दी के अन्तर्गत ही आती है जिनमें प्रमुख हैं^३—डॉ० कौसोग मीथिली को हिन्दी के अन्तर्गत मानते हैं। वे अपनी हिन्दी ग्रामर में लिखते हैं इस क्षेत्र में हिन्दी विभाषाओं की पराकाष्ठा इस प्रकार होती है—पश्चिम से शुरू होकर घोर पूर्व की घोर जाते हुए उवाहरण स्वरूप ये भाषायें आती हैं—

(१) राजस्थान की विभाषायें मारवाड़ी मेवाड़ी जैपुरी हाड़ोली।

(२) हिमाचल की विभाषायें: पड़वासी कुमाऊंजी नेपाली।

(३) झाडा की बोलियाँ: जब कन्नोजी।

(४) पूर्वी विभाषायें अरबी रिवाई (रीवाँ की) भोजपुरी। मापधी

मगही और मीथिली।^४

१ बंगलाया घोर साहित्य पृष्ठ २२३।

२ हि० ब० मैसि पृष्ठ १३४।

३ बेथिए-पृष्ठ २१ प्रस्तुत लिख्य में हिन्दीवादी टालिका।

४ With this region the dialects of Hindi may be enumerated as follows, beginning in the west and proceeding eastward namely-

(1) The dialects of Rajputana: Marwari Newari, Mairwari, Jaipur and Haroli

(*) The Himalayan dialects, Garhwali Kumeoni and Nepali

राष्ट्रावली, साहित्यिक परम्परा तथा विभक्तियों आदि की दृष्टि से मैथिली का हिन्दी से सादृश्य होने का कारण यह हिन्दी ही के अन्तर्गत प्रा जाती है। एक उदाहरण देते हैं — (देखिये पृ० १४ ११)

मुख्य रवीन्द्रनाथ ठाकुर हिन्दी की बोलियों की पंथी विभक्ति का बयन करते हुए मैथिली को भी सम्मिलित कर लेते हैं। उदाहरण से थोड़ा उदाहरण देकर स्पष्ट करते हैं—

| | | | | | | |
|-----------|------------|----------|-----------|------------------------|---------|----------|
| छड़ी बोली | कन्नौजी | ब्रजभाषा | मारवाड़ी | मेवाड़ी | गढ़वाली | धबधी |
| घोड़ा का | बोड़ना का, | घोड़ा को | बोड़िरो | घोड़ा का, | घोड़ोका | बोड़नकेर |
| बिहारी | भोजपुरी | मागधी | मैथिली | | | |
| बोड़नकर | बोड़नकि | बोड़नकेर | घोड़ानिक, | घोड़ानिकर ^१ | | |

प्राचार्य रामचन्द्र शुक्ल विद्यापति की पदावली को हिन्दी के अन्तर्गत मानते हैं।^१ रामस भी मैथिली को उही तरह हिन्दी की विभाषा मानते हैं जिस प्रकार ब्रज भाषा को।^२ डॉ० श्रीरेन्द्र वर्मा भी मैथिली को हिन्दी की उपभाषा मानते हैं।^३ डॉ० रामकुमार वर्मा भी इसी मत के समर्थक हैं।^४ बाबू (डॉ०) गुलाबराय विद्यापति को हिन्दी का कवि मानते हैं।^५ डॉ० सत्येन्द्र जी उनके मत का समर्थन

(3) The dialects of the Doab Braj Kanauji,

(4) The Purbi or Eastern dialects, Awadhi, Riwal Bhojpurī Magadhi and Malhāli,

Kollogg The grammar of the Hindi Language Chapter IV Page 65

१ देखिये—रवीन्द्र रचनावली में छावण उदाहरण, पृ० १६० ११ 'उदाहरण उदाहरण नामक प्रबन्ध।

२ हि० सा० इ, पृ० १७।

३ देखिये—पुरातन्त्र निर्वचनावली पृ० २११ और परिशिष्ट १ में पत्र संख्या १।

४ हि० सा० इ० भू० पृ० ११ और परिशिष्ट में पत्र संख्या ३।

५ हि० सा० मा० इ० पृ० १३।

६ देखिये—'हिन्दी काव्य विमर्श' में 'विद्यापति का हिन्दी-साहित्य में स्थान' नामक निबन्ध।

एकवचन (मं)

| | | | | | | | |
|------------|-------|---------|------|---------|---------------|---------|---------------------|
| मू० हिन्दी | क्या | कर्म | कारण | समयवाचक | प्रयोग | सम्बन्ध | व्यक्तिकरण |
| कन्धोन्धी | मै | मुझको | कैसे | धरे लिए | मुझसे | मेरा | मुझ, मैं वी पर । |
| बाब | मै | मोहि | कैसे | मोको | मो से | मेरो | मोये मोपर । |
| मारवाकी | मै ही | हो | कैसे | हो | मोसौं | मेरो | मोये मुझपरि, मुवै । |
| ईशाकी | है | मही | कैसे | मोहूँ | मही | मेरो | मही माई किळारे |
| बड़वाली | मै | मही | कैसे | मही | मही | मेरो | मही माए, मुओकर |
| कुमाऊनी | मै | मही | कैसे | मही | मही | मेरो | मही मा, मीपर |
| लैपाली | मै | मही | कैसे | मही | मही | मेरो | मही मा मरसब |
| ईशवाकी | मै | मो मोहि | कैसे | मो | मोहि, मोहिछन | मोर | मोमाहि |
| प्रजयी | मै | मोका | कैसे | मोठ | मोसे | मोर | मोपर, मोम |
| भोबपुरी | मै | हम | कैसे | हमरा | हमएहें | मोर | मोर मं, हमरा मं |
| पगही | हम | मोप | कैसे | इच्छन | मोपसे, हमएहें | मोर | मोर मं हमरा मं |
| दीक्षिती | हम | हमे | कैसे | हमएहें | मोराहें | हमार | मोर मं हमरा मं |
| | हमका | हममे | कैसे | हमरा | हमएहें | हमार | हमए, हमरे |

| बहुवचन (हम) | | प्रथमवचन | | तन्मध्य | | प्रथिकरण | |
|---------------------|------|------------|------|---------|------|----------|------|
| मू० शिखी | हम | हमें, हमको | हमसे | हमसे | हमसे | हमसे | हमसे |
| कम्पनी | हम | हमें, हमको | हमसे | हमसे | हमसे | हमसे | हमसे |
| बन | हम | हमें | हमसे | हमसे | हमसे | हमसे | हमसे |
| मारवाड़ी | हमें | हमें | हमसे | हमसे | हमसे | हमसे | हमसे |
| यड़वाली | हम | हमें | हमसे | हमसे | हमसे | हमसे | हमसे |
| कुमाऊँगी | हम | हमें | हमसे | हमसे | हमसे | हमसे | हमसे |
| नैपासी | हम | हमें | हमसे | हमसे | हमसे | हमसे | हमसे |
| बंसवाड़ी | हम | हमें | हमसे | हमसे | हमसे | हमसे | हमसे |
| प्रबपी | हम | हमें | हमसे | हमसे | हमसे | हमसे | हमसे |
| भोजपुरी | हम | हमें | हमसे | हमसे | हमसे | हमसे | हमसे |
| मगही | हम | हमें | हमसे | हमसे | हमसे | हमसे | हमसे |
| शैक्ती ^१ | हम | हमें | हमसे | हमसे | हमसे | हमसे | हमसे |

१ शिखी ग्राम, पृष्ठ १२५ ।
 २ इन शक्तिकार्यों में उन शक्तियों के सर्वनाम के रूपान्तर विवेक से जो शिखी की शक्तियों को शक्ति कहा जाता है। इतने यह स्पष्ट हो जाता है कि 'शैक्ती' की प्रवृत्ति शिखी की शक्तियों की परम्परा से सम्बन्धित है ।

करते हैं।^१ डॉ० बाबुदेवछरण अग्रवाल का मत है—मैथिली के साहित्य भाव, भाषा सम्भावनी* व्याकरण धारि के अध्ययन की दृष्टि से हिन्दी के अत्यंत मानता वरित है।^२ डॉ० बाबुदाम अग्रवाल भी मैथिली को हिन्दी की उपभाषा मानते हैं।^३ सुप्रसिद्ध—भाषा वैज्ञानिक डॉ० विश्वनाथप्रसाद भी का मत है—ब्रजभाषा धारणी राजस्थानी मारवाड़ी और मैथिली का प्रारम्भिक और समृद्ध-साहित्य है किन्तु अब भी अपने अपने क्षेत्रों की सीमाओं में साहित्यिक गहरों से उबीर हो जाती हैं। किन्तु जो व्याकरण लिखने एवं बोझने में प्रवृत्त हैं वह सबमें सामान्य है। सामान्य भाषा और सम्भावनी, सुबनात्मक वरित और परस्पर बुद्धिम्य होने के कारण अपने भाषाभाषियों को एक ही परिवार में आबद्ध कर रखा है। अब उनका एक ही भाषायी परिवार है, जो हिन्दी भाषा को सामान्य साहित्यिक एवं सांस्कृतिक आधार मानती हैं।^४ पं० विश्वनाथप्रसाद निय विद्या पति को हिन्दी का धारिकवि मानते हैं।^५

विद्यापति का बंगला पर प्रभाव

बंगाल और मिथिला प्रदेश का सम्बन्ध बहुत प्राचीन और गौरवपूर्ण रहा है। मिथिला और बंगाल का सांस्कृतिक आदान प्रदान बहुत पुराना है। सुप्रसिद्ध विद्वान डॉ० बीनेधरचन्द्र सेन लिखते हैं “हमारे अनेक प्रथम श्रेणी के कवि विद्यापति के सिष्य हैं। वह सिष्यत्व हमारी नूतन कथा नहीं है। मिथिला के राजपि जनक

१ देखिये साहित्य संघ के एक संक में भया विद्यापति हिन्दी के है ? नामक लेख।

* देखिये 'विद्यापति पदावली' के अन्त में अनेकनाथ मिश्र द्वारा संकलित सम्भावनी।

२ परिशिष्ट में पत्र संख्या २।

३ परिशिष्ट में पत्र संख्या ४।

४ Some of these like Brajbhasa Awadhi Bajsthani or Marwari and Maithili have early and rich literature of their own and are still animated by literary urges within their respective territorial limits. But by working out the grammar operating into their written and speech forms, that as much in common between them. The mutual intelligibility based on a community of structure vocabulary and creative will has bound their speakers in a close fellowship and they all now belong to one speech-community looking upon Hindi of their common literary and cultural language.

(K. S. I L. Page 25)

५ देखिए—हिन्दुस्तान १२ जून १९२९ ई०।

याज्ञवल्क्य गार्गी मन्वेयी गौतम और कपिल सारे भारत के गुरु स्थानीय हैं। मिथिला राजा इक्ष्वाकु के चार पुत्रों ने विमाता के कुशत्रों से ताड़ित होकर कपिसवस्तु में नया राज्य स्थापित किया। बुद्धदेव उही बंध में उत्पन्न हुए हैं। नवद्वीप का प्रजेय होम मिथिला के सिष्य काणा धिरोमणि द्वारा प्रचिष्ठित हुआ है।^१ इससे प्रकट है कि मिथिला का बंगाल पर कितना सांस्कृतिक प्रभाव है। सर्वत्र से मिथिला विद्या का बड़ा केन्द्र रहा है। भारत के लोटी के संस्कृत के विद्वान प्रायः भी मिथिला में मिलते हैं। मथिली भाषा एवं साहित्य का प्रभाव बंगला भाषा और साहित्य पर गम्भीर और सुभातरकारी है। इससे बड़ा प्रभाव का प्रमाण क्या हो सकता है? मैथिली एवं बंगला के सम्पर्क से प्रबहुदृष्ट पर प्राचारित एक नयी साहित्यिक भाषा का जन्म हुआ जिसे हम ब्रजबुमि कहते हैं। मैथिली भाषा एक साहित्य का सबसे बड़ा महाकवि विद्यापति ठाकुर है। उनका प्रभाव बंगला भाषा एवं साहित्य पर बंगला के धार्मिक मध्ययुग से लेकर आधुनिक विश्वकवि रबीन्द्रनाथ ठाकुर तक जाता है। चैतन्य महाप्रभु विद्यापति के एक सुनकर भावविभोर हो जाया करते थे। ऐसी ब्रह्मण्य पदावली कौन सी है, जिस पर विद्यापति का प्रभाव नहीं हो। बंगाल विद्यापति के पदों से इतना भावमग्न हुआ है कि उसने उनको बंगाली का कवि मान लिया है।

डा० बीनेशचन्द्र सेन लिखते हैं कि विद्यापति बंगाली कवि नहीं हैं फिर भी उनका नाम बंगला साहित्य के इतिहास में लिखते हैं। विद्यापति के पद समस्त ब्रह्मण्य पदावलीयों में स्थान पा गए हैं और वे प्रत्येक शहर पर गए जाते हैं^२। सप्तम्य विद्यापति के पद बंगला पदों में ब्रज और पानी की तरह युक्तमिल गए हैं। उनका पूर्णतया बंगालीकरण हो गया है। उनमें भेद करना बहुत कठिन है। जो भुक्तप्राय पद हैं वे तो अब केवल बंगला में ही मिलते हैं जो मैथिल रूप से मैथिली में प्रयाप्य हैं^३। कई सताब्दी से वे पद अब बंगला रूप धारण किए हुए हैं। पूर्णतया प्रथिमाप्य हैं। जार्ज ग्रिमसन का मत है 'प्रसिद्ध ब्रह्मण्य सुधारक चैतन्य महाप्रभु ने

१ सामावेर अनेक गुण प्रथम श्रेणीर कवि विद्यापतिर सिष्य । मिथिलार सिष्यत्व सामावेर सूतक कथा नहे । मिथिलार राजपि अनक याज्ञवल्क्य गार्गी, मन्वेयी गौतम कपिल—समस्त भारतवर्षर गुरुस्थानीय । मिथिलाराज इक्ष्वाकुर चारि पुत्र विमातार पक्रान्ते ताड़ित हुइया कपिसवस्तुते नवरज्य स्थापन करेन बुद्धदेव छेइ बसोदमय । नवद्वीपेर प्रजेयटोल मिथिलार सिष्य काणा धिरोमणि द्वारा प्रचिष्ठित ।
(बं० भा० प्रो० सा० पृ० २२२)

२ हि० ब० ला० मि० पृ० ११४ ।

३ ब्रह्मण्य—अनम प्रथमि हाम रूप नेहारिमु । तोपि नयनना ठिरपित मेस ।

विद्यापति को अपनाया है।^१ इसी कारण उनके गीत बंगालियों के घर में इसी तरह गाए जाते हैं जिस प्रकार बाइबिल संदेशों के घर में। उनके पदों को छोड़ा मोड़ा गया है बढ़ाया गया है छोटा किया गया है और उनका अनुकरण किया गया है जिससे एक नयी भाषा बनी है जिसे ब्रजबुद्धि कहते हैं।^२ डा० सुनीति कुमार चटर्जी लिखते हैं विद्यापति ठाकुर (श्रीरङ्गी सताम्बी के भ्रात और पद्महर्षी सताम्बी के प्रारम्भ) मैथिली के सबसे बड़े महाकवि हैं। विद्यापति के राधाकृष्ण के प्रेमगीत भारतीय वीतिकाम्य के सुन्दरतम पुष्प हैं। इन्होंने बंगाल-बैष्णव गीतिकाम्य को बहुत प्रभावित किया है। उनके पद बंगाल में कैसे बंगालियों द्वारा प्रशंसित हुए, अपनाए गए और छोलाहरी सताम्बी से उनका प्रभाव बना था रहा है। बंगाल में एक नई काम्य की भाषा बनी जो मैथिली बंगला और पश्चिमी हिन्दी का मिश्रण है। जो बंगाल में राधा-कृष्ण के प्रेम गीतों के लिए बहुत फँसी है। इस मिश्रित भाषा को ब्रजबुद्धि कहते हैं। यह कृष्ण के बचपन जीवन की भूमि के भीत जाती है। प्रबन्धि ब्रजभाषा से यह अलग भाषा है। इस भाषा में जो वीतिकाम्य लिखा गया है वह बंगाल की अनुपम निधि है।^३ डॉ० सुकुमार सेन लिखते हैं बंगाल में छोलाहरी सताम्बी के साहित्य में इन्हीं मैथिली शब्दों का प्रभाव सार्थक हुआ था। ब्रजबुद्धि में रचित वैष्णव परावसी सर्वशोध में नहीं तो अधिक परिमाण में मैथिली परावसी का अनुसरण किया गया था। यह प्रसिद्धांकित है कि ब्रजबुद्धि के मूल में मैथिली ही प्रधान उपादान है। अथर्व प्रबद्ध का भी प्रभाव है। ब्रजबुद्धि में जो पश्चिमी हिन्दी के पद और शब्द रीति पायी जाती है, वह प्रधानतः प्रबद्ध से ही आयी हुई कह सकते हैं।^४

डा० सुमद्र पन् ने बंगला पर मैथिली के प्रभाव का इस प्रकार बर्णन किया है —

१ 'बड़ीबाघ विद्यापति चरित नाटक वीति' स्वल्प रामानन्दे सने महाप्रभु राबिदिने भाये गुने परम प्रागन्दे । श्री० प०

२ सी० ए० पाई (हि० में हि० पृ० १६७)

३ श्री० बी० बी० सी० पृ० १०३।

४ बंगलाय पोड़क अतकेर परावसी-साहित्य एह मैथिल पानबुद्धि प्रभाव सार्थक हइयाकिम्ब । ब्रजबुद्धिसे रचित वैष्णव परावसी सर्वशोध ना ह्योक् प्रबिक्त परिमाणे मे मैथिल परावसीर अनुसरण करियासे ताहा प्रबिक्तारिठ । ब्रजबुद्धि भाषार गठने मैथिलई प्रधान उपादान । अथर्व प्रबद्धैर प्रभाव भी मानिठे हव । ब्रजबुद्धिसे के पश्चिमा हिन्दीर पद श्री शब्द रीति पायोया बाव ताहा प्रधानतः प्रबद्ध हइठे प्रागत बनिया मने करि ।

(श्री० पा० ६० प्र० ख० पृ० ८१)

(क) कुछ पद जिनकी भाषा बिस्फुल मैपिसी है।

(ख) कुछ पद जो मैपिसी एवं बँगला मिश्रित हैं।

(ग) कुछ पद जो बिगुल बँगला हैं।

(घ) कुछ पद जो बेपसा में हैं, जिनमें ब्रजभाषा के पद मिले हुए हैं।^१

शाचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जी लिखते हैं कि बिद्यापति की पदावली ने धाये खमकर बंगाल भाषाम और उड़ीसा के बँगुल भक्तों को खूब प्रभावित किया और यह उन प्रदेशों के भक्ति-साहित्य में नयी प्रेरणा और नयी प्राणधारा संचारित करने में समर्थ हुई। इसीलिए पूर्वी प्रदेशों में सबत्र यह पुस्तक धर्मग्रन्थ की महिमा पा सकी है^२। मैपिसी साहित्य के इतिहासकार डा० जयकांत मिश्र बंगाल में बिद्यापति के प्रभाव के बारे में लिखते हैं—बंगाल भाषाम और उड़ीसा में ये बड़े बँगुल माने जाते हैं। पूर्वी भारत के सर्वप्रथम धीतिकार हैं, जिन्होंने एक बोमबास की साधारण भाषा को साहित्यिक स्वरूप प्रदान किया है। बिद्यापति और खंडीबास का नाम धाम-धाम लिया जाता है। रसेसचन्द्र दत्त जैसे विद्वान् कहते हैं, बिद्यापति एवं खंडीबास का मिलन नहीं हुआ था खंडीबास की कविता बिद्यापति से परवर्ती है। वे बिद्यापति द्वारा प्रभावित हैं बिदेयकर उनके धीहृष्य संकीर्तन में देखा जा सकता है। खंडीबास की पदावली में जो ब्रजभुक्ति के रूप हैं वे कहां से आए हैं? यह धारण्यपूर्ण प्रस्न है।^३

बिद्यापति के अनुकरण पर जो गीत-धीसी बनी, वह समयम छोड़े तीन ही धाक तक बंगालियों का कण्ठहार बनी रही। बिद्यापति का प्रभाव गीतिकाव्य कार के रूप में ही धमिक हुआ है। वे रूप सीन्दर्य एव मौजन के कवि हैं। बिद्यापति सीकिक प्रेम के कवि हैं, किन्तु भक्तों ने सबत्र उनके पदों का धर्म धाध्यातममूसक किया है। राधा और हृष्य का प्रेम सांसारिक नर-नारी का प्रेम मही है। वह धारमा और परमात्मा के धाध्यातिक प्रेम का प्रतीक है। उनका बिरह मुमुक्षु धारमा की परमात्मा से मिलन की धाकुलता है।

बिद्यापति ने अपने धीतों से भारत में जो धाधुयं बिखेरा है। उस धाधुयं की रंधा में बंगालियों ने बहुत धाहरे गोले भगाये हैं। सचमुच बिद्यापति धाधुक बंगालियों के धातीय कवि माने जाते हैं। पहले कहा जा चुका है कि वे मू नार या धाधि रस के कवि हैं। उनके गीतों में भू और स्वरलोक का संगम है। कवि धरती के गीत पाते हैं और धंत में स्वर्गीय धानर्ब बिधीर्ण करते हैं। धाव एवं धाषा के रूप में बिद्यापति का प्रभाव बेपसा भाषा एवं साहित्य पर धमिध और धमिध है। सचमुच वे बँगला

१ हि० मै० बि० प० का० पृ० १६८।

२ हिन्दी साहित्य पृ० ७६।

३ ए हिस्ट्री धाव मैपिसी सिटरेबर कस्ट वास्पूम पृ० १६७।

साहित्य के साथ एकाकार हो गये हैं। वैष्णव बंगला-साहित्य के निर्माण में इनका सहयोग एवं देन अनुपम है। सखवा गीत चिंतामणि (१९०० ई०) पदामृत समुद्र (१७२५) पर कल्पतरु (१७१०) संकीर्तनामृत (१७७१) पररस सार (१७२१) परकल्प मतिका (१८४६) धीर-पर तरंगिणी (१६०३) अप्रकाशित पररत्नावली (परकल्पतरु की पूरक) परमेव' धीर इस प्रकार के विद्यापति के पर वैष्णव परावसियों में प्रचुर रूप में पाए जाते हैं।

६ :

उपसंहार

इस सम्बन्ध में भारत की सांस्कृतिक एकता का कारण यहाँ का जीवनदर्शन पौराणिक गायामें एवं संस्कृत भाषा एवं साहित्य बताया गया है। वही सांस्कृतिक ऐक्य हिन्दी प्रवेश धीरे बर प्रवेश में प्रतिफलित हुआ है। हिन्दी धीरे बंगला ही उस महान सांस्कृतिक बरोहर की उत्तराधिकारिणी बनी है। मध्यवेस इस संस्कृति का केन्द्रस्थल रहा है। इसी प्रदेश में सर्वत्र से भारत के इतिहास एवं जीवन के हर क्षेत्र में मूल्य किया है। यहाँ की भाषामें ही कमज भारत की अन्य भाषाओं को प्रभावित करती रही हैं। हिन्दी इसी प्रदेश की भाषा है। भूत बंगला पर इसका प्रभाव इस कारण पड़ा है। भक्ति ब्राम्बोसन एवं मुस्लिम साम्राज्य में इस प्रभाव में योगदान दिया है। हिन्दी धीरे बंगला का स्रोत अपभ्रंश भाषा धीरे साहित्य है। अपभ्रंश साहित्य के विषय में बहुत विचार रहा है किन्तु धीरेसंगी अपभ्रंश प्रमुख मानी गयी है। धीरेसंगी अपभ्रंश में ही पश्चिम हिन्दी के संक्रु जिनो हैं। सियों नामों की साहित्यिक परम्परा अपभ्रंश से ही इसी भाषामें में चलने लगी थी तब नामों में सर्वप्रथमघासी बुध धीरेसंगी का प्रभाव हिन्दी के माध्यम से कुछ बंगला पर पड़ा। हिन्दी के ब्राह्म कीर्तिकाम्यकार विद्यापति ठाकुर माने जाते हैं। विद्यापति का प्रभाव बंगला धीरे बंगला भाषा एवं साहित्य पर संकीर गुस्तर धीरे मुगलनरकारी है। जबकि विद्यापति की परावसी के अनुकरण पर बनी है। जो सियों तक बंगाली वैष्णव-साहित्य का माध्यम बनी रही है। मैथिली भाषा एवं विद्यापति को लेकर बहुत विचार रहा है। प्रत्येक विद्वान् के मत विपे गये हैं। हिन्दी के विद्वान् इनको हिन्दी का कवि मानते हैं। क्योंकि वे धीरेसंगी परंपरा में प्रचलित के कवि भी हैं। उनकी कीर्तिलता एवं कीर्तिपताका पश्चिमी हिन्दी के निकट आ जाती हैं। इनकी परावसी में हिन्दी ब्राम्बोसनी का प्राचुर्य है।

परमेव इस्तलिखित ग्रंथ है। यह सांति निकेतन पुस्तिकामा में सुरलित है।

यह वैष्णव परावसी का ग्रंथ है।

मठ इनको हिन्दी का कवि मान कर बैंगला पर प्रभाव विस्तारया गया है। इनका प्रभाव प्राथमिक काल में मुख्यतः रबीन्द्रनाथ ठाकुर तक जाता है। सामान्यतया, विद्यापति बैंगाली बप्पुब साहित्य के प्रकाशदीप एवं प्रेरणाकेन्द्र हैं। विद्यापतया गौड़ीय बप्पुब (ब्रजभूमि) साहित्य के मेखरुद्र हैं।

परिशिष्ट

मयिली के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों से जो पत्र-व्यवहार हुआ है। उसका उल्लेख भी आवश्यक है।

१ राहुल—सांकृत्यायन

द्वारा पञ्चाब प्रायुर्वेदिक फार्मोसी फ़ारमोसी भाकेंद्र प्रमोतसर,

२२ १२ २७

प्रिय ब्रह्मानन्द जी

हिन्दी तो ब्रज, राजस्थानी प्रकृषी की तरह मयिली को भी अपनी मान चुकी है। उसके सिधे जो ब्रजभाषा की स्थिति है वही मैयिली की भी है।

प्रापका

राहुल

२ डा० वासुदेवशरण प्रयागल

काशी विद्याविद्यालय

१४ १ २६

प्रियवर,

मैयिली साहित्य भाव भाषा राज्यावसी व्याकरण प्रादि के प्रप्यदन की दृष्टि से हिन्दी के ही अन्तर्गत मानना उचित है।

मन्वीय

वासुदेवशरण

३ डा० पीरेन्द्र वर्मा

प्रयाग

११ १ २६

प्रिय महोदय

मैयिली का हिन्दी प्रवेश की एक महत्वपूर्ण उपमाया मानता हूँ और इसलिये हिन्दी भाषा और साहित्य के इतिहासों में इस उपमाया का भी समावेश किया जाता है।

मन्वीय

पीरेन्द्र वर्मा

४ डा० बाबूराम सक्सेना

प्रथम २

३१ १ ३६

प्रियवर,

भाषा की गठन की दृष्टि से मैथिली बिहारी भाषा समूह की एक बाणी है। उसे प्राचीन साहित्य की दृष्टि से स्वतंत्र भाषा का पद मिला है पर कार्यक्रम से बाधित अथवा किसी बाणी की प्रभुता मानकर बोली अथवा उपभाषा का स्थान ग्रहण कर लेती हैं। इसलिये प्रथमी और डा० जो सम्पन्न भाषाएँ भी प्रायः हिन्दी के अन्तर्गत हैं। बिहार की भी प्रायः प्रमुख ऐतनिक व्यवहार की भाषा लड़ी बोली हिन्दी है। यद्यपि बोलचाल में भोजपुरी मगही और मयिली हैं।

धुमेष्णु

बाबूराम सक्सेना

द्वितीय अध्याय

आरम्भिक भक्ति-आन्दोलन का इतिहास

१

मध्यकाल (चैतन्य-वैष्णव-युग १४००-१७०० ई०)

बौद्धा के वैष्णव-साहित्य पर हिन्दी प्रभाव का सिद्धार्थन कराने के पूर्वी भारतीय भक्तिवाद के उद्गम और विकास पर अतीव संक्षेप में कुछ पंक्तियों द्वारा प्रकाश डालना आवश्यक प्रतीत होता है।

भारतीय सांस्कृतिक परम्परा का सूत्र सबब अविच्छिन्न रहा है। संस्कृति की धारणा एक रही है किन्तु उसके अरीर में अनेक बार ऐतिहासिक राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियों के अंतर-वास में पड़कर अनेक रूप धारण किए हैं।

भारत के मध्ययुगीन इतिहास में एक बहुत बड़ी क्रान्ति हुई जिसे पुरातन संस्कृति का भक्ति-आन्दोलन के रूप में पुनर्जागरण कह सकते हैं। मनुष्य की प्रवृत्तियाँ या तो कम प्रकट होती हैं या ज्ञान प्रदान। किन्तु मनुष्य की एक और स्वाभाविक प्रवृत्ति है जिसे हम हृद्य का अट्टायुक्त भावावेग या भक्ति कहते हैं।

भारतीय भक्तिमार्ग के विषय में बहुत मतभेद है। विशेषकर भारतीय भक्तिवाद को अनेक विद्वान विदेशियों की श्रेण मानते हैं उनमें से कुछ विद्वानों चीन बेबर, बाय जार्ज ग्रियंसन^१ और हॉपकिंस का मत है कि भारतीय भक्तिवाद ईसायत की श्रेण है। कोई कोई-विद्वान इसको इस्लाम का प्रभाव भी मानते हैं।

किन्तु अनेक पूर्वे और पश्चिम के विद्वान उक्त मतों का प्रत्याख्यान करते हैं। वैसे कि बिहबिस्म्याट वार्धनिक डा० सक्पस्ती राधाकृष्णन का मत है, अब हम महाभारत के सबप्रमुख धार्मिक सिद्धान्त वासुदेवहृष्य मत के सम्बन्ध में विचार करते हैं, जो श्रीमद्भागवद् गीता और धार्मिक वैष्णव धर्म का आधार है। मार्वे मायवद् धर्म के विकास में आर सोपानों का उल्लेख करते हैं, प्रथम सोपान में इनका अस्तित्व

१ Journal of the Royal Asiatic Society 1909 page 311—39
Encyclopaedia of Religion and Ethics Part II Article on
Bhakti Marg. page 539—557

४ डा० बाबूराम सक्सेना

प्रयाग २

११ १ ५६

प्रियवर

भाषा की मूल की दृष्टि से मैबिली बिहारी भाषा समूह की एक बाणी है। उसे प्राचीन साहित्य की दृष्टि से स्वतंत्र भाषा का पद मिला है पर कामरूप से बाणियाँ अन्य किसी बाणी की प्रभुता मानकर बोली बचवा उपभाषा का स्थान ग्रहण कर लेती हैं। इसलिये भवभी धीरे ब्रज जो सम्पूर्ण भाषाएँ थीं मात्र हिन्दी के अन्तर्गत हैं। बिहार की भी मात्र प्रमुख वैदिक व्यवहार की भाषा बड़ी बोली हिन्दी है। यद्यपि बोलचाल में भीजपुरी मगही और मैबिली हैं।

शुभेच्छु

बाबूराम सक्सेना

द्वितीय अध्याय

आरम्भिक भक्ति-आन्दोलन का इतिहास

१

मध्यकाल (चैतन्य-वैष्णव युग १४००-१७०० ई०)

बंगाल के कल्याण-साहित्य पर हिन्दी-प्रभाव का विवक्षित कराने के पूर्वी भारतीय भक्तिवाद के उद्गम और विकास पर अतीव संशय में कुछ पण्डितों द्वारा प्रकाश डालना आवश्यक प्रतीत होता है।

भारतीय सांस्कृतिक परम्परा का सूत्र सर्वत्र अविच्छिन्न रहा है। संस्कृति की आत्मा एक रही है, किन्तु उसके शरीर ने अनेक बार ऐतिहासिक राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियों के भँवर-जाल में पड़कर अनेक रूप धारण किए हैं।

भारत के मध्ययुगीन इतिहास में एक बहुत बड़ी अन्ति हुई जिसे पुरातन संस्कृति का भक्ति-आन्दोलन के रूप में पुनर्जागरण कह सकते हैं। मनुष्य की प्रकृति या तो कम प्रकाश होती है या ज्ञान प्रदान। किन्तु मनुष्य की एक और स्वामाजिक प्रकृति है जिसे हम हृदय का यज्ञायुक्त मावावेग या भक्ति कहते हैं।

भारतीय भक्तिमार्ग के विषय में बहुत मतभेद है। विशेषकर, भारतीय भक्तिवाद को अनेक विद्वान विदेशियों की दृष्टि मानते हैं उनमें से कुछ विद्वानों सील बेबर, बार्न बाज प्रिंसन^१ और हॉपकिंस का मत है कि भारतीय भक्तिवाद ईसायत की दृष्टि है। कोई कोई विद्वान इसको इस्लाम का प्रभाव भी मानते हैं।

किन्तु अनेक पूर्व और पश्चिम के विद्वान उक्त मतों का प्रत्याख्यान करते हैं। जैसे कि विश्वविख्यात दार्शनिक डा० सर्वेपल्ली रामाकृष्णन का मत है जब हम महाभारत के सर्वप्रमुख धार्मिक सिद्धान्त वासुदेवकृष्ण मत के सम्बन्ध में विचार करते हैं, श्री श्रीमद्भागवत् गीता और आधुनिक वैष्णव धर्म का आधार है। गार्व भागवत् धर्म के विकास में बार घोषणों का उल्लेख करते हैं, प्रथम घोषण में इनका अस्तित्व

^१ Journal of the Royal Asiatic Society 1909 page 311—30
Encyclopaedia of Religion and Ethics Part II Article on
Bhakti Marg page 539—557

ब्राह्मण धर्म से स्वतन्त्र था। पार्श्व के मतानुसार इसके मूलतत्त्व ईसा पूर्व से तीसरी शती तक प्रचलित थे ये वासुदेव कृष्ण द्वारा सर्व-विभूत एकेस्वरवाच का साक्ष्ययोग के उपयोग से प्रकृत नभित के आधार पर यमीर धार्मिक माननाओं और धर्म प्रवर्तक का ईषीकरण प्राधि हैं।^१

भाग्य के फिर सिद्धते हैं हमारे पास भागवत् धर्म को ईसायत से पूर्ववर्ती सिद्ध करने के लिये पुरातत्व सम्बन्धी प्रमाण भी हैं। भागवत् हेतियोडोरस(Helivdura) ने वासुदेव के सम्मान में इच्छाकृत ध्वज स्तम्भ का निर्माण कराया था। यह दो शती ईसवी पूर्व क बलनगर के सिन्धालेख में प्रकृत है। भागवत् सकर्णख और वासुदेव की पूजा का उत्कल्ल घोसुम्भी सिन्धालेख में है। तीसरे नाताघाट में स्थित एक शती ईसवी पूर्व के सिन्धालेख में सकर्णख और वासुदेव की प्रकृति है। उक्त प्रमाणों से स्पष्ट है कि भारत का एकेस्वरवादी धर्म विदेशी प्रमाणों से पूर्वतया मुक्त है और युग के जीवन एवं विचारों का स्वामाधिक विकास है।^२

१ We now pass to the most important religious doctrine of the Mahabharata the Vasudeva Krishna cult, which is the basis of the Bhagavadgita as well as of modern Vaisnavism Garbe traces four different stages in the growth of the Bhagavata religion. In the first stage it had an existence independent of Bramahanaism The central features of this stage which in the opinion of Garbe continued till 300 B C are the founding of a popular monotheism by Krishna Vasudeva its alliance with Sankhy yogh the deification of the founder of the religion and a deepened religious sentiment on the basis of Bhakti. Indian philosophy Page 489

२ We have also archaeological evidences to prove the priority of the Bhagavata religion to the rise of christianity The Beonagar inscription of the second century B. C mentions the creation of a flag staff with Garuda's image in honour of Vasudeva by Helivdora, the Bhagavata. The Ghosundi inscription speaks of the worship of Bhagavata Sankarsana and Vasudeva A third inscription of the first century B. C. existing at Nansghat contains an adoration of Sankarsana and Vasudeva. From all this it is evident that the monothestic religion of India is absolutely independent of any foreign influences and is the natural outcome of the life and thought of the period. Vide P 301

भारत को भक्ति परम्परा उतनी ही प्राचीन है जितना कि वैदिक-साहित्य । वैदिक काल में धार्मिक एवं प्राध्यात्मिक साधना के तीन अंग धन चुके थे । जिन्हें हम कर्मकाण्ड, उपासनाकाण्ड और ज्ञानकाण्ड कहते हैं । सम्मुख उपासनाकाण्ड के गर्भ में ही भक्तिवाद के संकुर सिधे हैं । भक्ति का सम्बन्ध हृदय से है । फिर यह कहना सरासर झूठ होगी कि भक्तिवाद भारत को ईसाइयत या इस्लाम की देन है । हमारा मुसलम (यायत्री मंत्र) भक्ति का उन्मूलकतम दृष्टान्त है । बेबों में अनेक मन्त्र हैं, जिनको हम भारतीय भक्तिवाद का जनक^१ कह सकते हैं । ऋषिदेव का ऋषि भिन्नता है— 'हे परमेश्वर्य-सम्पन्न भयबन् ! हे सर्वपुरातन सनातन, घासवठ प्रभो ! यहाँ घापके अस्तित्व से ठेँचा किसी का भी अस्तित्व नहीं है । घापका ही अस्तित्व सर्वोत्तम है । यहाँ घापकी तुलना में कोई भी ज्ञानी बेव नहीं है । घाप जो कर रहे हैं, घावे जो कुछ करमें, उसका उत्पन्न हुए और होने वाले प्राणियों में से कोई भी नहीं जानता । घाप का अस्तित्व और घापका ज्ञान समुपम है^२ ।'

एनसाइक्लोपीडिया ऑफ रिजिजन एंड एथीक्स में लिखा है— 'भक्तिमत केवल अमभक्तिक देव की ओर नहीं प्रत्युत एक देव की ओर संकेत करता है । वास्तव में यह धार्मिक विचार का एकेइकरवादी दृष्टिकोण है । यदि हम विचार करते हैं कि भक्ति एक धार्मिक पारिभाषिक शब्द के रूप में ईसा से थोड़ी शताब्दी पूर्व नहीं मिलता । किन्तु यह महत्वपूर्ण अनुसंधान का विषय है कि हम इसकी प्रतिनिधि भावना की कहीं तक लोभ कर सकते हैं । भारत में यह धारणा बहुत प्राचीन है बहुधा हर्षे ऐसी बातें मिलती हैं जिनसे वैदिक प्रायनामों से कोई भेद नहीं कर सकते । विशेषकर उनसे जो बरुण देवता को समर्पित हैं^३ ।

१ देखिये—डा० मुन्तीराम जी का प्रबन्ध 'भक्ति का विकास' चतुर्थ अध्याय पृष्ठ ११२, २३९ ।

२ अनुसन्धा से मध्वम्भकिन्तु न स्वादां अस्ति देवता विद्वान् ।
न चायमानो नसते न चातो धानि करिष्या कुशुहि प्रबुध ॥

(म० १११६११६)

३ Devotional Faith implies not only a personal God, but one God. It is essentially a monotheistic attitude of the religious sense. If there we assume that the word Bhakti, as a religious technical term can not be traced to a period earlier than 4th century B. C. It is important to inquire how far back we can trace the feeling which it represents. This feeling was very old in India. We occasionally come across what it is difficult to distinguish from Bhakti even in Vedic Hymns especially those dedicated to Varuna.

धतः वैदिक युग के बाद भक्ति का सूत्र भागवत-धर्म के रूप में दिखाई पड़ने लगा। जसा कि हिन्दी के सुप्रसिद्ध विद्वानों के मत हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल लिखते हैं—“धर्म की भावनात्मक अनुभूति या भक्ति बिचका सूत्रपाठ महाभारत काल में धीरे बिस्तृत प्रवर्तन पुराणकाल में हुआ वा कभी कहीं बबती कभी कहीं उभरती किसी प्रकार बसी धा रही बी”।

बाबू गुसाबरायजी का मत है—“भारतधर्म में ईश्वर प्राप्ति वा सद्बति के ज्ञान भक्ति धीर कर्म ये तीन मार्ग माने गये हैं। ये तीन मार्ग आदिकास से बलै धाये हैं किन्तु कभी किसी की प्रबालता रही धीर कभी किसी की। भक्ति-मार्ग मामब प्रकृति के अनुकूल होने के कारण लोकप्रिय रहा है—आदित्यानामहं विष्णुः। प्राचीनकाल में यह भावबत-धर्म के नाम से प्रख्यात बा। इसी को महामाख में ‘पौषराज धर्म’ धीर ‘साइबत धर्म’ भी कहा है। धीमधूमपवद्गीता में भक्ति धीर अखरावति के भाव प्राचुर्य के साब धाये जाते हैं (सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरत्सुं बब—गीता १८।१६)। ईश्वरि गारव भावबतधर्म के मुख्य आचार्य माने गये हैं। इन्होंने धपने भक्ति सूत्रों में भक्ति को ज्ञान की धपेबा प्रबालता बी है”। डा० मुन्दीरामजी का कपन है—“पतंजलि ने पाणिनि की अष्टाध्यायी सूत्र ४ ३ १८ पर जो धाम्य सिखा है, उसके अनुसार बासुदेव ईश्वर का नाम है बिचकी पूबा की जाती है। धतः धायबतों का धाराध्य ईश बासुदेव धीर उनके नाम से प्रबलित सम्प्रदाय विक्रम संबत् से कई सी बर्ष पूर्व ही इस देश में प्रतिष्ठित हो गये थे। भागबत अख इतना धर्म गनित समझ जाता धा कि बिब सम्प्रदाय बासे भी धपने को सिब भागबत कहने में प्रतिष्ठा का धनुमब करते थे”।

मध्ययुगीन भक्ति-आन्दोलन का इतिहास

वैदिककालीन भक्ति की बंयबारा धीर भागबतकालीन भक्ति की समुता बारा का पूर्ण प्रबाह मध्ययुगीन बेष्याब भक्ति-आन्दोलन में इष्टिपोबर होता है। कालक्रम से वैदिकयुगीन भक्ति में कुछ परिवर्तन हो बबा बा धीर भावबत भक्ति में बसकी धारता ठो बही रही किन्तु रूप में परिवर्तन हो गया धा। धतः मध्ययुगीन भक्ति आन्दोलन पध्मराजत भक्ति की बाप का धनेक रूपों में सहज बिकास है।

किन्तु यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि मध्यकाल में भक्ति की बाप बखिए से धाई। धालबार मबत इसके प्रवर्तक माने जाते हैं, बैसेा कि भागबतकार धी

१ हिन्दी साहित्य का इतिहास पृष्ठ ६१।

२ हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास पृष्ठ ६०।

३ भक्ति का बिकास पृष्ठ २४१।

दक्षिण को ही भक्ति ग्रन्थोत्पत्ति का मूल स्रोत मानते हैं। द्राविड़ देश में उत्पन्न हुई कर्नाटक में बृद्धि को प्राप्त हुई कुछ-कुछ महाराष्ट्र में इसकी उन्नति हुई, गुजरात में बृद्धावस्था को प्राप्त हुई^१। अतः दक्षिण से यह धारा उत्तर में भाई इसका प्रमाण कबीरदास जी के शब्दों में इस प्रकार है —

भक्ति बक्षिण ज्यमी साए रामानन्द
प्रकट करी कबीर ने सप्तदीप नव जण्ड ॥

विद्वानों को समझे हो सकता है कि इससे पहले उत्तरी भारत में भक्ति नाम की कोई वस्तु थी या नहीं। दक्षिण में भक्ति का उदय होने पर यूरोपीय विद्वानों को धपता मठ पुष्ट करने का आसार मिस जाता है। क्योंकि वे इसे ईसाई मत का प्रभाव मानते हैं। क्योंकि भारत में ईसाई धर्म सप्तप्रथम दक्षिण से आया। जैसे जार्ज प्रियर्सन का कथन है—बिजनी की जमक की तरह ईसाई भक्तिवाद का प्रभाव दक्षिण से उत्तर को आया।

किन्तु दक्षिण में ही संस्कार के घड़ैतवाद का अधिक प्रचार रहा। इसी संस्कार वेदान्त की प्रतिक्रियास्वरूप, सगुण उपासकों का ग्रन्थोत्पत्ति जन्मा। भक्ति बुद्धिवाद के प्रति मधुर हृदय का विरोध है। क्योंकि भगवान् संकराचार्य का प्राथमिक भी दक्षिण में ही हुआ था। वैष्णव धर्मियों की जन्मभूमि भी दक्षिण ही है। भगवान् संस्कार शोपनिषदिक घड़ैतवाद के प्रचारक हैं। रामानुजाचार्य ने संस्कार घड़ैत की अपेक्षा विविष्टाईतवाद की प्रतिष्ठा की। माध्वाचार्य ने ईतवाद को प्रधान माना। विष्णु स्वामी ने मुद्राईत का प्रतिपादन किया। निम्बार्क स्वामी ने ईताईत का मञ्ज किया।

अब प्रश्न उठता है कि क्या इससे पहले उत्तरी भारत में भक्ति नाम की कोई साधना नहीं थी? इसका उत्तर इस प्रकार दिया जा सकता है कि जिस प्रकार संकराचार्य से भी पूब शोपनिषदिक घड़ैतवाद का किन्तु सिद्धान्त एवं व्यवहार रूप में उसके प्रबलतम प्रचारक भगवान् संस्कार ही थे। इसी प्रकार उत्तरी भारत में वैष्णवाचार्यों से पहले भी भक्ति साधना का एक धंग था। जैसा कि ब्रह्म साहित्य से सिद्ध होता है। किन्तु वैष्णव भक्तिवाद के प्रबल प्रचारक तो वे आचार्य ही थे। उत्तरी भारत में उस समय भक्ति ग्रन्थोत्पत्ति की बड़ी आवश्यकता थी। क्योंकि उस समय माघ पंच का आरंभ था। उसी परम्परा की प्रतिक्रिया में तुलसीदासजी जैसे भक्तसिरोमणि तक ने गोरक्षपदियों को फटकारा है —

१ उत्पत्ति द्राविड़ साहू बृद्धि कर्णाटके गता।

नवभित्त इदचित् महाराष्ट्र गुर्जेरी जीलंतागता।

(भागवत १।२५ प्रथम जण्ड, पृष्ठ १)

घोरक बयापो जोनु भक्ति भगापो लोय ।

तथा—

घलछही कालके राम नाम बप मीचु ॥

पठन्य महाप्रभु से पूर्व बंगाल में सिद्धों और नाचों का बोलबाला था। बौद्ध सिद्धों की प्रतिक्रियास्वरूप नाच-वंच का जन्म हुआ। नाचों की प्रतिक्रिया बप्पण धर्म में हुई। घट बप्पणभक्ति का धाम्बोसन उत्कालीन विचारधारा की प्रतिक्रिया स्वरूप उत्पन्न हुआ था।

इस सम्बन्ध में यह विचाररुमी विषय है कि ब्रह्मिण और उत्तर भारत की भक्ति परम्परा में साम्य होते हुए बंगम्य भी है। जहाँ तक भावना का सम्बन्ध है वहाँ तो सब समान हैं। किन्तु, सूफी और निगु खोपासक संतों की बौद्धी साधना ब्रह्मिण में दृष्टियोजर नहीं होती।

जहाँ उत्तर पश्चिम भारत के बप्पणों और पूर्व भारत बंगाल के बप्पणों में समानता है वहाँ विभिन्नता भी बहुत है। बंगाल में सत-साधना का अधिक प्रभाव नहीं रहा है। सूफी साधना बहुत बाव में आयी। किन्तु बाठलों^१ में संतों और सूफियों के कुछ तत्व दृष्टियोजर होते हैं। बंगाल में बप्पणभक्ति की साधना अधिक हुई है किन्तु रामोपासना का इतना अधिक प्रचार नहीं हुआ जैसा कि हिन्दी प्रदेश में हुआ। हिन्दी-श्रेण में रामोपासना और बप्पणोपासना को समान स्थान मिला। बप्पण के इन दोनों धवतारों में कुछ भेदभाव नहीं समझ्य जना किन्तु बंगाल में बप्पणोपासना के पहिले घनेक प्रकार की सहायिया और साक्त साधनाओं का अधिक प्रचार रहा है।

एक प्रसिद्ध बार्दिक का मत भी इच्छ्य है— 'ब्रह्मिण भारत के बप्पण मत में बन्धावत बीला के महत्व पर अधिक ध्यान नहीं दिया गया है। यद्यपि घालधारों के स्रोत से कण्ण की गोपियों के साथ सीसा की घोर संकेत है। किन्तु, उत्तर में कुछ और बात थी। निम्बार्क सम्प्रदाय में प्रियतमा राधा केवल गोपियों में प्रभाव ही नहीं है यद्यपि बप्पण की सवातन सगिनी भी है। पीठ नोबिन्द के मेरुक और जनापति, बिद्यापति और बन्धीदास की रचनाओं में राधा-बप्पण मत का प्रभाव बंगाल और बिहार में दृष्टियोजर होता है। उसका भेद साक्त सिद्धान्त और साधनाओं को है^२।

१ बाँपमार बाठम पृ० १२६ से १३१।

२ The Vaishnavism of South India did not pay much attention to the glorification of the Brundaban Lila, though some of the Allavars refer to Krishna's sports with the Gopies. In the North, however the case was different. In Nimbark, Radha the beloved mistress, is not simply the chief of the Gopies

भक्ति आन्दोलन मध्ययुगीन भारत के इतिहास में एन बहुत बड़ी घटना है। इस आन्दोलन ने समस्त प्राधुनिक भारतीय प्राय भाषाओं में साहित्य सृजन को प्रमत्तपुत्र उत्कर्ष प्रदान किया है। बंगाल में भी शैतन्य महाप्रभु का प्राविर्भाव एक नए युग का संदेशवाहन है। बङ्गल आन्दोलन कुछ प्रादेशिक विशेषताओं के साथ समस्त भारतव्यापी था। विशेषकर हिन्दी ही उनके आन्दोलन के प्रभाव का माध्यम बनी। महाप्रभु शैतन्यदेव के कारण बंगाल एवं मधुरा-बुम्बावन का अनिष्ट सम्बन्ध हुआ। महाप्रभु शैतन्य महाभाव के उपासक थे। रामा के महाभाव के ओ बन्दावन में परिपूर्ण हुआ था। यही इस अनिष्टता का मूल था। अतः बंगला के साथ-साथ हिन्दी (ब्रजभाषा) भी उनके साहित्य का माध्यम बनी। शैतन्य महाप्रभु मधुरा-बुम्बावन को शैतन्य की उपासा किया करते थे। अतः उस समय बंगाल एवं ब्रजमण्डल का बहुत अनिष्ट सम्बन्ध हुआ था। ब्रजभाषा का प्रभाव शैतन्य वैष्णव परकृतियों के गीति काव्य में साकार हुआ।

but is the eternal consort of Krishna. The writings of Jaideva the author of Gita Govinda Vidyapati Umapati and Chandidas (fourteenth century) show growing influence of the Radha Krishna cult in Bengal and Bihar thanks to the influence of the Sakta system of thought and practice
Vol. II P 767 (Indian Philosophy).

- १ डा० शैतन्यदेव सेन लिखते हैं—'एई युगेर साहित्ये हिन्दी-उपकरणे विशेष रूपे दृष्ट। एखन जे रूप ईमरेजी भाषार राजत्व बङ्गल बमरे प्रभाव काले तखन छिन बुम्बावनी (ब्रजभाषा) भाषार राजत्व। बुम्बावन एखनओ बड़ तीर्थ बसिया गण्य किन्तु तखन बगिर शिक्षित समाज इहाके बरातसे स्वयं बसिया पश्य करितेन इयामकु ड कि राबाकु ड इवर्तनार्थ ठाहावेर जे उत्साह पूर्ण प्राग्रह छिन बिसात जाईते शिक्षित गणेर ठमन ऐकान्तिक प्राग्रह नार् एखन जे रूप आमरा बगिसा कषार मध्ये बारि भाना ईमरेजी भिवाइया बिषय देखारइया याकि तखन सेई रूप वैष्णव गणेर बीपसाकया बारि भाना बुम्बावनीर मिभणै सिद्ध हइत। कीन काव्य की इतिहासे ये स्पसे कषाबार्ता बर्णित हय सेइस्पसे प्रथकर्ता प्रचलित भाषा ब्यबहार करिया पाकेन। शैतन्यचरितामृत नरोत्तमबिसास प्रभुति पुस्तके दृष्ट हइजे ये स्पसे कषाबार्तिर उत्सेख ऐइ खानेइ बुम्बावनी भाषार समधिक छड़ाइकि हइयाये।

बं० भा०, प्रो० सा० पृ० ३६०।

अर्थात् इस काम के साहित्य में अधिक हिन्दी उपकरणों का मिश्रण है। इस समय जिस प्रकार अंग्रेजी भाषा का राजत्व है वैसे ही बङ्गल वम के प्रभाव

डा इन्दिराचन्द्र सेन ने अपनी अंग्रेजी ग्रंथ में बंगाल साहित्य पर हिन्दी प्रभाव के तीन कारक बताये हैं—१ बंगाल धर्म के कई प्रमुख पाचार्य बृन्दावन में निवास करते थे इससे बृन्दावन और बंगाल के लोगों में आदान प्रदान बढ़ा। २ परकृष्ण विद्यापति के गीतों पर मुख था। अतः उन पर रूपों का अनुकरण उन्होंने किया। वैष्णव पदावलिओं में ब्रजबुक्ति का उदय इसी से हुआ। ३ बंगाल धर्म का प्रचार भारत में करने के लिये हिन्दी ही उस समय उचित माध्यम थी। इससे हिन्दी के अग्रणी अर्थ ग्रहण किये। वे प्रागे लिखते हैं^१।

काल में उस समय बृन्दावती (ब्रजभाषा) का राजत्व था। उस समय बृन्दावन बढ़ा तीर्थ माना जाता था। उस काल में बंगीय-विहित समाज इसको बरती पर स्वर्ण कहा करते थे। श्यामकृष्ण अथवा उपाकृष्ण के वर्णों के लिए चितला अत्साहपूर्वक आग्रह या उतना आज विहितगणों का विनामय जाने में भी वीसा ऐकान्तिक-मात्र ही है।

इस समय जबकि हम अपनी भाषा में चार आता अंग्रेजी लिखाकर अपना पाठित्य प्रदर्शन करते हैं। उस काल में इसी प्रकार चार आता ब्रजभाषा का निषेध कर पंडित कहे जाते थे। किसी भी काव्य इतिहास कथावार्ता का वर्णन होता था। उस समय अंधकार प्रचलित भाषा का व्यवहार करते थे। अंतन्व-चरितामृत नरोत्तमविनास को देखें तो बिन स्वर्णों पर कपावार्ता का उल्लेख ही नहीं ब्रजभाषा का समधिक मेल है।

- १ *Bengal in the Vaishnava-period was subject to the influence of Hindi this I have already mentioned on page 337. Many of the great masters of the vaishnava faith lived in Brindavan and there was a constant exchange of ideas between the people of that place and those of Bengal. This circumstance explains why we find such a large number of Hindi words imported into the Bengali writings of the vaishnavas. The padakaratas held Vidyapati's songs in great admiration and as a result many of them imitated the Maithil forms in their padas and too Brajabuli of the vaishnava songs is a result of this imitation. Thirdly in their attempts to propagate the creed of vaishnavism all over India the vaishnavas came in contact with different races of India speaking different languages.*

Hindi had grown to be the lingua franca of all India under the kuzerain power of the Muslim Emperor of Delhi. Those who had the propoganda of their faith to carry to all Indians could not help having recourse to the most convenient vehicle

तत्कालीन

इस प्रकार डा० सेन ने बंगाल में हिन्दी के शब्द-आह्वय का स्पष्टीकरण किया है। किन्तु हिन्दी का प्रभाव केवल शब्दगत नहीं था वह पंक्तियों का।

(१) बंग्लय पदावलियों में हिन्दी के शब्द प्राए हैं।

already available for approaching them. The vaishnavas imported a large number of Hindi words into their works to make them intelligible to the people of all parts of India.

Owing to these causes the works written by a large number of vaishnavas are more or less influenced by Hindi, and in stances of

जैसे, जैसे कबहुँ उबहुँ दुहुँ हबहुँ, काँही ताही प्रबक बिदुरिस।
are numerous in all vaishnava writings, not to speak of Brajabuli which is a thoroughly Hindi ized form of Bengali.

(History of Bengali language & Literature)

By Dr. D. O. Sen Page 508.

हिन्दी रूपान्तर

बंग्लयकाल में बंगाल पर हिन्दी का प्रभाव पड़ा है। यह मैंने पू० १३७ पर दिखलाया है। बहुत से बंग्लय कर्म के प्राचार्य बंगाल में रहा करते थे। वहाँ के निवासियों और बंगालियों में निरन्तर विचारों का आदान प्रदान हुआ करता था। इन्हीं कारणों से इतने अधिक शब्दों का समावेश बंगाली बंग्लय पदावलियों में हुआ है। परकृत विद्यापति के पदों को बहुत धार की दृष्टि से देखा करते थे। इसलिए उन्होंने मैथिली रूपों का अनुकरण अपने पदों में किया, इसी अनुकरण के फलस्वरूप ब्रजबुक्ति बनी है। तीसरे बंग्लय शोध अपने कर्म को प्रथम भारतीय बनाना चाहते थे। वे भारत की अनेक बातियों और भाषाभाषियों के सम्पर्क में प्राए। बिस्नी के मुगल बादशाहों के कारण हिन्दी अखिल भारत की सार्वभूमिक भाषा बन चुकी थी। जो अपने सिद्धांतों की प्रथम वैश्व्यापी बनाना चाहते थे उनके लिये इसका अपना धारण्यक था। बंग्लय परकृतियों में निश्चिन्त भारतीयों को समझाने के लिए हिन्दी शब्दों को अपनी पदावलियों में मिलाया। इन कारणों से थोड़ा-बहुत हिन्दी का प्रभाव बंग्लयों की कृतियों पर पड़ा है। जैसे उदाहरण रूप में—
जैसे जैसे कबहुँ उबहुँ दुहुँ हबहुँ काँही ताही प्रबक बिदुरिस इत्यादि शब्द बंग्लय पदावलियों में पाये जाते हैं। ब्रजबुक्ति के बारे में क्या कहा जाये यह तो पूर्णरूपेण हिन्दीकृत बंगाल का रूप है।

- (२) ब्रैप्लान पदावलिमें में हिन्दी का वाक्य विन्यास ।
- (३) इसमें बहुत से मैथिली ब्रह्मभावा के पर के पर मिल गये हैं ।
- (४) इससे ब्रह्मबुधि नाम की एक नयी साहित्यिक भाषा का जन्म हुआ ।
- (५) मस्तमास के अनुवाद के रूप में ग्रंथ के ग्रंथों का प्रवर्तण ।

इन्हीं को दूसरे शब्दों में इस प्रकार कह सकते हैं कि इस प्रभाव के पाँच रूप में हैं—

- (१) अक्षयत
- (२) वाक्य-विन्यासगत
- (३) कर्मावतरणगत
- (४) भाषा रूपगत (ब्रह्मबुधि सम्पूर्ण भाषा ही हिन्दीमय हो गई)
- (५) अनुवादावतरणगत

२ :

१ बंगाली गौड़ीय वैष्णव पदावली में अक्षयगत हिन्दी प्रभाव

बंगला ने हिन्दी के बहुत से शब्द अपनाये हैं। जसमें बहुत से शब्द ऐसे भी हैं जो दोनों को समान स्रोत से मिले हैं। इन्हें दोनों ही अपने अर्थ कह सकते हैं। अथवा स्रोत की दृष्टि से एक ही मूलस्रोत का निर्बंध कर सकती हैं। बंगला के कोशों में बंगला भाषा में पृथीत हिन्दी शब्दों का संश्लेष हुआ है*। विशेषकर बीबला भाषार अभिधान (कोश) में इसके कोशाकार श्री ज्ञानेश्वरमोहनशास्त्री ने हिन्दी शब्दों का संश्लेष किया है। इससे यह स्पष्ट है कि बंगला की शब्द-शक्ति को हिन्दी ने बहुत प्रभावित किया है। ऐसे प्रभाव को ठीक-ठीक समझने के लिये हमें यह देखना होगा कि बंगला में अक्षयगत प्रभाव किन रूपों में पड़ा है। कोई भी भाषा किसी दूसरी भाषा के शब्दों को कब-कब धीरे-धीरे ग्रहण करती है? इस ग्रहण का रूप क्या होता है? वास्तव में भाषाओं का पारस्परिक सम्बन्ध जैसा होता है वैसा ही प्रभाव भी होता है। ये सम्बन्ध कुछ ऐसे हो सकते हैं —

- (१) अक्षयगत सम्बन्ध
- (२) समानमूलक सम्बन्ध
- (३) पड़ीस का सम्बन्ध
- (४) धारोपित सम्बन्ध

प्रथम दो ऐतिहासिक हैं। दोनों का एक ही अर्थ है। इस विशेषता के साथ कि धनक भाषा से अन्य कई भाषायें हो सकती हैं। ये कई भगिनियाँ ही समानमूलक

* देखिये परब्रह्मपुत्र बंगला शब्द अक्षय गौड़ी एव नवीय शब्दकोष ।

की भापाएँ हैं। समान मूल से उत्पन्न होने के कारण बहुत से जनक की प्रवृत्तियाँ दोनों में मिलेंगी और दोनों बहुत समय तक बिना अपने स्वयत्त्व के र्वैतम्य के साथ साथ बसती रहेंगी। बंगला हिन्दी के सम्बन्ध में यह स्थिति विशेषतः दिखायी पड़ती है। एक युग इन भाषाओं के इतिहास में ऐसा प्रतीत होता है जबकि ये दोनों भाषाएँ परस्पर ऐसी मू की हुई थी कि उनके प्रसंग-प्रसंग अस्तित्व को उस समय प्रसंग-प्रसंग पहचाना नहीं जा सकता था। सबसे शारम्भिक काल का सिद्ध-साहित्य भी इसका एक प्रमाण है। उसमें हिन्दी-बंगला दोनों के तत्व हैं। वही कारण है कि दोनों ही भाषाएँ उन्हें अपना ही साहित्य मानती हैं। जब तक की विविध व्यापारों से नै स्थिति में कोई प्रस्तुत नहीं किया। वस्तुतः जब दोनों भाषाएँ एक ही थीं और अन्विकाल की मिथ्या प्रवृत्ति विद्यमान थी तब एक के ताने को दूसरे के बाने से बँटे प्रसंग किया जा सकता है।

यह बात काफी समय तक रही, और अन्विकाल में तो यह और भी बढ़ गयी। ऐसी स्थिति में जब और बंगाली की दौरी नेद के रूप में ही इस काल में सिधा जा सकता है। प्रथमा बंगला भाषा के जब बोलनी समन्वित भावपूर्ण उत्कृष्ट पद भाषा समक प्रसंगकार के सहायण उपराने पड़े थे। निरवयव के प्रकृत भाषा-समक नहीं मिल रहे थे उन्हें वृत्तियों की अस्पष्टता भले ही प्रतीत होती रही हो। भाषा अस्पष्टता का र्वैतम्य उनमें नहीं था। धरा उन्हें जग्य-जनक संभव से संस्कृत प्राकृत मयप्रय की सम्बावसी पैदुक सम्पत्ति के रूप में हिन्दी-बंगला ने प्राप्त की, वही समानमूलक ही नहीं, सहजात होने के कारण भी बंगला हिन्दी में बहुत समय तक प्रथेय रहा। बंगाल के क्षेत्र में और अन्वय भी बंगलाभाषी हिन्दी के शब्दों, मुहावरों और वाक्यों को अपने ही समझकर अपनाते रहे। भाषा-र्वैतम्य धारण पर बंगला भाषियों ने देखा कि अन्विक का मुग या तब उन्हें कृष्ण का इष्ट हो गया। पहले कहा जा चुका है कि इष्टबैव की मूमि की भाषा 'ब्रजभाषा' में उनका आकर्षण बढ़ गया। इसके निःसंकोच के ब्रजभाषा में अपनी अधिभक्त के लिये सल्लोचने सगे और उसके शब्दों को अपना भाषा में निःसंकोच लेने लगे। हीसरा सम्बन्ध भौतिक है। बंगला और हिन्दी भौतिक कारणों से पड़ोसिन हैं। पड़ोसी में पारम्परिक आदान प्रदान रहता ही है। बीजा 'धारोप' विषयक सम्बन्ध अनाकृतिक धरवा राजनीतिक है। विद्वेता की भाषा का विजित की भाषा से सम्बन्ध। ऐसा ही आधेप धार्मिक सत्ता की प्रथमता के कारण भी हो सकता है। धार्मिक सत्ता का प्रभाव आनात्मक विशेष होता है। साहित्यिक उन्नतता से भी धारोपी सम्बन्ध बनता है। साहित्यिक के साथ ज्ञान-विज्ञान विषयक उन्नतता भी परिणामी है।

हिन्दी बंगला के सम्बन्ध में ये सभी तत्व मिलते हैं। इन्हीं के कारण जब काल बंगला में हिन्दी के शब्द बूझते हुए।

किन्तु प्रश्न यह है कि ऐसे संबंधों से कोई भाषा चाहे बितने या सभी शब्द दूसरी भाषा से नहीं लेती। प्रत्येक गृहीत शब्द का इतिहास होता है उसका एक कारण होता है। बंगला हिन्दी के उक्त शब्दों से बंगला ने हिन्दी के जो शब्द ग्रहण किये होंगे वे तुलना से ही मिलेंगे। इस तुलना से हमें उन शब्दों का पता सम जाता है जो दूसरी भाषा से आगत या गृहीत होते हैं^१ तथा प्रागुत्पत्तिक होते हैं। आगत शब्दा गृहीत शब्दों की दो श्रेणियों की जा सकती है —

(१) उच्चारण (उच्चार + आगत)

(२) भाषण (भाषा + गत)

उच्चारण के शब्द हैं जो उच्चारण शब्दों की शक्ति व्यवहार में आते हैं। तथा भाषण के शब्द हैं जो किसी भाषा के प्रवाह में प्रविष्ट हो जाते हैं। भाषा वैज्ञानिकों ने इन समस्त शब्दों के लिये 'लोन (Loan) या 'बोरोड' (Borrowed words) शब्दों का व्यवहार किया है^२ :

शैल्यर्षण महोदय ने (Loan Words) के संबंध में कहा है—'पारिभाषिक शब्दों के रूप में लोन वर्ड्स (आगत शब्दों) और 'बोरोड वर्ड्स' (उच्चारण लिये हुए) जैसे शब्दों का प्रयोग सुविधाजनक और बहुप्रयुक्त है। भाषायी उच्चारण से ही और अन्य पदार्थों के उच्चारण से ही आगत है। अन्य पदार्थों के उच्चारण पर कृतज्ञता के साथ उन्हें सीढ़ाना पड़ता है किन्तु भाषायी शब्दों में वह नियम लागू नहीं होता। क्योंकि भाषायी उच्चारण से ही आगत शब्दों (Imitation) का है^३।

इस उद्घरण से स्पष्ट है कि इन भाषा-वैज्ञानिकों ने उच्चारण का बहुत विस्तृत अर्थ लिया है। वस्तुतः उच्चारण लिये हुए शब्द वही हैं जो किसी सामयिक आवश्यकता के कारण कुछ काल के लिए भाषा में गृहीत हो जाते हैं किन्तु कुछ काल बाद वे प्रयोगवाह्य (Obsolete) हो जाते हैं वे उस भाषा की भाषा में नहीं मिल पाते। उच्चारण की शक्ति यह शब्दजन भी इस प्रकार सीट जाता है। उच्चारण-वैज्ञानिकों की तुलना के समय में हिन्दी ने उच्चारण-वैज्ञानिक शब्द अपनाये

१ A word taken over from another Language. Pike D.L.P 125
The concise Oxford Dictionary Fourth Edition P 242.

वैज्ञानिकों ने हि० उ० उ० पृ० १२०।

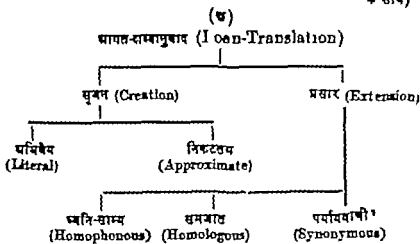
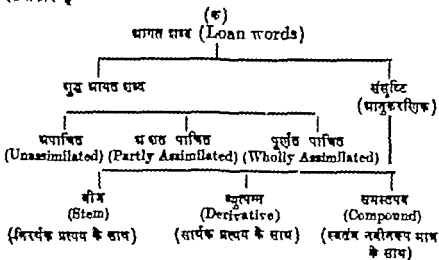
२ 'भाषा में आगत-शब्द'। भारतीय-साहित्य पृष्ठ १७१ १८१ एवं प्रस्तुत १९२६। एवं प्रकाशित प्रबंध हिन्दी में आगत-शब्द डा० श्रीवास्तव पत्रिका १९२८ ई० पृष्ठ २६।

Vendryes; Language P 227

Gleason (Descriptive Linguistics P 290)

३ Language its development and Origin Page 208

अंग्रेजी से उधार लिये हुए शब्दों में से बहुत से बाधगत हो जायेंगे और बहुत से प्रयोग-बाह्य ; यस्तुत में प्रयोगबाह्य शब्द ही उधारगत शब्द हैं । एकान्त-एकेन्द्रा अक्षरों, छेकटरी आदि शब्द कुछ समय बाद हिन्दी में न लिखायी पड़े तो धारण नहीं । भाषा का यहा प्रभाव उन शब्दों से परिलक्षित होता है जो उसमें बाधगत हो जाते हैं । अन्य जनक और सामान्यतः संबंध वाली भाषाओं में तो बहुत सा शब्द मांडार समान संघति के रूप में होता ही है, फिर भी उनका प्रकृति भेद शब्द जयम में भ्रमकने ही लगता है । इसी शब्द को प्रतिक स्पष्ट करके क लिये धारणर हापेन महोदय द्वारा प्रस्तुत उद्धृत या अन्त शब्दों का वर्गीकरण इस प्रकार है —



१ Ethel Haugen. The Norwegian Language in America Vol. II

नं० १ जनवरी, १९३६ भा० ७०, पृ० १८१

इस वर्णोत्तरण की क्रिचित व्याख्या समीचीन है।

अपाचित—अपाचित उन धारत शब्दों को कह सकते हैं जो एक भाषा में दूसरी भाषा से आकर अपना उत्तम रूप ही बनाये रखते हैं। उनको दूसरे शब्दों में अविच्छिन्न प्रागत शब्द कह सकते हैं। इस प्रकार के हिन्दी से धारत शब्दों के उदाहरण बंगला में बहुत हैं।

अंशतः पाचित—अंशतः पाचित उन अल्पत शब्दों को कह सकते हैं जो तद्भव रूप में रह गये हैं। जो पूर्णतया विकृत नहीं है अर्धविकृत अवस्था में है।

पूरुषतः पाचित—पूरुषतः पाचित वे वृहीत शब्द हैं। जिसका पूरुषरूपेण रूप परिवर्तन या भ्रमि परिवर्तन हो गया हो, ऐसे शब्द पूरुषतः विकृत हो जाते हैं। भ्रम भाषा में उनका रूप कुछ और ही होता है। जिस भाषा में वे धारतयात क्रिये गये हैं उसमें उनका रूप बिलकुल और ही हो जाता है। वे उस भाषा के तद्रूप या शेषक शब्दों के समान होकर उसकी धारा में विलीन हो जाते हैं। वे जिस भाषा में वृहीत होते हैं उसके व्याकरण के अनुसार बन जाते हैं और उस भाषा की स्वामी निधि बन जाते हैं। विशेषकर, संज्ञाओं विशेषणों एवं क्रियाओं में यह प्रवृत्ति देखी जाती है। डॉ० बीनेबचन्द्र देन ऐसे शब्दों को भाषा में 'स्वामी चिह्न मानते हैं।' क्योंकि जिस भाषा में वे पाचित या धारतयात होते हैं उसका स्वामी भंग बन जाते हैं। उन पूरुषतः पाचित शब्दों का अपना असम्य अस्तित्व या व्यक्तित्व नहीं होता। जिस प्रकार गरी सागर में बिरकर अपना अस्तित्व खो बैठती है उसी प्रकार वे शब्द भी भाषा के सागर में विलीन हो जाते हैं।

यहाँ तक हमने यह देखने की चेष्टा की है, कि एक भाषा जब दूसरी भाषा को प्रभावित करती है तो उस प्रभाव का 'शब्द' संबंधी रूप कैसा हो सकता है।

| | | |
|---|---|---|
| १ | हिन्दी अर्थ और अर्थ अच्छाई—देखा हरिपद विमुख परमवति आहा (मा० भा० पृ० ११२) | बंगला अर्थ और अर्थ अच्छाई—अच्छमाय धामर काय अच्छाई हिलायत (कृष्णकौत प०क त० पद २८८१) |
| २ | अस—ऐसा अस बिचारि बिअ जानहु तावा (मा० भा०, पृ० ११२) | अस—ऐसन को असु बेदन तहई (बोबिंदरास प०क०त० पद १७४) |
| ३ | कुत्ताल—प्यास मिति बु पको संताप बनम को देखो नंद दुमारो | कुत्तास—प्रिय राबीर दुसान बुभति देखिनु |
| ४ | भा० भा० पृ० ४०८ । | |

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि ऐसे प्रभाव में धात्मसात् करने एवं धपनरक की भावना है। प्रभाव में प्रभावित करने वाले धीर प्रभावित होने वाले में कोई अन्तर नहीं रह जाता है। दोनों एक धात्मस्वरूप धीर एकाकार हो जाते हैं। जिस प्रकार एक संस्कृति का प्रभाव दूसरी पर पड़ता है। उसी तरह एक भाषा का प्रभाव भी दूसरी पर पड़ता है। एक भाषा के ऊपर दूसरी भाषा का प्रभाव एवं सम्पर्क सांस्कृतिक एवं राजनीतिक धारि कारणों से होता है। भाषा संस्कृति का बाहुल्य है। यदि कोई भाषा धपुर्ण रहती है, तो उसकी संस्कृति भी धपुर्ण ही रहती है। जैसे कि डॉ॰ एडवर्ड सपिर लिखते हैं 'संस्कृतिओं की तरह भाषाएँ भी कभी पूर्ण नहीं होती हैं, भाषान-प्रदान की धात्मस्वरूपता एक भाषा के बोलने वालों को प्रत्यक्ष एवं धमत्यक्ष रूप में पड़ती या सांस्कृतिक प्रभुत्वसम्पन्न भाषाओं के बोलने वालों के सम्पर्क में से जाती है।' एक भाषा पर दूसरी भाषा का पड़ने वाला प्रभाव कई प्रकार का होता है। इनका उल्लेख ऊपर किया जा चुका है। इनमें से धम्यजनक संबंध तथा समानमूलक समय से जातिगत (धीरस) प्रभाव प्रकट होता है।

१ जातिगत (धीरस) प्रभाव—जो धीजें एक जाति की होती हैं उनकी एक परम्परा होती है। धत परम्परा एक होने पर समानता स्वाभाविक है। धत जातिगत (धीरस) प्रभाव को वास्तविक धर्म में प्रभाव नहीं कहना चाहिये। क्योंकि एक ही जाति की भाषाओं की एक ही परंपरा होने के कारण बहुत कुछ एक ही धम्यावली, एक से साहित्यिक मानदण्ड धारि होंगे ही। किन्तु जब एक ही जाति की दो भाषाएँ धसय-धसय हो जाती हैं तब ऐतिहासिक एवं धीयोनिक परिस्थितियों के कारण कासात्पर में उनमें भेद उत्पन्न हो जाते हैं। उनकी धम्यावली धीर साहित्यिक परंपराओं में बिधिमता एवं बिधिमता उत्पन्न होने लग जाती हैं। उनका मूल एक होते हुए भी उनकी साकारें भिन्न-भिन्न होती जाती हैं। उनके विकास का धपना धसय मार्ग का जाता है परिस्थितियों वय के भाषाएँ जब फिर कभी सम्पर्क स्थापित करती हैं तब उनमें परस्पर भाषान प्रदान होना स्वाभाविक है।

२ पड़ोस—जिस प्रकार एक पड़ोसी संस्कृति दूसरी को प्रभावित करती है उसी तरह पड़ोसी भाषाएँ भी परस्पर प्रभाव डालती हैं। भाषाधी पड़ोस के कारण धीयोनिक होते हैं। यात्रा एवं ध्यापार धारि के कारण भी पड़ोस जैसे ही प्रभाव-धेव प्रस्तुत होते हैं।

१ Languages, like cultures are rarely sufficient unto themselves, the necessities of intercourse bring the speakers of one language into direct or indirect contact with those of neighbouring or culturally dominant languages. —Language P 102.

१. आरोप—एक भाषा का आरोप दूसरी पर दो प्रकार से हो सकता है—
(१) सांस्कृतिक और (२) राजनीतिक।

(१) सांस्कृतिक—घणितघानी संस्कृति निम्नस्तर की संस्कृति को प्रभावित करती है। कभी-कभी बराबर की संस्कृतियाँ भी एक दूसरी को प्रभावित करती हैं। निम्नस्तर की संस्कृति भी कुछ न कुछ अपना प्रभाव ऊँची संस्कृति पर छोड़ जाती है। घट-संस्कृतियों में पारस्परिक प्रभाव होता प्राचरक है। संस्कृतियों के कारण एक भाषा का प्रभाव दूसरी पर पड़ता है।

(२) राजनीतिक—राजनीतिक कारणों से भी एक भाषा का प्रभाव दूसरी पर पड़ता है। राजनीतिक प्रभुता के कारण भी साहित्यों की भाषा पर भाषकों की भाषा का प्रभाव पड़ता है। किन्तु साहित्यों की भाषा का भी थोड़ा बहुत प्रभाव भाषकों की भाषा पर रहता है।

४. पुननिष्ठता या प्राबल्यकता—भाषा वैज्ञानिक "वेन्ड्रेजीज" (Venedryes) ने इस पुननिष्ठता को Worth का नाम दिया है। इसी पर किसी भाषा की प्रतिष्ठा (Prestige) निर्भर करती है। घट-भुओं की ओर प्राकर्षण स्वाभाविक है प्राबल्यकता के कारण जीवन में बति उत्पन्न होती है। उच्च साहित्य-सम्पन्न भाषा की ओर प्राकर्षण स्वाभाविक है। जिस भाषा में अधिक साहित्यिक सौन्दर्य होगा वह दूसरी भाषाओं के साहित्यकारों एवं पाठकों को मोहित करेगी। सत्साहस्यतया संस्कृत और यूनानी प्रापि भाषाओं घपने गुर्खों के कारण ही घारे विश्व को प्राकर्षित करती प्राई हैं। गुणसम्पन्न भाषाओं अपुण भाषाओं के विकास में सहायक होती हैं। तब पुणसम्पन्न भाषा का प्रभाव अपूर्ण अधिकसित भाषा पर स्वाभाविक रूप से पड़ जाता है। तब कभी अपूर्ण एवं अधिकसित भाषा में किसी चीज का प्रभाव होता है, तब वह पुणसम्पन्न एवं अधिकसित भाषा से ही उधार लेकर घपने साहित्य की श्रीवृद्धि करती है। सत्साहस्यतया—घाव पारि प्रापिक घर्णों के बिये भारत की प्राधुनिक भाषाओं संस्कृत प्रबला प्रद्वैभी से ही उधार लेकर घपने ज्ञान प्राप्ति को पूरा करती हैं। विविध घर्णों के सुकम से सुकमतर पक्षों की प्रस्तुत करने के लिए सम्पन्न भाषाओं भी दूसरी भाषाओं से घर्णों को प्रहस्य कर लेती हैं।

बंगला और हिन्दी के प्रसंग में ये चारों भाषायी प्रभाव के कारण घा जाते हैं। दोनों भाषाओं हिन्दी और बंगला एक प्राय भाषा-परिवार की दो शाखाओं हैं। दोनों का बनिष्ठ धीरस सम्बन्ध है। घर्षात् बन्ध-बन्धक तथा समानमुक्त संबंध। प्रबल घर्षाय में इस विषय पर प्रकाश जामा जा चुका है। पूर्ववर्ती भारतीय प्राय

भाषाओं में उपलब्ध भाषात्मक-सौंदर्य एवं साहित्यिक समृद्धि दोनों भाषाओं की सामान्य बरोबर है। हिन्दी और बँगला की अधिकतर शब्दावली सामान्य है, किन्तु दोनों में साम्य होते हुए वैषम्य भी बहुत है। दोनों ही अपनी-अपनी शब्दावली और साहित्यिक परंपराओं के साथ विभिन्न क्षेत्रों में फली फूली हैं। काव्यान्तर में वियोग के साथ संयोग भी दोनों में होता रहा है। हाँसाकि दोनों भाषाएँ संस्कृत की महान् शब्दावली की उत्तराधिकारिणी हैं फिर भी दोनों में उस शब्दावली की अपनी मौलिक एवं ऐतिहासिक प्रवृत्ति और प्रकृति के अनुसार ही धारणगत क्रिया है। कई संस्कृत के शब्दों का हिन्दी में कुछ और अभिप्राय होता है, बँगला में कुछ और ही होता है। परत जो औरत शब्द हिन्दी से बँगला में बने हैं वे हिन्दी के अर्थ विचार के अनुसार हैं अपरिन्तु जो अर्थ उनका हिन्दी में है वँगला में भी उसी अर्थ के लिये उनका प्रयोग हुआ है कुछ औरत शब्द इस प्रकार समझे जा सकते हैं —

| | | |
|-----------------|---|---|
| (१) मूल संस्कृत | हिन्दी अर्थ एवं प्रयोग | बँगला अर्थ और प्रयोग |
| प्राचीण | पंचार—पंच का पोंड पंचार नृपास महि (शो० १२२) | पोंमार—पंच का रतिरस ना जानय कानू से पोंमार (वि० प०) |
| (२) मन् वादू | मसह—गसना गई गसाभि कुटिस कीकेई (रामचरितमानस) | पसठ—इसीमूल रूप जाही जाही येनु बंदन अम बने गसह (प० क० ठ० पृ २३३) |
| (३) घुष्ट | ठीठ—उठल मैं जानति हूँ ठीठ कगुह्राई (सूरदास—सू०सा० १०।१४२४) | घुष्ट—प्रपश्य ठीठ कानाइ कठए मायि जानत (मोविददास प०क०ठ० पृ ३३६) |
| (४) भ्रातृ | भैया—भाई भैया भरत भावते के संय (सी० २।६३।४) | भैया—भ्राता भैया अभिराम बबनु बन बाघोइ (प० क० ठ० पृ १२१६) |
| (५) मित्रा | मिन्दि—मिंद तुल्य बाइ पोंड डोड भैया सीबत भाई मिन्दि (सू०सा० १०।२३०) | मिन्दि—मून, मित्रा विगभित सोचन मिन्दि (प० क० ठ० पृ ४०) |

जातिगत प्रभाव से ये शब्द संस्कृत से बने जा रहे हैं निश्चय ही वे औरत हैं। इन शब्दों की परम्परा हिन्दी में अपनी प्रकृति के अनुरूप भीवित रही। बँगला भाषा में इन शब्दों की यह परंपरा नहीं मिलती। वैष्णव-काल में हिन्दी और बँगला का सम्पर्क पुनः स्थापित हुआ, तब ये शब्द हिन्दी से बँगला में बने। जैसे संस्कृत शब्द "सौभाग्य" हिन्दी में सुहाग बन गया। संस्कृत में सौभाग्य का अर्थ है, ऐश्वर्य प्रयत्न

भाग्यशासीत्व किन्तु हिन्दी में "सुहाम" का धर्म है स्त्री की सधवा धर्मशास्त्र" धर्मात् सपत्न्य । बंगला बंग्वाह-यशाबन्धी में इसका धर्म है धारर' ।

भाज दोनों मापाएँ अपने-अपने विकास की कई अवाञ्छित समाप्त कर चुकी हैं । अपने-अपने क्षेत्र की विधेय भौगोलिक एवं ऐतिहासिक विशेषताओं के कारण अपनी-अपनी निजी सम्भावनी का विकास किया है । दोनों पड़ीसिने हैं । पड़ीसी होने के कारण दोनों में भावान प्रधान स्वाभाविक था । मैथिली और बंगला का पड़ीस भौगोलिक कारण से है । मिथिला और बंगाल का बनिष्ठ सम्बन्ध तो इतिहासविद तथ्य है । प्रथम अध्याय में सिद्ध चुके हैं कि मिथिला सर्वैय से बंगाल का निकट रहा है । मिथिला-संस्कृति एवं भाषा का प्रभाव बंगाल पर गभीर रहा है । ब्रजभाषा और बंगला का सम्पर्क या पड़ीस धार्मिक यात्राओं के कारण हुआ है । पहले कहा जा चुका है कि ब्रजप्रदेश (मथुरा बुन्दारन) सर्वैय से बंगाली बंग्वाहों का-गढ़ रहा है भाज भी है । लक्ष्मीप और बुन्दारन की संस्कृति किसी समय एक हो गई थी । एक मान्य-कर्म-कृत्यचक्रणी की सम्प्रभूमि थी एक प्रेमावधार वैतय-महाप्रभु की । घट दोनों स्वानों की भाषा के लिये गौड़ीय बंगाली बंग्वाहों की बड़ी महत्त घटा थी । पड़ीसी होने के नाते हिन्दी के कुछ अर्थ बंगला में बने गये हैं । उदाहरणतया कुछ अर्थ इस प्रकार हो सकते हैं —

प० क० त० पर १२३३—बोलि हि० बोली प० क० त० पर १८८७
भीक्ये हि भीकना (प० क० त० पर २६३१)—टैटि हि० टैट
(कटीय का फल) प० क० त० पर १०३२ ठोर हि० ठौर ।

सांस्कृतिक आरोप के कारण एक भाषा का प्रभाव दूसरी पर पड़ता है । पहले कहा जा चुका है कि सम्प्रदेश की संस्कृति का प्रभाव सारे देश पर ऐतिहासिक काल से रहा है बंग्वाह-काल में सम्प्रदेश ही संस्कृति व धार्मिक व्यक्तियों का गढ़ था । घट बंग्वाह-भक्ति मान्योत्तन ही प्रमुखतया बंगाल और ब्रजमण्डल के पारस्परिक सांस्कृतिक एवं धार्मिक सम्पर्क का कारण है । घट उनकी भाषाओं पर भी परस्पर प्रभाव होता स्वाभाविक है । इसी सांस्कृतिक आरोप के कारण हिन्दी सम्भावनी का अधिकतर प्रवेश बंगला-बंग्वाह-यशाबन्धियों में हुआ है, नबोकि बंग्वाह-भक्ति मान्योत्तन के कारण हिन्दी भाषामापियों और बंगला भाषामापियों का प्रभूतपूर्व बनिष्ठ संबंध हुआ था । उस समय ब्रजभाषा का बोलबाला सारे उत्तरी

१ देखिये (प० क० त० पर २६, ७१६, २८३४) ।

ब०—देख देख प्रीतम प्यारिक सीहाये ।

हि०—मनुराम भाग सीहाय सीम उरूप बहु भूपत मरी ।

२ देखिये—जी ६० प० (द्वितीय भाग) ।

भारत में प्रथम रूप से दूर-दूर तक था। ब्रजमण्डल और वनदेश की भाषा चैतन्य सम्प्रदाय के गायकों के कारण एकाकार हो रही थी। कृष्णमक्ति और ब्रजभाषा साहित्य एक दूसरे के पर्यायवाची बन गये थे। कृष्णमक्ति ने ब्रजभाषा को भारतीय का कण्ठहार बनाया और ब्रजभाषा ने कृष्णमक्ति को अखिल भारतव्यापी बनाते में योगदान दिया। कृष्णमक्ति केवल संस्कृत के ग्रंथों, मागध और वनदेश के भीत योद्धा एवं पंडितों तक ही सीमित नहीं रही किन्तु यह ब्रजभाषा के माध्यम से जनता तक पहुँच गयी।

पंजाब से लेकर सुदूर बंगाल तक ब्रजभाषा की मधुर-मुरली कई घटावियों तक बजती रही है। इस भाषायी आरोप का कारण विगुण सांस्कृतिक है^१। चैतन्य महाप्रभु ने अपने भाग्यश्रेष्ठ भगवान् कृष्ण की सबतार-भूमि ब्रजमण्डल की बकुल से उपमा दी थी। योद्धा-वैष्णव-सम्प्रदाय के भाषायों और उनके अनुयायियों में बुनान-बर्षाण एवं बहो निवास करने की उत्कट उत्कृष्टा रहती थी। वहीं पर मरना भी उनके लिये महापुण्य का कार्य और मोक्ष-द्वार समझा जाता था। अतः वहीं की भाषा के प्रति उत्कामीन बंगालियों और चैतन्य महाप्रभु के अनुयायियों में प्रगाढ़ भक्ति रहती थी। ब्रजभाषा में बोसना और कविता अथवा संकीर्तन करना गौरव का प्रतीक माना जाता था। अतः बुनान की महिमा के साथ ब्रजभाषा की भी महान् प्रतिष्ठा हुई। वह परम आकर्षण का विषय बन गई।

विद्यापति की पदावली या सवियों से ही योद्धा वैष्णव गायकों की हृत्पीण के तारों को स्पष्ट करती रही थी। यह पदावली बंगला योद्धा वैष्णव पदावली साहित्य का प्रेरणास्रोत एवं एकमात्र कृष्णमक्ति का माध्यम बन गई। जिसके अनुकरण पर राधा-कृष्ण के प्रणय को अभिव्यक्ति करने वाली साहित्यिक भाषा ब्रजभक्ति का उद्गम और विकास हुआ था। यदि विद्यापति पदावली की भावधारा ब्रजभक्ति की धारणा है तो निःसन्देह ब्रजभाषा एवं उत्कामीन बंगला उसका सुन्दर घटित है। इसी ब्रजभक्ति के रूप में बंगला योद्धा-वैष्णव-धार्मिक पदावली पर हिन्दी की गंभीर छाप स्पष्ट परिलक्षित होती है।

प्रत्येक भक्त या सम्प्रदाय का नेता अथवा अनुयायी जब अपने धर्म का प्रचार एवं प्रसार करना चाहता है; तब उसको सरल सर्वजन सुलभ भाषायी माध्यम का

१ इस सांस्कृतिक आरोप के कारण गये हुए कुछ अर्थ इस प्रकार हो सकते हैं—
 (१) कृष्ण कन्हैया या कान्हा कानवा कानाह धाकूस भइ बहु कानवा
 (२) उठब ऊबो ऊबो
 (३) केसव केसो केसो, मधुरा में केसवराय विद्यार्थी
 (४) माधव माधो माधो, माधव—माधोये माधो वेपर—
 माधो (प० क० प० १७३९)

सहाय (भाष्य) सेना पड़ता है। नौद्रीय वैप्लव संप्रभाम के पदकर्ता अपना अनुयायी तथा अन्य संप्रदायों के प्राचार्य तथा अनुयायी अपने-अपने मत का प्रचार करना चाहते थे तब उनको हिन्दी की ही धारण सेना पड़ती थी^१।

इसके अतिरिक्त मुसलमानी राजनीतिक प्रभुता के कारण हिन्दी समय धारे भारत में बोड़ी बहुत फैल चुकी थी। इसी कारण फारसी के साथ साथ हिन्दी के शब्द भी बंगला एवं अन्धम्य उत्कालीन भाषाओं में प्रवेश पा गये। पहले कहा जा चुका है कि मुसलमानी राज में अरबी और फारसी तहजीबी एक बख्तरी बनान थी। बिस्ली और भाषण के मुसल-बावसाहों का राजनीतिक प्रभुत्व मध्यकाल में समयम धारे बेश पर था। बिस्ली और भाषण की भाषा का प्रभाव भी बोड़ा-बहुत धारे बेश पर होना स्वाभाविक था। अतः बंगला से सम्पर्क स्थापित करने एवं भारत के अन्य भाषाओं पर साधन करने के लिए हिन्दी को अपनाये बिना कार्य असंभव-सा था।

मुसल बावसाहों का हिन्दी-अम तो ऐतिहासिक तथ्य है^२। अकर से लेकर औरंगजेब तक ने अपने रसास्वादन के लिये हिन्दी को अपनाया था। यह माना जाता है कि अरबी फारसी एवं हिन्दी के सम्पर्क-स्वरूप उर्दू का उद्गम और विकास हुआ है। अतः साधारणतया यह सिद्ध ही है कि मुसलमानी राज विशेषतया मुसल-बावसाहों ने हिन्दी के उद्गम और विकास में महत्वपूर्ण हाथ बटाया है। भाष्य अखिल भारत-यात्र महोपजीव में हिन्दी और उर्दू का बोलचाला इसी कारण है। इस राज नीतिक धारोप के कारण भी कुछ हिन्दी शब्द बंगला में गये हैं^३।

मुणनिष्ठता भावस्मकता एवं अपयोगितावस भी हिन्दी शब्द बंगला में गये हैं। क्योंकि अब देशों अब कालों और अब परिस्थितियों में एक ही भाषा पूर्ण नहीं होती है। अपनी इस अपूर्णता या अभाव को पूरा करने के लिये दूसरी भाषाओं से सम्पर्क स्थापित करना ही पड़ता है। हिन्दी से सम्पर्क स्थापित किये बिना बंगाली वैप्लव-पदकर्ताओं को अनुपादन की महिमा का परिचय और नहीं निवास करने की सुविधा नहीं हो सकती थी। भावस्मकतावस उनको प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप में अभावभाषा को अपनाया ही पड़ता।

१ देखिये—प्रस्तुत प्रबंध द्वितीय अध्याय पृष्ठ ३३।

२ देखिये—अकरवी दरबार के हिन्दीकवि।

३ फारसी हिन्दी बंगला प्रयोग और अकरण

| | | | |
|--------------|---------|-----------------|---------------------|
| (१) अफसोस | अफसोस | खैर | अपसोसई—अफसोस—हि० इ— |
| | | | (प० क० त० ७३३) |
| (२) कित्ताबत | कित्ताब | कित्ताब (कतूँल) | (प० क० त० १०९) |
| (३) बस्का | बस्का | बस्कि | (प० क० त० १०९) |

जो मुसलमान-शासक अथवा जनसाधारण पञ्जाब तथा बिस्नी उत्तर प्रदेश बिहार से भारत के अन्य प्रदेशों में गये वे हिन्दी को साथ से गये। क्योंकि अरबी फ़ारसी से उनका काम नहीं चल सकता था। पहले कहा जा चुका है कि हिन्दी को प्रकृतिक भारतीय बनाने में पूर्व-मुगलकाल से ही मुसलमानों का अबरहस्त हाथ है। अतः जो भी मुसलमान हिन्दी प्रदेश से बंग प्रदेश में गये वे हिन्दी को साथ से गये। अतः कुछ हिन्दीनुमा अरबी-फ़ारसी शब्दों का प्रभाव मौखिक बख़्ख-पदावली में स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। अतः गुणात्मकता के कारण अथवा मात्रात्मकतावश कुछ हिन्दी शब्द बंगला में घुलमिल गये हैं।

तीन सौ से अधिक साल तक हिन्दी-शब्दों का प्रयोग मौखिक-बख़्ख-पद कर्ता अपनी बख़्ख-पदावली में करते रहे हैं। पहले कहा चुके हैं कि इसका कारण सांस्कृतिक था। डा० सपिर महोदय ने सांस्कृतिक प्रभाव के इस सिद्धान्त की पुष्टि इस प्रकार की है 'सरलतम प्रकार का जो प्रभाव एक भाषा का दूसरी पर होता है वह शब्दों का उच्चारण सेना या अपनी भाषा में उनका प्रयोग है। जब सांस्कृतिक शब्दों को उच्चारण लिया जाता है तब सबसे महत्त्वपूर्ण सम्भावना रहती है कि शब्दों को भी उच्चारण से लिया जाये।

कितने ही परकृतियों के पदों में हिन्दी प्रभाव की झलक है हिन्दी शब्द उनके पदों में मोटी के समान बड़े हुए हैं। इनको दूसरे शब्दावली के परिशिष्ट में हिन्दी शब्दावली की शालिका में देखा जा सकता है। किन्तु यह कहना सरल नहीं है कि किस शताब्दी में अधिक हिन्दी शब्द अपना बख़्ख-पदावली में प्रवेश पा गये हैं।

| | | |
|---|---------------------------------|--------------------------|
| १ | संस्कृत हिन्दी प्रयोग और प्रकरण | बंगला प्रयोग और प्रकरण |
| | दुर्लभ बुमहा नहिं बरात दुमह | दुमह-परिचय दुमह रहे केनि |
| | मनुष्या (मा० ११२१४) | (प० क० त० पद ५२) |
| | दुर्लभा दुमहिन-दुमहिन कहत बीरि | दुमहिन (प० क० त० २२६८) |
| | बीरिहि बिब पाती | |
| | (पू० सा० १०११२०) | |
| | दुर्लभित दुमह | दुमह (प० क० त० २७७) |

- २ The simplest kind of influence that one language may exert on another is the borrowing of words. When there is cultural borrowing there is always the likelihood that the associated words may be borrowed too

—Edward Sapir? Language. Page 193

- ३ देखिए—दूसरे शब्दावली के परिशिष्ट 'मौखिक-बख़्ख-पदावली में शब्दवत् हिन्दी प्रभाव।

छात्र (माध्यम) सेवा पढ़ता है। बोझीय शैक्षणिक संस्थान के पदकर्ता अपने-अपने धनुषायी तथा अन्य संस्थाओं के प्राचार्य तथा धनुषायी अपने-अपने मठ का प्रचार करना चाहते थे उस उनको हिन्दी की ही धारण सेनी पड़ती थी।

इसके प्रतिरिक्त मुसलमानी राजनीतिक प्रभुता के कारण हिन्दी सभ्यता के शब्द भी बंगला एवं अरबीय तत्कालीन भाषाओं में प्रवेश पा गये। पहले कहा सारे भारत में बोझी बहुत फैल चुकी थी। इसी कारण फारसी के साथ साथ हिन्दी के शब्द भी बंगला एवं अरबीय तत्कालीन भाषाओं में प्रवेश पा गये। पहले कहा का बुझा है कि मुसलमानी राज में फारसी और फारसी तहजीबी एवं दख्खरी बंगाल का बुझा है कि मुसलमानी राज में फारसी और फारसी तहजीबी एवं दख्खरी बंगाल में हिन्दी और फारसी का राजनीतिक प्रभुत्व मध्यकाल में बंगला और फारसी के बीच पर था। हिन्दी और फारसी का राजनीतिक प्रभुत्व मध्यकाल में बंगला और फारसी के बीच पर था। हिन्दी और फारसी का राजनीतिक प्रभुत्व मध्यकाल में बंगला और फारसी के बीच पर था। हिन्दी और फारसी का राजनीतिक प्रभुत्व मध्यकाल में बंगला और फारसी के बीच पर था।

मुसलमानीयता का हिन्दी-भ्रम तो ऐतिहासिक तथ्य है। प्रकृति से लेकर धीरे-धीरे तक ने अपने रसास्वादन के लिये हिन्दी को अपनाया था। यह माना जाता है कि फारसी और हिन्दी के सम्पर्क-स्वरूप जड़ का उद्भव और विकास हुआ है। यह साधारणतया यह सिद्ध ही है कि मुसलमानी राज विशेषतया मुसल-बादलों ने हिन्दी के उद्भव और विकास में महत्वपूर्ण हाथ बटाया है। प्रायः अखिर भारत-याक महोपहीय में हिन्दी और उर्दू का बोलबाला इसी कारण है। इस राज नीतिक-धारीय के कारण ही कुछ हिन्दी शब्द बंगला में गये हैं।

मुसलमानीयता का प्रभाव फारसी और अरबीय शब्दों के अन्तर्गत ही है। क्योंकि सब देशों सब कामों और सब परिस्थितियों में एक ही भाषा पुरी नहीं होती है। अपनी इस धनुषायी का प्रभाव ही पढ़ता है। हिन्दी से सम्पर्क स्थापित किये जायेंगे तो सम्पर्क स्थापित करना ही पड़ता है। हिन्दी से सम्पर्क स्थापित किये जायेंगे तो सम्पर्क स्थापित करना ही पड़ता है। हिन्दी से सम्पर्क स्थापित किये जायेंगे तो सम्पर्क स्थापित करना ही पड़ता है। हिन्दी से सम्पर्क स्थापित किये जायेंगे तो सम्पर्क स्थापित करना ही पड़ता है।

- १. देखिये—प्रस्तुत प्रबंध द्वितीय अध्याय पृष्ठ ३३।
- २. देखिये—प्रकृति परकार के हिन्दीकरण।

| | | | | |
|---|------------|--------|------------------------|----------------|
| १ | फारसी | हिन्दी | बंगला प्रयोग और प्रकरण | हि० इ— |
| २ | (१) अस्तोस | अस्तोस | अस्तोस | (१० क० प० ७३३) |
| ३ | (२) फिदावत | फिदाव | फिदाव (क्यू ल) | (१० क० प० १०९) |
| | (३) बरका | बरका | बरका | (१० क० प० १०९) |

जो मुसलमान-शासक अथवा जनसाधारण पंजाब तथा दिल्ली, उत्तर प्रदेश बिहार से भारत के अन्य प्रदेशों में गये वे हिन्दी को साथ ले गये। क्योंकि धरती धरती से उनका काम नहीं चल सकता था। पहले कहा जा चुका है कि हिन्दी को अधिक भारतीय बनाने में पूर्व-मुगलकाल से ही मुसलमानों का जबरदस्त हाथ है। यद्यपि जो भी मुसलमान हिन्दी प्रदेश से बंग-मैथिल में गये वे हिन्दी को साथ ले गये। यद्यपि कुछ हिन्दीनुमा धरती-धरती शब्दों का प्रभाव गौड़ीय बौद्ध-महाबन्धी में स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। यद्यपि गुणवत्कता के कारण अथवा भावव्यक्त्याद्य कुछ हिन्दी शब्द बंगला में प्रसिद्ध गये हैं।

तीन शी से अधिक शब्द एक हिन्दी-शब्दों का प्रयोग गौड़ीय-बौद्धपर कर्ता अपनी बौद्ध-पदावलि में करते रहे हैं। पहले यह चुके हैं कि इसका कारण सांस्कृतिक था। डा० सचर महोदय ने सांस्कृतिक प्रभाव के इस सिद्धान्त की पुष्टि इस प्रकार की है 'सरसतम प्रकार का जो प्रभाव एक भाषा का दूसरी पर होता है, वह शब्दों का उच्चारण सेना या अपनी भाषा में उच्चारण प्रयोग है। जब सांस्कृतिक शब्दों को उच्चारण लिया जाता है तब सर्वथा यह संभावना रहती है कि उच्चारण शब्दों को भी उच्चारण से लिया जाये'।

कितने ही परकृतियों के पदों में हिन्दी प्रभाव की झलक है हिन्दी-शब्द उनके पदों में मोटी के समान जड़े हुए हैं। इनको दूसरे अध्याय के परिशिष्ट में हिन्दी शब्दावली की सारिका में देखा जा सकता है। किन्तु यह कहना सरस नहीं है कि किस उच्चारण में अधिक हिन्दी शब्द बंगला बौद्ध-पदावलि में प्रवेश पा गये हैं।

| | | |
|---|---------------------------------|------------------------------|
| १ | संस्कृत हिन्दी प्रयोग और प्रकरण | बंगला प्रयोग और प्रकरण |
| | दुर्लभ दुर्लभ महि बराय दुर्लभ | दुर्लभ-परिचय दुर्लभ रहे केसि |
| | मनुस्मृति (मा० १।१२।४) | (प० ५० प० १२२) |
| | दुर्लभ दुर्लभ-दुर्लभ कहत बौरि | दुर्लभिनी (प० ५० प० २६६) |
| | बीजहृ दिव पाठी | |
| | (पू० पृ० १०१२२०) | |
| | दुर्लभित दुर्लभ | दुर्लभ (प० ५० प० २२) |

२ The simplest kind of influence that one language may exert on another is the borrowing of words. When there is mutual borrowing there is always the likelihood that the same words may be borrowed too

-Edward Sapir Language and Culture

३ देखिए—दूसरे अध्याय का परिशिष्ट हिन्दी-शब्दावली में उच्चारण हिन्दी प्रभाव।

संभवतः सोलहवीं सताब्दी के उत्तरार्ध एवं सत्रहवीं सताब्दी के पूर्वार्ध में ही हिन्दी के ध्वज शब्दों का प्रयोग हुआ होगा।

यह कहना भी घासान नहीं है कि किस बंगाली परकृता ने ध्वज शब्दों का प्रयोग किया है, किन्तु हमारे अनुमान से सोलहवीं सताब्दी में गोविन्ददास कविराज (११११-११११ ई०) ने ही ध्वज शब्दों का प्रयोग, अपने पदों में किया है क्योंकि परकृतियों में सबसे ध्वज शब्दों की रचना ही गोविन्ददासजी ने की है। १७वीं सताब्दी में मरहूरदास चक्रवर्ती ने ध्वज शब्दों को प्रयोग किया है। इनकी रचनाएँ भी कम नहीं हैं और ये सब में ही बास भी करते थे। अंत में हम कह सकते हैं कि चैतन्य-सम्प्रदाय का आन्दोलन सारे बंगाल और ब्रजमाया क्षेत्र में सचियों तक छाया रहा है और इस बीचकास में सब के शब्दों को मुक्तमात्र से ग्रहण किया जाता रहा है।

यह शब्दबल हिन्दी प्रभाव को सारे सम्प्रदाय एवं उसके इतिहास विस्तार और आन्दोलन को लेकर ही ठीक तरह समझा जा सकता है और इसके सचित स्थान का निर्धारण और मुक्तिकर्तन हो सकता है।

हिन्दी शब्दों के प्रयोग के कारण बंगला में हिन्दी शब्दों की स्तुतय भी घेरिणी होती है। हिन्दी के ये शब्द जो बंगला में उत्सम् रूप में या श्यों के ल्यों बने पये हैं। 'बुछरी बोली में ये शब्द आते हैं बिनाकि किसी धातविक या बाह्य कारण से ध्वनि परिवर्तन या रूप परिवर्तन प्रकवा भन्वय में परिवर्तन हो गया है। सुप्रसिद्ध माया-वैज्ञानिक डा एडवर्ड सपिर का भी मत हमारे सिद्धान्त का समर्थन करता

१ इनको अपाचित उच्चारण लिए शब्द भी कह सकते हैं। इनके उदाहरण कुछ इस प्रकार हैं :—

| | | |
|--------|---------------------------|------------------------------|
| शब्द | हिन्दी प्रयोग और प्रकरण | बंगला प्रयोग और प्रकरण |
| घड़ेर | फिरत घड़ेरें परते मुलाई | मावक मनमक फिरत घड़ेर |
| (घ) | (घु० रा० ब० मा० वा ११६) | (गोविन्ददास प० क० प० पद ११६) |
| घनोरद | | घम भरख मुज पुन पुन घनोरद |
| (कि०) | | (प० क० प० २७४२) |
| धबिकाह | इकटक नैन हद धबि की धबिकाह | कानु अनुदाय बाह्ये धबिकाह |
| (वि०) | (उ० ब० म पु० ११८) | (प० क० प० पद २१६०) |
| धबीले | धबीले मुरती मीकु बजात | समस धबीले रस बरछोले |
| (वि०) | (सूरदास सू० सा० १०।१२११) | (गोपालदास प० क० प० पद २६६६) |
| दीवी | दीवी काहू काने की कौबर— | तम मन बनहु निजायदि दीवी— |
| क्रिया | (सूरदास सू० सा० १०।१६६१) | (उदयदास, प० क० प० पद २८१८) |

है। वे लिखते हैं कि ग्रन्थ क्षेत्रीय शब्दों के उच्चार सेने में सर्वत्र ही ध्वनि-संशोधन होता है निरूपय ही ग्रन्थ क्षेत्रीय ध्वनिर्वा या बसापातिक विशेषताएँ ऐसी हो सकती हैं जो स्वदेशी प्रकृति के अनुकूल नहीं होंगी^१।

अतः हिन्दी के अनेक शब्दों के रूप में बंगला में ग्रन्थय एव ध्वनि-बससम्बन्ध के कारण परिवर्तन हो गया है। क्रियाओं में सबसे अधिक विशेषणों सर्वनामों एवं उच्चारणों की एक बहुत बड़ी संख्या में ऐसा रूप या ध्वनि परिवर्तन हुआ है। इनमें बहुतों में स्वरगम, स्वरसोप, व्यञ्जनापम एवं व्यञ्जन सोप हुआ है^२।

१ The borrowing of foreign words always entails their phonetic-modification. There are sure to be foreign sounds or accentual peculiarities that do not fit the native phonetic-habits.

—Language. P 107

२ हि० अणुह—

ब० प्रापन — प्रापन मासे प्राघ बहु प्राक्षिप्त (प० क० ट० पद १७४८)

(घा का प्रागम, ग का घ में महाप्राणत्व, ह महाप्राण का सोप)

हि० पगड़ी — एते पर अक्षिवाँ रसधानि अत्र पगीया लपटानी (सू० छा० १११७)

ब० पाम — तरपति पाग धरे (प० क० ट० पद १४३)

(म स्वर के स्थान पर घा स्वर का प्रागम इ व्यञ्जन का सोप)

हि० बनबारी — मधुरा जन्म तिथो बनबारी (गोविन्द की० २० भाग बीबी

पृ० ८१)

ब० बनघोघारि— बीर हरण नागर बनघोघारि (प० क० ट०, पद २१११)

(ब व्यञ्जन का सोप घो घा स्वरों का प्रागम)

हि० अघ — अघ विचारि अघ चायहु ताठा (रा० अ० मा० सं० पृ० ४३८)

ब० अघु — को अघु बेरन सहइ (गोविन्दराज प० क० ट० पद १७४)

(स के स्थान पर बंगला में अघु का निरय ध्वनि परिवर्तन होता है)

हि० धु पुणसी — धु पुणसी मटें सठकें मुक्त ऊपर (मुमसी क० प० वा० ३)

ब० धुभुरघोघासी धुभुरघोघासि अमकें अमके (कृष्णराज, प० क० ट० पद

२८१०)

(घा का घो में परिवर्तन 'ब' का बंगला उच्चारण 'घो घा' होता है।)

हि० अतुरपन—

ब० अयोपानपना—अनु सांगासिनि मापर अयोपानपना (प० क० ट० पद १०१)

यहाँ तक हमने शब्दों के प्रभाव और प्रभाव प्रकार पर जो विचार किया है उससे स्पष्ट हो जाता है कि हिन्दी शब्दों का गंभीर प्रभाव बँगला शब्दावली पर पड़ा है, यह प्रभाव उधार ली हुई अस्थायी शब्द-सम्पत्ति के रूप में नहीं है। वह प्रत्यक्ष प्रभाव है उच्चारण मेर के कारण हिन्दी-शब्दों का ध्वनि-परिवर्तन हुआ है। इसी कारण शब्दों के रूप और अन्वय में भी परिवर्तन दृष्टिपोचर होता है।

प्रभाव की गारमा

हिन्दी से बँगला में आगत-शब्दों के पर्याय भी गिसते हैं। साथ में उनके बँगला-पर्याय भी बहुत हैं। हिन्दी-शब्दों के बँगला में गये हुए पर्याय अधिकतर उद्भव भववा श्रेयक हैं। कुछ उद्भव भववा श्रेयक मैथिली भववा विद्यापति की परावली से भी आए हैं। किन्तु यह प्रश्न पैदा होता है कि बँगला में इतने पर्यायवाची शब्दों के होते हुए भी हिन्दी शब्दों को बँगाली शब्दों के स्थान पर क्यों अपनाया गया है ? इसका कारण यह हो सकता है कि हिन्दी के पर्यायवाची शब्द प्रयत्न-साधक या प्रयोग की सुविधा के लिए अपनाये गये हों। पहले कहा जा चुका है कि हिन्दी एक विद्यालय भूसाव की भाषा थी उसका प्रचार भारत के उत्कासीन अहिन्दी प्रदेशों में भी कुछ न कुछ था। अन्व्य भाषाभाषी प्रदेशों के लोग भी कुछ न कुछ इसको समझ सेते थे। बँगाली पीढ़ीय बँगलायक परकृताओं से अपने सम्प्रदाय और पर्वों को सर्वजन प्राज्ञ या बोधमय्य बनाने के लिए हिन्दी पर्यायों को बँगला में गिनाया होगा। भावस्वकृता एवं दुष्प्रतिष्ठा के कारण भी ऐसा हो सकता है।

पर्यायवाची शब्द किसी प्रभाव की पूर्ति ही नहीं करते किन्तु गुणात्मकता के कारण प्रभाव के भी स्रोतक होते हैं। परन्तु प्रभाव अर्थ के उच्च अनुमान के तत्त्व को अभिव्यक्त करने वाला नहीं है जो गुणात्मकता व गुणनिष्ठता के कारण होता है। एक तरह प्रभाव के कारण है, किन्तु प्रभाव वाले शब्द के पर्याय का प्रयोग वस्तुमत्त हुआ है या भावमत्त। शब्द कभी-कभी सहज सम्पर्क के कारण

(रूप एवं अन्वय में परिवर्तन भाववाचक संज्ञा वन हिन्दी का प्रत्यय)

हि० नवल — नवल मेह नव पिया नवो नवो (सूरदास सू० सा० १०।१६१)

ब० नघोल — नघोल नघोल नघो रंन में (धिवराम प क० ट० पर१३३७)
(व व्यंजन का लोप ओ स्वर का प्राचन एवं ष के स्थान पर गिरव ध्वनि परिवर्तन हिन्दी से बँगला में होता है)

हि० भीषक —

ब० भडक — भडकट बिभुरि नमन भडकक (प० क० ट० पर १० १)
(ओकारांत का लोप व व्यंजन का प्राचन)

भी गृहीत हो जाते हैं। सहज रूप से प्राप्त शब्द भी पर्यायवाची का स्थान पा जाते हैं। अर्थ वैशिष्ट्य की गुणारमकता उस शब्द में होती है परन्तु प्रयोग की सुविधा की दृष्टि से तथा व्यवसाय की दृष्टि से भी शब्द गृहीत होते हैं।

शब्दों का प्रयोग सामान्य व्यवसायी दृष्टि से हुआ है या शोधप्रियता की दृष्टि से भी। हिन्दी के बँगला में जाये हुए शब्दों में अर्थ-संकोच नहीं है। अर्थ-विस्तार भी नहीं हुआ है। जिस भाव के लिये वे हिन्दी में वे उस भाव की आत्मा बँगला में भी सुरिलत रही है। हिन्दी के पर्यायवाची शब्द बँगला में हीन अर्थ के छोटक नहीं हैं न उसमें अर्थोपक्रम है। अतः वस्तु एवं भाव की दृष्टि से वे शब्द अपनाए गए हैं। आरम्भिक ब्रह्मभाषा की अन्तिम या आधुनिक-भाषावली (Current Vocabulary) बँगला में समावेश पा गई है। वस्तु एवं भाव के छोटक कुछ शब्दों के पर्यायों के उदाहरण समीचीन हैं। (वैलिये टासिका पृष्ठ ८८।) अगले पृष्ठों में वाक्य-विन्यासगत शोध-वैष्णव-पदावली पर हिन्दी प्रभाव का कुछ विवेचन है।

३

बंगला-गौड़ीय-वैष्णव-पदावली में वाक्य-विन्यासगत हिन्दी प्रभाव

भाषायी प्रभाव केवल शब्दगत ही नहीं होता है वाक्य-विन्यासगत प्रभाव भी उसमें समाविष्ट है। जिस प्रकार शब्द-संपत्ति एक भाषा से दूसरी भाषा में गृहीत होती है उसी तरह वाक्य भी एक भाषा से दूसरी भाषा में प्रवेश पा जाते हैं। जैसा कि भाषा-बैज्ञानिक सहस्र ने बताया है, कि वह शब्दों के अर्थों में गृहीत शब्दों, प्रत्ययों का ही नहीं बरब व्याकरणिक-रूपों को एक भाषा दूसरी से लेती रहती है। यह कोई अत्युक्ति नहीं कि पूण्यता विगुड और अविधित भाषा संसार की सम्यक् भाषाओं में नहीं मिलती है।^१ इसी प्रकार शब्दों की तरह अनेक हिन्दी वाक्य बँगला-वैष्णव-पदावली में अवस्थापक, गौरपद-तरंगिणी पदमेक एवं अरिठ काव्यों, अंत्य-अरिठामृत मन्त्ररत्नाकर गौर-अरिठ-विन्यासगत गीत आदिक में गृहीत हुए हैं। मध्यकालीन बँगला भाषा के मूल पर इस वाक्य-विन्यास का महत् प्रभाव पड़ा है। जिससे भाषा कुछ सिपड़ी बन गई है। बँगला-साहित्य में यह हिन्दी-वाक्यावली कुछ बँगला के अर्थ में ठस गई है। बँगला के अनेक पद ऐसे हैं जो हिन्दी-वाक्य-विन्यासगत प्रभाव के कारण भाषा-समक अर्थकार के उदाहरण कहे जा सकते हैं वे पद उभय भाषात्मक हैं कुछ बँगलात्मक हैं, कुछ हिन्दी प्रभाव-गमित हैं।

^१ The modes of borrowers are read into the language he borrows words sounds idioms, suffices and even the grammatical forms may be and constantly are borrowed from one dialect by another and it is not too much to say that a thoroughly pure and unmixed language does not exist among the civilized races of mankind A. H. Sayce, Introduction to the Science of Language 1890 Page 172

१ वस्तुगत शब्द एवं इनके प्रत्यय

शुद्धी

होपसा

| | | | |
|----------------|---|----------------------|---|
| घाय (संज्ञा) | □ | घागुन (संज्ञा) | □ |
| उडानि (संज्ञा) | □ | इकनि (संज्ञा) | □ |
| सोम मू (क्रि०) | □ | लुभिसाम (क्रि०) | □ |
| मूषट (सं०) | □ | भामटो (सं०) | □ |
| बाणमू (क्रि०) | □ | बाविसाम (क्रि०) | □ |
| टिकै (क्रि०) | □ | बाके (क्रि०) | □ |
| ओर (सं०) | □ | स्वान बनइ (सं०) | □ |
| मुबनु (क्रि०) | □ | मुभिसाम क्रि० | □ |
| घारि (क्रि०) | □ | होकाइया (क्रि०) | □ |
| दिये (क्रि०) | □ | दियाये (क्रि०) | □ |
| बरती (सं०) | □ | बरिपी (सं०) | □ |
| निबोरि (क्रि०) | □ | निबकाइया (क्रि०) | □ |
| पहिरण (सं०) | □ | पिन्वन (सं०) | □ |
| पुसइ (क्रि०) | □ | बिन्नासा करे (क्रि०) | □ |
| फेरि (क्रि०) | □ | पुसइया (क्रि०) | □ |
| बाठ (सं०) | □ | कपाबारी (सं०) | □ |
| बेबनु (क्रि०) | □ | बेपिसाम (क्रि०) | □ |
| मिबे (क्रि०) | □ | वस्ये निमिच (क्रि०) | □ |
| होए (क्रि०) | □ | हस (क्रि०) | □ |

भागवत् शब्द और उनके प्रत्यय

शुद्धी

होपसा

| | | |
|------------------|---|-----------------------|
| पपाभिया (वि०) | □ | पुमाव्य व्यपिठि (वि०) |
| पयानि (वि०) | □ | पडानी बोका (वि०) |
| उरम्यई (क्रि०) | □ | पडाबदि (क्रि०) |
| केचो (सं०) | □ | केचन कामाई (सं०) |
| मुपुरयोमि (वि०) | □ | मुषिण कोकडामो (वि०) |
| बतुरपन (वि०) | □ | बातुपं (वि०) |
| खीले (वि०) | □ | मुन्बट, नायक (वि०) |
| हीठपना (वि०) | □ | पूष्टठा (वि०) |
| हुलहित (सं०) | □ | मबबनु पूरण बो (सं०) |
| मिपट (वि०) | □ | मिठाठ (वि०) |
| परदेसिया (सं०) | □ | प्रबासी (सं०) |
| रसिकपन (भा० सं०) | □ | रसिकठा मा० (सं०) |
| सठबरिया (सं०) | □ | बार, ब्यमिचारी (सं०) |
| सठीपन भा० (सं०) | □ | सठीरव भा० (सं०) |
| सठ (सं०) | □ | सठजन आममामुप, |
| | | भडमोच (सं०) |
| सयामि (वि०) | □ | बापुरा (वि०) |
| सीबे (वि०) | □ | सोपाबाबे (वि०) |
| सुडार (वि०) | □ | सुबठन (वि०) |
| सोठिमि (सं०) | □ | सपली, सतिन (सं०) |

हिन्दी वाक्य-विन्यास के प्रभाव के कारण बौंगसा चरण-वधावसिधों की माया की प्रकृति में विकार उत्पन्न हुआ है यह नीचे के उदाहरणों से स्पष्ट है —

| पद | पदवर्ती | प्रसंग | पद संख्या |
|----------------------------------|-----------------|----------------------|-----------|
| घससात जम्हात, सदात मलपात | कृष्णदास | ४६४ सा० प० पुषि | १४४ |
| घसि रि होत मनहूँ | जगतादास | गो० प० त० पद | २७० |
| घानू परम रंगहासि स्वाम रसिक-राज | नरहरि चक्रवर्ती | म० र० पु० | ४२० |
| काहूँ की काहूँ पायो जेनेन्द्रनरन | कृष्णदास | ये० ज० मध्यमीसा प्र० | |
| | कविराज | खड दूसरा परि० | १४ |

कुछ वाक्य हिन्दी के ऐसे हैं जो क्यों के क्यों घाये हैं जैसे—

| पद | पदवर्ती | प्रसंग | पद संख्या |
|-----------------------------------|-----------------|---------------|-----------|
| घारति जय रूपभानु किघोरि | परमानन्द | प० क० त० पद | २८२८ |
| घारति मुगस किघोरिक कीज | " | " | " |
| ए दुहुँ मंगल घारति कीजै | रामराय | " | २२४४ |
| मंससे-नयने निरखि सुख सीजै | | | |
| ए जनि माननि मान निबायो | ब्रह्महरिदास | | १४६६ |
| गोबिंद मुखारिबिंद निरखि मनविचारों | सूरदास | " | १०८६ |
| जय मेरो प्राण सनातन रूप | नरहरि चक्रवर्ती | गो० ज० पु० | ३४१ |
| बीघो-बीघो मेरे मन जोरगोरा | साह चक्रवर | गो० प० त० | ४१२१६ |
| तज मन हरि विमुक्तन के सग | माधो | प० क० त० पद | ३०३२ |
| हैस सखि भूलत राधा दयाम | सजात | " | १२६१ |
| मघोस किघोर मघोल रंग में | दिवचाम | " | १२२४ |
| माधव मनमय फिरत घड़ेच | गोबिंददास | पदमेद | ३१८ |
| सबहूँ गायत सबहूँ नाचत | | | २०८० |
| समय जानि सब सखिगन घाई | नरहरि चक्रवर्ती | गो० ज० वि० पद | १२ |

पु० २१३

होरि देसत मोर किघोर
 रसवती मारी गदाधर कोर
 शिवानंद गो० प० त० १।१।४०

किन्तु काफ़ी संख्या में ऐसे वाक्य हैं, जिनमें उनकी प्रकृति एवं प्रकृति घोर विषय तत्त्व एवं सम्बन्धतरह हिन्दी से प्रभावित हैं। सम्भवत घोर वाक्य-विन्यासगत हिन्दी प्रभाव की नीति हिन्दी पदपत्र प्रभाव का विशेषण धरने प्रकरण में किया जाएगा।

४

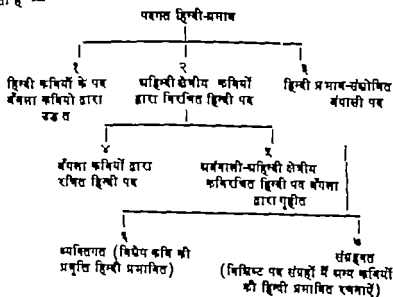
‘बंगला गौड़ीय-वैष्णव-पदावलिओं में पदगत हिन्दी प्रभाव

भाषायी प्रभाव का एक रूप पदावतरणों का प्रागम भी है। एक भाषा में दूसरी भाषा के कवियों के पदों का समावेश भी हो जाता है। इसी कारण बहुत-से हिन्दी पद बंगला वैष्णव-पदावलिओं में सहजस्वरेण मिल गए हैं। परकताओं ने उनको पदावलिओं के अतिरिक्त अर्थ समझकर ग्रहण किये हैं। हिन्दी कवियों के जो पद बंगला में गये हैं उनकी भावधारा बंगला और ब्रजबुद्धि के पदों से भिन्न नहीं है। सब राधाकृष्ण विषयक हैं। वैष्णव-भुग में इतना अधिक भाषा विषयक मेव भी नहीं था। जिस सरलता एवं सुविधा से वैष्णव भाषाओं द्वारा उनके अनुयायी बंगला ब्रजबुद्धि अथवा विद्यापति की पदावली को समझते थे उसी तरह वे हिन्दी के पदों को भी समझ लेते थे। संकीर्तन एवं गेय पदावली में बंगला पदों के साथ-साथ हिन्दी पद भी गाये जाते थे।

किन्तु, स्मृतता इन पदों की जो श्रेणियाँ हो सकती हैं —

- १ हिन्दी क्षेत्रीय कवियों के उद्धृत हिन्दी पद।
- २ (क) बंगालियों एवं वैष्णवों कवियों द्वारा विरचित हिन्दी पद।
(ख) बंगला के धर्म्य कवि जो हिन्दी से प्रभावित हैं।

इस पदगत प्रभाव को निम्न मातृशिव के द्वारा यही प्रकार समझा जा सकता है —



१ कुछ पद्य मूलतः हिन्दी-क्षेत्रीय कवियों द्वारा विरचित हैं। बँगला पद्यों से विचार साम्य के कारण एवं शब्दबुद्धि के पक्षों से भाषायी सादृश्य के कारण बँगला पदावलिओं में बहुत से हिन्दी पद्य बुलभित पये हैं। और ये पद्य बँगला वैष्णव पदावलिओं के सहजस्फुरण अभिन्न धर्म ही पये हैं। भागे के मानविज्ञ द्वारा इस स्थिति को सरलता से समझा जा सकता है।

१ हिन्दी क्षेत्रीय कवियों के उद्धृत पद्य

| क्रमांक | पद्यकर्ता | पद्य सं० | संग अध्याय वृत्त ^१ | पद्य का प्रकाशन सं० ^२ |
|---------|-----------------------------------|----------|---------------------------------|--|
| १ | सूरदास—३ पद्य | १ | ४६१ सा० प० पुषि | ब० सा० प० कमकता |
| | | १ | २११, म० प्र० प० र० | |
| | | १ | प० क० त० पद्य १०८६ | ब० सा० पा० कमकता ब० १३३८, प्रथम सं० म० प्र० प० र० पद्यकल्पतरु की पूरक |
| २ | तंबदास—४ पद्य | १ | ४६६ पद्य रससार म० प्र० प० र० | |
| | | १ | ४३१ पद्य रससार पु० १३६ | " " |
| | | १ | ४३६ " " | " " |
| | | १ | ४३७ " " | " " |
| ३ | कृष्णदास—१ पद्य | १ | ४३८ " " | " " |
| | | १ | ४३९ " " | " " |
| ४ | माधवी (माधव)— ४ पद्य | १ | ४६२ ' ' | " " |
| | | १ | प० क० त० पद्य २३६४ | ब० सा० प० कमकता |
| | | १ | पद्य २३६३ | ब० १३३८, प्रथम सं० |
| | | १ | पद्य २३६८ | " " |
| ५ | गोपाल मद्दट या गोपालदास ३ पद्य | १ | पद्य ३०१३ | " " |
| | | १ | " पद्य १०८८ | " " |
| | | १ | " पद्य २३३८ | " " |
| | | १ | " पद्य | " " |
| ६ | सुन्दर कवि—१ पद्य | १ | ४६४ सा० प० पुषि १४४ | " " |
| ७ | आगरभोपालि १ पद्य | १ | प० क० त० पद्य २०१४ | " " |
| ८ | नृप रत्ननाथ—१ पद्य | १ | ४४१ सा० प० २०१ पुषि १४१ | " " |
| ९ | मनसकवि व्यासजी | १ | म० र० पु० ४०६ | म० र० |
| | | १ | | " " |

१ देखिये—संकेत रूपों के लिए सांकेतिक विज्ञ।

२

"

"

"

पद इनके कुछ उदाहरण नीचे विवेचन देना आवश्यक है^१ ।

१ मूरबास (१५३५-१६३८ वि० स०)

हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि मूरबास के कुछ पद बँगला-बँगला-पदावसिर्षों के प्रभिम्ल प्रबंध बन गये हैं हिन्दी से बँगला में उच्चारण भेद होने के कारण उनके पदों में कुछ विकृति या नयी है उदाहरणार्थ—

बँगला पाठ —

पेकमु एकहि अद्भुत राय, बुगत कहस पर मजबूर पीरत—१
तापर सिंह करत अनुराग तहिएर सरवर तापर गिरवर—२
बिचि पर फूल कंज पराग, रसिक कपोत बसे तहिएर—३
अरुण अमृत फल लाग, फल पर पुहुप पुहुप पर फलब—४
तापर मनिबर नाग इहबिध ओभा रहत निशि बासर—५
कबहुं न करत ठियाग मूरबास पहुँ रसिक-किरनयि—६
बाहुँ सिन्धु—सोहाग (४६३, सा० प० २११ पृ०)

बँगला का यह पद 'मूरबास' का ही पद है इसमें संदेह नहीं किन्तु कितने ही विकारों से युक्त हो गया । इसका मूल हिन्दी पाठ यों है—

हिन्दी पाठ :—अद्भुत एक अनुपम बाब । १

बुगत कमस पर मजबूर अद्भुत तापर सिंह करत अनुराग—२
हुरिपर सरवर सर पर गिरवर गिर पर फूल कंज पराग—३
बिचि कपोत बसे ता ऊपर अमृत फल लाग—४
फल पर पुहुप पुहुप पर फलब तापर सुकपिक मृग-पद-काय—५
कंजल अनुप अग्रमा ऊपर ता ऊपर एक मनिबर नाग—६
अम-अंय प्रति घोर घोर अवि अपमा ठाकी करत न त्याग—७
मूरबास—अनु यिमी सुधारस मानों अवरत के बड़भाय ।

(मूरबास—सू० सा० प० २७२८)

यद्यपि इन दोनों की तुलना में बँगला पद में विकृतियों की मनी प्रकार समझा जा सकता है—इसके लिए यह तालिका भी आती है^२ ।

१ देखिये—हिन्दी भाषा इतिहास मिस्ट्रीवर, पृष्ठ ३७३ ।

२ कुछ अर्थों का अन्तर तो लिपि दोष के कारण विहित होता है । 'अन' नाम के लिए अन्तर नहीं माना जा सकता, बंगाली लिपि में (क) और (र) में केवल बिन्दु का अन्तर है । लिपिक में हिन्दी के 'अ' पर मूल से बिन्दु चढ़ा दिया है ऐसे ही और स्थलों पर भी वास्तविक अन्तर न होकर लिपि दोष ही हो सकता है ।

| १ | २ | ३ | ४ |
|--------------------|----------|------------|--------------|
| उच्चारण से | ध्याय से | श्लोक से | व्याख्यान से |
| बौद्ध-धार्मिक—कर्म | १ वेदुमु | १ मन्मुत | १ सोहाम |
| हि० १ कर्म | — | १ मन्मुत | ७ बड़माग |
| ब० १ उपर | २ तहिपर | २ मन्मुराम | — |
| हि० १ पर | २ तापर | २ मन्मुराम | — |
| ब० १ गीरत | १ एकहि | — | — |
| हि० २ ब्रह्मि | १ एक | — | — |
| ब० १ पद | — | — | — |
| हि० ७ प्रमु | — | — | — |

बौद्ध के संग्रहों में सुरदास नाम की छाप से एक ऐसा पत्र भी मिला है जो हिन्दी सुरदास की प्रतियों में नहीं मिलता। यह पद यों है।

बौद्ध मुष्कारबिद निरखि मन बिचारों ।
 अक्षकोटि भावकोटि, मदन-कोटि उचारो ॥
 सुन्दर कपोल सोल, पंडित हल नपना ।
 प्रपर बिन्दु मन्मुरास कुम्भकलिक हयना ॥
 मणि-कुम्भल मन्मुरास प्रम-मृग पुषा ।
 केदार को तिसक बनो सोने मङ्गिपुषा ॥
 नर बलमार तङ्गिपुषा गले बनमासा सोहे ।
 लीला नर सुर के प्रमु कये जग-मन-मोहे ॥

(प० क० त० १०८६) (एच० वी० एस०, पृ० ३७३)

इस पद को पदकल्पतरु के संकलनकर्ता बौद्धधर्माचार्य एच० वी० सुन्धार सेन सुरदास का प्रामाणिक पद मानते हैं। किन्तु हिन्दी सुरदास में इसका न मिलना कुछ सम्बेह पैदा कर सकता है पर मर्यादा यह है सभी एक सुरदास के समस्त पदों का संग्रह हो ही नहीं पाया। हो सकता है यह पद सुरदास का ही हो पर हिन्दी संग्रहों में न संकलित हो सका हो। एक सम्भावना यह भी हो सकती है कि यह किसी अन्य सुरदास का हो।

यही स्थिति नीचे संकलित दो पदों की भी है। इन पदों के संकेत के लिए प्रथम उच्चारण ही यहाँ दिये जाते हैं :—

(१) “कानाह धामारे बजमन मनमोहन राखस” एवं

(२) “धर्म पैलि भूमन बाद हिनोर बंधी बट ठट सब सखि मोर ।

भूमन गम्बकिपोर (४६६ पद रसधार)

ये दोनों पर हिन्दी सूरसागर में नहीं मिलते। बंगला के संग्रहों में हैं, और बंगला के विद्वानों ने इन्हें भी सूरदासकृत माना है। किन्तु यथार्थता संदिग्ध है। बौद्धा कि अभी ऊपर बताया गया है।

२ मंददास (१५६०-१६४३ बि०स०^१)

षष्ठ्याप के प्रसिद्ध कवि मंददास के चार पर अप्रकाशित पर रत्नावली में मिलते हैं,^२ उनमें से एक इस प्रकार है —

भूगत बज नागरवर चंद्रानलि संग भुजहि भुजहि बंये बंये ।
लडपठस्त कतहि बंये भूगत मंत्र प्राति बु ब राग रचत रये ॥
तापै तापै मयूर बोल भूलनै गुपुर् बिक्रिपि बोल
कावम्बिनि बयबै घोर पर पर पर बरबै बीर
बरिखत तहि बीर बीर तद्विष बकित प्रये ॥
भमकि भमकि भरत नीर, चातक बय बोलत बीर
छार भुज कपोल-कुल पुन पुन कुइकत सब कुन कुन
भमरीसमेंपुन गुन गुन पुन सब भुये कानिदि-कुल कुसुम-बु ब
बिनिने बहुत प्राति सुवंब पवन बमन पमन मंत्र मंत्र
हंत-गाव-मु य हेरि-मुवल रघ-बिलास नरबास निज ही प्राय
पूरत कत रये ।

(४३२ पररसघार अप्रकाशित-पर रत्नावली पृ १३६)

३ कल्याणदास (१५५२-१६३२ ई०)^३

षष्ठ्याप के कवि कल्याणदास का भी एक पर इस प्रकार है —

“भूलन लीला”

भूले भूले भूले इयाम बुन्वावने कुन सवन में मोहव
रगहि रंग हिबोर-पारि

(४६२ पररसघार)

१ षष्ठ० ब० स० पृ० २३६-२३९ ।

२ रोप तीन पर इस प्रकार हैं —

(१) भुन-भुन बिहायी संमहि मयोल किसोरि धारि (४३६ पररसघार)

(२) बेक धाड न सुबे समये-व्यारि पितामहि भूले धारि-(४३७ पररसघार)

(३) भूलतबनि चंद्रानलि मानर मटपंज धारि (४३८ पररसघार)

भूलन लीला पर मंददासजी के जो पर हिन्दी में प्राप्त हैं उनमें ये पर भी नहीं है।

३ षष्ठ० ब० स० पृ० २२३-२२४ ।

४ माघो (माघय)¹ (१५२३ ई०)

हिन्दी के कवि माघो के चार पद पदकल्पतरु एवं भक्ति रत्नाकर में मिलते हैं। ये इस प्रकार हैं—

जय जय रूप महारस सागर ।

हरदास परदास बखन रसायन आनन्दहुके पावर ॥

भक्ति गंभीर धीर करधामय प्रेम भक्तिक धामर ।

उज्ज्वल² प्रम महामाभि प्रकटित रैग गौड़ बैरागर ॥

सतगुण-भण्डित पण्डित रंजन कृष्णान-निज-नागर ।

किरित विमल यश गुणतीह माघो सतत रहल हिये धामर ॥³

(प० क० त० पद २३६३)

१ एक माघबदास का परिचय मस्तकाल में मिलता है उसे—

द्विने ध्यास मनो प्रकट हवे जन को हित माघो कियो—छंद ७० पृ० १६३

श्री सतीशचन्द्र राम 'पदकल्पतरु' के पाँचवें खण्ड में प० १६२ पर इनको हिन्दी का कवि मानते हैं एव श्री जगदबंशु मद्र के मठ का समर्पण करते हैं— माघो भक्तिार पदपुति ब्रजमण्डलेर प्रथमित ब्रजभाषा सुतराम् ताहाके ऐ ध धमे सोक बसियाई मने ह्य । माघन नायेर अपभ्रंश नामटी श्री हिनुरस्तानेरद बिदीपत्व (प० प० त० भूमिका पृ० २२७)

डा० आनन्द प्रियसंन ने श्री माघोदास नाम क कवि को ब्रजभाषा का कवि माना है और उसका जन्मकाल १५२३ सन् दिया है (बनकिमुसर मिटरेचर भाष हिन्दुस्तान ।)

डॉ० मुकुन्दर सेन भी इन्हें हिन्दी का कवि मानते हैं । प्रियसंन का उल्लेख करते हुए उन्होंने यह सन्देह भी प्रकट किया है कि क्या प्रियसंन के माघोदास ये ही माघो हैं ।

२ माघो के धारि पदों के यहाँ प्रारम्भिक चरण दिये जाते हैं । ये पद भी हिन्दी (ब्रजभाषा) के हैं ।

(१) जड कलि रूप घरीर ना धारत—(माघो प० क० त० पद २३६४ म० १० पृ० ४७२)

(२) बन्ध गोकुल जय मपुरा धम्य महुकुल-श्रवतरी—(माघो प० क० त० पद २६६०)

(३) तैज यम हरि-विमुचन के संग—(प० क० त० पद ३०३२)

द्वितीय—मुरदाश्री का भी एक पद इससे मिलता जुलता है—

तजो जन हरि विमुचन के संग (मुरदास सु० सा ३३२)

३ पाठ "उज्ज्वल" ।

४ पाठ "जापर" ।

५ 'गोपाल मट्ट' या 'गोपालदास' (१५०६-१५४२ खि० १४२५-१५००
शकाब्द)

ये गोपाल मट्ट न तो हिन्दी क्षेत्रीय कवि है न बंगाली क्षेत्रीय किन्तु ये बहिष्कार-आह्वान थे। दाखिलात होव हुए भी अतन्त्र मठ में बंदिब हो ये बंगाली बध्णुव माने जाने सने। इनके पदों का सम्मिलन बंगाली वैष्णव-प्रभावितियों में हुआ है। नीचे जो पद दिया जा रहा है वह इनकी हिन्दी-कृति को है, पर स्पष्टत बंगाली भावपूर्णकृत है। इसी कारण इन्हें इस प्रसंग में स्मरण दिया गया है। उदाहरणार्थ इनका एक पद इस प्रकार है—

१ श्लोके—बुम्बावन की माधुरी इन मिति दास्बावन कियो।

धमस राधारमन मट्ट गोपाल उजापर—

(हि० म० खं० २४ पृ० २०८)

हृदीकेध भयवान बिपुल बीठल रस सापर
सास्वरी बगलाव लोकनाथ महापुनि मधु की रव
हृदयदास पठित उमें धमिकारी हरि प्रंप
धमंडी बुयलकिधोर नृत्य भूगर्भ जीव बुद्ध बत तिधो
बुम्बावन की माधुरी इन मिति दास्बावन कियो।

धमबा—

मष्ट ५० छ पू २२ २७

शौ० छ० कै हि धं यें० कवि पृ० ४७

प० क० त० पर पू २०।

२ भूपमानु-तन्त्रितिके मनमोहन केमन जापि बसि—

(प० क० त० पर २५३३)

अंतिम पर गोपालदास की मण्डिता के नाम से है। परकल्पतक के संपादक श्री उशीधरप्रदाय इस पर को भी गोपाल मट्ट का ही मानते हैं। परकल्पतक पंचम-अध्या (परिशिष्ट) में लिखते हैं—गोपालदास की मण्डिता के नाम पाँच पर परकल्पतक में उद्धृत हुए हैं। उनके बीच में २२६६ संस्कृत पर बंगाल की बबुक्ति का नहीं है। उदाहरण के लिये श्री विमूढ बबुमाबा का है। बंगाली परकल्पतकों के निष्कृत बबुमाबा में कविता करना कुछ कठिन था तो हम इस पर को भी बुम्बावनबादी पद-बोस्वामियों में अन्ततम गोपाल मट्ट गोस्वामी की रचना ही अनुमान करते हैं पर इस प्रकार है—

की राते हृदय बोधि हरी।

गोपीनाथ मदन-मोहन वर— (प० क० त० पर २२६६)

हेक्तिरि सखि कडल नयन कुब में विराज है।
 बामेते किशोरि वोरि, धसस संय प्रति किमोरि
 हेरि इयाम-वयन बंद मंद, हास है।
 धी प्रीे बाहे भीड़ पुषत बात प्रति निबीड़
 प्रेम-तररी इरकि पड़त, कडल मनुपसंग है।
 धारि, मुक, विकु करत यान नमरा ममरि धरत तान
 मुनि यनि यनि जठि बैठत, खोर बपस जात ह।
 धी गोपाल मट्ट प्राज्ञ, बुम्बाबन कुबे बास
 धयन सपन नयन हेरि, मूलन मन धाप है।
 (प० क० त०, प० १०८८)

६ सुम्बर कवि^१

मन्त्रिकाम के फुटकर रचनाकारों में सुम्बर-शुमार के सेकक सुन्दर कवि का एक पर प्रकाशित पर रत्नावली में मिलता है वह बंभवा और हिन्दी-पाठ में के साथ इस प्रकार है —

बंगसा पाठ —

धरसात जन्मात लगे नखगात कियो सुतराह बोलत हूँ
 कबि सुम्बर उत्तर लो मुन उत्तर एतमह लो करे धज हूँ।
 उनसे कह क्या कहिये सजनी, सपने नहि लाल मई कबहूँ ॥
 बपये सखि धीबब है सबकि, पत सोमा धीबब नहि कहूँ।
 (४३४ सा० प० पृथि १४४)

हिन्दी पाठ —

धरसात जन्मात लगे नखगात (किली) सुतरात सुबोसल हूँ।
 कबि सुम्बर ज्जति और मुनो इतने पर सोंह करे धज हूँ ॥
 तिनसों ब कहा कहिये जिनके सुपने हूँ न लाल मई कबहूँ।
 बप में सखि धीवबि है सबकी वी स्वभाव की धीवबि नाहीं कहूँ ॥^२
 (हि० म० प० १०३)

७ भागरवामी^३ (भागरप्रोप्रासि)

भागरवामी के सम्बन्ध में यह निश्चितरूपेण नहीं कहा जा सकता है कि

१ हि० सा० इ० प० २११।

२ इन दोनों पदों की तुलना से यह विहित होता है कि बंभवा के क्षेत्र में हिन्दी पर जो किस प्रकार अपनाये की चेष्टा की गयी है।

३ देखिये—सा० प० प० २ संख्या बं० १३१६ 'प्राचीन पदावली' धीपक प्रबंध तथा प० क० त० पं० सं०, प० २१।

यह हिन्दी का मुसममान कवि या कवमित्री हैं । हिन्दी-साहित्य के इतिहास में पावरवासी नामक किसी कवि का नाम नहीं मिलता है । इनके दो इममपा के पर बीम्बुब प्रंवाबलियों में प्राप्य हुए हैं वे इस प्रकार हैं —

पिया मुब देखी इयाम नेहारी ।
कही ना जाति धामन की प्रोमा रही बिबारी ॥
हे देख प्रीतम प्यारिक सोझाये ।
खडुस्ते बीड़ इयाम बेत खडित धाय भापसैत
पौंछत पर पीत मीक प्रतिधय म्भुराये ॥
काबज के पड़त काज भति सति राखतमान
निरखत बदतारनिब पलकर नाहि माये ॥
कुज में रत-मुज कैनि बाज पाधौये खडुकि भ्रंति
दूह पीमुज ताम्बुल बाह भागरप्रोमासी माये ।

(प० क० उ० पर २८१४)

८ व्यासबी (१२६७ बि० स०)

हरिराम व्यासबी के हिन्दी पर 'भक्ति-रत्नाकर' में प्रवेश पा गये हैं के इस प्रकार हैं —

बँबला सम्भारण की देखने से तो यह बिबिठ होया है कि यह कोई 'भयबाब' हैं । किसी 'भयबाब' के रचित वे पर हैं । फिर भी यह एक संभावना मात्र है । निरुधम पूर्वक कुछ भी नहीं कहा जा सकता ।

१ व्यास बी के पर का हिन्दी पाठ इस प्रकार है —

बी बी मेरे प्राज कतातन क्य
भवतिन की सति होऊ मैया, भोग-यज्ञ के रूप
(मकतकवि व्यासबी पृ० १२४)

उनके समय पर बँबला धीर हिन्दी शब्दों में किस प्रकार है —

जय मेरे साधु शिरोमनि क्य सगतात
बिनके भक्ति एकरस निबहि । प्रीत इम्ब राधातन
(म० २०, पृ० ४७३)

साधु शिरोमनि क्य-सगतात ।

बिनकी बरिठ एक रस निबही प्रीत इम्ब राधा तन
(मकतकवि व्यास बी, पृ० १२४)

अथ मेरी प्राप सनातन रूप ।

प्रगतिम के, एति बोज जापा; योग यत के रूप ।
 बृदावन के सहज भापुरी प्रेम सुया के रूप ।
 कवना त्रिषु घनाप बंधु, ममत समा के रूप ।
 नरित सायबत, मतहि भाबरन कुशल सुखनुर रूप ॥
 भुवन बतु बत बिदित बिमल यम रसमा के रत रूप ।
 बरन कोमल कमल रज घाया भोदत कलि रजि रूप ।
 ध्यास जपासक, सदा जपासे राधा बरन रूप ॥

(स० २० पृ० ४७३)

यहाँ तक हमने उन पदों और पदकर्ताओं का उल्लेख किया है या बंगाली बंधुओं को प्रिय वे और जिन्हें उन्होंने अपनी पदावधियों में स्थान दिया है। वे पद बंधे उनके ही हाथ में हैं। और जैसे इन पदों के माध्यम से हिन्दी ने उनके हृदय में ही स्थान प्राप्त कर लिया है और यह हिन्दी पर उनकी प्रेरणा के स्रोत बने हैं। हिन्दी के प्रभाव का यह रूप अत्यन्त भावपूर्ण है। आगे बंगाली-बंधु पदकर्ताओं द्वारा हिन्दी के विरचित पदों का उल्लेख किया जा रहा है।

२ बंगाली बंधु-पदकर्ताओं के पद

दूसरे प्रकार के वे पद हैं या अहिन्दी-भारतीय कवियों द्वारा विरचित हैं क्योंकि पीढ़ीय-बंधु-सम्प्रदाय के यह गोस्वामी तथा अन्य आचार्यगण ब्रजमण्डल में निवास करते थे। उनके अनुयायियों के यम के यम बहुधा मधुरा-बृदावन तीर्थ-यात्रार्थ धारा जाया करते थे। बृदावन प्रवासी बंधु-महर्षियों के बीच में किसी-किसी ने जब प्रयाग-ब्रजबुद्धि एवं ब्रजभाषा में पद लिखे थे।^१

पहल कहा जा चुका है कि बंगाली-बंधुओं का एक बड़ा तीर्थ-स्थान बृदावन था। अतः उच्च प्रवेश की भाषा के साथ भी उन पदकर्ताओं में अनिच्छ घनुद्यम की वृद्धि हुई। कुछ पदकर्ता तो स्वामी रूप से बृदावन-वासी हो गये थे जिस प्रकार यह परम्परा आज तक भीवित है। कुछ तीर्थयात्रा के लिये आते थे और अपने प्रवेश को लौट आते थे। किन्तु ब्रजभाषा के सम्पर्क और प्रभाव से नहीं बच पाते थे। बंगाली पदों के साथ हिन्दी पदों की रचना भी स्वतः ही करने लगते थे। इस प्रकार बहुत हिन्दी पर बंगाली बंधु पदकर्ताओं द्वारा विरचित हैं। बंगाली-बंधु पदावधियों में जो गौरवपूर्ण स्थान बंगाली पदों का है, वही स्थान हिन्दी पदों का भी है। वे बंगला साहित्य की स्थायी निधि बन गये हैं। इस प्रकार हिन्दी प्रभाव

१ बृदावन-प्रवासी बंधु महान्तर मन्ने जो कह कह पद लिखियाध्वर्षन ठके प्रयाग ब्रजबुद्धि एवं ब्रजभाषाय । (स० सुकुमार सेन-बी०सा०ह०, प्र०सं०, पृ० ३२४)

की परम्परा पौड़ीय वैष्णवों में मध्यकाल से लेकर वर्तमान काल तक विद्यमान है। इसको हिन्दी का वास्तविक एवं घातुरिक स्वामी प्रभाव कहा जा सकता है।

पौड़ीय वैष्णव साम्प्रदाय के वैष्णव भी इसके अपवाद नहीं हैं। बल के प्रभाव के कारण बँगला कवि या बङ्गभूमि के परकटा बङ्गभाषा में भी कविता करने लगते थे। क्योंकि बँगला भाषावी बाठावरण होता है उसके अनुसार ही कवि काम्य-रचना करने समर्थ हैं। अतः उस काल में बँगाली वैतन्त्र्य-सम्प्रदाय के ध्याप्यों एवं अनुयायियों में भाषा की विविध-संवा बह रही थी।

यह कहना सरल नहीं है कि कितने बँगाली या अहिन्दी-श्रेणीय वैतन्त्र्य-मतानुयायी वैष्णवों ने हिन्दी के पदों की रचना की है। साथ में यह कहना भी कठिन है कि संख्या में कितने पर हिन्दी में विरचित हैं और प्रमुक्त कवि ने कितने पदों का सूचन किया है। प्रस्तुत प्रबंध में बल महानुभाव परकटाओं के कवित्व पर निम्न बिन्दु द्वारा एक विहंगम-दृष्टि डाली गई है।^१ यहाँ कुछ ऐसे बँगाली परकटाग्र

| क्रमांक | परकटा | पद सं० | प्रथम प्रकाश पृष्ठ | प्रथम प्रकाशन सं० | | |
|---------|------------------|--------|--------------------|----------------------------------|---------|-----|
| १ | कृष्णदास—४ | १ | प० क० त० पद २८१६ | ब०सा०प० ११३६ब० | | |
| | | १ | " पद २८६० | " " | | |
| | | १ | " पद २८६१ | " " | | |
| | | १ | पद १०५३ | " " | | |
| २ | कृष्णकांत तनया १ | १ | " पद २८६६ | " " | | |
| | | ३ | परमात्म—३ | १ | पद १३८३ | " " |
| | | १ | पद २८३५ | " " | | |
| | | १ | पद २८७१ | " " | | |
| ४ | रघुनाथदास—४ | १ | " पद २९५७ | " " | | |
| | | १ | पद २४६७ | " " | | |
| | | १ | " पद २८६६ | " " | | |
| | | १ | " पद २८४४ | " " | | |
| ५ | रामदास—१ | १ | " | " | | |
| ६ | राधावल्लभदास—१ | १ | प्री प० त० १।१।१७ | अगस्त्यभु भद्र ब०सा०प० १३१ बंगाल | | |
| ७ | शिवराम—१ | १ | प० क० त० पद १३३७ | ब०सा०प० १३३५ ब० | | |
| ८ | श्रीहिनीमदनदास—१ | १ | पद ७७० | " | | |
| ९ | धरमर दास—१ | १ | प्री० प० त० ४।१।६ | १३१ बंगाल | | |
| १० | भक्तवामदास—१ | १ | " ३।१।३० | " " | | |

१ इस संबंध में हिन्दी के बँगाली-वैष्णव कवि श्री सुरचंदन-भाद्र १३३७ बंगाल के लेख में भी यह बात है।

के नाम दिये जाते हैं जिन्होंने ऐसी भाषा में पद रचना की जो या तो यथार्थतः ब्रज भाषा थी या ब्रजभाषा के प्राच्य निकट थी^१।

उक्त कवियों का कुछ विस्तृत विवरण यहाँ दिया जाता है —

१. कृष्णदास^२

कृष्णदास ने चार ब्रजभाषा के पद ब्रजबुजि की रंगीनी के साथ लिखे हैं वे इस प्रकार हैं —

अप राधे श्री राधे कृष्ण श्री राधे अप राधे ।
 नंदनन अप भानु-सुकारी सखन पुन धगाधे ॥
 नव-धन-सुखर-नमोन किछोरी निज पुन हीतम साथे ।
 जाँवर केधेमधोर सिखंडक कुंचित केधिमि जादे ॥
 पोताम्बर-धर छोड़े नीस छाड़ि यन सौदाधिमि राधे ।
 कामु-यसेवन-भाला-विराधित राइ यसे मोति साथे ॥
 प्रथपित करणो पंजित रजित जंजन-यजन जामे ।
 कृष्णदास यने श्री बुदायने कुगल-किछोर विराजे ॥^३

(प० क० प० २८५६)

१ ब्रजभाषा पराब इस वैष्णव ऐम्बोलोजीक हिस्ट्री धान ब्रजबुजि सिटरेवर उक्त सूची का आधार है ।

२ हि० कु० सि० पृ १०३ तथा ३७६, प० क० प० पंचम खंड पृ० ३६ ।

३ दोष तीन पदों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है —

(१) अप राधे कृष्ण मोक्षिण पोपाल

पिरिबरबारी कुंज बिहारी, ब्रज जीवन नंदलाल

(कृष्णदास प० क० प० पद २८६०)

+ + +

(२) अप राधा पिरिबरबारी ।

नंदन नंदन नृपभानु-सुकारी ॥ (कृष्णदास प० क० प० पद २८६१)

बी० सा० इ० पृ० ३२३ ।

तथा (३) पंक्तिम पद बीम कृष्णदास' के नाम से है । यह बीम कृष्णदास' कोई प्राच्य कवि है या प्रस्तुत कृष्णदास से प्रसिद्ध है निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता । यह पद इस प्रकार है —

सोइती नव धीरबन्धु नायर-जनपारि ।

नवहीप इगु कवचांसिपु नवत-वत्सलकारी—।

(बीम कृष्णदास प० क० प० १०५५)

२ कृष्णकौत लनया^१

कृष्णकौत लनया का एक पद मिलता है जो इस प्रकार है —
 नागरि नापर सबपुन-भागर भानम् सापरे भाति
 सुनग बिलोचन माव सुसूचन बचनहि रंग-तरंग परकाशि
 सखि है किये इह अपकप रंग ।

बाधुनि भाधोनि भंग भोड़ापनि गाधोनि एकहि संप ॥
 इमार काय भवाहे हिजापत बात धरित बन-भाल
 चमरु-गौरि सुमंग सुकम्पई ता सगि बैतन विजुरिक आल ॥
 चरनक मात विशाल निशाधोन शोभा धरनि न होय ।
 ए कृष्णकौत निवांत निवारन निधिबिधि अन्तर जाधि रहुअप ॥

(प० क० त० २८८१)

३ परमानन्द^२

परमानन्द के छ पद ब्रजभाषा के मिलते हैं,^३ जिनमें से एक इस प्रकार है—

१ हि० बु० सि० पृ० ३७५ ।

२ परमानन्द कई हैं किन्तु यहाँ जिनके पद बिये गये हैं उनका उल्लेख 'वैतम्य चरित्तामृत' में परमानन्द सेन या दास के नाम से मिलता है ।

प० क० त० पं० खं० पृ० १४५ । डॉ० सा० इ० प्र० खं० पृ० २३८ ।

इन परमानन्द के सम्बन्ध में डा० सेन ने पृ० ३७६ पर जो पाठ टिप्पणी की है उससे यह स्पष्ट हो जाता है कि इनके सम्बन्ध में इन्होंने भ्रम रखा । उसी भ्रम में इन्होंने इसी प्रश्न के पृष्ठ ११ पर इन्हें परमानन्द कवि कर्णपुर मान लिया । इनकी ६ ब्रजबुद्धि कविताओं का उल्लेख पृ० १२ पर उन्होंने किया है । पृ० ३७६ पर इनका अत्यन्त जोरदार कथन यह है कि 'कर्णपुर' ने वैष्णवी भाषा में कुछ भी नहीं लिखा और इन्होंने अपनी रचनाओं में कभी परमानन्द का उदयोग ही नहीं किया । अतः इसके बावजूद उल्लेख को अधिक प्रामाणिक मानना होगा । अतः ये परमानन्द १३१७ नामे कर्णपुर परमानन्द नहीं । न ये ब्रजभाषायें भी की अष्टछाप वाले परमानन्द हैं । डॉ० सेन के अनुसार ये वे परमानन्द ब्रह्मचार्य हैं जो रूप पोस्वामी के शिष्य थे और गुन्नावन में रहते थे । एक परमानन्द गुप्त का भी संकेत 'वैतम्यदेव' के अनुवाकियों में मिलता है । संभावना है कि इन्होंने भी कुछ ब्रजबुद्धि पद रचे । परमानन्द के, यहाँ जो पद बिये जा रहे हैं वे किसी एक ही परमानन्द के हैं यह ऐसी स्थिति में निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता ।

भानु बनि नच भभिवैक योविन्द की ।
 परमानन्द प्रेम-सुख-कम्बकि ॥
 भक्तकत नील-नलिन मुख-सोहा ।
 हेरदते प्रखिल भुवन-मन-सोहा ॥
 मोरस बनि घृत हृत्कदिक् नीरे ।
 पामरि भरि मरि ठारइ शिरे ॥
 बाजत घंटा तास सुषग ।
 जय देइ सुर नारोग्य रंग ॥
 बलि बलि जातहि करनारविन्द ।
 परमानन्द के पहुँ श्रीगोविन्द ॥

(परमानन्द प० क० त० पद १२८५)

४ 'रघुनाथदास' (१५०६-१५८२)

रघुनाथदास का राजभाषा का एक पद मिसता है। इनके दो पद धीरे भी हैं पर के 'रजबुक्ति' में हैं। राजभाषा का एक पद इस प्रकार है—

हस्त सकल संताप जनम को मिदत तल्प यम कातिकि ।
 धारति किये मदनगोपालकि ॥
 गोघृत रचित कपूरति जाति भक्तकत कांजन चारकि ।
 घंटा तास सुषंग मूर्धरि बाजत बैंगु विषाणकि ॥
 चन्द्र-कोटि ज्योति भानु-कोटि प्रखि मुख भोभा मंजलाभकि ।
 मयूर-मुकुट पिताम्बर ओहे करे बैजपती मानकि ॥
 चरण कमल पर नयुर बाजैरि कुसुम गुलाबकि ।
 सुम्बर लोल कपोलक बबिसों निरकत मदनगोपालकि ॥

१ इनके नाम के दोपे दो उपलब्ध पदों के भारतीयक चरण सीधे दिये जाते हैं—

(१) धारति मुपल किशोरि की कीजे

तन मन धनहुँ निहापरि सीधे ।—(प० क० त० पद २८३८)

(२) धारति जय भूवमानु कुमारि ।

भक्तकत मुख-सोभा उमियारी ॥ (प० क० त० पद २८७१)

२ प० क० त० प्र० ख० पृ० ११७ । हि० बु० सि० पृ० ४२ ।

३ 'रजबुक्ति' के दो पदों का संकेत यहाँ दिया जाता है ।

जय जय श्रीजयदेव हयामय परमावति-रति कांत ।

राधा माधव-प्रेम भक्ति-रस उज्ज्वल मुरति नितांत ॥ (प० क० त० पद २३७७)

+ + +
 चन्द्र बरनि धनि + धारि (प० क० त० पद २४६७)

२ कृष्णकान्त तनया'

कृष्णकान्त तनया का एक पद मिलता है जो इस प्रकार है —
 नागरि नायर सबगुन-आपर आनन्द सागरे भासि
 सुमम बिसोचन भाव-सुखचन बचनहि रंग-तरंग परकासि
 सखि है किये इह अपकप रंप ।
 बाहनि भाघोनि भ्रम मोझायनि पाघोनि एकहि संग ॥
 इयामर काय अबाहे हिलायत बात बटित बन-नाम
 अन्तर-गौरि सखंग सुकम्पई-ता सगे बैसन बिबुरिक बाल ॥
 बरनठ नाल बिघाल मिघासोत बोमा बरनि न होय ।
 ए कृष्णकान्त नितान्त निवारल निश्रिबिन्धि अन्तर जागि रहूजय ॥
 (प० क० ट० २८५१)

३ परमानंद'

परमानंद के स पद बबभाषा के मिलते हैं * जिनमें से एक इस प्रकार है —

१ हिं कु लि पु० ३७३ ।

२ परमानन्द कई हैं किन्तु यहाँ जिनके पद दिये गये हैं उनका उल्लेख 'वैतय्य चरितामृत' में परमानन्द सेन या बास के नाम से मिलता है ।

प० क० ट० पं खं० पृ १४३ । डॉ० सा इ० प्र० खं० पृ० २३५ ।

इन परमानन्द के सम्बन्ध में डॉ० सेन ने पु० ३७३ पर जो पाठ टिप्पणी की है उससे यह स्पष्ट हो जाता है कि इनके सम्बन्ध में इन्होंने भ्रम रखा । वही भ्रम में इन्होंने इसी बंध के पृष्ठ ११ पर इन्हें परमानन्द कवि कर्णपुर मान लिया । इनकी ६ बबबुसि कविताओं का उल्लेख पु० १२ पर उन्होंने किया है । पु० ३७६ पर इनका अत्यन्त खोराब कथन यह है कि 'कर्णपुर' ने देवी भाषा में कुछ भी नहीं लिखा और इन्होंने अपनी रचनाओं में कभी 'परमानंद' का उल्लेख ही नहीं किया । अतः इसके बाव उल्लेख को अधिक प्रामाणिक मानना हीना । अतः ये परमानन्द १३२७ वाले कर्णपुर परमानंद नहीं । न वे बसन्तभाष्य की ही दृष्टिगत वाले परमानन्द हैं । डॉ० सेन के अनुसार ये वे परमानंद भट्टाचार्य हैं जो रूप बोलबामी के सिष्य के और कुम्हारन में रहते थे । एक परमानंद दुष्ट का भी संकेत 'वैतय्यवेद' के अनुपायियों में मिलता है । संभावना है कि इन्होंने भी कुछ बबबुसि पद रचे । परमानंद के, यहाँ जो पद दिये जा रहे हैं वे किसी एक ही परमानन्द के हैं यह ऐसी स्थिति में निरवयपूर्वक नहीं कहा जा सकता ।

प्राप्तु बनि नव प्रनियेक गोविन्द की ।
 परमानन्द प्रेम-सुख-कम्बुधि ॥
 भक्तकृत नील गमिनि मुक्त-धोहा ।
 हेरदते प्रदिल भुवन-मन-मोहा ॥
 गोरस बनि घृत हस्तदिक नीरे ।
 पामरि भरि भरि धारद शिरे ॥
 बाजत पटा ताल मरय ।
 जय देह सुर भारीगण रंय ॥
 बलि बलि जातहि बरगारबिन्द ।
 परमानन्द के पठे श्रीपोविन्द ॥

(परमानन्द प० क० ठ० पद १५८५)

४ 'रघुनाथदास' (१५०६-१५८०)

रघुनाथदास का ब्रजभाषा का एक पद मिसता है। इनके दो पर धीर भी हैं पर के ब्रजबुक्ति में हैं। ब्रजभाषा का एक पद इस प्रकार है^१ —

हरत सकल संताप जनम को मिदत तत्प यम कालिक ।
 धारति किये मदनगोपालकि ॥
 गोमूत रचित कपूरकि बाति भक्तकृत काथन पारकि ।
 पटा ताल मुरंप भौभरि बाजत बैभु बिषाणकि ॥
 अङ्ग-कोटि ज्योति भानु कोटि छवि मुक्त धोभा नरसासकि ।
 मपुर-मुकुट पिताम्बर शोहे उरे बजवती मातकि ॥
 अरम कमल पर मपुर बाजेरि कुसुम गुताबकि ।
 सुन्दर सोस कपोलक बजिसों निरखत मदनगोपालकि ॥

१ इनके नाम के दोष दो उपसर्ग पदों के धार्मिक अर्थ भी भे दिये जाते हैं —

(१) धारति युगल किछोरि की कीजे
 तन मन बनहुं निष्ठापरि कीजे ।—(प० क० ठ० पद २८३८)

(२) धारति जय ब्रजमानु कुमारि ।
 भक्तकृत मुक्त-धोभा उजियारी ॥ (प० क० ठ० पद २८७१)

२ प० क० ठ० प्र० ख० पू० १६७ । हि० बु० लि० पू० ४२ ।

३ 'ब्रजबुक्ति' के दो पदों का संकेत यहाँ दिया जाता है।

जय जय श्रीरघुदेव श्यामय परमावति-रति कांत ।

राधा-माधव-प्रम भक्ति-रस उज्जल धुरति नितांत ॥ (प० क० ठ० पद २३८७)

+ + +
 बाह बनि धनि + धारि (प० क० ठ० पद २४६७)

सुर-नर-मुनिपथ करतहि प्रारति नवठ-वत्सन-प्रतिपालकि ।
हुं बलि बलि रघुनाथदास प्रभु मोहन गोकुल बालकि ॥

(रघुनाथदास प० क० प० पर २८६६)

३ रामाराय

रामाराय का एक पर २८४४ संक्षेपक पदकल्पतरु में मिलता है ।

६ राधाकृष्णमहास के विषय में^१ मतमेव है ।

राधाकृष्णमहास का एक ब्रजभाषा का पर^२ मिलता है ।

७ शिवरामः

शिवराम ने अनेक पद ब्रजकृति में लिखे हैं जिनमें ब्रजभाषा का घुट भी है ।^३

शिवराम का एक पद ब्रजभाषा का इस प्रकार है —

नघोल नघोल नघो रंग में । सुख छोड़ानि सब संपमें ॥
रस माधुरि बर प्रिय में । दह नृत्यत प्रेम तरंग में ॥
उह सीतै बामिनि बमके बामिनि । मधुर यामिनि अति बनि ॥
मुनय छाडन बरिसे जाडन । सुन्द सुन्दर नहुन नहुनि ॥
बहत पीर बडोर जातक । कीर कोडिल प्रतपनि ॥
रहत बरबर लीये बाबुर । धन्वुराम्बरे गरबनि ॥
याप्रोये सखि रि बोरि बोरि । रसहेरि हासस बोरि पोरि ॥
बोरि बोरि बंध उपांग प्राप्तीज । बाले पाषायन मि मि भिना ॥
अनन मन नन भग्ना ना कापर नन नापरनि नापरनि रिमि रिता ॥
उह बुध्दि ठेरन पहिर सुयम अलके अग्रहरि अलमलय ॥
उपट बट पट बो विम् दिम् बो विम् विम् दिम् ।
पुब पुब निवि वि मि नव ।

बाजे हू हू घीना । स्वर मण्डल बांधरि बीना ॥
बर बीन ताल प्रबीन पुरन प्रेम बरे हिया बुरबनि ।
अनि विन्दु सरब-दन्नु । करत प्रभूत बरबनि ॥
हुँत सारस बहत पाबस आव जातक रस-बनि
बिहरे के अन शिवराम के प्रभु परन सुबड़ शिरोमणि ॥

(शिवराम प० क० प० पर १९९७)

१ देखिये—प० क० प० पं० खं पृ० २००

तथा—हि० ब० वि० पृ० १६६ । बी० सा० इ० पृ० ४४१ ।

२ गो० प० प० १।३।३७

३ हि० वि० वि० पृ० १३७ तथा बी० सा० इ० पृ० खं पृ० ४४४ ।

४ देखिये—प० क० प० पं० खं मू पृ० २१२ ।

७ नृप रघुनाथ या रघुनाथ राय^१

नृप रघुनाथ का एक हिन्दी का पद समकालित पद रत्नावली में मिलता है यह इस प्रकार है —

अतिहुं जनीरे घोमल अलघामि, सबि जायाघोने धाइ हो बिहाने ।
 बलति बेधर लटन पदाणि मोहुन हार दुहि क्षितरागो ॥
 शिबहि अलका शिबिल करि डोरि कनक सता गई पयोने अकोरि ।
 भानि उठावत मुक्कानि खोरि उठहुन भसके दहन हारि ।
 हेरि अशिशुखी उठलि लजानि, नृप रघुनाथ के मनहि सयानि ।
 (४४६ छा० प० २०१ पृथि १४१)

८ रोहिनीमन्दनदास

रोहिनीमन्दनदास का एक पद ब्रजभाषा का मिलता है —

भक्त मन राखै राये कृष्ण योबिन्द । जा को नामहि मुनि भक्त बन्ध
 ए सुक अकर सकल सनातन आश नाहि पायोये भक्त
 जाको नामहि त्रिभुवन समाना महनिध पायोये अलङ् ।
 जाको नामहि नरवर मुनि जन करत धेयाम ।
 जाको नाम रखत मारव तथा भुवन फिरत कर गाम ॥
 बिबहि जाको जाकी पक्ष गाघोत करतहि नामकि आश
 जाको नामहि पातकन बधित रोहिणी मन्दन दास ॥

९ अकबरशाह

अकबरशाह का ब्रजभाषा का एक पद इस प्रकार है —

बीसो बीसो मेरे मतबोरा गोरा ।
 आपहि नाचत आपन रस मोरा ॥
 बोल करताल जाये किकि किकि किकिमा ।
 मयत आनखे नाखे लिकि लिकी लिकिया ।
 पद बुई चारि असू अखसद गदिया ।
 फिर नाहि होयत अ.नखे मातुलिया ।
 देखत पठुके आहु बलिहारि । शाह अकबर तेरे प्रेम बिकारो ॥

(गो० प० ठ० ४११२६)

१ देखिये—समकालित पद रत्नावली की भूमिका तथा हिन्दी भाषा ब्रजबुक्ति सिद्धांत ।

१० घनश्यामदास'

घनश्यामदास का ब्रह्मबुद्धि और ब्रह्मभाषा मिश्रित पर इस प्रकार है —

को कहे अपकम्प प्रेमसुखा निधि कोई कहत रस यह ।
कोई कहत इह सोई कल्पतरु, मनु मने तन्मैह ॥
पैखसू मोरचन्द्र अनुपाम । जाचक जाक मूल नाहि त्रिभुवने ।
ऐके रतन हरि नाम जो एक तिगु बिगु नाहि जाचत ।
परबस बलनि सचार मानस प्रबधि बहुत कल्पतरु ।
को कानु करना अपार, जासु चरितामत श्रुति पबे संचक ।
हृदय सरोवर पुर समझई नयन प्रथम सब धूमहि ।
होयत पुनक भकुर नामहि जाक ताग सब मैठय ।
ताहे कि चाँद उपाम मन घनश्याम दास नाहि होयत ।
कोदि कोदि एकु ठाम ।

(गो० प० त० १।१।१०)

इस प्रकार घनश्यामदास के पर बंगाली-बैष्णवों द्वारा विरचित हैं। घनश्यामदास के प्रकरण में बंगाली पदों के साथ-साथ हिन्दी का कितना प्रभाव है, अर्थात् कवि विशेषतः और प्रब-विशेषतः हिन्दी के प्रभाव का विवरण है।

२ कुछ विशेष बंगाली गौड़ीय-बैष्णव पदकारों और उन पर हिन्दी प्रभाव प्रथम सुप्रसिद्ध बंगाली-गौड़ीय बैष्णव पदकारों पर भी हिन्दी प्रभाव पड़ा है। कई विशेष कवियों वैतन्य चरितामृत के लेखक कृष्णदास कविराज गोविन्ददास कविराज और गरहरि भक्तार्थी आदि पर यह गंभीर प्रभाव स्पष्ट है। बंगला गौड़ीय बैष्णव पदावलिओं में भी हिन्दी प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। अतः इनके विषय में कुछ प्रकाश डालना आवश्यक प्रतीत होता है —

१ कृष्णदास कविराज (१४६७-१५८३ ई०)

कृष्णदास कविराज वैतन्य चरितामृत में सर्वश्रेष्ठ हैं। कृष्णदास कविराज द्वारा विरचित श्रीवैतन्यचरितामृत में हिन्दी प्रभाव के छोड़े अबाहरण मिल सकते हैं इसका कारण यह है कि इस ब्रह्म की रचना नृम्बावन में हुई थी। अतः कुछ हिन्दी प्रयोग अनादास ही इसमें आये हैं। कुछ हिन्दी सर्वनामों और किञ्चित् क्रिया रूपों में प्रथम का क्रमेण कही-कही कुछ-कुछ बदल गया है।

वैतन्य चरितामृत में हिन्दी प्रभाव के सम्बन्ध में बंगला साहित्य के सुप्रसिद्ध इतिहासकारों के मत इष्टम्य हैं। डा० दीनेशचन्द्र सेन लिखते हैं कि बैष्णव समाज की कविता—बंगला भाषा उस समय अम्बावनी भाषा से मिश्रित हो गयी थी। अतः

१ वैतन्ये—प क० त० पं० खं० धू० पू० ८४ ८८

तथा वां स० इ० प्र० ख०, पू० ४०४४ ३।

जो भोग मुझ से जो बोलते थे सेखनी से भो वही मिलते थे । शैतन्य भरितामृत ही इस स्थान पर द्रष्टान्त है । बीच काल से बन्दाबन में रहने के कारण कविराज योस्वामी की बँगसा बून्दाबनी (प्रबन्धापा) द्वारा इधी तरह प्राप्त हो गई थी^१ ।

डा० सुकुमार सेन लिखते हैं 'वीर्यकास बन्दाबन के कारण कविराज की कलम से कुछ हिन्दी शब्द धीरे प्रयोग प्राये हैं^२ । वास्तव में शैतन्य-भरितामृत में हिन्दी के कुछ शब्दों सर्वनामों विशेषणों एवं क्रिया रूपों का समावेश हुआ है । केवल कुछ हिन्दी शब्द ही हैं जो बँगसा पदों को हिन्दी का धरीर प्रदान कर देते हैं उदाहरण स्वरूप कुछ शब्दों धीरे क्रिया रूपों की बानगी इस प्रकार है^३ —

बँधे, तँधे, जाहाँ ताँहा ऐधे, कँधे, तँधे, जाहँके काहाँ जाहाँ जाहाँ करी परी, सेबीं इत्यादि—

- १ शैतन्य समाजेर कवित्त बँगसा ताखन बन्दाबनी—भापा मिमित्त हइयाधिस सुतराम् ताँहारा मुखे जाहा बसितेन सेखनीते भो ताहाँई ब्यवहार करियाधेन । शैतन्य भरितामृत ए सम्बन्धे द्रष्टान्त स्वमीय । वीर्यकास बन्दाबने पाकाते कविराज योस्वामीर बँगसा बून्दाबनी द्वारा एरूप प्राप्त हइयाधिस ।

(बँ० भा० सा० प्र० ल० पृ० ११०)

- २ वीर्यकास बन्दाबन हेतु कविराजेर कलमेर मुने कृषित बुइ एकटी हिन्दी शब्द वा प्रयोग प्रासिया गियाधे बेमन 'नाहिं काँहाँ सो विरोप नाहिं काँहाँ मभुरोप ।

(बँ० सा० ६० प्र० ल० प० २११) ।

- ३ (१) धर्मन स्फटिक घने एक सूर्य भासे ।

तँधे बीधे गोविन्देर अघ प्रकाशे ॥

(प्राद्वलीसा द्वितीय परिच्छेद ११ पृ० ११२)

- (२) काहाँ करी काहाँ पाइ बजेगजनबन ।

काहाँ मोर प्राणनाथ मुरली बदन ।

(मध्यलीसा प्रथम खंड दूसरा परिच्छेद १४ पृ० ४१)

- (३) कहँ ताहाँ बँधे रहे रूप सनातन ?

बँधे रहे बीराम्य बँधे वा भोजन ?

(मध्यलीसा परिच्छेद ११ ११३ पृ० ७७४)

- (४) हा हा सल्लि कि करि जपाय

काहाँ मरी काहाँ जाधौं काहाँ यैत कृष्ण पाधौं ।

कृष्ण बिनु प्राय मोर जाय ॥ (मध्य सीसा)

१० घनश्यामदास^१

घनश्यामदास का उद्भवसिद्धि और शब्दभाषा मिश्रित पद इस प्रकार है —

को कहे अपरूप प्रेमसुखा निधि कोई कहत रत गिह ।
कोई कहत इह सोई कल्पतरु, मनु मने समैह ॥
देखतु मोरबन्ध प्रमुपाम । जाबक जाक मूल नाहि बिमुबने ।
ऐसि रतन हरि नाम को एक सिग्नु बिम्बु नाहि जाबत ।
परबस बलबि सवार मानस प्रबधि बहुत कल्पतरु ।
को कनु करना अपार बागु बरितामत मृति पये सौबक ।
हृदय सरोवर पुर उमड़ई नयन प्रथम मर भूपहि ।
होयत पुसक धकुर, नामहि जाक ताप सब भेटप ।
ताहे कि जाँव उपाम मन घनश्याम दास नाहि होयत ।
कोहि कोहि एक ठाम ।

(शो० प० ट १।१।२०)

इस प्रकार अनेक हिन्दी के पद बंगाली-बैष्णवों द्वारा विरचित हैं। बागों के प्रकरण में बंगाली पदों के साथ-साथ हिन्दी का कितना प्रभाव है अर्थात् कवि विशेषपद और अन्व-विशेषपद हिन्दी के प्रभाव का विकरसन है।

३ कुछ विषय बंगाली गीर्गीय बैष्णव परवर्तों और उन पर हिन्दी प्रभाव अन्य सुप्रसिद्ध बंगाली गीर्गीय बैष्णव परवर्तों पर भी हिन्दी प्रभाव पड़ा है। कई विशेष कविओं अंतर्गत अरितामत के लेखक कृष्णदास कविराज योबिन्ददास कविराज और गरुहरि अकवर्तों आदि पर यह संकीर्ण प्रभाव स्पष्ट है। बैष्णव गीर्गीय बैष्णव पदावसिद्धों में भी हिन्दी प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। अतः इनके विषय में कुछ प्रकाश डालना आवश्यक प्रतीत होता है —

१ कृष्णदास कविराज (१४२७-१५८३ ई०)

कृष्णदास कविराज अंतर्गत अरितकारों में सर्वश्रेष्ठ हैं। कृष्णदास कविराज द्वारा विरचित श्रीशैतम्बरितामत में हिन्दी प्रभाव के बोड़े उदाहरण मिल सकते हैं इसका कारण यह है कि इस ग्रन्थ की रचना मुम्बामन में हुई थी। अतः कुछ हिन्दी प्रयोग अनायास ही इसमें आ गये हैं। कुछ हिन्दी सर्वनामों और किञ्चित् क्रिया रूपों में ग्रन्थ का अन्वेषण कहीं-कहीं कुछ-कुछ बरत गया है।

अंतर्गत अरितामत में हिन्दी प्रभाव के सम्बन्ध में बंगला साहित्य के सुप्रसिद्ध इतिहासकारों के मत इष्टव्य हैं। डा० दीनेशचन्द्र सेन लिखते हैं कि बैष्णव अनाम की कविता—बैष्णव भाषा उस समय बम्बामनी भाषा से मिश्रित हो गयी थी सुतराम

१ वैशिष्ट्य—प क ठ० पं सं० मू० पू० ८४ ८८

उदा बी सं० इ० प्र० ख० पू० ४०४ ४०५ ।

को सोच मुन्ध से भी बोलते थे मेकनी से भी बही लिखते थे । शैतन्य-परिणामत ही इस स्थान पर द्रष्टव्य है । दीप काम से बुन्दारन में रहने के कारण कविराज पोस्वामी की बँयसा बुन्दाबनी (ब्रजभाषा) द्वारा इसी तरह भावत हो गई थी ।

डा० मुकुमार सेन लिखते हैं 'दीर्घकाल ब्रजभाषा के कारण कविराज की कलम से कुछ हिन्दी शब्द भी प्रयोग हो गये हैं' । वास्तव में शैतन्य-परिणामत में हिन्दी के कुछ शब्दों सहजार्थों विशेषणों एवं क्रिया रूपों का समावेश हुआ है । केवल कुछ हिन्दी शब्द ही हैं, जो बँयसा पदों को हिन्दी का शरीर प्रदान कर देते हैं उदाहरण स्वरूप कुछ शब्दों की क्रिया रूपों की बानगी इस प्रकार है —

बँसे, लँसे, बाहँ ताहा ऐसे, कँसे, लँसे, जाहँके काहँ बाहँ, जाहँ करो परी, सेबी इत्यादि—

१ शैतन्य समाप्ति कवित्त बौगाला उत्पन्न बुन्दाबनी—भाषा विभिन्न इन्द्राक्षिप्य सुवचनम् ताहारा मुखे बाह्य बसितेन मेखनीते धो ताहाई ब्यवहार करिवायेन । शैतन्य परिणामत ए सम्बन्धे बुन्दाबन स्पर्शोय । दीर्घकाल बुन्दाबने बाकाते कविराज पोस्वामीर बँयसा बुन्दाबनी द्वारा एरूप भाषण इन्द्राक्षिप्य ।

(बँ० भा० सा० प्र० ख०, पृ० १६०)

२ दीर्घकाल ब्रजभाषा हेतु कविराजैर कलमेर मुखे कुचित बुद्ध एकी हिन्दी शब्द का प्रयोग प्रासिदा गिबासे जैसन 'गाहि जाहँ सो विरोध गाहि जाहँ मनयेन ।

(बाँ० सा० ६०, प्र० ख० पृ० २११) ।

३ (१) धर्मन शक्तिर वीते एरु सूर्य मासे ।

तँसे ओके गोबिन्देर छ छ प्रकारे ॥

(भादिसीला त्रितीय परिच्छेद १३ पृ० ११०)

(२) काहँ करी, काहँ पाइ बजेगुमरन ।

काहँ मोर प्राणनाम मुरली बरन ।

(मध्यमीला प्रथम अष्ट इन्द्राक्षिप्य १६ पृ० ११)

(३) कहुँ ताहँ कँसे रहे कप सगुन ?

कपे रहे बैराग्य कँसे वा मोहन ?

(मध्यमीला परिच्छेद १६, ११३ पृ० १११)

(४) हा हा सच्चि कि करि जग

काहँ मरी काहँ ब्रह्मो काहँ लँसे इन्द्राक्षिप्य ।

इन्द्राक्षिप्य विष्णु नाम धीर जग ॥ इन्द्राक्षिप्य

२ गोविन्ददास कविराज (१५३५-१६१३ ई०)

गोविन्ददास नाम के तीन-बैष्णव-परकथा हैं। किन्तु हमारे अभीष्ट गोविन्ददास के जीवन-वृत्त के विषय में बड़ा विचार है। मैथिल-विद्वान् इनको मैथिली कवि मानते हैं^१ बंगाली विद्वानों में एक सज्जन को छोड़कर सब गोविन्ददास कविराज को बंगाली कवि मानते हैं^२। किन्तु इस उद्घापोह में पड़ता प्रभावशक्त एवं प्रसासिक है किन्तु अंत में यह कहा जा सकता है कि माया ही कवि की परिचामक है गोविन्ददास कविराज की ब्रह्मसुति भाषा बंगला की अपेक्षा हिन्दी या मैथिली के अधिक पास है, इस तथ्य को बंगाली-विद्वान् भी स्वीकार करते हैं। डॉ० सुकुमार सेन महोदय का मत है कि गोविन्ददास कविराज बंगाली कवि होते हुए भी बंगला भाषा में जगहों कविता नहीं की है^३। यह स्पष्ट है कि गोविन्ददास कविराज विद्यापति की काव्य परम्परा के अनुयायी हैं। वे स्वयं लिखते हैं :-

विद्यापति पर-मुगल सरोधु-निष्पन्नित-मकरव ।
तनु मन्नु मलता मातल बपुकर पितत कर अनुबंध ॥

डॉ सुकुमार सेन महोदय फिर लिखते हैं, "इस विषय में मैथिल कवि विद्यापति का कविराज के साथ बहुत मेल है। प्रभावतः गोविन्ददास कविराज की

१ गोविन्द बखर्ची गोविन्ददास गोविन्ददास कविराज ।
२ हि० मै० लि० प्रथम भाग पृ० २३५ ।

३ देखिये—नयेग्रन्थाय गुप्त इनको मैथिली कवि मानते हैं, डॉ० सा० प० पृ० १३३३ बंगाल ।
भी सतीशचन्द्र राय एम० ए० डॉ० बीनेशचन्द्र सेन डॉ० सुकुमार सेन इनको बंगाली कवि मानते हैं कथञ्च —

भी सतीशचन्द्र राय एम० ए०—प० क० त० पं० लं० पृ० २१—८१ ।
डॉ० बीनेशचन्द्र सेन डॉ० सा० पृ० ३०० हि० बं० सा० लि० पृ० ४६५ ।
डॉ० सुकुमार सेन डॉ० सा० प० पृ० १३३६ डॉ० हि० बं० लि० पृ० १०३, डॉ० सा० प्र० लं० पृ० ३२५—३३० ।

डॉ० सा० प्र० मा० पृ० १३८—२०० तथा डॉ० सुकुमार सेन उनके २० वि० सा० प्र० मा० पृ० १३८—२०० तथा डॉ० सुकुमार सेन उनके २०

मोदा बाबाग सेन कलकत्ता के निवास स्थान पर बाठालाय के प्रसंग में जगहों गोविन्ददास की भाषा को हिन्दी के अधिक पास माना है, भी विष्णुपद मद्राचार्य ने भी अदालत लायब्रेरी में बाठालाय के प्रसंग में गोविन्ददास की कविता को हिन्दी के अधिक निकट माना है ।
हि० बु० लि० पृ० १०५, डॉ० सा० प्र० लं० पृ० ३२६ । वि० सा० पृ० १३८—१०० ।

गोविन्ददास कविराज ब्रजकुलि के प्रथम कवि हैं उनके लगभग ४५० पद पदकल्पतरु में संगृहीत हैं उन्होंने विद्यापति की काव्य-शैली का अनुकरण भाव एवं भाषा दोनों रूपों में किया है। वास्तव में गोविन्ददास के विषय में उदयन एवं स्वर्ण अनुसंधान की आवश्यकता है। बंगाली कवि होते हुए भी इनकी भाषा हिन्दी या मैथिली से अधिक मिलती जुमती है। इनकी ब्रजकुलि कविता और अन्य पदकर्ताओं की ब्रजकुलि कविता में आकाश-पाताल का अंतर है। अन्य पदकर्ता अपनी ब्रजकुलि कविता में बँसना शक्य, क्रिया एवं कारकों का समावेश करते हैं किन्तु गोविन्द कविराज के पदों से स्पष्ट है कि उनकी भाषा कुछ हिन्दी प्रथा मैथिली के समक्य है। कुछ पदों के नमूने इस उष्य की उत्पत्ता को सिद्ध कर देते हैं—

काँचा काँचन—काँति—कमल-मुञ्जि कुसुमित कानन जोड़ ।
 कुब्ज—कुटीरे कलावति कातर कान करि रोड़ ॥
 कि कहव कितव कतये-कुल-कामिनि कठिन कुसुम-दर रहई ।
 करहि कपोल कंठ करि कुञ्चित कानिधि-कलमें रहई ॥
 कर-केपूर कदि किंकिनि ककल काइल कंठकि भासा ।
 को जाने-कुच-तठ कोन कामायल काँजरे कांसिभ हारा ।
 केवल काँत-कपा कहि काँये काम-कलंकनि गौरि ।
 किञ्चित काल कलय करि मानये गोविन्ददास पहुँ छौड़ि ॥

(प० क० त० पद १०८६)

कविराज के कई पदों में इस प्रकार अनुप्रास की छटा है। एक और उदाहरण देते हैं —

मुञ्जरित मुरति-मिसित मुख-मोदने मरकत-मुकुर मेलान ।
 मानिनि-मान-मघन मुञ्जुकायनि मुनि-मान मुरदान ॥
 भाइ मोहन-मूरति मुरारि मनइते मरये मनोरथ
 मापुरि मलमथ—मनमय मारि ।
 मुकृन्तित मक्सि मपुर मधु-मापुरि मासति—मंजुल मान ।
 मंढ—मरद—मुदित—मलमजुकर मंडित—मौलि—मंवार ॥
 माचहि मौर—मुकूड मर मंथर मभिर्मंडित मन मान ।
 मंजु मंजीर—महिम महिमामय गोविन्ददास गुनगान ॥

(प० क० त० पद २४२६)

१ 'एह विषये मैथिल कवि विद्यापतिर सहित कविराजेर अनेकटो मेल देखाय जाय । कविराजेर काव्य-श्रेणा आशिषाक्षिण प्रधानत विद्यापतिर कविता हइत (बी० सा० इ० प्र० खं०, पृ० ३२६) ।

मैथिल-साहित्य के इतिहासकार निम्नलिखित पर को अपनी भाषा का मानते हैं —

मैथिली पाठ —

जहँ पढ़ु झरन बरन बल बात तहँ तहँ परनि होमघो मोर बात ।

जे बरपन पढ़े निज मुक्त बाह मोर धंय सलिल होघमो तनुमहि ॥

जे सरोबर पिय नितनित नहू मोर मग सलिल होघमो तनुमहि ।

जे बीजन पढ़े बिजइत पस्त मोर धंयताहि होघमा मुहु बात ॥

जे पढ़े भरमय बलबर इयाम मोर धंग गनत होघमो तनु ठाम ।

गोबिन्दास कहू कौबन गोरि से मरकट तनु तोहि कि छोड़ि ॥

(हि मै० लि फ बा० पू० २३८)

गौरीय-बेष्णव-पदावली के बेद रूप परकल्पक रूप में यह पर इस

प्रकार है :—

बंशला पाठ—

जहाँ पढ़ु झरन बरन बल बात ताहा ताहा परनी हइ मनुबात ॥

जो सरोबरे पढ़ु निति निति नहू हाज भरि सलिल होइ ठबिनहू ।

जे ए सखी बिरह मरन निह नू पखे मिनायक गोकुल बंध ॥

जो बरनने पढ़ु निज मुक्त बाहा मनु मग ब्योति होइ तबि माहू ॥

जो बीजने पढ़ु बीजइ पात मनु मय ताहे हीइ मुहु बात ॥

जहाँ प्रभु भरमइ बलबर इयाम मनु मग गपत ही तहू ठाम ।

गोबिन्दास कहू कौबन गोरि से मरकट तनु तोहे कि छोड़ि ॥

(प० क० ट० पर १६५१)

गोबिन्दास कविराज के प्रविष्टार पर हिन्दी परों में सरलता से आत्मसात हो सकते हैं। प्रता कविराज पर बंशीर हिन्दी प्रभाव मान्य था सकता है।

३. 'नरहरिदास चक्रवर्ती' (सतरहवीं शताब्दी)

नरहरिदास चक्रवर्ती को यदि 'उमम भाषा-कवि' कहे तो कोई असुविधा नहीं होगी। नरहरिदास चक्रवर्ती बंशला के कवि होते हुए भी हिन्दी के बड़े कवि हैं। श्री राठीचन्द्र राय एम० ए लिखते हैं बलराम नरहरि के संबंध में यह स्वामाधिक तथ्य है कि उनके ब्रजबुद्धि के पर अधिकोद्य स्वसों पर ब्रजमण्डल की विभूत ब्रजभाषा में रचित हैं। उन्होंने बुन्दावनवास काल में प्रतीत होता है विशेष यत्न के साथ ब्रजभाषा की शिक्षा प्राप्त की तब ही हम उनकी रचना में अनेक स्वसों पर उदाहरित ब्रजबुद्धि तथा मैथिल

१. वां पा० इ० प्र० खं० १२१ ।

हि० मु० लि० पू० २७७ ।

ब्रजभाषा मिश्रित कृत्रिम भाषा के परिवर्त में उत्तमम् एवम्-बहुत ब्रजभाषा का व्यवहार देखते हैं। हिन्दी भाषा की प्रादेशिक-विभाषाओं में ब्रजमण्डल की भाषा सर्वाधिक सुमधुर कही जाने पर समस्त हिन्दुस्तान में स्वीकृत हुई हैं। इस भाषा के सहित स्वल्प परिचित बांगाली के निकट यह अनेक स्थलों पर अटिस और मिश्रित विरचित हो जाये तो यह आश्चर्य का विषय नहीं है। हमारी विवेचना में मरहूरि अकवर्ती की यह इस षष्ठी का पद-समुदाय ब्रजभाषा के प्रतिज्ञाता धनवा जानकर पाठकों की अप्रीति-जनक न होकर बरन् उनकी विशेष प्रीतिजनक ही होगी^१। मरहूरि अकवर्ती संगीत शास्त्र के अध्येता हैं, वहाँ कहीं संगीत-शास्त्र का वर्णन पाता है तब उनकी सेखनी हिन्दी समझने लगती है। अंत में हम यों कह सकते हैं कि सब परकताओं में हिन्दी का सर्वाधिक प्रभाव मरहूरिबास अकवर्ती पर है, उनकी भक्तिरत्नाकर गीतजगद्गोदय और गीतरचित चित्तामणि हिन्दी से अत्यंत प्रीति हैं। इस प्रसंग में उपयुक्त ग्रन्थों में हिन्दी प्रभाव का कुछ उदाहरण विवेचन आवश्यक है। भक्तिरत्नाकर बयला साहित्य और संगीत शास्त्र का अनुपम भण्डार है। बयला एक ब्रजकुमि के साथ साथ हिन्दी का अत्यधिक प्रभाव इस ग्रंथ रत्न में है। पहल कहा जा चुका है कि यह ग्रंथ तरह-तरह की कविताओं का भाण्डार है। संगीत-शास्त्र की दृष्टि से यह ग्रंथ एक पथप्रदर्शक है। वहाँ संगीत का बहुत कवि करता है वहाँ हिन्दी पर्वत के निर्भर के समान स्वत ही बहने लगती है। यदि यह कहें तो कोई बड़ी बात नहीं है कि इस ग्रंथ में संगीत-शास्त्र और हिन्दी का जो भी-नाम का साथ है। कुछ उदाहरणों से इस तथ्य की सत्यता प्रकट करते हैं:—

१ बयलाय मरहूरि सम्बन्धे भोइहाइ प्रकृत तप्य बटे। ताहार बज कुमीर, पद अधिकारी स्वसेइ ब्रज-मण्डलैर साँटि ब्रजभाषाय रचित। तिनि बन्दावने बास करारकामे बीइह्य विषेय यल-सहकारे ब्रजभाषा सिता करिया सिनेन ताइ धामरा ताहार रचना अनेक स्थलेई तथा कवित ब्रजकुमीर वा मैसि-ब्रजभाषा मिश्रित कृत्रिम भाषाकार परिवर्त (उत्तमम्) एवम् बहुत ब्रज भाषा व्यवहार देखिते पाई। हिन्दी भाषा प्रादेशिक रूपान्तर पुषिर (Dialects) मध्ये ब्रजमण्डल भाषा सर्वबापभा सुमधुर बलिषा समस्त हिन्दुस्ताने स्वीकृत इइसेप्रो एईभाषा सहित एवम्-परिचित बांगालीर निकट उहाके अनेक स्थलेइ अटिस धी अटमट विवेचित इइसे इहासे आश्चर्येय विषय नाई। सामादेर विवेचनाय मरहूरि अकवर्ती एव योपीर परपुनि ब्रज-भाषा अधिपपाठकविगेर अप्रीतिजनक ना इइया बरन् ताहादेर विषेय प्रीति जनकई इइसे।

गुरदानी तीर परम निरमल पल तहि उलठय सब भक्त उबार ।
गामत कत कत, गीत प्रदिय मय बाजत बाजय विविध परकार ॥
नाबत पुनिमनि गौर किशोर ।

अमर अरचित बरिह अय अति अयकप रमति मनधोर ।
प्रमल कमल बल लोचन इवलय भाव रंग नव अलक विलास ।
अरर निघाकर, निकर निर मख कौटि मदन भट हाव ॥
अंजल ललित विलास अक्षपरि भक्तकत जिति मामिति मन्दिहार ।
नरहरि पर्व पव बरत ताल लव तव कि नपुर रव नुपुर अलकार ।

(म २० पृ० ४११)

नरहरिदास की ब्रजबुद्धि-कविता हिन्दी से अत्यधिक प्रभावित है—
सुरदानी-तीर तस्म तव बस्तरी पस्तक लव लव कुसुम विलास
परित मुषय मधुप कुल अजत कौकिल कीर किरत अर्जु पाव
नाबत तहि नर गौर किशोर । कैकर मय नवअंजन अरचित
कामु अरल तनु अयिक उबोर ॥

निवपम वैद्यवसन मनि भुवन अलकत आच अयल अमयाल ।
अमिनव मंथि, भुवन मन मोहन जन जन अरत अरन तके ताल ॥
नायत परम मधुर परिकर-गल निरखि अरन अति अलस अमंद ।
पुराणे मयने मयन मन अय अय बाजत नरहरि मधुर मूर्धन ॥

(म० २० पृ ४१२)

मक्ति रत्नाकर संवीत बास्त्र के लिये एक प्रामाणिक प्रथम है । संवीत का
वही कहीं बर्जन प्रादा है, वही कवि की सेवनी से संवीत की स्वर सही का सही
हिन्दी का ही होता है । उदाहरण देना प्रासंगिक ही होगा —

अय अनरंजन अंब नयन जन अजन मित्र लव नागर ऐ ऐ ।
गोकुल कुलजा कनुवति मोचत अर अरल गुन सत्तर ऐ ऐ ॥
नर तनु अक्षयुषय रसमय अंबुस भुज मुद अर्जन ऐ ऐ ।
पीत निपुन निपुवन नय नखित निवपम ताण्डव अंबित ऐ ऐ ॥
धू तनवी मुनिनागन परिकर सपती निकर अनिर्गमित ऐ ऐ ।
अंधीपर अरनीपर कुल अमुर अमराकल सुखर ऐ ऐ ।
कल्प केति कलहिक सुरंवर धा धा वि वि तय केन्दा ऐ ऐ ।
स स्वरि गरि नरहरि नाय ए ई अ इति अई अई अतेम्मा ऐ ऐ ।

(म० २०, पृ० १७२)

मक्ति रत्नाकर अंब हैं लगभग १०० ऐसे पर हैं जिनमें बंगला और ब्रजबुद्धि
के साथ हिन्दी का मिश्रण है, वे सरसता से बंगला साहित्य की निधि के साथ हिन्दी

साहित्य को संपत्ति भी कहे जा सकते हैं। भक्ति रत्नाकर के भक्तिरत्न गौरवलिख चित्तामणि और गीतबन्धोदय नामक भक्तिकाव्यों एक परस्परहों पर भी हिन्दी का प्रभुर प्रभाव है। जैसे—

यथा राग

को बरबब बर गौर सरस जलान घायन शोभा सुकनकारी
 भक्तकत अंग मुनसित ससित बिर भागिनी पु ब पु ब मरहारी ॥
 सरब सुधाकर—निकर बिनिर्मित युक्ति बिजय
 श्रुति प्रति बिमल गण्ड मण्डित नव कुण्डल अनुस जटित मणि मोती ॥
 बिम्ब अस्म कर कवन बदन छर किञ्चित मिसन बचिर बचिपुर ।
 बिकसित बन्त किरनसित सुम्बर तारक बृन्द कुम्ब रहु डूर ॥
 प्रसर रस परिहार प्रभुर सहि कर करमुवन लसत धनिवार ।
 नरहरि मन अनुभव न होत बुद्धि भागिनी निरुद्ध करत परिहार ॥

(गो० ब० बि० प० ३०)

गौरवलिख चित्तामणिसि में अनेक पद ऐसे हैं जिनको हिन्दी पर कहे जा सकते हैं। जैसे—

ललित राग

लसत परिकर मय्य पीर किमोर निरपम साब ।
 बलित-सु कुम कमल चम्पक पु ब त्रिनि बचिराज ॥
 धारु-बाँधर बिकुर अमकत बिहन काबर-काति ।
 बदन-मण्डल बिमल भक्तकत शत मोदितम पीति ॥
 मैत्र कमल बिद्याल मुद श्रुति भागिका मनु गण्ड ।
 सिंह पीब नव मंगि निरपम अनुत्तम मुज बण्ड ॥
 बल परिकर धीन कटियुग बापु मुनिमन धोर ।
 दास नरहरि—पहुँक पर मल भुवन उमोर ॥

(गो० ब० बि० प० १४३)

गीत बन्धोदय

गीत बन्धोदय में भी हिन्दी का प्रभाव है। कुछ उदाहरण देकर स्पष्ट किया जाय है —

भरि भरि कि नव पीर हरि बरना धमिनव मंगि मदन मर हुला ।
 निरपम धमिध भरई धनि बचने दलमल बल अल बासन मयने ।
 भाब-बिमोर धिरज नाहि रहई गरभि सचने धम हरि हरि बरई ।

बूझर बूरि बरबि ठले मुठई बबने बेगे पहुँ बहुरिबिभ सुधई ।
 मुरपन-मुसह बरित अनुगाम एक बरने कि माब बनरयाम ॥

(गी० ब० पृ० ११)

गीत बन्धोदय में कई पर बनरयाम की मनिता के साथ हैं, कई तरहरिबास की मनिता के साथ हैं जैसे—

पैबमु परम मुरित मुकुमारी म्भकत धंगकिरब बधिकारी ।
 निरबने बीठि मुकुर लई हात मुब बबलोकने धबलत माप ।
 सधी कसु पुधई यतने इति बोरि, मुनाहते जाबे रईई मुब मोड़ि ।
 मयने कोने कब रब परकाब कि कहुब तरहरि प्रेम बिसास ।

(बी० ब० पृ० १२)

गीत बन्धोदय में अनेक ऐसे पर हैं जिनमें धन्य बंधुब-बदकस्तियों के परों का भी बनावेस हुआ है और धन्य पदावलिमें में तरहरिबास बन्धनी या बनरयामबास के परों का मिश्रण हुआ है । मौर-बद-ठरंकिनी से एक पर का उदाहरण देना अप्रासंगिक नहीं होमा —

होत मुन धमिबास मुम बने
 गयने मुरयाम मबन यब सने
 परस्पर रजु बरित धमिबास मुब मति मति मयी ।
 गौर रसमब रतिक-बीबर सरस घासने बिलसे बधिर ।
 कर बनक बरपन बरप-नर-हुर मुकुन तनु मनमम बयी ॥
 बबन बिनु बिनु परब-मंजन हास मुहु मुहु इबम रबन
 मंजु बिठि-पुब-कंज म्भकत भाके तिलक मुसोहये ॥

उदा—

मेकय मुबबर-रस परिसर बीज कति प्रति अब बुरबिर ।
 बिकन बाबर बिकुर निरयम मुबन बन-मन-मोहये ॥
 ऐबी माबुरि हेरि मुनियम मानि मुकृति उधरह धन-धन ।
 बिकिब राय बलायि गायत बीज पहि मुति सरसये ।
 मुबड़ बरक-बुम्ब जाबत मपुर बुरंग मुबर बामत ।
 बीय बीकन मिठिक धरिठिठि ठिठि ठन नन न मये ।
 म्भत मत्क हस्त-मनिनब सलित मयि बिकारि धतिधम ।
 बहत तक तक बंत बंतत बा धि तिलि तिलि मतलई ।
 निरत बय बय सरस मुवि नब भूरि भुसुर बैर बनि कब ।
 रेत उनुमुनु नारि-गन धनरयाम-हिय मुब बबलई ॥

(प० क० त० पं० बं० मू० पृ० ११७)

अपसुंक्त कवियों के प्रतिरिक्त ग्रन्थ बहुत पदकर्ता हैं बिन पर हिन्दी का कुछ-कुछ प्रभाव है यह ब्रजबुधिमत् प्रभाव के शीर्षक के अन्तर्गत अगसी-वक्तियों में द्रष्टव्य है। उनमें से रायबसंत^१ के २१११ से २१२० इत्यादि पद्य पद्यकल्पतरु में हिन्दी से प्रभावित ब्रजबुधि के उत्कृष्ट पद्य हैं ऐसा प्रतीत होता है रायबसंत बहुत दिन तक ब्रज प्रदेश में रहे थे। उसी कारण उनके पद्यों में हिन्दी की मसक है, एक उदाहरण से इसका स्पष्टीकरण हो सकता है—

नायर नाचत नागरि संग, बिबिध यत्र कत अम्ब तरंग ।
 बूमि बनि बूमि बूमि बाजे मुरग अठ रबाब बिन मुरसि जपांग ॥
 बलय गुपूर मनि किटिकन कलने पु पय कलभुन बाबत भरने ।
 धानदे धंग-भय अचसम्ब, रस मरे गिरत मिस परिदंभ ।
 कमले मोति किये मुल अमबादि, रसिक कसागुठ कहे बलिहारि ॥
 बहति बिलोरुइ कुहुंभित जोरि, राय बसत पधुं रहुहिय जोरि ॥
 (प० क० ट०, पद्य २१२१)

४ गौड़ीय ब्रजव्य पदावली (ग्रन्थ) विशेषगत हिन्दी प्रभाव—

कवि विशेषतः प्रभाव के साथ-साथ समस्त ग्रन्थ या पदावलीगत हिन्दी प्रभाव का मूल्यांकन हो सकता है। इसका एक संकेत ही पर्याप्त है। बँगला-बँगला पदावली-साहित्य किसी व्यक्ति विशेष की शैली या दृष्टि नहीं है। अतावतियों तक सामान्यतया समस्त बंग प्रदेश एवं विशेषतया मीठीय-बँगलाओं का मेघदान इस साहित्य निर्माण में अनुपम है। समस्त पद्यों अथवा पदावतियों में या पाण्डु भित्तियों ग्रन्थमय अथवा अथवा पदावतियों पद्यों एवं अकीर्तनों में जोड़ा बहुत अल्पुट रूप में हिन्दी प्रभाव प्राप्त हो सकता है।^२

५

४ मापागत प्रभाव (मिश्रित माया व्रजबुलि)

संसार की संस्कृतियों ज्यों की धीरे मापामों में यह बहुधा देखा जाता है कि जो संस्कृतियों के सम्पर्क से एक संकर संस्कृति का जन्म होता है। इसी प्रकार दो मापामों के सम्पर्क से एक संकर भाषा का भी आविर्भाव हो जाता है। बिद्वत् में ही नहीं किन्तु भारत में भी संकर भाषा की यह परम्परा प्राचीन काल (वैदिक

१ देखिए—प० क० ट०, प्र० अं० मू०, पृ० ११८ ।

तथा—हि० बू० लि०, पृ० ४२४ २९ ।

बा० सा० इ०, प्र० अं० पृ० ४४० ।

२ देखिये—पदावतियों के परिचय के लिए प्रस्तुत ग्रन्थ में प्रथम अध्याय पृ० ३० ।

का) से ही बनी आ रही है। गापा या बीड संस्कृत इसका प्रथम उदाहरण है। प्राचिनिक भारतीय-भार्य भाषाओं की पूर्ववर्ती प्रपन्न स भाषा घोर साहित्य भी इसका प्रथम शृंखला है। इसी तरह घोरसैनी प्रपन्न स की भाषायी-परम्परा प्रबुद्धि के रूप में दृष्टिगोचर होती है।

ब्रजबोसी (ब्रजबुद्धि) पर हिन्दी-प्रभाव का निर्णय करने के पहले उसके सम्बन्ध घोर विकास पर कुछ प्रकाश डालना प्रासंगिक है। ब्रजबुद्धि के नामकरण के विषय में विद्वानों में मतभेद है डॉ० बीनेशचन्द्र सेन इसको बृजबुद्धि की भाषा मानकर इसका नाम ब्रजबुद्धि करते हैं^१।

डा० सुनीलकुमार चटर्जी इसको इसलिये ब्रजबुद्धि मानते हैं कि इसमें ब्रजबुद्धि में प्रचलित होने वाले राधा-कृष्ण की पवित्र मीमांसा का वर्णन है^२। ब्रजबुद्धि नाम का उल्लेख रामप्रथम ईश्वरचन्द्र गुप्त के लेखों से मानते हैं^३। किन्तु डा० चटर्जी का दृष्टिकोण ही हमें ठीक लगता है। ब्रजबुद्धि इसको इसलिये कहा जाता है, ब्रज-बोसी—प्रपन्न ब्रज की बोसी किन्तु ब्रजबोसी का साहित्यिक अर्थ है ब्रजभाषा। ब्रजभाषा घोर ब्रजबुद्धि एक भाषा नहीं है। ब्रजभाषा शताब्दियों से एक स्वान विषय की भाषा होते हुए भी किसी समय उसका ऐतिहासिक महत्त्व रहा है। यह साहित्यिक भाषा एक बोलचाल के रूपों में भी प्रचलित रही है। प्रब भी है किन्तु ब्रजबुद्धि साहित्यिक भाषा तो रही है संभवतः यह कभी बोलचाल की भाषा रही हो यह निश्चयपूर्वक नहीं नहीं कहा जा सकता है। ब्रजबुद्धि इसको इसलिये कहा जाता होया कि भगवान् कृष्ण एक राधा की प्रेम-मीमांसा का स्वान ब्रजमण्डल ही रहा है। पहले कहा जा चुका है कि ब्रजबोसी ब्रजबुद्धि का सम्पर्क भी ब्रजबुद्धि के साथ गंभीर रहा है। अतः यह एक भावनात्मक एवं अज्ञा या प्रारम्भिक दृष्टिकोण है। वैदिक महाप्रभु एवं ब्रजबोसी ब्रजबुद्धि के आराध्यदेव तथा इष्टदेव भी मन्वान् श्रीकृष्णचन्द्र रहे हैं। अतः कृष्ण मीमांसन के कारण इसका नामकरण ब्रजबुद्धि हुआ हो ऐसा प्रतीत होता है। पहले सिद्धा जा चुका है कि ब्रजबुद्धि का जन्म विद्यापति ठाकुर की कोमल-कौट पदावली के प्रचार एवं प्रसूकरण पर हुआ है। बीसा कि डा० सुनीलकुमार सेन का मत है ब्रजबुद्धि में मैथिली मूलभाषा है हिन्दी घोर ब्रजभाषा के मिश्रण से तत्कालीन वयसा ने इसका आधा प्रस्तुत किया है^४। (ब्रजबुद्धि एक

१ डॉ० मा० सा० पृ० २२९।

२ प्रो० डी० बी० ऐम० । डॉ० मा० प्र० पृ० १३१।

३ मा० सा० पृ० ७२ ब्रजबोसी की कहानी (डा० सेन) जनवरी १९१६ प्रथम अंक।

४ 'Malhill is the basic part while Bengali with oddments of Hindi and Brajabhaka forms the Super structure
—A History of Brijbali literature Page 1

मिश्रित भाषा है मैथिली इसका मूलभाषा है बंगला और हिन्दी के मिश्रण से इसका स्वरूप निर्मित हुआ है। भागे फिर लिखते हैं 'ब्रजबुद्धि में रचित ब्रह्मव पञ्चमसी में सर्वाथ नहीं तो अन्तिक परिमाण में जिसमें मैथिली पञ्चमसी का अनुसरण किया है वह प्रचिन्तावित है। ब्रजबुद्धि के गठन में मैथिली ही प्रधान उपादान है', अथर्व्य प्रवहृदठ का प्रभाव भी माना जा सकता है। ब्रजबुद्धि में जो पश्चिमी हिन्दी के पद और वाक्य रीति पाई जाती है वह प्रधानतः प्रवहृदठ से पाई हुई कह सकते हैं^१। वे उही मठ का पुनः समर्थन करते हैं ब्रह्मव-नीतिकार्य रचना की प्रथम बंगला में ही विद्यमान भाषा रीतियाँ रही हैं। एक पुत्र बंगला एवं दूसरी ब्रजबुद्धि या मिश्रित बंगला। 'ब्रजबुद्धि नाम प्राकृतिक है ईश्वरवक्त्र मुक्त के पहले इस नाम का व्यवहार किसी ने किया था या नहीं यह मैं नहीं कह सकता। जन्मीसर्वाँ शताब्दी के प्रथम भाग में प्रायः इसको 'ब्रजभाषा' कहा गया है। राजा कृष्ण-पञ्चमसी की भाषा ब्रज की 'दोसी' अर्थात् भाषा यह अनुमान होने पर ब्रजबुद्धि नामक उद्भव हुआ है। ब्रजबुद्धि मुख्यतः प्रवहृदठ और मैथिली के विहृत रूप के ऊपर प्रतिष्ठित है। मैथिल गीतिकारियों का अनुसरण ही इस विहृत का सम्यक्तम कारण है। किन्तु ब्रजबुद्धि के मूल में शुद्ध मैथिली ही नहीं है इसमें प्रवहृदठ का भी पुट है^२।"

क्रमशः डा० सेन अपने मठ का परिवर्तन करते हुए भाव्य हैं, प्रव उक्त मन्त्रीतम दुष्टिकोण ब्रजबुद्धि के सम्बन्ध में इस प्रकार है—'प्रायः बीस वर्षों पूर्व जब मैंने 'ब्रजबोली' साहित्य का इतिहास लिखा था तब मैंने ब्रजबोली की उत्पत्ति के सम्बन्ध में प्रचलित मठ का ही समर्थन किया था। उस मठ के अनुसार बंगाली पद रचयिताओं ने मैथिली विद्यापति की पञ्चमसी का अनुकरण कर ब्रजबोली भाषा की सृष्टि की। अर्थात् मैथिली भाषा ब्रजबोली की माँ तथा बंगला भाषा उसकी 'भाभी' हुई। यही सर्वत्र यथार्थ है। किन्तु विभिन्न कारणों से उपर्युक्त मान्यता का समर्थन अब मैं नहीं कर पाता हूँ। प्रथमतः विद्यापति के समय की

१ सा० प० प० ३९, पृ० १४३ १४४।

२ ब्रजबुद्धि में रचित ब्रह्मव पञ्चमसी सर्वाथे ना ह्योक्त अन्तिक परिमाणों के मथिलपञ्चमसी अनुसरण करिया है ताहा अन्तिकवित्त। ब्रजबुद्धि भाषा पठने मथिली प्रमान उपादान अथर्व्य प्रवहृदठ प्रभाव की मानिती ह्य। ब्रजबुद्धि के पश्चिमी हिन्दी और वाक्यरीति पाषोया जाय ताहा प्रमानतः प्रवहृदठ हृदये भागत मथिया मने करि। (बी० स० ६० प्र० ख०, पृ० ८१)

३ बी० सा० ६०, प्र० ख० पृ० १९१ १९२।

मैथिली भाषा के साथ 'ब्रजबोली' का सादृश्य घनेक स्वानों पर होते हुए भी घनेक स्वानों में नहीं है। द्वितीयतः मैथिली परबली के अनुकरण पर बंगाली कवियों की ब्रजबोली में परबली बिल्कुल अनुमानिक है^१। अपने मठ का पुनः स्पष्टीकरण करते हुए लिखते हैं—'इसी प्रबहुट से ब्रजबोली की उत्पत्ति हुई है, बंगला, मैथिली, हिन्दी राजस्थानी एवं गुजराती आदि भाषाओं का पूर्ण परिछुट रूप प्रबहुट के प्रकलित बरबारी साहित्य में था। विशेषकर राजा-कृष्ण पदावली में। इसी परबली प्रबहुट ने जिसके ऊपर मैथिली आदि स्थानीय भाषाओं का प्रभाव पड़ा था १२वीं तथा १६वीं शताब्दी में ब्रजबोली का रूप बररण किया था। सुरबास आदि प्राचीन ब्रजभाषा के कवियों की रचना में जो प्राहिन्दी दम्ब या पर है वे इसी प्राचीन प्रबहुट या प्राचीन ब्रजबोली के हैं। इसलिये ब्रजबोली किसी प्राग्-विशेष की सम्पत्ति नहीं है वह आदि भाषा की उत्पत्ति है, और एक प्रकार से अंतिम सर्व भारतीय आर्यभाषा है^२।

पहले अध्याय में कहा जा चुका है कि प्रबहुट-औरतनी-अपभ्रंश का बाद का स्वरूप माना जा सकता है। प्रबहुट का सादृश्य हिन्दी के साथ बहुत है। यदि इसको पुरानी हिन्दी का पूर्व भी कहें तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी। अतः यह स्पष्ट कहा जा सकता है कि ब्रजबुलि का मूलधार औरतनी अपभ्रंश प्रसूत पुरानी हिन्दी है। अतः इस रूप में इसका प्रभाव बंगाल के साथ-साथ उड़ीसा एवं असम व मिथिला में भी रहा है। असमिया के संकरदेव^३ और मानदेव की कविता इसकी साक्षी है। पश्चिमी हिन्दी तथा ब्रजभाषा में भी उसी औरतनी अपभ्रंश का प्रेरणास्रोत था। ईश्वर काल में ब्रजभाषा के प्रभाव के कारण ब्रजबोली की कविता में त्वर उत्पन्न हो गई थी। एक और मैथिल कोकिल विद्यापति की परबली की संस्कार भी था रही थी। डा. विश्वनाथप्रसादजी ब्रजबुलि की प्रवृत्ति को प्रकृत भारतीय प्रवृत्ति (All Indian tendency) कहते हैं^४। यह हिन्दी की ही प्रवृत्ति है, जो युग-युगांतर से धातुनिक काल तक असंख्य रूप में बनी आ रही है। अतः ब्रजबुलि परम्परागत रूप से अबाहमान संस्कार भाषायी रंग का एक रूप है। हिन्दी और मैथिल तथा बंगला की विद्यापतियों के मध्यकाल में इसको प्रति प्रदान की।

१ भा० सा० प्र० अ० पृ० ७४ जनवरी १९२६।

२ भा० सा० पृ० ७७ जनवरी १९२६।

३ बी० सा० ६० प्र० भा० पृ० १२२ १२६।

४ हिन्दी-विद्यापीठ धारवा विश्वविद्यालय में लेखक के साथ रवीन्द्रनाथ ठाकुर के प्रबंध में विचार-विमर्श करते हुए डा० प्रसाद जी ने अपना मठ ब्रजबुलि के सम्बन्ध में प्रकट किया।

डॉ० सत्येन्द्र जी ठी ब्रजबुक्ति पर ब्रजभाषा का प्रत्यक्ष प्रभाव मानते हैं। इस तथ्य की सत्यता अनेक वैय्युक्त पदकल्पार्थों के पदों से स्पष्ट हो जाती है। कई कवि एक साथ तीन-तीन भाषाओं बंगला, ब्रजबुक्ति, ब्रजभाषा में कविता करते पाये हैं^१। ब्रज भाषामूलक प्रभाव का प्रथम है ब्रज ब्रजबुक्ति में हिन्दी का बहुत ठाना जाना है। उसके भाषा वैज्ञानिक एवं व्याकरणिक-स्वरूप पर भी हिन्दी का प्रभाव है^२।

ब्रजबुक्ति के ऐतिहासिक एवं साहित्यिक स्वरूप पर दृष्टि डालना अभीष्ट है। ब्रजबुक्ति के पदों की संख्या पाँच हजार से ऊपर है। यह समस्त साहित्य गेम पदावली के रूप में है। डॉ० सुकुमार सेन के अनुसार ये पद दो घुसों से प्राप्त होते हैं।

(१) वैय्युक्त गीति-साहित्य के रूप में।

(२) ऐसे पद जो किसी वार्थानिक या सैद्धांतिक ग्रंथ में उदाहरण स्वरूप में उद्धृत हैं।

१ वैय्युक्त गीति-साहित्य के रूप में

| | |
|-----------------------|---------------------------|
| १ अखुदा-गीत चिन्तामणि | ५ पदकल्पवृत्तिका |
| २ पदामृत समुद्र | ६ पौरुष-वर्षिणी |
| ३ पदकल्पतरु | १० अग्रकावित पदरत्नावली |
| ४ कीर्तनामंड | ११ पदमठ (हस्तलिखित ग्रंथ) |
| ५ संकीर्तनामृत | १२ पदसंग्रह (हस्तलिखित) |
| ६ पदरत्नसार | १६ गौरवर्णित चिन्तामणि |
| ७ पद रत्नाकर | १४ गीत अमोघ्य |

२ ऐसे पद जो किसी वार्थानिक या सैद्धांतिक ग्रंथ में उदाहरण स्वरूप में उद्धृत हैं

| | |
|----------------------------------|--------------------|
| १ श्री रामाङ्कण-रघु-कल्पवृत्तिका | ४ चिन्तामृत अमोघ्य |
| २ रसमंजरी | ५ नायिका-रत्नमासा |
| ३ भक्ति रत्नाकर | ६ अर्थ |

१ देखिये—'ब्रजबुक्ति और ब्रजभाषा' पर तुलनात्मक अध्ययन पी-एच० डी० स्वीडन प्रबन्ध डा० कुमारी कस्तिका-विपनास (ब्रजभाषा और ब्रजबुक्ति साहित्य) हिन्दू विश्वविद्यालय बाराणसी सन् १९२७ ई०।

२ देखिये—प० क० व० पं० डॉ०, मू०, पृ० २३३-२४३। बं० सा० प० प० १३३७। भाषार इतिवृत्त पृ० २३२, २६० (ब्रजबुक्ति व्याकरण तथा हि० बं० वं० कवि पृ० ४६७-४८०)।

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से बंगला साहित्य में ब्रजबुजि का ध्वनन और प्रचलन १२वीं सताब्दी से सठाहरी एव १९वीं सताब्दी तक प्रविष्टि-वारा के रूप में मिलता है। वैष्णव-पदकर्ता तो ब्रजबुजि परावसी में धाकठ रस मम के किन्तु बहुत वैष्णव भावापन-मुसलमान कवि भी इस परावसी के प्रेमी थे। बीसत काबी की 'सतीमयता ओ लोर चन्द्रानी में भी ब्रजबुजि के पद हैं। भारतभर रावगुहाकर की 'धन्नाममम' में भी ये पद पाये जाते हैं। हालांकि दोनों ही कवियों का वैष्णव-काव्यवारा के साथ कमी प्रत्यय सबब नहीं रहा। वे भी ब्रजबुजि के प्रभाव से नहीं बच सके।

उन्नीसवीं सताब्दी के अर्धे बंकिमचन्द्र की मूणासिनी एवं बंम-दर्शन में भी ब्रजबुजि के पद हैं। प्रागुक्तिक काल में अनेक बंगला-साहित्यकारों का मुकाब इसकी ओर रहा है। निरवकवि रबीन्द्रनाथ ठाकुर ने भी ब्रजबुजि के गीत अपनी भागुसिंह ठाकुरेर परावसी में वैष्णवों के भावों एवं भाषा में पाये हैं।

ऐतिहासिक नामावसी' की दृष्टि से संभवतः ब्रजबुजि के जो छी से अधिक पदकर्ता हैं। ऐतिहासिक रूप से कुछ प्रसिद्ध कवियों के पदों के सवाहरणों से हिन्दी प्रभाव ब्रजबुजि साहित्य में अधिक स्पष्ट हो सकेगा।

१ यशोराज जी—इसका मिल्न पद ब्रजबुजि का सर्वप्रथम बंगला पद माना जाता है —

एक पयोचर बंद-लेपित घारे सहजदु बीर ।

हिम-बराबर कनक-भूषर कोले मिलत बीर ।

—कीर्तनवीत रत्नावसी

२ गोविंददास कविराज^१

गोविंददास कविराज ब्रजबुजि के सर्वप्रथम कवि हैं। जो स्वाम विद्यापति का वैभिस-साहित्य में है वही स्वाम गोविन्ददास कविराज का ब्रजबुजि परावसी में है। एक सवाहरेय विद्या जाता है।

कुबलय-बंदल-कुसुम कलेवर कामिन-काति कलोष ।

कोमल केलि-करम्ब-करमिमत कुदल-काति कपील ।

जय जय कुर्य कुर्य कमलेन । कालिय-केधि-दंत-करि-कर्पन

केदार कुचित-केस कुल-बदिता-कुच-कृतभाचित कमुमित-कुतल बच

कालिन्दि कमल-कमित-कर-किशलय कोदुस बंदल कर ॥

१ देखिये—'हिस्ट्री प्राय ब्रजबुजि मिटरेवर में पदकर्ताओं की नामावसी।

२ देखिये—प्रस्तुत प्रबंध में पृष्ठ ८८-९२।

कमला-कैलि कमल-तट कामर कामिनि कोटि-कवीर कृपल-कृपा-कर
कनुपम् कय कह कबि दास गोबिद ॥ (प० क० ट० पद २४१७)

३ शिवराम^१

शिवराम ने ब्रजभाषा और ब्रजबुद्धि दोनों में ही पर निखे है। ब्रजबुद्धि का एक उदाहरण देखिये—

प्राणुरगे होरि शैलत इयाम गौरि
सक्षिगल मिलि याम्रोत बाघ्रोत ।
दिघोर किशोरि नाधि नाषाघ्रोत आनवे मगभौरि ।
बिबिध यंत्र ताल मूर्धग कोइ मोधंग
बाजये जपाय तन मन तौरि ।
तब तब तब तत येया बुमति बुमति त्रिमि यया
चड० लड० सड० सौरि ।
कुहु पुहु पुहुशाम बिमिजाम, किट किट किट याम
दुपयाम सिबयाम गाम्रोये हौरि ।
(प० क० ट० पद १४१९)

तथा—

रमे हो हो हौरि शैलत नघोल किशोरी ।
बाजत ताल रबाब पाषाघ्रोत सक्षिगय घन करतासि ।
कु कुम बदन घाबिर उकत घन बरिखन बनु विबकारि ।
हुहु पर हुहु पडू भौरि बितनु घन दुमु बन परजन सक्षिगल भी वरघौरि ।
केने केने पकित बदन हुहु निरसन केहन चाबि कोकरि ।
तहि शिवराम दासमन आनवे हेरि हासे घोरि चौरि ॥^२
(प० क० ट० पद १४४१)

४ रामकथन

रामकथन के पदकल्पतरु में ५१ पद हैं। इनमें हिन्दी का मेल है। एक उदाहरण देते हैं—

नागर नाकात नापरि संग बिबिध यंत्र कत धाम्य तरंग
बुमि बुमि बुमि बाजे मूर्धग उक रबाब बिन मुरति जपाय ।
बलय मुदुर मनि किंकिनि-कलने घु घब रनुमुनु बाजत चरणे ।
आनवे भग भय भयसम्ब, रसभरे पिरत मिसत परिरम ।

१ देखिये—प्रस्तुत प्रबंध में पृष्ठ ८४ ८५ ।

२ शिवराम के पदकल्पतरु में १४३७ १४४२ १४४३ १४४४ १४४६, १४४२ सङ्गक पदों में हिन्दी का प्रभाव है ।

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से बंगला साहित्य में ब्रजबुजि का सूचक दौर प्रथम १५वीं शताब्दी से अठारहवीं एव १९वीं शताब्दी तक अविच्छिन्न-आरु के रूप में मिलता है। बंगला-पदकर्ता तो ब्रजबुजि परावसी में प्राकृत रस-मग्न थे किन्तु बहुत बंगला भाषापन-मुसलमान कवि भी इस परावसी के प्रेमी थे। शीतल काशी की सतीमयना श्री मोर अग्रणी' में भी ब्रजबुजि के पद हैं। भारतभद्र रामगुलाकर की 'अम्बामयल' में भी ये पद पाये जाते हैं। हालांकि दोनों ही कवियों का बंगला-काव्यभार के साथ कभी प्रत्यक्ष संबंध नहीं रहा। वे भी ब्रजबुजि के प्रभाव से नहीं बच सके।

उन्नीसवीं शताब्दी के अर्ध अक्षिपन्न की मूलाजिनी एवं बंग-दर्शन में भी ब्रजबुजि के पद हैं। धार्मिक काव्य में अनेक बंगला-साहित्यकारों का भुक्ताव इसकी ओर रहा है। निरनकवि रबीन्द्रनाथ ठाकुर ने भी ब्रजबुजि के गीत अपनी मागुसिंह ठाकुर परावसी में बंगलाओं के मातों एव मापा में बाये हैं।

ऐतिहासिक नामावली^१ की दृष्टि से सम्भवत ब्रजबुजि के दो ही ऐतिहासिक पदकर्ता हैं। ऐतिहासिक क्रम से कुछ प्रतिष्ठ कवियों के पदों के उदाहरणों से हिन्दी प्रभाव ब्रजबुजि साहित्य में अतिक स्पष्ट हो सकेगा।

१ मसोराज की—इतना निम्न पद ब्रजबुजि का सर्वप्रथम बंगला पद माना जाता है —

एक पयोधर अंद-अपित धारे सहस्र हीर ।

हिम-बराधर कनक-मूषर कोसे मिलत और ।

—कीर्तनगीत रत्नावली

२ गोविंददास कविराज^२

गोविंददास कविराज ब्रजबुजि के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। जो स्वान विद्यापति का मैथिल-साहित्य में है वही स्वान गोविंददास कविराज का ब्रजबुजि परावसी में है। एक उदाहरण दिया जाता है।

सुखतव-अंदल-कुतुम कसेधर कानिभ-कानि कसेल ।

कोमल कलि-नदम्ब-करमिन्त कुदल-कांत कपील ।

अप जय हृदय हृदय कमलेश । कानिभ-केसि-अंत-करि-कर्वन

केराव कुबित-केस सुल-बनिता-कुच-कसमाचित कुसुमित-कुलल-अप

कानिभ कमल-कानि कर किललय कोनुक करल कर ॥

१ देखिये—'हिस्ट्री ऑफ ब्रजबुजि लिटरेचर' में पदकर्ताओं की नामावली ।

२ देखिये—प्रस्तुत प्रबंध में पृष्ठ ८८-९१ ।

कमला-कैसि कलप-तव कामव कामिनि कोटि-कबीर
कनुपम् कव कह कवि दास गोबिद ॥ (प० क० त० पद २४२७)

३ 'सिधराम'

सिधराम ने ब्रजभाषा और ब्रजबुद्धि दोनों में ही पद लिखे हैं। ब्रजबुद्धि का एक उदाहरण देखिये—

आजुरगे होरि कैसत इयाम गौरि
सखिपन मिलि गामोत बाघोत ।
किनोर किनोरि नाचि नावाघोत आनरे मनमोरि ।
बिबिध यत्र ताम मरुम कोइ मोक्षय
बाजये उपांग तन मन सोरि ।
तव तप तथ तत बेया बुमति बुमति त्रिमि यया
बह० लह० लह० सोरि ।
कुहु गुरु गुरुबाम विनिग्राम किट किट किट घाम
गुगघाम शिवगाम माघोये होरि ।
(प० क० त० पद १४१९)

तथा—

रगे हो हो होरि कैसत नमोम किनोरो ।
बाजत ताल रबाव पावाघोत्र सखिगण धन करतालि ।
कु कुम बदन भाविर बद्ध घन बरिजन कनु पिच्छकारि ।
कुहुँ पर कुहुँ पत्र भोरि सितनु घन कुमु खन गरजन सखिगन भी बरघोरि ।
कैने कैन पकित बदन कुहुँ निरजन कैपन चाँद कोकरि ।
तहिँ सिधराम बासमन आनरे हेरि हासे घोरि चोरि ॥^१
(प० क० त० पद १४४१)

४ रायबसन्त

रायबसन्त के पदकल्पतरु में ५१ पद हैं। इनमें हिन्दी का भाग है। एक उदाहरण देखें —

नागर नाचत नागरि संम बिबिध यत्र कत धम्म तरंग
बुमि बुमि बुमि बाबे मुबय, डंक रबाव दिन भुरति उपांग ।
बलय मुनुर भनि किंकिमि कलने भू घब व्नुमुनु बाजन धरये ।
आनरे धग भय धबसम्ब, रसभरे मिरत मिसत परिरम ।

१ देखिये—प्रस्तुत प्रबंध में पृष्ठ ४४-८१ ।

२ सिधराम के पदकल्पतरु में १४३७, १४४२, १४४३, १४४४, १४४९, १४४२
सम्बन्ध पदों में हिन्दी का प्रभाव है ।

कमले मोति किये मुख भमवारि रसिक-कला-मुख कहे बलिहारि ।
बिहसि बिलोकहु कु ह्रीं बत औरि रायबसंत-पहुँ रहुक्षिय औरि ।^१

(प० क० त० पर २६२६)

३ रायसोहर

रायसोहर के पर भी कुछ हिन्दी का प्रभाव लिए हुए हैं। एक पर इस प्रकार है —

मपुर मपुर घोर किछोर मपुर मपुर नाठ ।

मपुर मपुर सब सहसर मपुर मपुर हाठ ॥

मपुर मपुर मरंभ बाजत मपुर मपुर तान ।

मपुर हूलन मपुर होलन मपुर मपुर पति ।

मपुर मपुर बचन सुन्दर मपुर मपुर माति ।

मपुर मरुत बनि धधधर मपुर मपुर हास ।

घारति विरिति करिति मपुर मपुर भाव ।

मपुर मुपल नयान रसुम मपुर इंगित जान ।

मपुर प्रेमेर मपुर बारर बंभित वैखरराय ।

(प० क० त० पर २०६२)

६ जयहृन्मदास

इनके निम्न पर में हिन्दी की छाया है :—

बैनु बरायत बैनु बजायत यमुना तीर पुलिन बने ।

(प्रिय) सुहामा बीराम सुबल महाबल एतब पोपलका लगने ॥

(नद) बेष सुबेष बुझा छिकि छाजनि मातलीमाल प्रसन्न बसे ।

(भुक्ति) पाद्यबिजात—भनिमकरावृति कुबल मंडित पडे होले ।

कठि घटि पीत बलप निकछनि किठिनि कौचनराम धने ।

बरनकबल बसे दधिमंडित खंडित ताप मजंत बने ।

बपकिछानंदास पहुँ गोबर्धन बारन भीर वैवेग्रभनि ।

धक्षित बह्रांड खंड करि मंडित लाकर घागे काशाको गनि ।

(पर कल्पलतिका पर २६)

७ मुबलचन्द्र ठाकुर

इनका निम्न पर हिन्दी प्रभाव अभिष्ट है —

बैख नदवर नाके धधीर कीबर है ।

हैमबरबोरातनु प्रेममरा भीरा जनु मपुरहसन कनकपमनीहर है ।

१ रायबसंत के परकल्पतर में २६१६ से २६३२ तक के परों में हिन्दी का भाव है ।

प्रथम बरब पर नयनहि भीरकर तरुन कवन मनु मतितर भर हँ ॥
 देखि प्रिय पदापर बिपुल पलकनर एछोटे झीठ नाँव० घर का बेनु मर हँ ।
 हेरि केरि निरपामंर ताँवै हूँ बयनबन्ध इह रसगम पाप्रीये सुबल सुपङ्क हँ ।
 (पदामृत-समुद्र पृ० ५२)

८ गण्डूरि चक्रवर्ती^१

गण्डूरिदास चक्रवर्ती बंगला ब्रजबुनि गौर ब्रजभाषा के प्रवीण कवि हैं ।
 इनके नरोत्तमनिषाध भक्तिरत्नाकर और भक्ति चिन्तामणि एवं गीतचन्द्रोदय
 आदि ग्रंथों में हिन्दी का प्रचुर प्रभाव है । सम्भवतः समस्त परकारों में ये हिन्दी प्रभाव
 के प्रतिनिधि कहे जा सकते हैं । इनके ब्रजबुनि के कुछ पद द्रष्टव्य हैं —

जय जय रामकृष्ण आचार्य सुधीर महादास सुखर उदार ।
 भाषाबोध निरन्तर कीर्तन लक्ष्य, भक्तिमय सुखर प्रचार ॥
 सुखमय रसिक, जनमन रंजन, ताप पुञ्जतम भजन कारी ।
 द्विजकुल बंजन गुणमन मधिरत पण्डितवर कुरमुख मर हारी ॥
 श्री भव मीहल राम, सुबिग्रह सेवा, सतत निमुक्त प्रथाम ।
 अद्भुत रति उस्तसित विद्यानिधि गीरचन्द्रचरितानुत मान ॥
 परम दयाल नरोत्तम पद मुप बहु सर्वस्व न जानत धर्म्य ॥
 को लभुकाव कहूँ रीति शिरि बन्ध, धामत गण्डूरि मानत धर्म्य ॥

(प० १० पृ० १०१२)

तथा—

कौन बरबन गौर परिकर करित भक्ति अनुपामरे ।
 भुवन-विहित विशेष प्रसीम हि अहिम जलाम रे ॥
 बिबन बृष बिनासकर बरतित्य नबगुण प्रामरे ।
 सकल मंगल मूल सुखमय परम मधुरिम नामरे ।

(गौ० च० वि० पृ० १५)

९ गण्डूरि मधुव

हिन्दू परकर्मियों के प्रतिरिक्त मुसलमान बन्धुव भाषापन्न कवि भी हैं,
 जिन्होंने रामाकृष्ण सीता के सम्बन्ध में अपनी वाग ब्रजबुनि में गाये हैं । गण्डूरि
 मधुव का एक पद द्रष्टव्य है —

बेनु सीते गोके रंगे, शैलत राम, सुन्दर दयाम,
 पार्थिव कर्बनि बँकबेनु पुरमी सुराली मानरि ।
 प्रिय धाम श्रीधाम सुधाम भेनि, तबनी तगवा सीरे केनि
 बबलि साकली धामोदि धामोदि, फुकरि बलत कानरि ।

१ देखिये—प्रस्तुत ग्रन्थ में पृष्ठ १२-१०० ।

बयस कितोर मोहून भाति बहन इन्नु बालब काति ।

आब अगि गुआहार बरनै मदन मानरि ।

आगम निमम बेवसार नीलाय करत पोट बिहार ।

मदीर मामुब करत आषा बरनै दारन बानरि । (प० क० त० पृ० १३२६)

विस्तार मम से अधिक उदाहरण देना उपयुक्त नहीं है। उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि ब्रजबुजि के निर्माण में हिन्दी का योगदान प्रमुख है। अन्त में विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि विशेषकर ब्रजबुजि पर धीरे सामान्यतः समस्त मौखीय वैश्लेष्य उदाहरणों पर धीरे अरि-काम्यों पर हिन्दी का सम्मिलित सर्वाङ्गीण प्रभाव है।

धरासे पृष्ठों में हिन्दी मन्त्रकास के आधार पर विरचित बंगला भक्तमाल का प्रसंग है।

६

५-अनुवादपत्ररसगत (श्रीमद्वत्तमाल) हिन्दी-प्रभाव

पिछले पृष्ठों में हम बंगला पर हिन्दी के मन्त्रकालीन सामान्य प्रभाव की बात कर चुके हैं। वैसे तो सामान्य प्रभाव १२वीं शताब्दी से १८वीं शताब्दी तक पाया है। किन्तु हिन्दी के विशेषतः प्रभाव का प्रमाण हमें अठारहवीं शताब्दी में मिलता है^१। जबकि लालबास (कृष्णबास) नाभाजी ने नाभाबासजी के मूल हिन्दी भक्तमाल (रचनाकाल संवत् १६४२-१६८० वि सं०^२) एवं उनके सिध्द प्रिया बासजी की रचित रस-बोधिनी टीका (रचनाकाल १७६६ वि सं०) को आधार मानकर बंगला भक्तमाल का निर्माण किया है। डा० सुकुमार सेन महोदय का मत है 'मूल भक्तमाल नाभाजी ने ब्रजभाषा में लिखा था प्रियाबास ने टीका लिखी थी इसी मूल धीरे टीका का प्रबलम्बन करके अनेक भक्त-कहानियों को जोड़कर लालबास ने 'वीड़ भाषा-सूत्र' में सत्तारह सालाओं के सुबूहत् भक्तमाल का पुम्पन किया था^३।'

१ डा० अटजी इसका अनुवाद सत्रहवीं शताब्दी का मानते हैं। देखिये बंग भा० सू० पृ० १३६।

२ वि सं० वि प्र० सं० पृ० ३२१।

३ 'मूल भक्तमाल लिखियासिसेन नाभाजी ब्रजभाषा संकाशे (१५९०-९१) टीका लिखियासिसेन प्रियाबास। एह मूल धीरे टीका प्रबलम्बन करिया एह अनेक नूतन भक्तकहानि बोध करिया लालबास 'वीड़भाषा सूत्रे' सातास 'मासा' य सुबूहत् 'भक्तमाल पांचियासिसेन (बंग० सा० ६ पृ सं० पृ० ६०८)। मुद्रण १८३४ बंगलाठी कार्यालय से प्रकाशित संस्करण।

भक्तमास के सर्वप्रिय होने के कारण उस समय भक्तमास के बंगाली कारण की बड़ी प्रावण्यकता थी जैसे कि प्रपकार स्वयं स्वीकार करते हैं "मूस भक्तमास प्रथम ब्रजभाषा में होने के कारण सर्व-साधारण नहीं समझ सकते थे। इसलिये योड़ीय भाष्य (बंगला) में मासानुसार कहा है रचना के अनुसार कहना ठीक नहीं समझा। यथाशक्ति बोझकर कहा है। कोई इस पर उपहास नहीं करें। बीसा मुझे धाता या बसा वैष्णवों का गुणगान किया है। प्रत्यक्ष टीका का धर्म भी मैंने अपनी बुद्धि के अनुसार किया है। रचना मन सतोप के अनुसार की है। प्रिया दासजी ने धर्तीय संक्षेप में वर्णन किया था। प्रत्यक्ष-साधारण की मति से बाहर थी, किसी-किसी स्थान पर कुछ-कुछ विस्तार से उनके पीछे-पीछे कहा है। बंगला भक्तमास के प्रपकार (मासदास या कृष्णदास बाबाजी) भाभादास के मूस और प्रियादास की टीका का श्रेण स्वीकार करते हुए लिखते हैं :-

‘बंशो श्रीप्रणदासजी करि तिय्य नामा ।
तेहो केला भक्तमास सरजनैर सोमा ॥
चारिपुगेर भागवत गयेर चरित्र ।
भक्तमास ग्रंथ कैस परम-प्रिय ॥
बाहार सबरो उपमै कृष्ण रति ।
ब्रजव चरन रसै हय बुद्धमति ॥
महात्मोमति प्रतिनिष्कृत वा हय ।
सबये सबय तार मदा उपजे ॥

(बं० म० पृ० २)

प्रार्थना में श्री प्रणदासजी की बंधना करता हूँ जिनके तिय्य नामादासजी हैं। जिन्होंने भक्तों के सुमाने के लिये भक्तमास का निर्माण किया था। चार दुर्गों के भक्तजनों के चरित्र पवित्र भक्तमास ग्रंथ में मिले हैं। जिनके स्मरण से कृष्ण भक्तानु में प्रेम उत्पन्न होता है। वैष्णवों की परण रज में बुद्धमति होती है। कोई यदि महात्मोमति, प्रतिनिष्कृत भी हो उसके सबण करने से मदा उत्पन्न होती है।

१ प्रथम हय ब्रजभाषा सबे मुझे माहि। सेहेतु योड़ीया भाष्ये श्रेयोमत कहि ॥
रचना पुष्कल कहिबारे माहि जानि। यथाशक्ति योड़ीयाई मिलाइया मनि ॥
उपहास कैह माहि करिह इहाते। बीष्णवेर पुण्यगान करि कोन मते ॥
प्रत्यक्ष टीकार धर्म बुद्धि साध्यमते। रचिया कहिब मात्र मन बुझइते ॥
यथा यथा प्रियादास संक्षेपेते प्रति। बंधिता ना प्रवेद्य साधारणमति ॥
सेइ सेइ कोन कोन स्थाने किमु किमु। विस्तार करिया कहितार पागु पागु ॥

(बं० म०, पृ० २)

भक्तमाल का प्रभाव बँगला-साहित्य बँगाली कवियों एवं बंग समाज पर पुनः-पुनः से बंधीर धीरे-धीरे साक्षात्कार रहा है। यह भक्तों की माला का संसार कुसुम है। जिसकी शोभन विपरिवर्तन को ध्यानरमय करती रही है। इस बंगला भक्तमाल ग्रंथ से ही बँगाली-द्वय में विश्वरंगस बयबेन तुमसीवास रघुनाथदास, प्रबोधानंद सरस्वती रूप सनातन धीरे धीरे गोस्वामी श्रीधर स्वामी गोपबेन संकर, रामानुज भीरुबाई करमेठीबाई धीरे कबीर धारि तत्व रस निमल महापुत्रों की ज्ञान भक्ति धीरे वैराग्य की वैश्वरूप्यमी श्रीर-सीता बरमबा रही है। भक्तमाल की महिमा को प्रकट करने वाला एक मर्मस्पर्शी बँगला प्रभाव* है।

“यदि पाके किष्ण भने बोलमाल तबै पड़ भक्तमाल।”

अर्थात् यदि मन में कुछ बोलमाल हो तो तब भक्तमाल पढ़ना चाहिये।

बँगला भक्तमाल ग्रंथ हिन्दी भक्तमाल का प्रसारण अधिकतम अनुवाद नहीं है। बँगला भक्तमाल ग्रंथ को हिन्दी भक्तमाल के आधार, अनुकरण एवं अवलम्बन (Adaptation) पर विरचित कइ सकते हैं। यह हिन्दी भक्तमाल का बँगला भक्तमाल पर प्रभाव का स्पष्टीकरण करने के लिये सम्भवतः की स्पष्टीकरण इस प्रकार हो सकती है —

(१) प्रमुखात् हिन्दी भक्तमाल के भक्तों की नामावली का आधार लेकर जालदास बाबाजी ने अपने ग्रंथ का निर्माण किया है।

(२) बँगला भक्तमाल की बहुत भासाओं का मुख्य हिन्दी भक्तमाल के प्रसंगों के आधार पर हुआ है।

(३) हिन्दी भक्तमाल से बहुत हिन्दी पर (लगभग ४३ पर) बँगला भक्तमाल में प्रसारण चहुँत है। हिन्दी के धनेक पदों का बँगलावाक भी बँगला भक्तमाल में हुआ है।

(४) बँगला भक्तमाल में धनेक प्रसंगों का प्रसार हिन्दी भक्तमाल के अतिरिक्त लघुबर्णनात्मक पदों के आधार पर हुआ है। अर्थात् जिस अतिरिक्त एवं प्रसंग का बर्णन हिन्दी भक्तमाल के प्रकाशकों ने अतीव संक्षेप में किया है बँगला भक्तमाल के रचियता ने बहुत विस्तार के साथ किया है। मूलतः तत्त्व या सार्थक तो हिन्दी भक्तमाल का है, किन्तु विवेक बर्णन अतीव बँगला भक्तमाल का अर्थ है।

(५) जालदास बाबाजी ने भी अपने ग्रंथ में कुछ हिन्दी पदों की रचना की है। जौहरदास धीरे हरिचरणदासजी अर्थात् भक्तमालदासजी के भी एक दो हिन्दी पर बँगला भक्तमाल में चहुँत है।

(६) वेप प्रसंग अतिरिक्त बर्णन बँगला भक्तमाल के मौलिक हैं किन्तु अन्वयतया अरबा अर्थात् अनुकरण एवं बर्णनहीनी हिन्दी भक्तमाल से ही अर्थात्

सी गई है। अतः मैं यह कहा जा सकता है "बंषला भक्तमाल के गुम्फन में कुछ सूत्र और फूस-संज्ञिकाँ हिन्दी भक्तमाल से उधार ली गई हैं, और कुछ रंगबिरंगे सूत्र और शीखर्य-मुग्ध सम्पन्न प्रसून लालबास बाबाजी के अपने हैं, अतः दोनों के मणिकीर्तन संयोग से ही बंषला-भक्तमाल का सूजन एवं गुम्फन हुआ है जिसका शीखर्य शीरय प्रायः एक बंग देश में प्रचलित रूप में प्रचलित है।"

अतः किञ्चित्-विस्तार के साथ उपयुक्त-रूपरेखा का विवेचन बाँधनीय है।

१ हिन्दी भक्तमाल की यह भक्त-नामावली जो बंषला-भक्तमाल में पुरीत (Adopted) है, निम्न प्रकार है—

प्रथम माता —

| | | | |
|---------------------------|--------|----------------------|-----------|
| १ (बे०म०) श्री लालबास जी | पृ० ३= | (हि०म०) श्री लालबाजी | पृ० ११ १५ |
| द्वितीय माता— | | | |
| २ (बे०म०) महाप्रभु चैतन्य | " ६= | " हृष्य चैतन्यप्रभु | ' १७१ |
| ३ " श्री नित्यानन्द | " ६= | " श्री नित्यानजी | " १७० |
| ४ " रघुनाथदास पौस्वामी | " ११= | श्री रघुनाथपोसाईजी | ' १६६ |
| ५ " श्री रूप | ' ११= | श्री रूपजी | " १८६ |
| ६ " श्री सनातन | " १३= | श्री सनातन जी | " १८६ |
| ७ " श्री जीव पोस्वामी | " १३= | " श्री जीव पोसाईजी | २०३ |
| ८ " श्री गोपाल मट्ट | " २३= | " श्री गोपाल मट्टजी | " २०४ |
| ९ " श्री मधु पंडित ठाकुर | " २४= | श्री मधु पोसाईजी | " २०६ |

तृतीय माता —

| | | | |
|--------------------------|-------|---------------------|------|
| १० (बे०म०) श्री अजामिलजी | ' ४१= | " श्री अजामिलजी | ' २० |
| ११ " हनुमानजी | " ४४= | ' श्री हनुमान जी | " २३ |
| १२ " बन्नीपनजी | ' ४२= | ' श्री बन्नीपणजी | ' २४ |
| १३ " श्री सखरीजी | " ४६= | " श्री सखरीजी | २५ |
| १४ " अणपति बटायु | " ४८= | " श्री बटायु जी | " २८ |
| १५ " अम्बरीष महाराजा | " ४९= | " राजा अम्बरीषजी | " २८ |
| १६ " श्री विदुर जी | " ५२= | " श्री विदुर जी | " ३३ |
| १७ " श्री सुरामाजी | " ५३= | " श्री सुरामा जी | " ३४ |
| १८ " श्री ब्रह्मदास राजा | " ५४= | " राजा ब्रह्मदास जी | " ३८ |

चतुर्थ माता —

| | | | |
|--------------------------|-------|------------------|------|
| १९ (बे०म०) श्री कुन्तीजी | " ५७= | " श्री कुन्ती जी | ' ४२ |
| २० " श्री शोपरीजी | " ५७= | " श्री शोपरीजी | " ४३ |

| (बं म०) | (हि० म०) |
|--------------------------|--------------------------------|
| २१ श्री भुवनेश | पू० ११= " भुतिदेव श्री पू० ४४ |
| २२ श्री दाचीन बहिषाबा | " ११= ' प्राचीन बहिषाबा " ४४ |
| २३ श्री बास्मीकजी | " १२= " श्री बास्मीकजी " ४४ |
| २४ त्रिबाहीकजी | " १२= " स्वपथ बास्मीक ४४ |
| २५ " श्री स्वभावबराबा | १४= " राजा श्री स्वभाव " ४६ |
| २६ " श्री हरीचन्द्र राजा | " १७= " हरीचन्द्र " ४४ |
| २७ श्री विष्णुबलीजी | " १७= ' राजा विष्णुबली २० |
| २८ श्री मोरचन्द्र राजा | १७= " राजा श्रीमोरचन्द्रजी " २ |
| २९ " घलकंजी | १८= " श्री घलकंजी " ४३ |
| ३० " श्री रंतिदेव | ७०= श्री रंतिदेवजी ४३ |

षष्ठम् माता :—

| | |
|----------------------------|-----------------------------------|
| ३१ (बं० म) श्री गृह राजा | ७२= राजा श्री गृहजी ४४ |
| ३२ श्री परीक्षित महाराज | " १२= " राजा श्री परीक्षितजी " ४७ |
| ३३ श्री मुकुन्देश भोस्वामी | " २३= श्री मुकुन्देशजी " ४७ |

सप्तम माता :—

| | |
|----------------------------------|---------------------|
| ३४ (बं० म०) भक्तराज श्रीप्रह्लाद | २९= " प्रह्लादजी ४८ |
|----------------------------------|---------------------|

अष्टम माता :—

| | |
|------------------------------|----------------------|
| ३५ (बं० म०) भक्तराज श्रीधनुर | ११२= " " धनुरजी " ६० |
|------------------------------|----------------------|

नवम् माता —

| | |
|-----------------------------|---------------------|
| ३६ (बं० म) श्री बलि महाराज | " ११२= " बलिजी " ६० |
|-----------------------------|---------------------|

दशम् माता —

| | |
|----------------------------------|-------------------------------|
| ३७ (बं० म०) श्री बोपदेव भोस्वामी | १४६= बोपदेवजी " ६८ |
| ३८ " श्री रामानुज स्वामी | " १४७ = " श्री रामानुजजी " ६८ |
| ३९ " श्री निम्बाबल स्वामी | " १४८= " निम्बाबलजी ६७ |
| ४० " श्री लामाचार्य | " १४९= " लामाचार्यजी " ६० |

(श्री रामानुजजी के मामा)

एकादश माता —

| | |
|----------------------------|-------------------------------------|
| ४१ (बं म) गुरुभक्त वैष्णव | १५१ = " श्रीपाद पद्मजी ७२ |
| ४२ " श्री रंग बलिक | " १५२= " " रंजी ७४ |
| ४३ श्रीकृष्णदास धानु | " १५३= पयहारी श्रीकृष्णदासजी " ७४ |
| ४४ श्री कन्हूजी | " १५३= " श्री कन्हूदेवजी " ७५ |
| ४५ " श्री धर्मदासजी | " १५४= " स्वामी श्री धर्मदासजी " ७७ |

(बं०म०)

(हि०म०)

| | | | | |
|----------------|-------------------------|-----------|--------------------------|--------|
| ४९ | श्री शंकराचार्य | पृ० १११ = | श्री स्वामी शंकराचार्यजी | पृ० ७८ |
| ४७ | " नामदेवजी | ११७ = | " " नामदेवजी | ७९ |
| हाथ मासा — | | | | |
| ४८ | " " जयदेव मोस्वामी | ११४ = | , जयदेवजी | , ८६ |
| ४९ | " " श्रीधर स्वामी | १७२ = | , श्रीधर स्वामीजी | ९२ |
| ५० | विश्वमंजल महाशय | १७४ = | " विश्वमंगलजी | ९५ |
| सुयोष मासा :— | | | | |
| ५१ | " " विष्णुपुरी मोस्वामी | " १८४ = | विष्णुपुरीजी | " १०० |
| ५२ | " " ज्ञानदेवजी | १८१ = | " ज्ञानदेवजी | १०१ |
| ५३ | " " लोचनजी | , १८२ = | लोलोचनजी | " १०२ |
| ५४ | " " बसवभाचार्य | " १८६ = | बसवभाचार्यजी | १०३ |
| ५५ | , भक्तदास राजा | , १८७ = | ' भक्तदासजी | ' १०६ |
| ५६ | " " लीला प्रनुकरण | १८८ = | " लीलाप्रनुकरण भक्त | १०७ |
| ५७ | " " रतिवन्तबाई | " १८९ = | " रतिवन्तीजी | १०७ |
| ५८ | पुरुषोत्तमबायी | | | |
| | महाराज | " १८९ = | प्रसादनिष्ठ राजा | १०८ |
| ५९ | " " कर्माबाई | १९० = | " कर्माबाई जी | " १०९ |
| चतुर्दश मासा — | | | | |
| ६० | श्रीबिस्मिा पिस्सा | | सिल्ले पिस्से भक्त | |
| | सेवि कन्याद्वय , ११२ = | | समय बाई | " ११२ |
| ६१ | " धन्य भक्तनिष्ठ राजा | ११४ = | भक्तों के हित हेतु | ११२ |
| | | | जिन्होंने सुत को बिय | |
| | | | दिया वे दो बाई | |
| ६२ | श्री मामा माविनाद्वय | ११६ = | ' मामू भानजा जी | " ११३ |
| ६३ | " महाराज हंस प्रसंग | " ११७ = | " हंस भक्तों का धारणा | " ११६ |
| ६४ | " महाजन सदाशरी | " ११९ = | महाजन सदाशरीजी | ११८ |
| ६५ | " " भुवन श्रीहान | " २०० = | श्री भुवनजी श्रीहान | ' ११९ |
| ६६ | " रूप चतुर्मुख ठाकुर | | | |
| | पुजारी | २०१ = | ' पद्मादेवा जी | १२२ |
| ६७ | " " कमधुज | " २०३ = | " श्री कामधुजजी | " १२३ |
| ६८ | " महाराज जयमल | २०३ = | श्री जयमलजी | " १२४ |
| ६९ | " गोपास भक्त | २०४ = | " एक श्वास भक्तजी | , १२५ |

| (बै०म०) | | (हि०प०) | |
|---------------|-------------------------------|--------------------------------|--|
| ७० | श्री निष्कण्ठ शाहाण पु० १६५ = | श्री विम इत्पासनी पु० १२६ | |
| पंचरस माता — | | | |
| ७१ | " छोटे विम श्री | " छोटे विम श्री | |
| | बड़ विम " २०१ = | बड़ विम " १२७ | |
| ७२ | " " क्षेत्रराज रानी | " " साखी गोपासनी " १२८ | |
| ७३ | " " रामदास साबू " २१० = | " " रामदासजी " १२९ | |
| ७४ | बसु स्वामी २१२ = | " " बसु स्वामीजी " १३१ | |
| ७५ | " " नन्ददास साबू २१२ = | " " नन्ददासजी " १३२ | |
| ७६ | धरदुबी " २१३ = | " धरदुबी " १३२ | |
| ७७ | " बारमुखी " २१३ = | " बारमुखीजी " १३२ | |
| ७८ | " राजा बसन्तप्रिय " २१३ = | " " एक मेघनिष्ठ राजा " १३३ | |
| ७९ | " हरिमन्त रानी " २१३ = | " " एक प्रसन्ननिष्ठ राजा " १३६ | |
| | | तथा हनूरी रानी | |
| ८० | " पुरनिष्ठ साबू " २१६ = | " " गुह सिप्य " " | |
| ८१ | " कबीरजी " २१७ = | " " कबीरदासजी " १४३ | |
| पोरस माता — | | | |
| ८२ | " रईबास " २२३ = | रईबास " १४७ | |
| ८३ | पिपाबी " २२७ = | " पीपाबी " १४९ | |
| जन्नीस माता — | | | |
| ८४ | " जयलाल माधवदास २६८ = | " " माधवदासजी " १६४ | |
| ८५ | " " सूरदास " २७६ = | " " सूरदासजी " १७४ | |
| ८६ | " केसव मट्ट " २७७ = | " " केसव मट्टजी " १७६ | |
| ८७ | " हरिभ्यासजी " २७७ = | " हरिभ्यासजी " १७८ | |
| विम माता — | | | |
| ८८ | " " विपुरदास " २८० = | " विपुरदासजी " १७९ | |
| ८९ | " कृष्णदास महानुभाव " ३०३ = | " " कृष्णदासजी " १८२ | |
| ९० | " " विदुलदास " २८२ = | " " विदुलदासजी " १८४ | |
| ९१ | " " नाटयण मट्ट " २८३ = | " " नाटयण मट्टजी " १८५ | |
| ९२ | " " सनातन पुनरथ " ३५४ = | " " रूपजी सनातनजी " १८९ | |
| ९३ | " " हरिबंस पोस्वामी " २८६ = | " " हित हरिबंसजी " १९२ | |
| ९४ | " " हरिदास स्वामी " २८७ = | " " हरिदासजी रसिक " १९६ | |
| ९५ | " " हरिचम ब्यासजी " २८८ = | " " ब्यासजी " १९९ | |

(बं०म०)

(हि०म०)

| | | | | |
|-----|--------------------|----------|------------------------|---------|
| १९ | „ श्री प्रति भगवान | पृ० २१०= | „ श्री प्रति भगवानजी | पृ० २०५ |
| १७ | „ „ रसिक मुपरीजी | „ २११= | „ रसिक मुपरीजी | „ २०८ |
| १८ | „ „ सधना | „ २१२= | „ „ सधना श्री कर्षाई | „ २१२ |
| १९ | „ „ काशीस्वर गोसाई | „ २१४= | „ गोसाई श्रीकाशीस्वरजी | „ २१३ |
| १०० | „ „ खोजेजी | „ २१५= | „ „ खोजेजी | „ २१४ |

एकविंश मासा —

| | | | | |
|-----|------------------------|--------|------------------------|-------|
| १०१ | „ शंकापति बांकास्त्री | „ २१६= | „ शंकाजी श्री बांकाजी | „ २१५ |
| १०२ | „ „ सद्गु भक्त | „ २१७= | „ सद्गु भक्तजी | „ २१६ |
| १०३ | „ „ संत भक्त | „ २१७= | „ „ सत्यजी | „ २१७ |
| १०४ | „ „ त्रिलोक सोनार | „ २१७= | „ „ त्रिलोकजी | „ २१७ |
| १०५ | „ प्रताप रत्न राजा | „ २१९= | „ रत्नप्रताप यज्ञपतिजी | „ २१९ |
| १०६ | „ „ गोविंददास मोस्वामी | „ ३०२= | „ „ गोविंददास स्वामीजी | „ २२० |
| १०७ | „ „ कृष्णदास गुजामासी | „ ३०५= | „ „ गुजामासीजी | „ २२२ |
| १०८ | „ „ यणेश दे रानी | „ ३०७= | „ „ यणेश दे रानी | „ २२३ |
| १०९ | „ „ सासाजी | „ ३०८= | „ „ सासाजी | „ २२३ |

द्वाविंश मासा —

| | | | | |
|-----|-------------------------|--------|--------------------|-------|
| ११० | „ „ नरसी भक्त | „ ३१०= | „ नरसी मेहताजी | „ २२९ |
| १११ | „ „ भंवर भक्त | „ ३१४= | „ भक्त श्री भंवरजी | २४२ |
| ११२ | „ „ कश्चिद राजाचतुर्भुज | „ ३१८= | „ राजा चतुर्भुजजी | २४४ |
| ११३ | „ „ मीराबाई | „ ३२०= | „ „ मीराबाईजी | „ २४७ |
| ११४ | „ „ पुष्पीनाथ राजा | „ ३२१= | „ „ पुष्पीराजजी | „ २५२ |
| ११५ | „ „ मधुकर पाहा | „ ३२२= | „ „ मधुकर पाहाजी | „ २५५ |

त्रयोविंश मासा —

| | | | | |
|-----|-----------------------|--------|----------------------|-------|
| ११६ | „ „ भग्य सुरदास | „ ३२७= | „ „ सुरदास भवनमोहनजी | २६३ |
| ११७ | „ „ मुपारिदास भक्त | „ ३२८= | „ „ मुपारिदासजी | „ २६६ |
| ११८ | „ „ तुलसीदास महात्म्य | „ ३२९= | „ „ तुलसीदासजी | „ २६८ |
| ११९ | „ „ करमानन्द | „ ३३६= | „ „ करमानन्द श्री | „ २७० |
| १२० | „ „ परशुराम राजगुरु | „ ३३८= | „ „ परशुराम श्री | „ २७८ |
| १२१ | „ „ यदाधर मट्ट | „ ३३९= | „ „ यदाधर मट्ट जी | „ २८० |

चतुर्विंश मासा —

| | | | | |
|-----|---------------------|--------|--------------------|-------|
| १२२ | „ „ माधवसिंहेर रानी | „ ३६४= | „ „ रत्नावती श्री | „ २८९ |
| १२३ | „ „ विदुरनाम भक्त | „ ३६९= | „ „ जयतारन विदुरजी | „ ३०० |

| (बै०म०) | (हि०म०) | (बै०म०) | (हि०म०) |
|------------------------|----------|-------------------------|---------|
| १२४ " श्री बतुर स्वामी | पृ० १६७= | श्री स्वामी बतुररोनयन | पृ० १०० |
| | | नागा (बतुरवासणी) | |
| १२५ " केवस कुवा | " १६८= | " कुवाणी (केवसदास) | " १२ |
| १२६ " हरिदास बणिक | १७१= | हरिदासजी (बणिक) | " १०५ |
| १२७ " करमेठिबाई | १७१= | " करमेठीबी | , १११ |
| १२८ " " काङ्कसेनजी | " १७४= | " " काङ्कसेनजी (कायस्थ) | ११७ |
| १२९ " " प्रेमनिधि | १७४= | " " प्रेमनिधिजी | १२१ |
| १३० " " केसवराज भक्त | " १७५= | " " केसव भटेराजी | , १२५ |
| १३१ " " नरहरेर राजा | " १७६= | राजा नरहर मङ्गका | " १२६ |
| १३२ " " जमदेव पमार | " १७६= | " " जमदेव | १२९ |
| पंचविंश मासा — | | | |
| १३३ " " कृष्णदास सोनार | १७९= | कृष्णदासजी | १३१ |
| १३४ " " हृष्यदास साधु | " १७९= | स्वामी कृष्णदास | १३४ |
| | | पयहारी | |
| १३५ " " गदाधर भक्त | १८०= | " गदाधरदासजी | १३३ |
| १३६ " " भगवानदास | " १८०= | " भगवानदासजी | " १३७ |
| १३७ " " सुभार दिवान | " १८१= | " " सुभारि जगठसिंह | " १४० |
| १३८ " " जालमठिबाई | " १८२= | जालमठिजी | " १४३ |

बैंगला भक्तमालकार ने इस प्रकार हिन्दी भक्तमाल और प्रियदासजी की टीका का प्रबन्धन कर अनेक चरित्रों को प्रपन्ना है और उन्हीं के आधार पर अपने प्रबन्धित ग्रन्थ बैंगला भक्तमाल का निर्माण किया है।

बैंगला भक्तमाल की अष्टविंश मासाओं का आधार हिन्दी भक्तमाल है। अठ्ठ मासागत प्रभाव पर विहंगम दृष्टि डालना उपयुक्त है। प्रथम द्वितीय और तृतीय मासार्थ हिन्दी भक्तमाल की अनुवाद मात्र हैं। द्वितीय मासा में श्वेतस्य पार्यं गुरु-वर्षण ठीकरी मासा में श्री पीरंग बखोह् स्य धारि बैंगला के अपने हैं। चौथी और पाँचवीं मासा का आधार भी हिन्दी भक्तमाल है। छठी मासा में चरित्र श्री मुहम्मद श्री परीसित महाराज और चरित्र श्री मुकद्दस गोस्वामी धारि सब हिन्दी भक्तमाल के अनुसार हैं। सातवें मासा में भासदासजी स्वयं स्वीकार करते हैं —

नामाजीर वर्षण धार प्रियाजीर टीका ।

संक्षेप कहिता किन्तु समुत्त अचिका ।

लिखित बिस्तार कर कहिबारे जाहि ।

बाह घरबारे मति कीटसन माहि ॥

(बं० भ० पृ० ६६)

अर्थात् 'नामाची का बरुंग धीर प्रियादास जी की टीका संक्षेप से बखिती है किन्तु प्रमत्त से भी अधिक है । मैं लिखित बिस्तार के साथ कहना चाहता हूँ किन्तु मेरी मति बहुत छोटी है । आठवीं मासा में अरिज अक्षर मन्तराज अरिज थी बसि महाराज आदि प्रसंग हिन्दी भक्तमास के अनुसार हैं । नवम मासा में हिन्दी का केवल निम्न पद है —

बात बूढ नर-नारी बिते हों अर्थात् उन पाद रज

गोपमंढ छपनइ प्रुब परामंढ महुरि प्रशोषा ।

(बं० भ० पृ० १२१)

दसवीं मासा में श्री सम्प्रदाय प्रणाली श्री निम्बादित्य स्वामी, श्री जामाचार्य आदि प्रसंग हिन्दी भक्तमास के अनुसार गुम्फित हैं । एकादश समस्त मासा के प्रसंग हिन्दी भक्तमास से गृहीत हैं । बारहवीं मासा में अरिज श्री जयदेव गोस्वामी अरिज श्रीनर स्वामी एवं अरिज श्री बिल्वमंगल महाशय आदि का आचार हिन्दी भक्तमास है । तेरहवीं मासा में सीसानुकरण अरिज के प्रतिरिक्त सब बपसा भक्तमास का मौलिक है । चौदहवीं मासा में मीननाथ मोरलनाथ के प्रसंग के प्रतिरिक्त समस्त प्रसंग हिन्दी भक्तमास के हैं । पन्द्रहवीं मासा में अरिज छोटे विप्र धीर बड़े विप्र हरिभक्त यवन श्री येष्टता आदि प्रसंगों के प्रतिरिक्त समस्त हिन्दी भक्तमास के अनुसार हैं । सोलहवीं मासा में उबिबास एवं पिपाजी के अरिज हिन्दी भक्तमास के आधार पर हैं । सत्रहवीं मासा में हिन्दी का केवल निम्न पद है —

'मजहूँ रे मन श्रीगम्बनम्बन प्रमय अरुआरविब रे'

(बं० भ० पृ० २१८)

षट्ठारहवीं मासा पूखतय बेंपसा भक्तमास की है । उन्नीसवीं मासा में श्री जगन्नाथ माधवदास श्री गुरदास श्री केचन मट्ट तथा श्री हरिभ्यासजी आदि अरिज हिन्दी भक्तमासा से लिए गए हैं । बीसवीं मासा पूर्णकण्ठ हिन्दी भक्तमास के अनुकरण पर विरचित है । इक्कीसवीं मासा में एक दो प्रसंग के प्रतिरिक्त सब हिन्दी भक्त मास का अवसंबन है । बाइसवीं मासा में श्री प्रकाशानंद सरस्वती के प्रसंग के प्रति रिक्त समस्त प्रसंग हिन्दी भक्तमास के हैं । तेइसवीं मासा में श्री मुत्तरीदास भक्त श्री तुमसोदास श्री करमामंद श्री परपराय राजपुत्र धीर श्री पदाधर मट्ट आदि अरिज हिन्दी भक्तमास से उद्धृत हैं । उस प्रकार बेंपसा भक्तमास का मौलिक विषय है । संवहार स्वयं लिखते हैं —

नाभाजीर रसतल स्पष्ट ना बलिता ।
 केवल कहिता मात्र मट्टे सुनाइना ॥
 अतएव नाभाजीर आभव समुत् ।
 बुद्धिया वै तिखि किनु पुत्र रसरीत ॥
 कर्ष रसावन रायाकृष्णर अरित ।
 भीम शीव शीतवामीर भीपुत्र बलित ॥
 रस-प्रकरव सम्य साधुर अरित ।
 दोहा आदि लिखिण बलिब मनोनीत ॥

(बं० प० पृ० १३६)

यहाँ नाभाजी ने रसतल का स्पष्ट वर्णन नहीं किया, केवल कवन मात्र मट्टे को सुनाया ना : अतएव नाभाजी के आशय-समुत् की समझकर कुछ कुछ रसरीत लिखता हूँ । कर्ष रसावन रायाकृष्ण का अरित है जो श्री भीम शीतवामी के मुन्डार बिल्क वै बिकबा है । रस-प्रकरव सम्य साधु का अरित है । दोहा आदि लिखकर अपना मन्तव्य प्रकट करता हूँ । श्रीश्रीसर्षी धीर बन्धीसर्षी शीनी नाभाजी हिन्दी भक्तमाल के अनुकरण पर विरचित हैं । शेष बन्धीसर्षी धीर सताईसर्षी शीनी मासाए बैबला भक्तमाल की मौलिक विषय हैं ।

१. देखिये— नासबाध श्री का हिन्दी दोहा रस-प्रकरव के सम्बन्ध में—
 रसमव कृति धो पोकुल नित्य बिहार ।
 मन में जबकि वाचना धीर अथ अचतार ॥
 राया प्रेम निज नाबुरी धीर जापये द्वि सीत ।
 बहु आस्वाद्यक-हेतवे मन में जबकि प्रीत ॥
 तिथि दिन रायाबाध अरि ध्यान भेज मुति धीर ।
 मन धीर जानन सबन में राया बिनु नहीं धीर ॥
 मन में रायाभाव अरि आस्वाद्यत निज प्रीत ।
 हिय अति कब बोलाई के अकमिये रसरीत ॥
 तिनि करि अज्जबल नीलमणि निजवप के हिय-हार ।
 दरघाये अथ रधिककी रक्ततावर के पार ॥
 जो अनुपति नय यथापरित सिद्धि वरपंकज भाध ।
 सुपलप्रेमरसबोधिका रञ्जु है हरिवाल ॥

(बं० प०, पृ० १३६)

पहले कहा जा चुका है समयमें ४२ हिन्दी पद बँयसा भक्तमास में उद्धृत हैं। वे ज्यों के त्यों बँयसा-भक्तमास में अपना लिए गए हैं। बँयसा घोर हिन्दी के सम्भारण भेद के कारण कुछ पाठान्तर प्रकथन हो गया है। निम्न उदाहरण से स्पष्ट होता है,—

बँयसा भक्तमास—

रतन अपार सार सागर अपार किये ।
लिये हित जायके बनाये भास करी है ॥
सब मुख साब रघुनाथ महाराजकु को ।
भक्तसों बिभीषणकु प्राणि भेंट बरी है ॥
सभाही की बाहु भवपाहु हनुमान करे ।
बारि बई सुधि भई मति धरबरी है ॥
राम बिन काम कोन कोरि मनि बीने डारि ।
कोलि लखा नामहि बिजायो बुद्धि हरी है ॥

(बँ० म०, पृ० ४४)

हिन्दी भक्तमास—

रतन अपार कीरसागर अपार किये,
लिये हित जायके बनाई माता करी है ।
सब मुख साब रघुनाथ महाराजकु के
भक्तसों बिभीषण कु प्राणि भेंट बरी है ॥
सभाही की बाहु भवपाहु हनुमान गये,
बारि बई सुधि भई मति धरबरी है ।
रामबिन काम कोन कोरि मनि बीने डारि,
कोलि लुखा नाम ही बिजायो बुद्धि हरी है ॥ छंद २३ ॥

(हि० म०, पृ० २३)

अनेक हिन्दी पदों का अनुवाद भी हुआ है घोर अनुकरण व वित्सार भी हुआ है। निम्न उदाहरण से स्पष्ट है :—

बँयसा भक्तमास —

भीम सुरदास सागु जयते बिस्यात ।
बरम रतिक हृत्क विच्छ उदावत ॥
साहार कबित्तु भुनि हन के प्राध्य ।
अन्तर-पुनक-भावे सिर ना चातय ॥
महा-अनुभव हय बिरबत महा प्रेमी ।
भीहृत्क-साजात बात बुन्दायन भुनि ॥

अष्टोदश छिद्रि येहु अपेक्षा करिल ।
 चारि मुक्ति घावि बतुर बर्म तेयाविल ।
 सिष्यअनुधिष्य कमे जगत तागिल ।
 बार नाम-भेना लोके आभय करिस ॥
 भीमान गुरबास सापु विजयत-भुर ।
 जयतेर आराम्य मानुष्य-सुरासुर ॥

(बै० म० पृ० २७६)

हिन्दी भक्तमाल—

गुर कवित मुनि कौन कवि जो नहिं सिर जालन करे ॥
 उलित बीज अनुप्रास बरन अस्त्विति अति मारी ।
 बचन प्रीति निर्बाहु प्रथ अद्भुत तुकबारी ॥
 प्रतिबिम्बित बिबि बिष्टि हृदय हरिलीला भासी ।
 जलम करम गुन क्य सबे रचना परकासी ॥
 विमल बुद्धि गुन घोर की जो यह गुन जलननि बरे ।
 गुर कवित मुनि कौन कवि जो नहिं सिर जालन करे ॥७३॥

(हि० म० पृ० १४७)

बैंगला भक्तमाल में अनेक प्रसंगों का प्रचार हिन्दी भक्तमाल के लघु
 वर्णनात्मक पदों के अनुसार हुआ है । अर्थात् हिन्दी भक्तमाल में बिच अरिज का
 छोटे से छोटे पद में वर्णन किया है बैंगला भक्तमाल में उसका विस्तारपूर्वक
 बरान किया गया है । निम्न उदाहरण से स्पष्ट है —

बैंगला भक्तमाल—

निम्बादित्य एक बच्ची बूहे निर्मंत्रिता ।
 इष्य-आयोजन-याके सम्प्या घावि हेला ॥
 पति आत्म-बचन पढ़ियो कहे तबे ।
 रात्रे भिस्ता बच्चीर निदेष बिधि रबे ॥
 इहा मुनि जित्त निम्बादित्य महाधय ।
 निज नस्ति बके सापु सुजिता जपाय ॥
 घाविनाय आइये बृहत निम्बबुल ।
 ब्रह्म करिला घासि कुत्तीपरि अर्क ॥
 कृष्ण भक्त अनुरोये सूर्यदेव घासि ।
 प्रहरेक बिचा घाई एमत प्रकासि ॥
 भोजन करिया तथा बंछे बबे पति ।
 सूर्य निजत्जाले गेता लइया सम्मति ॥

तत्त्वम प्रहृष्ट निदि प्रतीत हृदना ।
 यतिर धारचर्यम बोध तत्त्वम अमिता ।
 कृत्य भवत निम्बाहित्य प्रभाव वैश्या ॥
 अरये पङ्क्ति मति शरय सङ्घा ।
 साधुसय महिमा वैशये अद्भुत ॥
 कृत्यमवत हीना अति द्वाङ्गि ज्ञानमति ।
 लीहार अरय रज मस्तके धारया ॥
 करिया इताय हृद पाई एक कर्मा ॥

(बं० म०, पृ० १४८ १४९)

हिन्दी भक्तमाल—

निम्बाहित्य नाम जाते भयो अमिराम कथा
 आयो एक श्रुत धाम स्योता करि धारै ई ।
 पाक को अवार मई सध्या मान लई यतो
 रतीह न पाऊ वैश्वजन सुभाषे हूँ ॥
 भाषन में नीय ताई धारित्य विद्यायो बाहि
 भोजन करायो पासे निशिचिह्न पाये हूँ ।
 प्रबट प्रभाव वैशि आयो मक्ति मात्र अय
 शक याव नाम परयो हृदयो धन पाये हूँ ॥१०३॥

(हि० म०, पृ० ६७)

लासबास बाबाजी के भी अथवा अथ में कुछ हिन्दी पदों की रचना की है^१ । हरिराम व्यासजी के भी एक-दो हिन्दी पद अथवा भक्तमाल में उद्धृत हैं^२ ।

१ वैशि—अथवा भक्तमाल में पृष्ठ संख्या ९१, १२१, १४३, १४६, १४७, १४७, १४८, १४९ व १३० ।

जल बरोबर मीन रमे जाति कुम्है बुद्धि ।

जाको जेये पुत्र मिले ताको तेये द्विष्टि ॥ (बं० म० पृ० ९१)

२ हरिराम व्यासजी का एक इस प्रकार है —

नवकुमार अङ्गभूङ्गा नृपति सामरो

धी राधिका तवम मन पटरानी ।

×

×

×

पलन हिरत बोझे अज्ञा ना पोह्ये कोउ ।

धी अ्यास महलन निवा पीठबानि ॥

(बं० म० पृ० ९९०)

देविने हिन्दी पाठान्तर नवकुमार

बोझे अ्यास महलन लिए पीठबानि

(म० अ० पृ० २१०)

दन्त में श्री अविनाशचन्द्र मुखोपाध्याय के शब्दों में हिन्दी भक्तमाल की महिमा और बंगला भक्तमाल पर उसका प्रभाव निम्न प्रकार है। वे लिखते हैं—“भगवत भक्त महापुरुष नाभाजी ने मानवों के कल्याण साधनोद्देश्य से जाति-धर्म निर्विरोध प्रकृत भगवद् भक्त वरुणों के शरिर्षों को संग्रह करके जन-साधारण के हृदय क्षेत्र में भगवत भक्ति बीज वपन कराने के लिए, इस परमोपादेय ग्रंथ की रचना की थी। शरिर्ष-माधुर्य में इसका एक-एक भक्त एक-एक स्वर्गीय मन्थार कुसुम है। ईशमोक्ष कुसुमराशि की भक्तिमूत्र में बुझन कर जाहोनि जिस माता की रचना की वह इस भूमिक में एकात्म दुर्लभ है। जन महोदय प्रसूत हिन्दी-भक्तमाल और प्रियादास कृष्ण टीका का धवलम्बन लेकर एवं श्री शैतन्य शरितामृत पदसंघर्ष, जगु भागवतामृत प्रभृति लोकमार्ग ग्रंथराशि से लेकर न विविध तत्त्व संकलन कर भक्त प्रवर श्री जालदासजी ने इस भक्तमाल ग्रंथ की रचना की थी।”

७ :

उपसंहार

धार्मिक भक्ति धान्दोहन तथा भारत में भक्ति-विकास का संक्षिप्त परिचय देकर प्रस्तुत अध्याय में मध्यकासीन गौड़ीय-शैक्षण बंगला पत्राभित्तों में हिन्दी के प्रभाव का प्रतिपादन किया गया है। भक्ति-धान्दोहन के प्रतिष्ठ प्रवर्तकों एवं प्राचार्यों में शैतन्यदेव का प्रमुख स्थान है। बंगला एवं जगज्जगत के अनिष्ट सम्पर्क का एक प्रमुख कारण शैतन्य महाप्रभु हैं।

उस समय बंगाली शैक्षण और जगज्जगत के शैक्षण लयभग एक जैसे बाता बरण में सौं से रहे थे कुम्भ-भक्ति एवं उसके साध-साध जगमापा का प्रचार एवं प्रभाव शेषश्यापी हो रहा था। अतः बंगाली शैक्षण जगमापा के सम्पर्क में धाकर

१ भगवद भक्त महापुरुष नाभाजी मानवों के कल्याण साधनोद्देश्ये जाति धर्म निर्विरोधे प्रकृत भगवदभक्तवलेर शरिर्ष संग्रह करिया जन-साधारणेर हृदय क्षेत्रे भगवद्भक्ति बीज वपन करियार प्रवासे एह परमोपादेय ग्रंथ प्रसूयन करेन। शरिर्ष-माधुर्य ईहार एक एकटि भक्त एक एकटि स्वर्गीय मन्थार कुसुम। एह ईशमोक्ष कुसुमराशि भक्तिमूत्रे बाबिबा तिनि वे मास्य रचना करियाकेन ताहा भूमिके एकात्म दुर्लभम्। देह महोदय-प्रसूत हिन्दी भक्तमाल प्रियादास कृष्ण टीका धवलम्बन करिया एवं श्री शैतन्य शरितामृत पदसंघर्ष जगु भागवतामृत प्रभृति लोकमार्ग ग्रंथराशि हृदये-विविध तत्त्व-संकलन करिया जगज्जगत श्री जालदासजी एह भक्तमाल ग्रंथ प्रसूयन करियाकेन।

(ब० भा० मू० पृ० २)

सबसे प्रभावित हुये। गौड़ीय-वैष्णव-पदावलियों इसकी साक्षी हैं। जब समय ब्रज भाषा का प्रभाव बँवला भाषा और साहित्य पर पड़ा। यह प्रभाव विशेषकर सभ्यताओं में अधिक है। इस प्रभाव का विशेषण इस प्रकार हुआ है —

- (१) ब्रजभाषा-वैष्णव पदावलियों में अद्भुत हिन्दी प्रभाव।
- (२) " " " वाक्य विन्यासगत हिन्दी प्रभाव।
- (३) " " " पद्यगत (स्वाभावतः) हिन्दी प्रभाव।
- (४) भाषा रूपगत हिन्दी प्रभाव (मिश्रित भाषा ब्रजबुद्धि)।
- (५) अनुवादावतरणगत हिन्दी प्रभाव (भी अस्तमाल ग्रंथ)।

हिन्दी अस्तमाल के अस्तमाल एवं आचार पर ब्रजभाषा अस्तमाल और भक्ति-रसामृत सिन्धु का ध्यान हुआ था।

अतः उपर्युक्त पञ्चमुखी प्रभाव विशेषतया १५वीं शताब्दी ई० से लेकर अठारहवीं शताब्दी ई० तक और सामान्यतया प्राञ्चिक काल तक प्राण है।

१ वैंगला वैष्णव-पदावलियों में अद्भुत हिन्दी प्रभाव*

| शब्द | अर्थ | प्रयोग एवं प्रकरण बँवला और हिन्दी |
|-------|--------------------------|---|
| (घ) | | |
| अधोच | सँवा | ब० अधोच आसन, इत न मानये (भूपति प० क० व० पद १६६८) |
| अधोर | रसवासी करना | ब० रामचरित्त भुज पुन पुन अचोर (प० क० व०, पद २७४२) |
| अधोर | रसवासी या प्रतीक्षा करना | |
| अचारे | बँवा | ब० अचारे-काय अचारे हिन्दीगत (रूपकान्त प० क० व० पद २८८६) हि० हरिपद किमुब परम बधि बाहा (पुनसी रा०च० मा० वा० २१७ पृ० १३२) |
| अधु | अस | ब० अधु अद्वैत अद्वैत (गोविन्ददास, प० क० व०, पद १७४) हि० अस विचारि बिरौ बावहु वाठा (पुनसी रा०च० मा० सं० ११ पृ० ४३८) |

*मूलतः अधिकांश शब्द इस सभ्यताओं में हिन्दी के हैं। कुछ बँवला के भी हो सकते हैं। कुछ सामान्य भी हैं। अतः इस सभ्यताओं में हिन्दी और बँवला के कुछ शब्द इतने सामान्य और पुनर्मिले हैं कि उनमें भेद करना सरल कार्य नहीं है।

| | | |
|----------|----------------|---|
| घबिकाह | घबिकता | बैं० कामु मुनुराज बाइये घबिकाह (प० क० त० पद २१६) इकटक तैत हूह सवि की घबिकाह (पू ११८) |
| घनमनि | घसंख्य (भगणित) | बैं० मोरबस घनमनि (प० क० त० पद १३३७) हि० मुक्ति मुक्ता घनगने फल (१ १३८) |
| घनत | घग्ग | बैं० से तुमि घनत मिया (बैतग्गबास प० क० त० पद १३६०) हि० मेरो मन घनत कहीं सुख पावै । (गुरबास गू या १।६८) |
| घनुमाननु | घनुमान कर | बैं० जो हाम हैरनु तें घनुमाननु (प क० त० पद १२१६) करत कोटि बिबि उर घनुमाना (मा २।१२।२) |
| घनुमोबह | घमर्बन करता है | बैं० कठ बिबगबबन रस घनुमोबस (प० क० त० पद १३७) हि० कहुहिं सुतहिं घनुमोबन कखीं (मा ७।१२।३) |
| घनुरोबह | घनुरोब करता है | बैं० नीलब चीठ पिपिठि घनुरोबई (प० क० त० पद १६१) हि० राबहुं सुत करतें घनुरोभुं (मा० २।३२।२) |
| घनुसरह | घनुसरह करता है | बैं० सेने सेने मयन कोने घनुसरह (प क० त० पद १६१) हि० महि कर लकुटि सुमति कतसंपति बिहिं घाबार घनुसरह (१।४८) |
| घपघोसह | घफ़सोस करता है | बैं० राबा-कान्ह एक सग बिलसत मलही मन घाघोसो (प० क त पद १२२७) |
| घब | घब | बैं० घब बिहिं सो सब बेकत कमल सलि— (आनदास प० क० त पद २१०) हि० घब कैसें डब पात बस्यी— (गुरबास गू १०।३८२) |
| घबवाह | घबवाहन करता है | बैं० प्रेम तरंगे घग घबवाह (प० क त० पद ३३) हि० प्रेमवारि घबवाह मुहाबन (मा० घ० २६२१ १) |

| | | |
|---------|-----------------|---|
| धबगाहद | धबमाहन करता है | बै० विरिठिक रीठ कीन धबगाहद (प० क० त० पद १५०) हि० जमय, अपार उदधि धबगाहा (मा० १६११) |
| धबगाहि | डूब कर के | बै० माधव बुम्बु तोहे धबगाहि (प० क० त०, पद ३७६) हि० बदन हरि मूयो, माता मन धबगाहि (सू० छा० १०।२३३) |
| धबगुल | अपगुल | बै० सो सब समुन एकपिक बोसठ मधुरिम बाणी (प० क० त० पद ४८१) हि० प्रमु मेरे धबगुल बित न भरो (सू० छा०) |
| धबतरि | धबतार लिया | बै० हीपे धबतरी री (प० क० त०, पद १३) हि० धम्य सो बिन जिहि धबतरि। (५८६) |
| धबधारमु | धारण करतू | बै० मन धबधारि कह सुसम्बाद (प० क० त० पद १६८) |
| धबधारि | धारण करके | बै० मुन हे कानुक इह धबधारि (प० क० त०, पद २३६) |
| धबसम्बई | धबसम्बन करता है | बै० डुहूँ रते भासि डुहूँ धबसम्बई (प० क० त० पद २७५) हि० राम नाम धबसम्बन एक (मा० १।२७।४) |
| धबलोई | बेबता है | बै० धबलोह तहि जलसित नयने (प० क० त० पद २६२३) हि० निधिरिन लहि धबलोहहि कोका (मा० १।८३।३) |
| धबहन | मै०, ऐसे | बै० धबहन यवहुँ मोहे परि होयठ (प० क० त० पद १६६६) |
| धबहि | धब | बै० धबहि कानु से करबि प्रेम भोगे (प० क० त०, पद ६७१) |
| धबहुँ | इस समय | बै० धबहुँ राजपदे पुरजन बापि (प० क० त० पद १०१२) |
| धाबाने | धजात धाब से | बै० धाबाने सुमसित बाहु धाबाने (प० क० त० पद १४६४) |

| | | |
|------------|-----------------|--|
| अभाविया | दुर्भाव-व्यक्ति | हि० विपति विपय न ठबतहों, ठोतें अधिक आभाव्यों (वि० प० १२) ब० मुक्ति अभाविया विप विपये माविमा (प० क० ठ० पद २१८३) हि० देह अभावहि भाव को को राखे सरन समीत (वि० १११) |
| अभिसापह | अभिसापा करना | ब० राजामोहनबास अभिसापह (प० क० ठ०, पद २३१३) हि० अघ सुकति नर चाह जो मन अभिसापहि (आ० ७९) |
| अभिसारह | अभिसार कण्टा है | ब० बनि इह पावन भूमि बहूँ गोबिंद अभिसारि (प० क० ठ० पद ३४४३) |
| अभिसिचह | अभिसिच करवा है | ब० को जाने काहे नामि अभिसिचर्ह (प० क० ठ० पद १३७१) |
| अह | मीर | ब० स्तम्भ काह अह अगे पसक मर (प० क० ठ० पद १३१) हि० बानि कहाखब अह कृपनाई (मा० २।३३।३) |
| असकारि | असकार के | ब० मीरि रोमठ नाह अनि असकारि (प० क० ठ० पद २३०२) |
| अससाह | आसस्य करता है | ब० आनि बोल अससाह (प० क० ठ० पद २८३८) हि० अषठ बीह रजुनाब को नाम नहि अससाठो (वि० १३१) |
| अहिरिनि | अहीरी | ब० ने कहुँ न सकते पालि निरबई अहीरि (प० क० ठ० पद ३४८) हि० अहिरिनि हाव बहकि उगुन सीई आबइ हो (१७०२) |
| (आ) आबर | अबर | ब० गावों हरि को सोहिलों ही मन आबर दे मोहूँ (१०।४०) हि० आई आबर प्रेम के पड़े सी पंडित होय (कबीर) |

| | | |
|---------|------------|---|
| धार्मिक | धार्मिक | बैं० धरे कमल वल धार्मिक (प० क० प० १८६६) |
| धार्मिक | बुद्ध करके | हि० धर्म न धार्मिक घर धायत कौळ (मा० १।२१।३) |
| धार्मिक | धार्मिक | बैं० कटि धार्मिक परिपाटि परे निस धार्मिक (प० क० प० प० २७८) |
| धार्मिक | धार्मिक | बैं० धार्मिक धार्मिक मनु किन्तु धार्मिक (प० क० प० प० २७९) |
| धार्मिक | धार्मिक | हि० धार्मिक धार्मिक धार्मिक धार्मिक (मा० ४।१६।१) |
| धार्मिक | धार्मिक | हि० धार्मिक धार्मिक धार्मिक धार्मिक कर्म की धार (कबीर) |
| धार्मिक | धार्मिक | बैं० धार्मिक धार्मिक धार्मिक धार्मिक (प० क० प० प० १८७) |
| धार्मिक | धार्मिक | हि० धार्मिक धार्मिक धार्मिक धार्मिक कर्म धार्मिक धार्मिक (सू० सा० १२३३) |
| धार्मिक | धार्मिक | बैं० धार्मिक धार्मिक धार्मिक धार्मिक (प० क० प० प० १३८) |
| धार्मिक | धार्मिक | हि० धार्मिक धार्मिक धार्मिक धार्मिक कर्म धार्मिक धार्मिक धार्मिक धार्मिक (प० क० प० प० २२३३) |
| धार्मिक | धार्मिक | हि० धार्मिक धार्मिक धार्मिक धार्मिक (सू० सा० १८९) |
| धार्मिक | धार्मिक | बैं० धार्मिक धार्मिक धार्मिक धार्मिक (प० क० प० प० १७९) |
| धार्मिक | धार्मिक | बैं० धार्मिक धार्मिक धार्मिक धार्मिक (प० क० प० प० २८६७) |
| धार्मिक | धार्मिक | बैं० धार्मिक धार्मिक धार्मिक धार्मिक (प० क० प० प० ७१) |
| धार्मिक | धार्मिक | हि० धार्मिक धार्मिक धार्मिक धार्मिक (मा० २।१।३) |

| | | |
|-----------|------------|---|
| घाबुयात | घगता | बै० घागरे एकसि बसलि घनि भागुयात (प० क० त० पद २११) |
| घावे | घागे | हि० बरति सिबारिय मुधारिय घामिलो काब (पि० १।८२) |
| घामीर | घबीर स्नान | बै० हेर इते प्रति घंघ जतंग घामीर (प० क० त० पद ७२) |
| घाबोरि | स्नान करके | बै० तब हाम करे घाबीरि (प० क० त० पद २६१) |
| घाबन | घाहम | बै० घाबन मासे घाघ बहु घाबिन (प० क० त० पद १७४६) |
| घाबुटि | घंगूठी | बै० घंमुलक घांमुटि सोभम बाहुटि (प० क० त० पद २७०) |
| घानु | घाब | बै० घानु ममु मुम बिन मेला (प० क० त० पद २९) हि० भाव बिराजत राज हैं दसकंठ बहू को (दि० प० ११२) |
| घानुक | घाबका | हि० मुनि पर बदि करिण घानु (मा० २।२१४।२) |
| घानत | घाम्यन | हि० हरि बरखारबिब तबि लापत घनकतहूँ तिनकी मति काँधी (१।१८) |
| घानमन | घनमना | हि० बरे धीर घनमने बदन बल सो हूठ करणि परे (पृष्ठ १३१) |
| घांघायारि | घंघेरी | बै० मुख घधि मर क्रिये रोये घांघिवार (प० क० त० पद २७) हि० भय उदधि बमलोक बरसे त्रिपट ही घंघिवार (रामचरित मा० १।८८) |
| घाप | स्वराप | बै० ताक नीरव कनु घाप (प० क० त० पद १३८८) हि० बाके हृदय साँब है ताके हृदय घाप (कबीर) |

| | | |
|----------------------|------------------|---|
| प्रापना | प्रापना | बै० प्रापना सबाधम दिवासी (प० क० त० पद २७६) |
| प्रापनाहि | प्रापनाहि | बै० प्रापनक बात प्रापनाहि समुम्भवि (प० क० त० पद ४६४) हि० भक्ति रघुपति कक हित प्रापना (मा० १।३६।३) |
| प्राधिर | प्राधिर | बै० प्राधिर प्रसुण सब (प० क० त० पद १४३८) हि० श्रीवा बरन प्राधिर, गतिनि धिरकावन रे (सू० सा० १०।१८) |
| प्रायसु | प्रायसु | ब० कहइते प्रायसु (प० क० त०, पद १८८) हि० तिहि घर देव, पिठर काहे प्रायो |
| प्रायानी | प्रायानी | हि० सो मायी बस राति प्रायानि (मा० २।२००।३) |
| प्राये | प्राये | बै० निके बनि प्राये हो मंभुसाल (गोविंददास प० क० त०, पद २४२५) हि० प्रायंद सहित सबे ब्रज प्राये सुरदास (सू० सा० १।५०८) |
| प्रायानिभु | प्रायानिभु | हि० कैते परदाप छटै रघुपति, प्रायानिभु (रा० म० ब० १।६७) |
| प्रायस | प्रायस | हि० मायै बुमायै सनख प्रायस हूँ (मा० १।२८।१) |
| प्रासाई (प्रासाई) | प्रासाय-बलाय | बै० प्रासाइ-बलाइ तारनिये (प० क० त० पद २६२५) |
| प्रासापई | प्रासाप करना | बै० ना जानिये को एखे मुकनि प्रासापइ (प० क० त०, पद ३६) हि० प्रासापति सुर प्रापति विम-संग (वि० ३५१ [७६]) |
| प्रासिगई | प्रासिगन करवा है | बै० बुहुँ प्रासिगइ कतबार (प० क० त०, पद ७६८) |
| प्रासु | प्रासु | बै० बटिला प्रासु प्रासु भटि रोवइ (बलराम प० क० त०, पद २४८६) |

| | | |
|--------|----------|---|
| | | हि० मुख घासू भव मासत-कमुका निरखि खंत छवि बैत ॥ (सूरदास सू० सा० १०।१४६) |
| भाहीर | भाहीर | हि० नैकहूँ ना बाकते पाति निरबह भाहीरी (सू० ब० मा० घ को० ३४८) (प० क० ल० पद ३४८) |
| (इ) | | |
| इतिरति | यहाँ बही | ब० उभये अकित भूजे इतिरति पैलमु (प० क० ल० पद २४४) हि० पव न इतरत करन पावत उरभि मोह छिबार (सू सा० १।६६) |
| इनके | इनके | ब० इनके लीण उनहीं धवलम्ब (प० क० ल० पद १०६) हि० इन्हूके बसा न कहूँ बखानी (मा० १।८३।४) |
| इनहि | इन्होंने | (ब० तुहि पुराह इनके साव (प० क० ल० पद २८८४) हि० इन्हीं इरपप्रव बरसा एका (मा० ३।४७।२) |
| इह | यह | ब० इहूँ एक योग इहके कहे (प क० ल० पद ४२) हि० ठासो भिरहु तुमहि यो नायक इह इरपति (वि० २४२) |
| इहाँ | यहाँ | ब० मनु नीठ दीधो तहाँ बेह रहुँ इहाँ (प० क ल० पद २०२६) हि० इहाँ नाबिहि पाउर भावा (मा० २।१३।३) |
| (उ) | | |
| उपदते | उपटा है | ब० हिमकर उगदते दिनकर ठेव (प० क० ल० पद १८३७) हि० मैं तैं मू बयों मोहतम उनो भाय मानू (ब० ३३) |

भारतमिहक मन्त्रि-ग्रन्थोक्तान का इतिहास

| | | |
|---------|---------------|--|
| उगये | उदय होकर | बै० उगये उदये कृत धार (प० क० ट० पृ १४६) हि० जिहि सरूप मोहे ब्रह्मायिक, रवि सति कोटि सयैया बै० बारि निववास मधुर विप उदरह (प० क० ट० पृ ७०८) हि० मनो कोष बस उगमित माही (मा० १३६।३) |
| उदरह | उदरते हुए | बै० उदर घट घारे दिग विग (प० क० ट०, पृ १५३७) हि० कीर निरततकीर उदाटित रने (सू० सा० ४४८) |
| उदर | उदाहृ | बै० भाषि एतन कनि उदाहिया प्रेम मनी (प० क० ट०, पृ २३१०) हि० नयन उदाहिरि सकस किशि देवी (मा० १।क७।२) |
| उदाहिया | उदाहृ कर | बै० ताही ताही उदमह (प० क० ट० पृ ८६) हि० उदरत उदरत हहरत बरि बात हि० ताकत उदरत में विवाह के उदाहृ कपू (क० ७।१४८) |
| उदमह | उदमते हुए | बै० रबनि उदापर माह पंचापर (प० क० ट० पृ ३६६) हि० पंडित मुड़ मनीन उदापर (मा० १।२८।३) |
| उदाहृ | उदाहृ | हि० मानहुँ पयनिनि मबठ, फेन फटिबंध उदापरयो । बै० ताम्बूल साजासू बीप उदापरसु (प० क० ट० पृ २८२) हि० हरि के मर्मवास बननी को बने उदारो नाप्यो (सू० सा० १०।४) |
| उदापर | नामरण | बै० योष रूप र्हिये उदियासा (प० क० ट०, पृ ६७४) हि० तुलसी नीतर बाहिरो बी बाहिसि उदियापर (रो० ६) |
| उदापरह | उदमस करते हुए | |
| उदापरसु | उदमस कर | |
| उदापा | उदासा | |
| उदियासा | प्रकाश | |

| | | |
|--------|--------------|---|
| उठइ | उठते हुए | बै० स्वामिक समय मंदिरे नहि उठइ (प० क० ट० पृ ३६) हि० उठइ न कोटि भांति (मा० १।२२०।४) |
| उड़न | उड़ान | बै० मांहीति जुकार ठान छिलि पुछेर उड़ान (प० क० ट० पृ १६३१) हि० छति निछि अति उड़न न पावे (सू० सा० १०।६५) |
| उड़नी | भोड़नी | बै० छिपिल राइ कुष कबुक उड़नी (प० क० ट० पृ २१२३) हि० पीठ उड़निमां कहा बिचारी (सू० सा० १६५) |
| उठारनु | उठार बाई | हि० उठरि अपार उठर नहि खापी बार (क० १३५) |
| उठारनु | उठारनु | बै० नैतन सभे अब बसत उठारनु (प० क० ट० पृ २६१) हि० उठरि अपार उठर नही लाबी कपिल झिनक बिलंब (मा० स० २।१०६) |
| उठयत | उठय होते हुए | बै० निठि निठि उठयते बमनहि अंब (प० क० ट० पृ १७३२) हि० मरुणोवय समुझे कुमुब उठयत कोठि मलीन (मा० १।२३५) |
| उपहि | उपहोति | बै० इनके छीन उन्ही उपलम्ब (प० क० ट० पृ १०९) उमु फल उन्ही देठे कर सामा (मा० १३।४) |
| उपजे | उत्पन्न हो | बै० रहि रहि बनि हिमे उपजे उत्पत्त (प० क० ट० पृ २२१) हि० प्रेम लाबाड़ी उपजे नाहि हाट बिक्रय |
| उपेखनु | ईखनु | बै० छलि है कोहे उपेखनु मान (प० क० ट० पृ ४४३) |
| उपटन | उपटना | बै० उपटने बुधि यत्ना (प० क० ट० पृ २५३३) हि० महन् उहित अन्हाबाए (मा० १३।३९।२) |

भारतमिहिर मयित प्राम्बोमन का इतिहास

| | | |
|-----------|---------------|---|
| उबरे | फिरे | बै० परबरा जीउना उबरे पनु माण (प० क० ट०, पद १४७) हि० जे राखी रजुबीर ते उबरे तेहि काम महुं (मा० १।५३) |
| उमारि | उस्वाहित किया | बै० ताकि पत्र कच्चे उमारिना बीरजर (कवि कंक०) |
| उमगु | उमंग | बै० उमंग बहुर सक्ति करहु पयाण (पी० की०) |
| उमङ्ग | उमङ्गते हुए | हि० तबहुं धीर उमङ्गि पङ्ग तापे बिरहु बियोप भापे देई भापे (वि० प० १४९१) |
| उरभ्राह्म | उरभ्राकर | बै० बसइत रामपये दुहुं उरभ्राह (रोखर प० क० ट० पद २३५५) हि० छूट ग अथिक अथिक प्रकभ्राई (सु० रा० ब० मा० स० ११७ पृष्ठ ३३७) |
| उसट | उसटा | बै० उसट पालट करे बार पाँच सय (प० क० ट० पद १४) |
| उसटि | उसटकर | बै० उसटि करिलेक हाय (पी० की० प० क० ट० पद ४१) |
| उसछाइ | उसलखित हो | ब० उसछिठि दुहे बोही हेरि, उसलखित नेल गोरि (प० क० ट० पद २१३५) |
| उह | बह | बै० सखि काहे कहमि जह नाम (प० क० ट० पद ७८) |
| उन्हके | उमके | हि० उहे कासमि कटि पीताम्बर सीस मुकुट अति सोहत (सू० सा० ३९५) बै० परम प्रकप केर उन्हके नैस (प० क० ट० पद १०६) उसु फनु उमहहि दे अकरि सामा (मा० २।३३।४) |
| (क) | उङ्गते हुए | बै० पबमक अंग संग करि उङ्गत (प० क० ट० पद १७३३) हि० उङ्गत उङ्गत मुक पहुंनयो (१।२२६ सू० सा०) |

| | | |
|-------|---------|--|
| ऊपर | ऊपर | ब० हृदय ऊपर छोड़े कुच गुग (प० क० त०, पद २१) हि० लंका सिंघर ऊपर धायार (मा० १।१०।४) |
| (५) | | |
| एकठाग | एक स्वर | ब० एक ठाग हृदया कसुर करिया (प० क० त० पद २३३७) |
| एकसा | घकेसा | ब० बसिया बिरसे बाक्ये घकेसे (प० क० त० पद ३०) हि० एकसा संव लबाह बीचहि छाड़वो मिपट घनाय घकेसो (सू० सा० १।१७२) |
| एकसि | घकेसी | ब० एकसि लौहारि नाम (प० क० त० पद २१७) हि० विपिन घकेसी फिरहु केहि हेतु (मा० १।३३।४) |
| एतहुँ | इतको | ब० मोबिन्दबास कह एतहुँ ना जानहु (प० क० त० पद १२०४) हि० एतहुँ सुनु घनहुँ सिखावन एह (रा० च० मा०) |
| एता | इतना | ब० बनि ऐ धबस्य एता (प० क० त० पद १२१५) हि० एतने बड़ो घपराय (वि० ७२) |
| एतनि | इतना | ब० नाह बाधोल एतनि भाषण (विमवालय प० क० त० पद १२७२) हि० नंदनंदन सी इतनी कहियो सुरबास (सू० सा० १०।४०६६) |
| एतने | इतना | ब० बनहुँ विद्यापति एतने (प० क० त० पद २११) हि० राज परम सखमु एतनीह (मा० २।३१६।१) |
| एवे | घद | ब० पूर्वैर नापी तपइसे एवे ना तरामो (प० क० त० पद ११६) हि० हो खुनाब निद्यावर कह सग घने काठही बेसि (मा० प० २।६४) |

प्रारम्भिक भक्ति भाष्योक्त का इतिहास

| | | |
|---------|----------|---|
| एह | यह | बै० एसखि बिहरये को पुन एह, (धनस्याम प० क० त०, पद १२०) हि० सुनु भजहुँ सिखावन एह (सु० वि० प०, पद १२०) बै० ऐहेन रजनि केनने नैबीर (प० क० त० पद ३४५) हि० एहँ मिस बैखी पर बाह (मा० ११२०१४) |
| (ऐ) | ऐसा | बै० ऐखन मधुरिन नाम (प० क० त० पद १०) हि० सामु भजना कर कमु ऐसा (मा० ११२११) |
| ऐखे | ऐसे | बै० राइठ ऐखे बसा हेर एक सखि (प० क० त०, पद ३७) हि० ऐखे को ऐसो मनो कबहुँ न मनीबिन बानर के करवाइ (क० ७१५६) |
| (भो) | बह | बै० भावना मो तुया धन्तरे धन्तद (प० क० त० पद ३७१) हि० यद्यपि मीन पतंग हीम मति मोहि नहि पू बहि धोऊ (वि० ६९) |
| भोम्र | उपाध्याय | बै० केह कहे माई भोम्र दे (प० क० त०, पद ११२) हि० तुलसि रामहि परिहरे निपट हाणि सुमुधोक (दोहा ६८) |
| भोभारों | भारों | बै० मदन कोटि उबारी (भोभारों) (प० क० त०, पद १०८६) हि० भारों हों के करजिन सुरदास (सू० सा० १०१३६२) |
| भोर | ठरफ | हि० होउ नाउ यह भोर निबाह (कुमसी मा० २१२७३) |

| | | |
|--------|--------------|--|
| (क) | | |
| कहन | कौन | बै० भाये निदाब कहन पातिवायब (गोविन्ददास प० क० त० पद १८१४) हि० कौन सुने यह बात हमारी (सुरदास सू० सा पद १।१६०) |
| कस | कुछ | बै० ककुह नाहि कसभाव (भूपति प० क० त० पद ११४) हि० नाथ न कसु भोरि प्रमुठार्ई (दु० रा० ब० म० सु ३३ पु० ३८८) |
| कतवे | कितना | बै० ठोहारि निदाब हाम कतवे मुनाइनु (परमानन्द प० क० त० पद १८३) हि० यह सनु बलधि तरत कति बारा (सु० रा० ब० मा० लं १ पु० ४०३) |
| कतहुँ | कहीं | बै० कतहुँ प्रेमवन हिय माहा छांभि, (गोविन्ददास प० क० त० पद ३६२) हि० मूरे पांलि कतहुँ कोठ नाहीं (तुलसी रा० ब० मा० बा २००) |
| कतिहुँ | कहाँ | बै० रमणिक हुँकति कतिहुँना देखमु (प० क० त० पद १७१) |
| कतेक | कितने | बै० ना बाणि कतेक—ममु क्याय नाये धाखे गो (प० क० त० पद १४१) |
| कनेठ | छोटा | बै० लखइ ना पारिखे बेट कनेठ (प० क० त० पद ८३) |
| कब | कब | बै० कबहि गेयान मुन होइ चाहइ (प० क० त० पद १७१) हि० सकस कहहि कब होइहि मासी (सा २।११।३) |
| कबरी | कबरी | बै० कुपस कबरी—जरीहु लीटायत (प० क० त० पद १३) |
| कबलइ | बात कय्या है | बै० तुया मुख चाँद कमल पाहि कबलइ (प० क० त० पद १०४३) |
| कबहुँ | कब | बै० जस बिनु मीन जैन कबहुँ ना जिये (प० क० त० पद २१२) |

| | | |
|--------|------------|--|
| | | हि० जो पाय कबहुँ मुनि कोइ (मा० २।१२४।४) |
| कयलुँ | कक | बै० हारम कयलुँ परिहार (प० क० त० पद ४८) हि० नीर खीर क्यों दोरै मिसि गये । स्यारे होत न स्यारे कये (११६) |
| कर | करमा | बै० कृष्ण-कटि कर धबगाह (प० क० त० पद ७०६) |
| करई | करता है | हि० कर मुनि मनुज सुरासुर सेवा (क० २) बै० समझि करये धनुठाप (प० क० त०, पद १) हि० सुम्बरठा कहूँ सुम्बर करइ (मा० १।२३०।४) |
| करत | करता है | बै० ताहे करत उपयेष (प० क० त० पद १) हि० किमु बरसे उपकार करत |
| करतारि | करतल-स्वनि | बै० जोदिये सखियन देइ करतारि (प० क० त० पद २८७) हि० रामकथा सुम्बर करतारी (मा० १।११४।१) |
| करलुँ | कर | बै० कुसुमक हार कयलुँ कतरायै (प० क० त० पद ४०४) |
| करौ | कर | बै० ताहार चरनै करौ सेवा (प० क० त० पद ११८) हि० रचना एक झनैक स्याम गुन कहूँ मगी करौ बलामौ (सू० छा० १।११) |
| कलियाँ | कसेबा | बै० कलिया कागज करि मिलि चाँद—मुजे (प० क० त० पद १७३७) |
| कहइ | कहता है | हि० करौको कसकलु है (क० ६।१६) हि० परि खीरजु ठब कहइ निपाहु (मा० २।१४३।१) बै० बिरसे बसिया सखीरे कहइ (प० क० त० पद ३३) |
| कहि | कहौ | बै० हृदय धानैर मुक्त कहि ना बाय (प० क० त० पद २३३६) हि० काहुक कहि माधौय |

| | | |
|-------------|----------------|--|
| केहों | कहाँ | बे० लोहे केहों सुबम सीनाति (प० क० ट० पर १९) हि० कहा कहीं हरि कैतिक लारे पावन पर परतमी (सु० सा० १०२१) |
| (का) का | क्या | बे० का बेह कहह सम्बाह (बोबिन्दवास, प० क० ट० पर १७४) हि० का छति लामु बुनु वनु लोरे (रा० ख० मा० बा० २७२) |
| काड़िया | बाहर किया | बे० रतान काड़िया छति वतन करिया लो (प० क० ट० पर ७६०) |
| काड़ई | बाहिर करते हैं | बे० सो पुण पाह स्वास खेबे काड़ह (प० क० ट० पर ७७०) |
| कातया | कन्हीया | बे० प्राकृत मद् बहु कातया (प० क० ट० पर १६६४) |
| काहीं | कहीं | बे० सो हिन छतिक पिया काहीं रहु (बोबिन्दवास प० क० ट०, पर ४३१) हि० कहु कहु लाल कहीं सब माता (रा० ख० मा० घ० १३६) |
| काहि | किसको | बे० कि करह ए छति प्रामति काहि (प० क० ट० पर ४३८) |
| काहुँक | किसको | बे० बोबि काहुँक लंप (प० क० ट० पर ४३६) |
| काहा | क्या | बे० से हिन छतिक पिया काहीं रहुँ काहा कर (बोबिन्दवास प० क० ट० पर ४३१) |
| काहि | किसको | बे० बोस बेपव धर काहि (प० क० ट० पर ६३६) |
| काहु | किसको | बे० धनुमव काहु न पैखि (प० क० ट० कविमुसम पर ६३७) |
| काहुक | किसको | बे० हरि धर हाति रखे पुन काहुके (बोबिन्दवास प० क० ट० पर ६२) |
| (कि) किई | की कीई | पष्ठी-विभक्ति का चिह्न बे० कृष्णदास प्रमु एह कृपा किई (प० क० ट० पर २२६०) |

भारतमित्र मन्त्रि प्राग्बोलन का इतिहास

हि० में मेरी कबहुँ यहि कीजे कीजे पंच-मुहाये
 (सू० सा० ११००२)
 बें० मिटत तमप जम कामकि, भारत किजे
 मरम पोपास कि (रघुनायदास
 प० क० त०, पर २८१६)
 हि० अंतर-दाह कु मिट्यो व्यासको इकविषु
 हो भागवत किजे (सुरदास सू० सा० ११८६)
 बें० ए बुहुँ मंगल भारत कीजे रामराय
 (प० क० त० पर २८४४)
 हि० प्रति व्याकुल प्रकुसाति विरहिनी सुरति
 हमारी कीजे (सुरदास सू० सा० १०४०६४)
 बें० कु बल मनया बिति प्रंय म्लमति
 (प० क० त० पर १०२)
 हि० प्रीसन एक हुतासन वैठी क्यों कु बल प्रक
 नाह (सू० सा० १११२)
 बें० कु बये चौदिस होह, पाकुस
 (प० क० त० पर २४०६)
 हि० कु बहि कोकिल गु बहि मू सा
 (मा० ११२९११)
 बें० मधुप में केशवराय विराजे
 (प० क० त०, पर २६६८)
 हि० करि यहि छीर पियावत प्रपनो, जानति
 केशवराई (सू० सा० १०१२२)
 बें० मत परबोधक कैह
 (प० क० त० पर १८११)
 हि० सी में बरति कही बिधि कही
 (मा० २११६१४)
 बें० एमठ ना हज कैह
 (प० क० त० पर ८१६)
 हि० कहई काहुहि नात अपेटहि नेह
 (मा० ११४४४)
 बें० केशव ऐसन साहस होय
 (प० क० त०, पर ४३)

किया

किया

कीजे

कीजिए

कु बल

कु बल, सोमा

कु बई

कु बती है

केसो

केसब

कैह

कौम

केही

किसको

केसन

केसे

| | | |
|-------|------------|---|
| १ | बिमलित कौन | हिं काहि बाफों ऐसो सुत बिचुरे, सो कौंसे बीने महठारी (सू. सा० १०१११) बै० रूप चिस गुण ताहे सुन्दर कोहे (मोपालवास प० क० त० पद २६१६) हिं० तुमहिं बसत को बरने पाय (रा० ब० मा० बा २७४) |
| दीई | कौही | बै० बिठ निकसब यब रासब कोई (प० क० त० पद १४) हिं० हरि सों भीठ न देख्यो कोइ (११०) |
| दोइन | कौन | बै० कौन बिहिं मनु नाह से गैधो (गोबिंदवास प० क० त० पद १८१०) हिं० कौन बात यह कहत कन्हारि (मुरदास सू० सा० १०११३६) |
| दोबर | कुमार | बै० कालिया कौबर नामे कापि भूपि उठे (प० क० त० पद ११८) हिं० ये उपहि कौठ कुंवर गहेरी (गी २४२) |
| कौन | कौन | बै० कौन गैलाम बस मरिबारे (प० क० त० पद १२४) हिं० नैन कौन की बंजन रसा बिठर कहुँ छीयै (सू० सा० २१६७) |
| कौन | कोई | बै० ए बाद साबित बानि कौन (प० क० त० पद ३१३) हिं० निबचय किए भुनत सब माचव ठारें बिये न कोय (सार० २६३) |
| कोबिल | कोयल | बै० सकस कठे गहिं कोयिलबना बानी (प० क० त० पद १०६) हिं० तुमही पाबस के समयघरी कोकिलन मीन (सो० ५१४) |
| कोहे | कौही | बै० रूप चिस गुन ताहे सु बर कोहे (प० क० त० पद २६१६) |
| कौन | कौन | बै० कौन बिहिं मनु नाहसे गैधो (प० क० त० पद १८१०) |

प्रारम्भिक भक्ति-शास्त्रोक्त का इतिहास

हि० तर्ह तुलसी के कौन को काको तकियारे
(वि० ३३)

| | | | | | |
|---------|-------------------|--|--|--|---|
| (क) | | | | | |
| ब्रह्मक | वाद्य-यंत्र विरोध | | | | बै० ब्रह्मक इफ रवाब ब्रह्मक सर-मध्वस (प० क० त० पद २७१६) |
| ब्रह्म | ब्रह्म | | | | बै० ब्रह्मक खरयहि तीपत तीधि सबहुँ तनु (प० क० त०, पद २४६३) हि० कुसम प्रति घाइन साई (मा० २१६१३) |
| ब्रह्म | बापा | | | | बै० बहुत भक्ति बन होइ तुम्हारे (प० क० त० पद ११७) हि० पान सामीत पिक मीमत इरकत (मा० २१२२२) हि० चलत पयावे बात फस पिता बीहू तत्रिपानु (मा० २१२२२) |
| ब्रह्म | साया | | | | बै० उपसिल प्राप्तेर लुत (ज्ञानबास प० क० त० पद ६६०) हि० उपरि प्राए कान्ह कपट की बात (गुरुबास सू० सा० १०१३८३७) |
| ब्रह्म | सात | | | | बै० प्राचार्य ठाकुर सैयाति बाहार (प० क० त० पद १७) बै० सौ प्रात बन सप्रे कक प्रात सैनि (प० क० त० पद ७६) बै० लेसत ना लेसत लोक बेधि लाज (प० क० त०, पद ८०) |
| ब्रह्म | क्याति | | | | बै० ना लोभमुँ इति ना लोभमुँ प्रात (सामान्त प० क० त० पद १७६) |
| ब्रह्म | बेल कीड़ा | | | | बै० सलिक संमहि खोइरि (प० क० त० पद १८११) |
| ब्रह्म | " | | | | |
| ब्रह्म | खोजा | | | | |
| ब्रह्म | बोकर | | | | |
| (घ) | | | | | |
| पंवार | ब्रामीण | | | | हि० गौड पंवार नृपाल महि (बो० १२६) |

| | | |
|--------|----------|---|
| बठई | पड़ता है | बै० मीबम बठई मबन परताए (प० क० उ० पद ११६) हि० हों बीन बिता हीन कैठे बूसरी मझारयो (क० २।८) |
| बबबब | गबगब | बै० पबबब बबन नयन बल (सा० ३४६) बै० कहुइत कहु गबबब (प० क० उ० पद १३६) |
| बरबत | बर्बता | बै० बलत बलत पुनपुन उठि गरबत (प० क० उ० पद १३६) हि० परबत नम बनबोरा भियाहीन बरपत मन मोरा (घ० म० ब०) |
| बरबई | परबता है | हि० बरबई मेव भूमि नियराये (घ० म० ब० कि०) |
| बलई | गलता है | बै० बहाँ बाहाँ बनू बंभन बमबमे बबब (प० क० उ० पद, २३१) हि० गरै-गलानि कुटिल कैकेई (घ० म० ब० घ०) |
| बहना | बहण | हि० भयत हेतु सीता उतु पहह (मा० १।१४४) |
| बहि | पकड़ कर | बै० भेय हेम बहि धापन रंय बह (प० क० उ० पद ३७१) हि० बहि बह बरत मातु सब राबी (मा० २।१७०।१३) |
| बाँठि | बाँठ | बै० बाँठिक हेम बदनमई बलकह (प० क० उ० पद २२७) हि० मणि किरि भहि कुटि बनू गौठी (मा० १।१३५।३) |
| बापिभु | बंभन कक | हि० बंभमय मुकुटा मणि बाचें (मा० १।३७।३) |
| बाह | बा-कर | हि० बरत-बल्लत नाय निवम बाह पाये है (दू० सा० १।२३) |

भारतभित्तक भक्ति-भान्डीसम का इतिहास

| | | |
|------------|-----------|--|
| भागर | कमसी | बै० कुच मुग गिरि कमक गागरि (प० क० त० पद २०६) हि० प्यो वल माँह तेम की पापरि सरिसें सब ऐसी बू बन (सू० सा० १३३३) |
| पाड़ा | गंभीर | हि० कहसीठा परि भीरजु गाड़ा (मा० ११२८७) |
| विरह | गिरना | हि० गिरहि न तब रसना भभिमानी (मा० ११३१४) |
| गेहुया | बैर | बै० फूनेर गेहुया सुफिया पूरये (प० क० त० पद २०५) हि० करत गगन को वैहुया सो सठ (दुलसीदास-बो० ४१४६१) |
| बोह | धिपारि | हि० माय भपामति भापेते राखते नहि कसु गोह (मा० ७१२३) |
| गो | पाय | हि० गोबग खेतय, बारि खग तीनों नाहि बितेक (बो० ३३८) |
| (घ) | | |
| पू बट | पदा | हि० पू बट के पट खोलने ठोहे पिय भिसने । (कबीर) |
| पूँपुरपोलि | बूय रबासी | बै० बू पूरपोलि बनके भनके (शृणुवास प० क० त० पद २८६०) हि० पूँपरासी सटे नटके मुख ऊपर (दु० क० ब० बा० ३) |
| बोरि | पोतकर | बै० कुकुमपोरि भीत मेस घाकुन (गोविंददास, प० क० त० पद २३७८) हि० देत आपने हाय बस मीनहि माहुर पोरि (दु० बो० ३११७) |
| (च) | | |
| बौंक | बौंक | बै० बरस कुल कामिनि बौंक पड़त जग भरिया (रायसेखर प० क० त० पद १०६४) हि० बौंके बिरबि संकर सहित (क० ब० बा० ११) |

| | | |
|--------|----------|--|
| बछ्मके | बच्छा | बै० पान पाओये बछ्मके भेदि (प० क० ट०, पद २५३४) |
| बटकिनि | बिड़िया | बै० मेदि बटकिनि (प० क० ट० पद २१) |
| बड़ावई | बड़ाकर | बै० बमबन बमरन बने बड़ावई (प० क० ट० पद ३३८) हि० रप बड़ाव बेलापई बनु फिरहु बई दिनबारि (मा० २।८१) |
| बतुरपन | बातुर्य | बै० बापन बतुरपन परहाते सोपसु (प० क० ट० पद १११) हि० सखहि न मूप कपट बतुरपई (मा० १।२७।३) |
| बतुराई | बातुर्य | बै० ना कह मुचा मुखि बेभी बातुराई (प० क० ट० पद २३६) हि० ताहु के बई पीबे को कड़ा कपट बतुराई (सू० सा० पद १०।३१३) |
| बमब | बकास | बै० बामिनि बमक मैहारिनि है (प० क० ट० पद २७) हि० रिपि बून बमकत बेकठ बई (१।३) |
| बम्पा | बंपाफुले | बै० बंपायन बम्पा कमिल बम्पा (प० क० ट० पद १३१८) |
| बरबा | प्रसंन | बै० जोर-बरबाते भागुर बाओह (प० क० ट० पद ७३७) हि० हरिजन हरि बरबा जो करे (सू० सा० ७।८) |
| बराओत | बराठा है | बै० येनु बराओत बैन बाराओत (प० क० ट० पद १२०४) हि० सीइ गोप की पाइ बराई (सू० सा० १०।३) |
| बमई | बसठा है | बै० पद दुइ बारि बमह पुन (प० क० ट० पद ३३५) हि० बसह पीक बस बमगति बमनि समिनु समान (मा० २।४२) |

| | | |
|-----------------------|-----------|---|
| बासव | बबदा है | हि० यह जन प्रीति सुभा-सेमर झों, बासव ही छड़ि बाव (सू० सा० ११११३) |
| बीनमु | पहिपानसूँ | बै० अब छोहूँ बीनमु हाम (प० क० ४०, पद ८३८) हि० वी इन मौकों कबहुँ न ओम्हों (सू० सा० ४११२) |
| बुनि | बयन कर | बै० अब बन एक एक बुनि सबक (प० क० ४०, पद ७२१) हि० एक बार बुनि कुसुम सुहाप (सा० ३११२) |
| बोंक | बोंकि | बै० बोंक पडस बन मरिया (प० क० ४० पद १०६४) हि० बोंकि परी तन की बुनि घाह (सा० ३४८) |
| बोनि | बोमी | बै० बसव बसन रसन बोनि (बोनिबवास, प० क० ४० पद १२३३) हि० भीम कहूँगा मास बोमी कधि (सूरवास सू० १०१२८३२) |
| बीतरा | बज्ज बेही | बै० बुझावने बीतरा ताहे मोर बन मोरा (प० क० ४०, पद ३०४२) |
| बीयानपना ^१ | बतुरपना | बै० शुभ सांवाठिनि नागर बीयानपना (प० क० ४०, पद ६०२) |
| (घ) | | |
| छटपटि | छटपटाकर | बै० घंग छटपटि केसे मीटब (प० क० ४०, पद १७२०) |
| छबीसे | सु ९२ | बै० छयक छबीसे रखदरलीसे (बोपाकवास प० क० ४० पद २९६६) हि० छबीसे मुरमी मोंहु बबाव (सूरवास सू० सा० १०१२२१९) |
| छीम | बपुर | बै० सबमी कानु से छीम सीनार (प० क० ४० पद ७०७) |

१ बीयान पदवी कि द्विती बोड छसार्बक धाम रादेर धीने बिस्पन ?
भी सतीशचन्द्र राय ।

हि० ठैरन केहरि केहरि के बिदसे धरि-कु ब
सैन-सबसे

| | | |
|--------|--------------|---|
| समझत | साम्झूणै नैव | बै० पंप घटित बुल सोचन सम-सम (प० क० त० पद १८३) |
| झलिया | प्रबंभक | बै० कि पैसमु सह झलिया नामरकान (सौबिवास प० क० त० पद १४२) हि० झली मसीन हीन सब संय (तु० बि० प० पद २२) |
| छाति | बखस्वस | बै० तुमा मुब हूरि ज्वलत मुग्ग छाती (बनस्यामवास प० क० त० पद ३५) हि० कुसिस कठोर निठुर सार्ई छाति (रा ब० मा० बा० ११३) |
| आपायनु | खिपानु | बै० अनेक जतन करि प्रेम आपायनु (प क० त० पद २६२) हि० तुम सों कहा खिपी ककनामय (सू० सा ३४३५) |
| खिरकत | खिरकते हूँ | बै० कोह मसुखनुसुण सुमंवि खिरकत (जदबदास प० क० त० पद १२६१) हि० खिरकति बल अपनें अपनें रंज (सूरदास सू० सा० १।२५००) |
| छीकने | छीकना | बै० छीकने कोई रूई बन बाव (प० क० त० पद १२११) हि० छीक सुनत कुछमुन कहयो (क० ३८२) |
| छूटत | छूटता है | बै० तामस तनु नाहि छूटेई (प० क० त० पद १७४) मेरी बेह छूटत बम पठय दूत(सू०सा० १।१३१) |
| छैन | छूतं | हि० ठै रन केहरि के बिदसे धरि कृंवर छैन-सर्वाई (ह० १ब) |
| छोड़नु | छोड़ूँ | बै० छोड़त दीव निरवास (प० क० त० पद १७२) हि० उतर बैत छोड़नें किनु मारे (मा० १।२७।४) |

| | | |
|-------|------------|--|
| (क) | | |
| बयाह | बयाकर | बै० बयाह पान—पियारि (प० क० ठ० पद २४८६) हि० तेहि समाज रमुराज के मुराज बयाह (गी० १।१०१) |
| बनि | ना | बै० बुम्बन बेरि बनि मुल मोड़कि (शोनिबदास प० क० ठ० पद २३६) हि० बनि तेहि जानि बिदुपहि केहूँ (वि० प० पद १२६) |
| बपइ | बप करता है | बै० बपतहि तुपा गुलमाला (प० क० ठ० पद १६६) |
| बाग | यज्ञ | बै० पयसि बाग सत बायह (प० क० ठ० पद १६६) हि० सती बाह हैसेर ठव बाया (म० ६।३६।४) |
| बागमु | बागूँ | बै० छलि परसये निशि बागमु हाम (प० क० ठ० पद २४७) हि० महामोह निशि सतल बाग (मा० ६।३६।४) |
| बाठ | बागा | बै० बम की ठास सब मिटी बाठो (प० क० ठ० १६१२) |
| बानठा | बानठा है | बै० बिन रजनी किये कसु ताहि बानठ (प० क० ठ० पद १६४) हि० बानठ तुम्हहि तुम्हह होबाह (मा० २।१२७।२) |
| बागन | बागना | बै० बागमु दे हरि ठीहारि सोहाग (प० क० ठ०, पद २४३३) |
| बागमु | बागूँ | हि० बागूँ बागतहूँ मस स्वामि बिसारी (मा० ३।८) |
| बागि | बिधि | बै० बादि बीठि बागि जसे (प० क० ठ०, पद २४३३) हि० भंजनि मठ धुम सुदन बिधि सम सुगन करबोद (मा० १।३) |

बार बसामा
बारई (त) बसाता है

बै० करई बिलास दीप लई बार (बिद्यापति
भारत नपक कस न बरिसाहू (मा० ६।१।)

बिउ बीब

बै० मनमन पाप बहुते तनु भारत
(प० क० त० पृ २०४)

बै० बिउ निकसन तब राखन कोह
(प० क० त० पृ ६४)

हि० सकल तमय बिउ बीबहु तुलसिदास
के ईस (मा० १।११६)

बीयतुं बीबित रहूँ

बै० रस पहुँ बीते बिसू
(प० क० त० पृ ६८१)

हि० जब लयि जियौ कहळै कर बोरी

बै० मेहुते बीऊ बिकुरि गोप्यो
(गोपाल मद्द, प० क० त० पृ २८१३)

हि० ज्यों करि कृपा पाजै भारत हो
(सूरदास सू सा० १०।४०५१)

बीट जैते बसू

बै० कर कुङ्कि ठाङ्कि वचन पुन बोय
(प० क० त० पृ ५१२)

हि० छिरछी जितवन धामम् मुनि मुख बीह
हो (रा० १४)

बीह प्रतीसा करता है

बै० बनवार ब्रियया बोधि पठु बीहित
(प० क० त० पृ २४२८)

हि० सब हमार प्रभु पप पय बीहा
(मा० १३६३)

बोग प्रतीसा करके

ब० करे कर बीरह मोटा
(प० क० त० पृ ६१)

हि० मरे सकल जोरिहि सम बोरी
(मा० ६।२३।२)

बी रंह बोड़ करके

बै० बुखन रह पप बोहि
(प० क० त० पृ ४८५)

बोहि प्रतीसा करके

(क)

| | | |
|-------|--------------------------|---|
| झकोर | झोका | बै० दुइ दिने दुइ सबि बीर झकोरे (यवुनवनवास प० क० ठ० पद, १२२६) हि० पाबै सीबे की झकोरे (सुरवास सू० छा० १०।२८३६) |
| झमझत | झमझता है | बै० झमझत गोविन्दवास (गोविन्दवास, प० क० ठ० पद १७४१) हि० बम उमुरुक झपरत पए (सु० रा० प्र० ६।१।२) |
| झक | झंझास | बै० कर कंठन मेल झक (प० क० ठ० पद ३१६) हि० सजवन बख-झल निकेत (पी० ७।४) |
| झकम | झंक | बै० कंकन झंकन किंकिसि सकिनी (प० क० ठ०, १८२३) हि० मूपुट, धुनि मंजीर मनोहर कर कपन झनकार (पी० १।२) |
| झकर | झंकार करना | बै० बचन चरण कमलतल झंकर (प० क० ठ० पद ६७) |
| झकई | बसपूर्वक धारुपित करना | बै० झकृत कर कंकन झनझन (प० क० ठ० पद ३७७) |
| झमकित | झमक कर | बै० बमकि झमकित काविबा (प० क० ठ० पद १७७१) |
| झरक | झरोखा | बै० सखिमणु हैरु झरकहि भांकि (प० क० ठ० पद २६४) हि० लागि झरोखण्डु झौंकहि मूपति धामिनि (मा० ८०) |
| झरझर | सदा बरसने बाम | बै० झरझर धनसत ए दुइ नवान (प० क० ठ०, पद ८०) हि० झरझर सुन्दर गिरि निर्मर झर (पी० २।४४) |

भारत बसाता

बै० करई बिलास बीप लई भारत (बिलासपति)
भारत मबरू कस न भरि साहू (मा० ६।१।२)

भारई (त) बसाठा है

बै० मनमथ पाप बहुते तनु भारत
(प० क० त० पर २०४)

बिज बीब

बै० बिज निकसब तब रासब कौह
(प० क० त० पर ६४)

बीयनुं बीपित रहूँ

हि० सकत तनय बिज बीबहु गुमसिबास
के ईस (मा० १।११६)

बीह बीसे बनू

बै० रस पहुँ बीठे जिमू
(प० क० त० पर ६८१)

हि० बब लपि जिमोँ कहळें कर बोरी

बै० मेहते बीह बिजुरि घोप्यो
(पोपास मद्द, प० क० त० पर २८३३)

हि० ब्यो करि कृपा पातें भारत हो
(सुरदास सू० सा० १०।४०३१)

बीह प्रतीसा करता है

बै० कर बुझि ठाङ्गि मचन पुम जोय
(प० क० त० पर ३१२)

हि० छिरछी बिचकन धामत्य मुनि मुल बीहह
हो (त० १४)

बै० जनवार जितिया बोपि महु बीहिठ
(प० क० त० पर २४२८)

हि० सब हमार प्रभु पग पम बीहा
(मा० १३६३)

बोय प्रतीसा करके

ब० करे कर बीरहि मोरा
(प० क० त० पर ६१)

हि० भिरे सकत जोरिहि सम बोरी
(मा० ६।२३।२)

बी रहि जोड़ करके

बै० बुझम रह पम बीहि
(प० क० त० पर ४८३)

बोहि प्रतीसा करके

| | | | |
|-------|-------------------------|---|--|
| | (क) | | |
| झकोर | झोका | बै० बुद्ध दिने बुद्ध सच्चि ईद झकोरे (यमुनंदनदास प० क० व० पृष्ठ, १२९६) हि० धार्वे घोषि की झकोरे (सुरदास, सू० सा० १०।२८३६) | |
| झपड़त | झपड़ता है | बै० झपड़त गोविन्ददास, (गोविन्ददास, प० क० व० पृष्ठ १७४१) हि० कम उमूक झगलत गए (सु० रा० प्र० ६।६।२) | |
| झक | झंझास | बै० कर कंकन मेस झक (प० क० व० पृष्ठ ३१६) हि० सखन खस-झक निकेत (मी० ७।४) | |
| झकन | झंक | बै० कंकन झंकन किकिणि छकिनी (प० क० व०, १८६३) हि० नूपुर, पुनि, मंजीर मनोहर कर कंपन झनकार (मी० १।२) | |
| झकद | झंकार करना | बै० बंधन धरण कमलदास झंकद (प० क० व०, पृष्ठ ६७) | |
| झटकई | बलपूर्वक धाकपित करना | बै० झटकत कर कंकन झनझन (प० क० व०, पृष्ठ ३७७) | |
| झमकित | झमक कर | बै० बमकि झमकित कांतिदा (प० क० व० पृष्ठ १७७१) | |
| झरक | झरोखा | बै० सच्चिपण ईरद झरकहि झकि (प० क० व०, पृष्ठ २६४) हि० सायि झरोखाम् झीकहि भूपति यामिनि (मा० ८०) | |
| झरझर | सदा बरधने वाले | बै० झरझर धनवान ए बुद्ध नयान (प० क० व०, पृष्ठ ८०) हि० झरझर मुन्धर गिरि निर्धर झर (मी० २।४४) | |

| | | |
|--------------|----------------|---|
| भरख | भरना | बै० धरर धरख धरिमा धरख (प० क० ट० पद १८२) हि० भरना भरहि मत्त गज बाबाहि (मा० २।२३१।४) |
| भरत | भरता है | हि० बाभत बभन भरत अनुपूमा (मा० १।२८०।९) |
| भलक | प्रकाश | बै० भलके बामिनि बीबई (प० क० ट० पद २१) हि० बुहुता भातरि भलक अनु रामभुवध (सू० सा० १३०) |
| भलकई | भलमल करता है | बै० पछन कौठि कठ बामिनि भलकठ (प० क० ट० पद १३९) हि० भास बिघास विघक भलकाहि (मा० १।२४१।३) |
| भाकि | भाँक कर | बै० उखिबखु हेरइ करकहि भाँकि (प० क० ट० पद ४६४) हि० बिकल बिधि बाधिर बिति बिबिधि भाँकी (क० १।४४) |
| भाँपनु भाँपु | एक नजर देखना | बै० हेरइते रूप नयन बग भाँपनु (प० क० ट०, पद ४३३) हि० भापउ जानु कहहि कुतचारी (मा० १।१३०।१) |
| भाइ | प्रकाश छवि | बै० पहिर भुलाखु भमके भाइरि भलमलन सिबरास, प० क० ट० पद १४३७) हि० छवि भौहु प्रपठ भूमि के भाई (तुमसी १।० ब० मा० स० १२) |
| भाकत | प्रभाव करता है | बै० भाकत भाँकिए भर भर सोचने (पोधिबदास प० क० ट० पद १८८७) हि० एहि बिधि राज भगहि मग भाँका (तुमसी १।० ब० म० घ १०) |
| भाँकए | भाँक करके | बै० भाकए भर भर सोचने (प० क० ट० पद १८८७) |
| भुँड | समुह | हि० भुकप बोधन बीब तुम्बरि बसि भु बनि भाँरि (पी० ७।१७) |

| | | |
|---------|----------------|--|
| भूमत | भूमता हुआ | हि० भूमत द्वार अनेक मर्त्य बंबीर बरे (क० ७।१४१) |
| भूमन | भ्रमना | हि० भूमत राम पामनें सोहै (पी० १।२१) |
| भुमाघीठ | भुमाठा हुआ | हि० पट उड़त भूपन बसत हूँति-हूँति भपर सखी भूमावती (पी० ७।१) |
| भ्रैसि | भ्रमकर | बै० पान पापीये बसकि भ्रैसि (प० क० त० पद २८३४) |
| भ्रोक | हिस्नोम | बै० भूमनार भ्रोके भलि भ्रोके भ्रोके (प० क० त० पद २९१६) |
| (ट) | | |
| टंकारि | टंकार करके | बै० टंकारि काम्मुकि छाहि मनसिज (प० क० त० पद १८२०) हि० प्रथम कींहीं प्रभु धनुष टंकारा (मा० ६।३४।६) |
| टलमस | बंजल | बै० टलमस कुण्डस मलमस यम्ह (प० क० त० पद १६) |
| टारस | दुनामा, बिताया | बै० टारस है मन सिधिरक अन्त (मोक्षिन्दास प० क० त० पद १७१५) हि० सम्नु सपसन काहुँ न टारा (दुसखी, रा० ब० मा० बा० २६२) |
| टूटइ | टूटता है | हि० टूट न द्वार परत कठिनाइ (मा० ६।४३।२) |
| टिके | टिक कर | बै० बस कि बाहुने टिक कौन स्याये (प० क० त० पद ५७३) |
| टूटई | टूटता है | हि० बनक मुदित मम टूटत पिनाकके (पी० १।६२) |
| टैटि | टैट | बै० टैटि मिठि करकटि (प० क० त०, पद २९२१) |
| टैड़ा | बाँफा | बै० वैब ससि टैड़ा करि बाँफा (प० क० त०, पद १३६०) हि० टैड़ जानि सब बयह काहु (मा० २८।१३) |

| | | |
|---------|-------------|---|
| टेढ़ि | बाँकी | बै० गुरंय पाय सिरे टेढ़ि शोमै (प० क० छ० पद १३१०) |
| टेरि | बुसा कर | बै० छा० सधे कइछहि बेरि (प० क० छ० पद १५७१) हि० बरखे सुमन बय-बय कहूँ टेरि-टेरि (क० २११०) |
| टोयत | बोज करता है | बै० टोयत धब बनि समय बसंत (प० क० छ० पद १७१८) |
| (ठ) | | |
| ठटा | ठाठ | बै० बरमोति ठटा संबर धमर हारपठ बरपठ फूल (प० क० छ० पद १२१८) हि० थोप गोपबन्ध के छट हूँ (क० ११२०) |
| ठमक | धममंभी | ठमके बाय रहिया बाय (प० क० छ० पद ७१०) |
| ठमकि | ठमक कर | बै० ठमकि धरूपये मुख पटीबल दिया (प० क० छ० पद ६३३) |
| ठाई | स्वान | बै० फुकरि काँचितै पाहि ठाई (प० क० छ० पद ११७) हि० ते सब तुमसिबास प्रभु ही सौहोइति मिटि एक ठाई (वि० १०३) |
| ठाकुराम | ठकुरामत | बै० जवाई माबाइ ताके बड़ ठाकुराम (प० क० छ० पद ६६३) |
| ठाइइ | बाइ होकर | बै० ठाइइ पारहरि काँपि (उद्धवबास प० क० छ० पद २०३६) हि० सुनि गुर बिनय ठाकि पछवाठी (गुप्तगी प० ब० मा०, प० १२) |
| ठाकि | साड़ी | बै० धूरहि एकसि ठाकि (भूपति प० क० छ० पद ४८३) हि० ठाड़ी धरिज बघोबा धपमें (भूरबास सू० छा० १०११८५) |
| ठाके | बाके होकर | हि० थइ धए बठी सहस सुमार्य (मा० २३४१४) |

| | | |
|-------|-----------|---|
| ठाम | स्वान | ब० जाइ मिसल छोइ ठाम (प० क० त०, पद ३०) हि० जिग्हु खगि निज परसोक बिगारियो ठामे (वि०) |
| ठिकन | ठिकाना | हि० तुमसिदाठ सीतल नितयहि बसपड़े ठीका ठीर काहौं (बि० २२६) |
| ठेनइ | ठेनता है | ब० परसिठै तरसि करहि कर ठेनइ (प० क० त० पद १००) हि० इफनि इकेलि पेसि सखिब बसते ठेसि (मा० २।८) |
| ठीर | स्वान | ब० तुसना दिवार नाहि ठीर (अपबार्णद, प० क० त० पद १०२२) हि० बड़े ठेकाने ठीर की हौं (तुमसी, वि० प० पद २२६) |
| (इ) | | |
| इयमय | घस्मिर | ब० इयमय लीबन कमल हुआयत (प० क० त० पद ४) हि० सुमित सिधु इयमयात महीबर (सी० २।२९) |
| डारइ | केंकता है | ब० डूरहि डारसु (प० क० त० पद २७३) हि० भीस कमल सर श्रेणि मयन जगु डारइ (मा० ६२) |
| डारसु | डारु डारु | ब० गुरुजन पौरख डूरहि डारसु (प० क० त०, पद ३६६) हि० बेपि ली में डारि हूऊ वसापी (मा० १।१२६।३) |
| डामा | जपहार | ब० दापना साजा धारिब डामि (प० क० त०, पद २७६) |
| डूबसु | डूब जाऊं | ब० डूबसु वंय दयाधे (प० क० त० पद १३६०) |
| डोसत | हिसता हुआ | हि० डोसत बरनि साबखर ससे (मा० १।३२।२) |

| | | |
|-----------|------------|---|
| उत्तपाम | उत्तपामा | हि० उत्तपल विपम मोह मन माया (प० प० अ० मा० प्र० १३३) ब० पमके पसके उत्तपाय (प० क० उ० पर २३८२) |
| उत्तमोयार | उत्तमवार | हि० उत्तपल मीन मसीम अणु सीषल सीतल वारि (मा० २।१३४) ब० मदन सेइ उत्तमोयार (प० क० उ०, पर १८२३) |
| उत्ति | उत्तसे | ब० उत्तणि पाइ परिहास उत्ति करइ (प० क० उ० पर १०५) हि० उँहइ मिले महेश बिपी हित उपदेस (पी० १।२७) |
| उत्ति | उत्ति करके | ब० उत्ति उत्ति कृषिहार (प० क० उ०) हि० डोल अंवार सुद पणु मारी, से सब उत्ति के अतिकारी (पु० प० अ० म०) ब० उत्तम तम नाहि सुदइ (प० क० उ० पर १७४) |
| उत्तल | उत्ता | हि० पुमसी रामप्रसाद सी तिहुँ नाम ताप मवाठी (पि० १३१) ब० आहाँ नाहि ऐसन रस निरबइह उत्ता परिवाह (बोमिन्वबास, प० क० उ० पर २३३) |
| उत्ता | उत्ता | हि० नाव उत्ता कसु जाये (पु० वि० प० पर १४) ब० उत्तम असन तनु सागी (प० क० उ० पर २०७) |
| उत्तल | उत्तल | ब० उत्तल अयलाव आपने साक्षात (प० क० उ० पर १८३२) |
| उत्तल | उत्तल | ब० तु बिनु सुखमय येज तँजल (गोविन्द प० क० उ० पर ३३१) |
| उत्तल | उत्तल | हि० हो तो तुव निदेस तँ भ्यारों (पु० वि० प० पर १४) |

प्रारम्भिक मन्त्रि-भाष्योक्त का इतिहास

| | | |
|--------------|----------|---|
| पूहि | तुम | बै० सुम्हरि तुहुँ बड़ि हृदय पापाण (मत्स्यभाष प० क० त० पद १७) |
| तेरा | तेरा | हि० तुहुँ सराहधि करसि सनेह (तु० रा० ब० मा० घ० ३२) बै० पंप नैहारत तेरा (योगिदशास प० क० त० पद ३१८) |
| तेरि | तेरी | हि० तुलसी पर तेरी कृपा (तु० वि० प० पद ३४) बै० कहतहि हाधि सरस तनु तेरि (प० क० त० पद २८८६) |
| तैहार | तपीहार | हि० नीको तुलसीदास को तेरि ही निकार (वि० ३३) बै० बह सब बड़इ तैहार (प० क० त० पद १४७३) |
| तैछन | तैसे | बै० तैछन नूपुर चरखी (प० क० त० पद २७२) |
| तो | तुम्हारे | हि० तैसइ सील रूप सुनिनीता (मा० ३।२।४।२) बै० तो तुम्हारे किनु पाकुस कानाई (मानदास प० क० त० पद १३) |
| तोसों | तोस कर | हि० मो समान धारत नहि धारतिहर तोसों (तु० वि० प० पद १७) बै० साने मुख नाहि तोसों सतीर समुखे (प० क० त० पद ८१२) |
| तोहि | तुम | हि० देव पितर सेह पूजिये तुसा तोमिए भीम (पी० १११०) |
| तोहे | तुमको | बै० बहन मनोमने तोहि जिपा पवि (प० क० त० पद ४०६) |
| तोसाइनुँ | तुमबानुँ | बै० तोहे अनुकन हेरिये तोहि धामबीठ (प० क० त० पद ३६) |
| (प) परकये | पिरकना | बै० पिरिठि पिरिठि तुमे तोसाइनुँ (प० क० त० पद ११६) |
| | | बै० परकए मोरक पाघ (प० क० त०, पद २०१०) |

परहरि

परवर काप कर

बै० परहरि परहरि कापये मदयद् भाप
(प० क० ट० पद ५१)

हि० बोलि छिटि मिलि सबि हि कापु तन
परवर (मा० ६६)

बारि

बाड़ी

बै० कागु द्वार माहा बारि
(सेखर प० क० ट० पद २४०)

हि० ठाड़ी बखिर जवोबा अपने
(सूरदास सू० सा० १०।१८५)

बिर

स्मिर

बै० सबिर बनने बनि बिर कर बीठ
(यमुनदनदास प० क० ट० पद २२१)

हि० नपन कहुयो बिर होहु बरनि
(सु० पी० ब० १।८५।४)

(ब)

बारि

बी

हि० बारिका परिवारिका करि पालिबी करना
नर (मा० १।३२६।२)

बै० तसु नाहि बिये डोर
(प० क० ट० पद १९६५)

हि० मनहुँ बारि मनवित्र पुरारि रिठ सचिही
(पी० ७।१६)

बिये

बिया

बै० तन मन बनहुँ निहापरि बीबी
(जखनदास प० क० ट० पद २५५५)

हि० बीबी कागु कानि को कंवर
(सूरदास सू० सा० १०।१६६१)

बीनी

बीनिय

बै० बखसि भूसति दुखसि वैखसि
(प० क० ट० पद १६१५)

हि० भति भारत भति स्मारबी भविदीन
दुखारी (वि० ३४)

दुखसि

दुखियारी

बै० पनराज निनी भूप भाई बने
(प० क० ट० पद २३३३)

हि० विप्र भाप तें भूगउ भाइ
(मा० १।१२२।३)

पुन

बोगो

| | | |
|---------|--------|---|
| दुबर | दुर्बस | बे० परम दुबर बेह (प० क० छ० पद १६२) हि० बेह दिमठु बिनदुपरि होए (मा० २।३२३।१) |
| दुमह | दुमम | बे० परिचय दुमह गुरूरे रहु बेनि (प० क० छ० पद ३२) हि० महि बयाल दुमह धनुरुपा (मा० १।६२।४) |
| दुमहिनि | दुमहिम | हि० दुमहित कहत दोरि श्री अहु द्विज पाठी नद के (१०।३।२०) |
| दुमारी | दुमारी | बे० दुमारी संद-नंदन रूप मानु दुमारि (प० क० छ० पद २८३६) हि० यह सुनिचै रूपमानु मुदित बित हूँसि हूँसिबाल दुमारी । (सू० सा० ७०६) |
| दुमास | दुमास | बे० धर्षोर दुमास दुमासि देखिसु (प० क० छ० पद २७७) हि० मिठि जु पयो संठाप अजम को देख्यो संद-दुमारी (सू० सा० १०।१३) |
| दुहाई | दोहाई | हि० बेत मदन माकठ मिमि दसो बिधि दुहाई (सू० सा० ६३०) |
| दुई | दोनों | बे० दुई रूप मिठि दुई हिमे जाप (योग्यदास प० क० छ० पद २८७) हि० बैप बिहित दुमरीति कीर्ती दुई दुलमुर (सू० भा० म० छत्र १४२) |
| दुप | दुप | बे० दुपक परतो पंवार भरत मेस (प० क० छ० पद २४३) हि० ठाक सो ब्रूक धेनुमिया (सू० सा० १०।८२) |
| दे | देह | बे० स्वपन देखिसुँ के इयामल बरए दे (आनदास प० क० छ० पद १४४) हि० सेवप रहित सनेह देह परि (सू० बि० प० पद २२) |

दोन दोनों

बे० यमुना हीरेर छाप लेले दोन भाई
(प० क० ट० पद १११५)

बोसर बूसर

हि० दधि भोजन भरि दोनों देहें प्ररु प्रंथन की
(सू० सा० २६४८)

बे० बोसर मनमथ करे फूसवान पाय
(प० क० ट० पद ७२८)

हि० घादि निरंजन निराकार कोइ हुतो मबूसर

(घ)
पक बक भकराहट

बे० पराप ना करे बकपक करे
(प० क० ट० पद ३२)

हि० सकसकाठ टन बक भकाठ डर भकबक
सब (सू० सा० २६९६)

(ग)
ग बहुबचन

बे० तेजमन हरि-विमुञ्जण के संग,
(माधो प० क० ट०, पद ३०३३)

हि० तजो मम हरि विमुञ्जनि को संग
(सू० सा०)

बे० लघोस लघोस लघौ रंग में
(शिबराय प० क० ट० पद १२२०)

हि० लबल मेह—लब पिया लयो-लयो
(सूरदास सू० सा० १०१६६१)

बे० लबहि बिहूँग-पाठिया
(बलराय प० क० ट०, पद २४६७)

हि० बभायरे-बज निठ नए, लबल बाइठ सब
(सू० क० बी० पद १९)

बे० एक दिन जाइते ललबिनी बने
(प० क० ट० पद ७३६)

हि० ललबी तो न दिया बिनुपारी मेंकहू रहति
(सू० सा० १४६२)

बे० धंजने रंजन ए बुर लयता

(बोबिन्ददास प० क० ट० पद २७३०)

हि० प्रभु सीमा सुख जानहि लयता

(सू० रा० ब० मा० प० ८८)

लनबी लनद

लयना लयन

| | | |
|---------|------------------|--|
| मग्निह | मग्नी घाटी | बै० बुंद सुन्दर मग्निह मग्निह (चिब्रराम प० क० त० पद १२२७) हि० ठाढ़े हरि होंसत मग्निह बैतियन छवि छोड (मुरदास सू० सा० १०।१५६) |
| मागरपना | बागुर्य नागरिकता | बै० कतना मागरपना जाने (प० क० त० पद ७८२) हि० मयुसबको मगर जन हिग्गुजातहि अनुनाय पड़ये (इ० २०) |
| माचह | माचटा है | बै० माचत घोपंपराय (प० क० त० पद २६६) हि० तहै तहै माचह परि हरि माका (मा० ६।२४।१) |
| माचन | मुर्य बिद्या | बै० पुर्य माचनि करे किबा छ अंतर (प० क० त० पद १०२) हि० ओ कसु कुबिजाके मन माबी छोड माच मचाबी (सू० सा० ३५८१) |
| माचह | माच करता है | बै० दीर देघिनि नाचह (प० क० त० पद २०३) हि० मासहि बेपि नीति घस मुनी (मा० ३।२१।६) |
| माह | माप | बै० कासु काहुक कसु माहि नहर्हि (प० क० त० पद १०५) हि० तब नर माहै बसिपु बोभाए (मा० २।६।१) |
| निकसह | बाहुर निकसना | बै० सब जन निकसति बाहिरे बैठस पुरस मन नाम (प० क० त० १०५) हि० घाम निकट अब निकसहि बाई (मा २।१०६।५) |
| निके | सुन्दर | बै० निके बनि घाये हा महु-हुमान (प० क० त० पद २४२३) हि० सुन्दर तनु सिमु बसन-बिभुपन मघ सिध निरखि निर्यया (गी० १।६) |

| | | |
|--------|------------------|---|
| निचोरि | निचोड़कर | बै० का रस नैम निचोरि (रायचेखर, प० क० ट० पद २११३) हि० बरनहु रघुबर बिसय जसु धुति सिखात निचोरि (सु० रा० ख० मा० बा० १०६) |
| निछोरि | निछाबर | बै० श्री पद पाहुक बर भरतामुजवा भरखन निछोरि (प० क० ट० पद २४०७) हि० करि मारती निछाबरि बरहि निहारहि (मा० १३२) |
| निम्ब | नीर | बै० विनमित्त सोजन निम्ब (प० क० ट० पद ४०) हि० गुरत बाइ पीड़े बोर भेमा, सोबतभाइ निम्ब (सु० सा० १०।२३०) |
| निपट | निटांत | बै० माभव निपट कठिन मम सोर (सू० प० क० ट० पद ४७८) हि० बिबरन मएठ निपट तरपामु (सु० रा० ख० मा० प० २६) |
| निरखर | निरीखलु कप्या है | बै० धमिभिख बयनहि निरखर बघ बिया (प० क० ट० पद १७३) हि० निरखहि-सुधि जगनी तुमठोरी (मा० १।१६५।३) |
| नेह | प्रेम | बै० कि पुखसि रे सखि कामुक नेह (प० क० ट० पद ६८०) हि० बिपति-काम कर सतपुन नेहा (मा० ४।७।३) |
| नेहारइ | देखता है | बै० सबिठ मनने नेहारइ बघ-दिष (प० क० ट० पद २८१) हि० मागहुँ सरोप मुजंग नामिनि बिपम चांति निहारइ (मा० २।२५।६) |
| नीपुन | नूतन | बै० निलुइ नीपुन रय (जानबास प० क० ट० पद ६१६) हि० जिमि नूतन पट पहिरइ मर (सु० घ० ख० मा० ज० १०६) |

| | | |
|-----------|--------------|---|
| ग्यायत्री | नवम नवैसी | बै० कील पुस्तक ग्यायलि गैहा (प० क० त० पद २१३) हि० का बूँट मुक्त धु बहु नवसानारि (ब० १६) |
| (९) | | |
| पधोरब | पार करके | बै० बिरह बसधि कठ पधोरब हाम (प० क० त० पद ७६७) हि० तुलसीदास बघ पर परसि भवसानर पी |
| पकान | पकवान | बै० कपूर बदन विविध पकवान (प० क० त० पद २३८२) हि० विविध भाँति मेवा पकवाना (मा० १।३३३।२) |
| पग | पैर | बै० विठिन बसै कसपीत करि (प० क० त० पद १६७३) हि० ठाके पग की पगठपी मेरे ठनको आम (बै० ३७) |
| पठरमुँ | पार हो बाडें | बै० गिब मरियाय सिमु छम पठरमु (प० क० त० पद १८८) हि० पावत न पेदि पार पेदि पेदि बाकै हूँ (पी० १।६२) |
| पहरि | पार होना | बै० पहरि उतारब पार (प० क० त०, पद ४३६) |
| पटकठ | पटक कर | बै० हवाम बिकुर हेरि मुकुर करै पटकठ (प० क० त० पद ४८२) हि० पहि पर पटकेर भूमि भैबाह (मा० १।१८।३) |
| पटकठे | | बै० पटकठे पंजर भङ्गकि पटकि कर पटकठे (प० क० त० ४८२) हि० महि पटकठ भवै भुवा मरोरी (मा० १।६८।५) |
| पडद | पाठ करण है | बै० पडद ऐएन घमिया गीर बस (प० क० त० पद २४६७) |

| | | |
|--------|------------------|---|
| निधोरि | निधोइकर | बै० को रस मेम निधोरि (रायचोखर प० क० त०, पर २५१३) हि० दरनह् रघुवर बिसव बसु मुक्ति घिडाळ निधोरि (तु० रा० प० मा, बा० १०६) |
| निधोरि | निधोकर | बै० भी पर पाहुक बव भरतानुबचा मरछव निधोरि (प० क० त० पर २४०७) हि० करि घारठी निधोकरि बरहि मिहारहि (मा० १३२) |
| निम्ब | मीर | बै० बिगमित सोचन निम्ब (प० क० त० पर ४०) हि० तुरत बाद पीड़े वोठ मेमा सोबतभाह निम्ब (सू० छा० १०।२३०) |
| निपट | निपठ | बै० माचन निपट कठिन मन सोर (सू० प० क० त० पर ४७८) हि० बिबरन मएठ निपट नरपासु (तु० रा० प० मा० छ० ९६) |
| निरख | निरीक्षण करवा है | बै० घनिमिख मयमहि निरखइ बस बिघ (प० क० त० पर १०३) हि० निरखहि-सुबि बननी दुनदोरी (मा० १।१६८।३) |
| मेह | मेम | बै० कि पृथपि रे सखि कामुक मेह (प० क० त० पर ६८०) हि० निपठि-काम कर सतगुण मेहा (मा० ४।७।३) |
| मेहार | मेखता है | बै० सखित मयने मेहारइ बस-दिव (प० क० त० पर २८१) हि० मागहुँ सरोप मुबंग भासिनि बिपम कांति निहारइ (मा० २।२३।६) |
| मीनुन | मूठन | बै० मिनुइ मीनुन रग (ज्ञानवास प० क० त० पर २१६) हि० मिमि मूठन पट पहिरइ नर (तु० रा० प० मा० उ० १०६) |

| | | |
|---------|--------------|---|
| श्यायली | मन्त्र नवीनी | बै० क्रीम पुस्तक श्यायली श्रेया (प० क० त० पृ० २३३) हि० का प्रथम मुख प्रथम मन्त्राणां (ब० १९) |
| (प) | | |
| पमोरक | पार करके | बै० विरह बलवि कठ पमोरक हाम (प० क० त० पृ० ७६७) हि० तुलसीदास बस पद परसि मन्त्राणां पौ |
| पकाम | पकाम | बै० कपूर अंजन विविध पकाम (प० क० त० पृ० २३८८) हि० विविध भाँति श्रेया पकामा (मा० १।३३३।२) |
| पग | पैर | बै० विठ्ठल बसे कलशौठ करि (प० क० त० पृ० १६७३) हि० ताके पग श्री पदपरी पैर तनको नाम (बै० ३७) |
| पङ्कमु | पार हो आठे | बै० निज मरियार सिधु सप्त पङ्कमु (प० क० त० पृ० १८८) हि० पावत न पैरि पार पैरि पैरि आठे हू (गी० १।९२) |
| पङ्कुरि | पार होना | बै० पङ्कुरि उठारक पार (प० क० त० पृ० ४३१) |
| पटकत | पटक कर | बै० श्याम चिकुर हेरि मुकुर करै पटकत (प० क० त० पृ० ४८२) हि० महि पद पटकत भूमि श्रेया (मा० १।१८।३) |
| पटकिते | | बै० पटकिते पङ्कुरि पटक कर पटकिते (प० क० त० ४८२) हि० महि पटकत मन्त्र मुना मरोठी (मा० १।१८।३) |
| पङ्क | पाठ करता है | बै० पङ्क ऐतन श्रमिया कीर बल (प० क० त० पृ० २४६७) |

| | | |
|----------|----------------|---|
| पढ़ाई | पढ़ाकर | हि० बनी पढ़त यावत गुन-भाषा (मा० ११३७।४) बे० पंचम बर पढ़ाई (प० क० ट० पर १४२२) |
| पग | प्रत्यय विशेष | हि० हारेत पिता पढ़ाई-पढ़ाई (मा० ७।११०।४) बे० शुभ छांगीसिक लायर बोयारपना (प० क० ट० पर ६०६) |
| पंख | पंख | बे० धाम छसे धंयम धाम छसे पंख (प० क० ट० पर ७०) |
| पंखिक | पंखिक | हि० ठेहि परिहरिहि बिनोरबस कस्पहि पंख धनेक (बो० ५३५) बे० राधाताम कहई जव पंखिक (प० क० ट० पर ४६६) |
| पम्मारि | पौमारी | बे० जगु पम्मारि बज गेह बड़ापन (प० क० ट० पर २४३) |
| पपिहा | पाठक | बे० बाकण पपिहा पिठ पिठ छीकरण (प० क० ट० पर १७१०) |
| परकाशह | प्रकाश करता है | हि० मीहि प्रण प्रेम यह नैनि निधि रामनन रयाम मुससी पपिहा (वि० १३) बे० बबठे करल परकाश (प० क० ट० पर १३) |
| परदेधिया | प्रवासी | हि० पदयव मुस बानी प्रकाशवइह वसा बिचारि (सू० सा० १४७८) बे० प्राण त्रिया परदेधिया (प० क० ट० पर १८१५) |
| पेपह | प्रवेष्ट करके | हि० कहा परदेधी को पतिवारी (सू० सा० २७११) बे० कर यहि सकेत लेह परदेधइ (प० क० ट० पर १०४२) |
| | | हि० भरत नमनि बूँद ज्यौँ जस बचन नहि परबस (सू० सा० ३४७६) |

| | | |
|-----------|--------------|--|
| परघट | स्पर्श करके | <p>बै० गिरिकर गुह्या परघट परघट (प० क० ट०, पद १४४२) हि० सजे सुभय ठक परघट करनी (मा० क० ११४४१४) बै० परिसत गोविन्दवास (प० क० ट० पद १६३४) हि० ठकसमि मीहि परीखेहु भाई (मा० ११११) बै० प्रानपियारि पदवि परिपालह (प० क० ट० पद २२३) हि० बसीस सदाहुम कहुँ परिपालय (मा० ७१३४४)</p> |
| परिखट | परख करता है | |
| परिपालह | परिपालन करके | |
| परिहार | परिहाराकर | <p>बै० पामि परसितेप्राण परिहार (प० क० ट० पद ११४) हि० जारेहु सङ्गु न परिहार सोह (मा० ११८०१३) बै० पसकम नारे धाकि (प० क० ट० पद २८३३) हि० पसकमिह हुँ परिहारी निर्मये (मा० ११२३२१३) बै० पहिरत तेजत ताहि (प० क० ट० पद २८१) हि० पहिरहि सज्जन विमल जर सोमा धति धनुराग (मा० ११११) बै० पहिरण बधन बबल बब हाते (प० क० ट० पद २२३) हि० पहिरावन जो पाइहिहैं सो तुमहुँ बह बै० हिया पतसार हार ताहि पहिरसु (प० क० ट० २५७२) हि० पहिरहि सज्जन विमल जर सोमा धति धनुराग (मा० ११११) बै० पहिराधोये सब भोपाल (प० क० ट० पद २६६६)</p> |
| पलकना | पलक मारना | |
| पहिरह | पहमता है | |
| पहिरण | परिधान | |
| पहिरसु | पहनसु | |
| पहिराधोये | पहनाओ | |

| | | |
|------------|--------------|--|
| | | हि० पाटम्बर सम्बर ठबि गुररि पहिराऊ (सू० सा० १११६६) |
| पहिल | पहना प्रथम | बे० बैल बैल पहिल समाधमरीठा पाइ (प० क० ट० पद २२०) |
| | | हि० मम ममठा सभिसौ रबबारि पहिली सेहु बिरि (सू० सा० ११२१) |
| पाइ | प्राप्त करके | बे० बैल बैल पहिल समाधमरीठा पाइ (प० क० ट० पद २२०) |
| | | हि० निरिति कियोप सेपई नाहि पाई |
| पाघीसु | प्राप्त कर | बे० पाघा मोहन बिन्दु ना पाघोल (प० क० ट० पद १८) |
| पाकड़ि | पकड़ कर | बे० बाहु पाकड़ि कठ साधत मान (प० क० ट० पद ३११) |
| | | हि० मन कम बचन मंद मंवन उर मह बुड़करी पकरी (सू० सा० ३३६०) |
| पाघासइ | बोकर | बे० बरण पाघासइ रोकर सइवरि (प० क० ट० पद ११२) |
| | | हि० उत्तम निबि सो मुक पकरायो |
| पाप पापड़ि | पगड़ी | बे० मरपति पाप छरे (प० क० ट० पद १४३) |
| | | हि० एते पर अक्षियाँ रछछामी अक पपीमा अपटानी (सू० सा० ११६७) |
| पाहु | पीछे | बे० मनु अयागिनी पाहु ना पनिनाम (प० क० ट० पद ८०२) |
| | | हि० ब्रह्मलोक लागि गयऊ मैं एव महूं पाछ उड़ाव (मा ७७१) |
| पाठन | पठना | बे० छेबहि नायल परठल भीर (प० क० ट० पद ७२७) |
| | | हि० मचमा अकम भूम पातर लाऊ |
| पठियाइ | बिबास करके | बे० करब कि मम पठियाइ (प० क० ट० पद १७११) |

| | | |
|---------|----------------|---|
| पानी | जल | हि० सुर माया बस बेरिहि स्रुवद पानी पति पानि (मा० २।१६) बै० गहे पानि डूबह पानि (प० क० त० पद ३०८) हि० राम प्रेमहि पोपठ पानी (मा० १।४३।१) |
| पापिया | पापी | बै० पापिया पाकार सोक करे ठाणठारि (प० क० त० पद ८२०) हि० पापित्वाकर नाम मुमिरही (मा० ४।२१।२) |
| पाबह | प्राप्त करके | बै० पुनवति पाबह कोइ (प० क० त० पद ३३१) हि० सुरसारव से करव विचार्य मारव से नहि पाबहि पाय (रा० ष० मा०) |
| पालटि | पसट कर | बै० सरवस सेइ पालटि पुन (प० क० त० पद २००) हि० उमटि पसटि संका बारी (मा० ३।२६।४) |
| पालना | पालन | बै० पूरव प्रेमक पालना (प० क० त० पद १२७७) हि० रहव न बैठे ठाके पामने मुनापठ हूँसी (सू० सा० १।१२) |
| पास | पास | बै० सयने देवराय पास (प० क० त० पद २०३) |
| पापोपान | पापाबामा | बै० चातिरे चातिरे पापोपान (प० क० त० पद २७८४) |
| पाहुन | पाहुना-पारपर | बै० कति पाहुन काम दास्य (प० क० त० पद १७३३) हि० पाहुन बीच कमस बिकसाई जल में दगिन अरे (सू० सा० १।१०३) |
| पिम | पपीहे की धावाज | बै० पपिधा दास्य पिड पिड सोडरन (प० क० त० पद १७३०) |

| | | |
|---------|-------------|---|
| विभक्ति | दीली याय | बैं० साइमि विभक्ति बमिया (प० क० छ० पद १७३०) |
| विभका | विभकारी | बैं० कुकुम विभका सेह केह केह धाय (प० क० छ० पद १४२५) हि० घाबा छपि जनाइए कुमकुमा खिरकठ मरि केसरि विभकापी (सू० छा २३६१) |
| विभिसा | पीसे बासा | बैं० विभिसा बाटे से नाम (प० क० छ० पद १७६६) हि० धककि पराह फिरि हराह पीसे (मा० २।१४३।३) |
| विभइ | पात करता है | बैं० जव सुया रूप मयन मरि विभई (प० क० छ० पद १६८३) हि० जरिठ मुरसरिठ कवि मुक्य विरिभिठरिठ विभठ (दि० ४०) |
| विभ | प्रियतम | बैं० विभ धवर सुधा प्रिय प्रेम लक्षमि द्विभ (प० क० छ० पद ७०३) |
| विभारि | भिया प्यारी | बैं० प्राण-विभारि पदमि परिपालइ (गोविन्दवास प० क० छ० पद १३३) हि० सगुहारि विभारि लयी बब लें (सु० रा० ज० मा० छ० १०१) |
| विभाषा | विपाषा-मुकठ | बैं० भुममि निवबास विपाषा (प० क० छ० पद १०५५) हि० परम बंध को छींड़ि विपाषो पुरमठि कुम लनारी (सू० छा० १।१६८) |
| विभ | पात करे | बैं० भा बाए धाहार भा वीये नीर (प० क० छ० पद ६८) हि० सावन माघ पवीहा बोनघ विभ विभ करि को पुकारइ (सू० छा० २५१०) |
| विरीठ | प्रेम | बैं० ठाहार प्रीठे इइया सुरी वे (प० क० छ० पद ६) हि० हा रघुमन्दन प्रात विरीठे (मा० २।१३३।४) |

| | | |
|----------|-----------------------|---|
| पीक | रसपान या पान का रस | बै० पीछत पट्टु पीठ पीक (प० क० त० पद २८३४) हि० कबहुक बैठि मब मुजपरि कइ पीक कपोसनि पागे (सू० सा० ६८६) |
| पीब (बह) | पान करता है | बै० वुहुँक मपर मसु वुहुँ अन पीबइ (प० क० त० पद ३३१) हि० पीबत सौँछ ममाइ बह कबके रंबारे (सू० सा० ११२३८) |
| पीमसु | पान करू | बै० मसुत तेजि किये इसाहम पीमसु (प० क० त० पद ३०१८) हि० मग्गत पय पावन पीबत जसु (बि० २४) |
| पूछइ | पूछता है | बै० पुछत मू बल हेरिया मुख जाति पाति (प० क० त० पद २३७) हि० मुस जाठ पाठ कोइ पूछत नाहि भीपति के दरबार (सू० सा० ११२३१) |
| पुतनी | पुतनी | बै० भीत पुनसी सग्येइ (प० क० त० पद ६३) हि० रसब भइ बिज की पुतरी मून मपीरहि डाहत (सू० सा० ३०६३) |
| पूर | पूरा | बै० बेप भूपन तीर सष छिल पूर (प० क० त० पद २३०) हि० देखि पूर बिपु बाठइ गोइ (मा० ११८१७) |
| पेसनु | देखनु | हि० भूमि बिबर एक कौनुक पेसा (मा० ४१२४३३) |
| पेड़ा | मिठाई बिदेय | बै० पुरिपुसा साजा पेड़ा सरमाजा (देखर प० क० त० पद २३६३) |
| पैठ | प्रवेष्ट | बै० मार कुँज माहा पैठ (प० क० त० पद २३०३) हि० पैठि मबल रसु शानि कुयारे (मा० २११४७३३) |

| | | |
|--------|---------------|---|
| पंठमु | पंठू | बं० मन्दिर तेजि कालन माहा पंठमु (प० क० ट० पद ११८) हि० पंठा जमर मुमरि भयबामा (प ५० प०) |
| प्यारी | प्रिया | बं० प्यारि पाकड़ि पिरिति पाबके (प० क० ट० पद १७४०) हि० पी बरजि कईं बाति पी प्यारि (सू० सा० ७४४) |
| प्रकटई | प्रकट करके | बं० ब्याम निरसाइ योरक प्रकटइ (प० क० ट० पद ३७१) हि० प्रकटहि दुरहि बटन्ह पर मामिनि (मा १११४७।२) |
| (क) | | |
| फन्द | फाँदा | बं० दुरबन मयन पयहि पद फँद (प० क० ट० पद १०१४) हि० काटो न फँद मो धंभ के धब बिलंब कारण कबन (सू० सा० ११३०) |
| फाटि | फटकर | बं० छहबर येनि मरत बिठ फाटि (प० क० ट० पद २०) हि० छरिठा बूब फाटि जैसे बरों बरों काँची कील स्वाद करि खाइ (सू० सा० १३३४) |
| फारमु | फाड़ | बं० फारमु काँबलि (प० क० ट० पद १४२२) हि० फारसू हार बरिमला फारहि उर बिबारहि (मा० ६।८१।६१) |
| फीरठ | फूमठा है | बं० भनमन राज छाब सेइ फीरये (प० क० ट० पद १४२२) हि० बीमठब पद निकेठ गरनु घति मानो फिरठ दुहाइ (सू० सा० २८१६) |
| फुकरठ | भाषान करता है | बं० बागहि धारद धारि मुक फुकरठ (प० क० ट० १४७१) हि० ठक जसे बाग कराम फुकरठ बनू बहुव्यास (मा० १।२०।१) |

| | | |
|--------|-------------------|--|
| फूटठ | फूटठा है | बै० दिन सौंझरि फूटठ छाति सौं मुन (प० क० ठ० पद १७६६) हि० उमठठ प्रति रंपार, फूटठ फर, म्ठपट लपट कराम (मू० सा० ११२) |
| फुठकार | ऊची भाषाज | बै० फुठकारहि बनि तेजब बेहा (प० क० ठ० पद १७२१) हि० कसकोटि बरि जाहिजे, बिप की एक फुकार (मू० सा०) |
| फुरघो | फुरला | बै० बलराम चिते फुरठ कीठ (प० क० ठ० पद २४१७) |
| फुनि | पुष्पित फूतकर | बै० फुनि बयनि घोहनि (प० क० ठ० पद २७१२) हि० कबहुंक फुनि समा में बैठयी मू छनि ताप बिषायो |
| फेनि | आद्य पदार्थ विशेष | बै० मल्ली मारिया फेनि (प० क० ठ० पद २३२७) हि० येबर फेनी घोर मुहारी खोवा सहित खाहु बलिहारि (मू० सा १०।११४) |
| फेर | फिर | बै० बरण प्रकट फेर जन्हुके नेन (प० क० ठ० पद १०६) हि० प्रभु भागवन जनाब जनु नगर राम बह फेर (मा० ७।१। शो० २) |
| फोरि | फोरकर | बै० नरवर सक्ति हिया फोरि (प० क० ठ० पद २४६१) हि० फोरि प्यारि तारि छोरि गपन होत पाजे (८।१३) |
| (ब) | | |
| बजायत | बजाठा है | बै० इयामानन्द धानन्दे बजायत छोर (प० क० ठ० पद २८६३) हि० हठ धम्याय धपर्म मूर निठ नीबत डार बजायत (१।१४१) |
| बटोरनु | बटोरु | बै० यठन जठक पन पाये बटोरनु (प० क० ठ०, पद ३०१८) |

| | | |
|----------|--------------------|---|
| बड़ि | बूडा स्त्री | हि० बबहुक मय मय भूरि बटोरल (१।२२) बै० तुमि एखन कीन ना बोल भुमना यो बड़ि माइ (प० क० छ० पद १२२) |
| बनई | सजी हुई | बै० भबल बिभूवण भम्बर बनई (प० क० छ० पद ३०५) हि० समुझल बनइ न बाइ बछानी (मा० ७।११) |
| बनघोघारि | बनबिहारी बनबारी | बै० बीर झरल नावर बनघोघारि (पोपालदास प० क० छ पद २६६६) हि० मसुरा बग्य सिधो बनबारी (योगिन्य की० र० भाग बीजो पृष्ठ ८६) |
| बनाइया | बनाया | बै० यलन हि बिदा बनाइ (प० क० छ० पद २२०) हि० तिलक बनाइ जसे स्वामी हुने (सू० छा० १।३२) |
| बनयानु | बनायानु | बै० सजनि माहे बनायानु बेस (प० क० छ पद १६३) हि० तुमरे मुपन मीकों बीजै यपने तुमहि बनाउ |
| बरके | बस्कि | बै० बरके बीबन कमल पराबीन (प० क० छ० पद ८३६) |
| बरकाठ | बरकाठा है | बै० बरकाठ कुहु दिठि कैह सपन बरकानिया (प० क० छ० पद २१४३) हि० कतहु बिटाप भूबर सपारि परसेन बरकाठ (क० ६।४०) |
| बरताय | बरकरा | बै० एहि एहि बरताय (प० क० छ० पद २८८०) हि० कामदेव छन काम काम होइ बरतेव (पा० २६) |
| बनिहारी | बनिहार होना | बै० उदयदास बनिहारी (प० क० छ० पद ३६७) हि० बेर मेरे नमों बील बीनहीं सुरज बिहारी (सू० छा० १।१७६) |

भारतीयक भक्ति-आन्दोलन का इतिहास

| | | |
|---------|-----------|--|
| बहार | भामन्द | बै० बाहर कुष से निकसे बहार (प० क० त० पर २५०४) |
| बहि | बही | बै० बिहि बहि लोहे बेप (प० क० त० पर १३३६) हि० त्यो त्यो सुकृत सुमेर बलि भूपहि मिदरि सगे बहि गाइन |
| बहुत | घनेक घमिक | बै० बटिला बहुत भगति करि हरपित (प० क० त० पर २४०) हि० बहुत लाम सोपगह मपु हानि (मा० २१२६१३) |
| बाँका | बक | बै० बाहनि बंवल बाँका (प० क० त० पर १२०) हि० सकल सपुन मंगम कुसल होइहि बाक न बाँक (मा० ११३१४) |
| बाघोरि | पगली | बै० इहम बाघोरि पारा (प० क० त० पर १३४) हि० बाघरि न होइ बानि कपिमाह की (क० ७१२६) |
| बाटोपार | बटमार | बै० पुहुंसति बुम्दावन बटमार (प० क० त० पर २४६२) हि० मै एक घमित बटमार (बि० १२५) |
| बाढ़ई | बढ़ई | बै० रूपसमातम ताहे रघेर बाढ़इ (प० क० त० पर २२००) |
| बाठ | बाठबीठ | बै० गुनिते लोहारि बाठ (प० क० त० पर ६४) हि० मए विकल मुस घाव न बाठा (मा० ११७३४४) |
| बाबाइ | बपाई | बै० सबहुँ घानदि बापाइ (प० क० त० पर २०००) हि० भूपति पुष्य-नयोमि उर्मय पर बर घानद बपाई (पो० ११६) |

| | | |
|--------|-----------------------|---|
| बीबद | बीपटा ठै | बै० मयनक मीर बिर माहि बाधइ (प० क० त० पद ११८) हि० मा मन पट मतहि बरिबोरि बीबई (मा० १।४७।१) |
| बासाइ | बलाय धमंयम बलिहारी | बै० बिकन बयामेर बालाइ लया (प० क० त० पद १२४) हि० कहहुँ तात जननी बलिहारी (मा० २।३२।छ०१) |
| बाइ | भुबा | बै० भोगे धये बाहे भीक बेठारे (प० क० त० पद १०८८) हि० रघुपति यहि बाहौं (म० २।७।१) |
| बाहुक | फिरला सीटना | बै० बारेक बाहुक सोमार बाब मुक देखि (प० क० त० पद १८६३) |
| बिचारइ | बिचारना | बै० बिरमित बचन बिचारइ बाजि (प० क० त० पद १२२०) हि० सुर असुर मुनि कर कान बीहै सकल बिकस बिचारि । |
| बिचारौ | छोपू | बै० निरस मन बिचारौ (प० क० त० पद १०८६) हि० भास राबरोये बास राबरी बिचारि (ह० २१) |
| बिछाइ | बिछा कर | बै० बिससय सैब बिछायइ पुन पुन (प० क० त० पद २८२) |
| बिछुरत | बिछुरते हैं | बै० बिछुरत मरमे मरम माहा पीठत (प० क० त० पद २१०) हि० बिछुरत एक प्राण हरि सेंही (मा० १।३।२) |
| बिछुरि | बिछुरकर | बै० ताहा कि बिछुरि पार (प० क० त० पद २६०) हि० बिछुरे छसि रवि मन नयनि ते पावत बुध बहुतेरो (बि० ८७) |

भारतीयक भवित प्राम्बोत्तम का इतिहास

| | | |
|----------|-----------------|---|
| बिन | बिना | बै० बिन परिचय मोर प्रान केमन करे (प० क० ट० पर १२३) |
| बिनोदिया | मनोहर | हि० गुरु बिन ज्ञान नाही (संतों की कहाव ब० गले दोले बिनोदिया माला (प० क० ट०, पर २६१) |
| बिनोर | बिहबल | बै० बैलमु मौराम जम्न बिनोर (प० क० ट० पर १३२) |
| बिरबद | रबठा है | बै० निरजने बिरबद मूरति ठोहारि (प० क० ट० पर ३१३) |
| बिरसद | निबृत्त हुठा है | हि० बिसद रबद परपंच बिबाठा (मा० २।२३२।३) |
| बिराजद | बिराजता है | बै० बिरसद रपि नियम भय लाये (प० क० ट० पर २१३५) |
| बिसपद | बिसाप करता है | बै० धंग हि धंग बिराज (प० क० ट० पर ११) |
| बिससद | बिसास करता है | बै० बिसपद ठामे तापायत धमर (प० क० ट० पर ७००) |
| बिसारे | मुसाकर, बिसरला | बै० कुमुम सेब माहा बिससद दुहुँजन (प० क० ट० पर ३३१) |
| बिहरद | बिहार करता है | बै० छिब गुरु नारद ब्यास बिसारे (प० क० ट० पर २८६८) |
| बिहान | प्रात काल | हि० मतिमम्ब दुससीबास सो प्रमु मोह बस बिसरायो (मा० ६।१२१) |
| बिल | बिय | बै० करे सखि बिहरये कों पुन एह (प० क० ट० पर १३०) |
| | | हि० धबधेस के बामरु चारि सबा दुलसी मन-मन्दिर में बिहरे (क० १।४) |
| | | बै० घायलि टाति बिहान (प० क० ट० पर ३६३) |
| | | हि० भयो निविलेस मानों बीपक बिहान को (वी० २।८६) |
| | | बै० मृगमव ज्येदम सेपन बिल (प० क० ट० पर १८३७) |

बीच मध्य

बै० बीच हि मुरमुमि भुक्ता हिलोल
(प० क० ट० पद १०२३)

बीजद पका करता है
बोठा है

हि० सूम बीच वसकम्पर बेला (मा० १।२६)
बै० बीजद बने बने भ्रमद कुड्ड
(प० क० ट० पद ६४६)

बीड़ बीड़ा

हि० तुम्ह कहें विपति बीडू बिपि बमद
(मा० २।२१।३)

बीस बिना बीणा

बै० ससिता ठाम्भूल बीड़ बनाइ
(प० क० ट० पद १२६०)

बीतयो बीत गया

बै० ठोहारि परस रस बीये
(प० क० ट० पद ३०७)

बूम्भु समम्भू

हि० लेंहि धक्कर मुनि नारद घाइ करवस बीन
(मा० १।३०)

बै० लाले लाले किछिनी मुम्भ पर बीतव
(प० क० ट० पद १३६६)

बुडा बूड

हि० देवत रघुबीर प्रताप बीते संताप वाप
(रा० ख० मा०)

बै० तवे से बुम्भु सोषास घाधे
(प० क० प० पद ६५)

बुडिया बुडिया धीरत

हि० बग बूम्भु बूम्भु बूमे
बै० बुडां पुमि कि धीर
(प० क० ट० पद ३०३७)

हि० कामकथ मग्गी धति बुडा (मा० १।२३)
बै० मग्गरेर बननी लाले धरवसी बुडियारे
(प० क० ट० पद ११३२)

बुड बुड

बै० बुड बुड ककण वाठ
(प० क० ट० पद १३३१)

बुडन बुडना

हि० बरहि परतय मोह बस भार बरहि कर बुड
(मा० १।२६)

बेचनू बेचू

बै० बुडन सागर माधे
(प० क० ट० पद ७१)

बै० बेचनू ठनयन जाति
(प० क० ट० पद ३६०)

| | | |
|-----------------|----------|---|
| बोलत | बोलता है | हि० देवहिं सेह परमु कुहि मेही (मा० २।१५८।१) बै० बोलत मुतल पीठी (प० क० त० पर २७२४) हि० सीस परे गहि जय जय बोलहि (मा० १।८८।३) बै० महि महि बीसि कुसायत माप (प० क० त०, पर ३३) हि० गुद बोसाइ पदपठ बोल भाई (मा० २।१५७।२) |
| (म) भई | हुषा | बै० सो तनु ताप मसम भइ जाय (प० क० त०, पर २०) हि० उमायिक सुरतिम मुनि प्रेमबुद्धि भइ (जा० १३७) बै० कोसेर कुमार तार वाइ महसा धार (प० क० त०) हि० घाहुति बैत बबिर पर भैसा (मा० ७।७१।१) बै० खेने खेने बसन मुनि तनु भरइ (प० क० त०, पर २३) हि० तब तब बारि बिसोबन भरीहि (मा० ७।१०१।१) बै० जाहा पहु परमई बसपर ब्याम (प० क० त० पर १६५३) हि० हाय हाय राम बाम बिधि भरमाय (पी० २।३६) बै० म्मकत विजुरि नयन मर्खक (प० क० त० पर १००३) बै० दास मनोहर करत भरोसा (प० क० त० पर २५७०) हि० नाथ देव कर कवन भरोसा (तु० रा० ब० मा०, मु० ५१) |
| महसा | भैसा | |
| भरई | भरता है | |
| भरमई | भूमता है | |
| भक बक | भौं बक | |
| भरोसा (भरसा) | बिदबास | |

| | | |
|----------|-----------------|--|
| भाङ्गिया | भाङ्गिया लताङ्ग | बै० भाङ्गु विभंगि विभास (प० क० ट० पद ११) |
| भाघोत | भाघ्या सगता है | बै० लोक परभाते भासुर भाघोह (प० क० ट० पद ७१७) |
| भाबठ | कहवा है | हि० रघुपति हि मह मठ भाबठ (मा० १।१०।घं० १) |
| भाङ्गु० | भी | बै० बादक हेरि सूरज करि भाबये (प० क० ट० पद ७७०) |
| भाट | बारन | हि० बेद पुचन संत मठ भापक (मा० ७।११६।१) |
| भाङ्गिया | भङ्गुया | बै० भाङ्गु विभंगि विभास (प० क० ट० पद ११) |
| भाबो | भाब | बै० ठार पर बिते भाटेर बर्मने (प० क० ट० पद ३३) |
| भासत | भाब्या सये | हि० बने भाट हिर्से हरपुन बोरा (मा० १।२४) |
| भाबह | मियाकर | बै० से भाङ्गिया भाङ्गिया भुकर (प० क० ट० पद २२०६) |
| | | बै० भाघोय भाबबो बैयन भाभी (प० क० ट० पद १७३६) |
| | | हि० राम राम नाम बर बरन जुग छावन भाबब माय (मा० १।११) |
| | | बै० पीठन पवन मोहे भाहि भायठ (प० क० ट० पद १८१४) |
| | | हि० मनु भाबठो येनु पय स्ववही (मा० ७।२३।३) |
| | | बै० बयनक सौरहि बसन मियाय (प० क० ट० पद २१०१) |
| | | हि० कस्या बारि भूमि मिजह है (वि० १३१) |
| | | बै० नयनक भीरहि छयम मियापह (प० क० ट० पद २४६१) |
| | मिजता है | |

प्रारम्भिक मन्त्रिणां नामावली का इतिहास

| | | |
|-----------|----------------------|--|
| भेजाइ | भेजकर | बै० मानल भेजाई धरे (प० क० त०, पद ७११) |
| भेंटनु | भेंट करूँ | बै० ए छलि काई भेंटनु मंद-नरना (प० क० त० पद ७३) हि० भेंटइ सबन सककि सपु माई (मा० २।८४।१) |
| मइया मैया | माई | बै० मैया अनिराम बदन धन झापोइ (प० क० त० पद १२१६) हि० मैया भरत भाबते के संघ (गी० २।६३।४) |
| मति मधोर | निपेपार्यक धय्यय मोर | बै० पुहाय उदये मठ मधोर सिखंड (प० क० त० पद १६) हि० कमक रतन मति मोर तिहे मुमुकाठहि हो बै० सौधु मनु मानस मातस मधुकर (प० क० त० पद १२) बै० मनमय मनमय मारि (प० क० त० पद २४२६) हि० ठब मयि काडि भेइ नबनीठा (मा० ७।११७।८) |
| महु | मुके | बै० मनइ मनसिख घाति (प० क० त० पद १७३२) हि० हौसि मरि है परतीठ मयठ सिरामनि मनि है (बि० ६३) |
| मय | मयकर | बै० भाबिनि-भाब मनहि मन मणइते (गोरसुन्दरदास प० क० त०, पद १८८) हि० मन हि मन धपूर सोब मारी (मूरदास सू० छा० १०।३०।१२) बै० धाहुन मागर कठहुँ मनाइ (प० क० त० पद २७२६) हि० इत मनाइ धसीसहि जय जस भाबहु (मा० ३२) |
| मनई | मानठा है | |
| मनहि मन | मन ही मन | |
| मनाइ | मनाकर | |

| | | |
|--------|---------------|---|
| मरमि | मर्मम | बै० मरमी जमार मरमे बाजे (विद्यापति प० क० ठ० पद २२६) हि० पुरहनि सवन घोट बस बैमि न पाइय मर्म (मा० १।३६।क) |
| मरी | मर कर | बै० बासाइ सइया यो मरी बलिया (बसराय, प० क० ठ० पद ६८३) हि० मुइ मरत मरहि सकुम (बो० २०४) बै० छाबि छाबि छरमि भरमि महावीकल (बुम्बानमशास प० क० ठ० पद ४६८) |
| महा | मध्ये बड़ा | हि० प्रकटे तर केहरि जैम महा (क० ७।८) बै० तुमि एखन केन बन बोस दुन यी बहि माइ (बंसीदास प० क० ठ० पद १२२) हि० छल्प बहहुँ मोहे जानहे माइ (मा० १।३।२६।) |
| माइ | माठा | बै० एइ मांयातुया ठाय (प० क० ठ० पद १६) हि० बेबि मांयो बर जो बनि ठोरे (मा० १।१५।२) |
| मांयो | मांय सो | बै० हसि मुल मोइइ डील मायाइ (विद्यापति प० क० ठ० पद ७२७) बै० छाभोये माबी बीयर माबी (प० क० ठ० पद १७३६) बै० बिज कुल-दुपन मूपन करि मागमु (बोबिन्दरास प० क० ठ० पद ३६१) हि० माय्यो मै न दूसरो न मानत न मानिहँ (क० ७।६३) |
| मायाइ | मायब | बै० एअर बादर माह माबर (विद्यापति प० क० ठ० पद १७३५) बै० छावठ मिटावठ बपता (बनरायमशास प० क० ठ० पद ११३२) हि० मिदयो महामोइ बी को छदयो पीब (बी० १।८६) |
| माबी | मायब | |
| मागमु | माग निय, मानू | |
| माइ | महीना | |
| मिटावठ | दूर करता है | |

| | | |
|-----------|---------------|---|
| मिठाइ | मिष्ठान | बै० रूपे भरत दिठि छौहरि परस मिठि (गोविन्ददास प० क० प०, पद ७२४) हि० मीठी बरु कळत भरो रोमाइ बरु खेय (दो० ११) |
| मिनति | विकति | बै० दौठिक मिनति तुया पाये (प० क० प०, पद २२०) |
| मिसाभो | मिघाया | बै० के मोरे मिसाभो दिवे चाँद-बयान (प० क० प० पद १६४५) हि० घस बरु तुम्ह हि मिसाउव घाजी (मा० १।४०।२) |
| मीसइ | सम्भिमिठ हुमा | बै० कँछेने मीसव मायब साय (प० क० प० पद १११) |
| मु | मै | हि० गगन मयन मकु मेरहि मिसइ बै० पर मु आइतेनारिसु सेइ (गोविन्ददास प० क० प०, पद १४६) |
| मुचकि | मुसकाना | बै० मुचकि मुचकि हास (बहीदास प० क० प०, पद २०५) हि० जाय बसिक बोसे मुसुकाइ (मा० १।४७।४) |
| मुचुकायनि | मुसुकायि | बै० मानिनि—मान—मयन मुचुकायनि (बो० प० क० प० पद २४२५) हि० मयिनी मिसी बहुत मुसुकाटा (मा० १।६३) |
| मुके | मुम्को | बै० लौहारि जियके मुके मेजम कान (प० क० प० पद १२६) हि० लौहि मोहि नाटे धनेक मानिए जो माने (बि० ७६) |
| मुटकि | मटकी | बै० रंम मुटकी भर साब (सदाशदास प० क० प०, पद १४४४) |
| मुझापमु | मुझामू | बै० घापन करे हाम मूक मुझापमु (विद्यापति प० क० प०, पद २६८) |

मुह

मुल

मूस
में

मोल
में

मैग
मेसा

मामो
माममग

मेह

मेम
बर्पा

मोठिबन

मोती

मोय

मुफे

मोर

मार

मोघ

मेरा

मोङ्कर

बै० तमासक रोठे धापन ठनु म्त्रपिनि च्छसहि
मुहे धापान (प० क० त० पद २१५)

हि० बोसों बाठ मुह भरि (गी० ७।३७)

हि० पबगुण मोस धहार बस (शो० ३८५)

बै० मी मीन मोराचान्नेर केसिया
(मरहुरि प० क० त० पद १०३)

हि० मी मोर ठोरे ठै भाया
(मा० ३।१३।१)

हि० मैग के दसन कुमिण के मोबक (क० ३१)

हि० गुरठ बिमिपन पाछे मेसा
(मा० ६।१५।१)

बै० मेह बरिठे जग मोठिममासा
(बिद्यापति प० क० त० पद २०१)

हि० मोर सिखा बिनु पुरिहु पमुइठ मरजठ
(शो० ३११)

बै० जरे मोठिपन कि मास
(रूपसुवाच प० क० त० पद २८६०)

हि० मोठिनि छहिठ नासिका
(सूरदास सु० सा० १।१०३)

बै० किभोर पुछवि मोय
(प० क० त० पद १३५)

हि० मोको घीर ठोर न सुठेक एक ठोरिए
(वि० १८१)

बै० ऐछन होयन मोरि
(राजामोहन प० क० त० पद ११३)

हि० सपु मठि मोरि बरिठ धबपाहा
(मा० १।८।३)

बै० धाय पाछे नाहि मोघ हापठीर पठ ठोरा
(प० क० त० पद २३६६)

हि० राम परिहाण होइ हिठ मोघ
(मा० १।१।१)

बै० जोरि मुजयुन मोरि बेइस
(बिद्यापति प० क० त० पद ३७)

| | | |
|-------|---------|--|
| | | हि० मोति बिहसि नयन मुँह मोरी (मा० २१२७१४) |
| मोरे | मुन्ने | बै० मोरे उपेक्षित श्याम सुनापर (महुनंदनदास प० क० त० पद १८४) हि० मुनि मन हारण रूप प्रति मोरें (मा० ११११११) |
| (घ) | | |
| मरु | को | बै० यद कलि-रूप नाधारत (माको, प० क० त० पद २११४) हि० यारें सबै सुधि मूनि गई (क० ११११७) |
| यसु | बसु | बै० यसु सावि कसिपुग प्रकट शशीसुतसोई भाव प्रकाश (प० क० त० पद ७६) हि० यहि कहा मया मुह सखति (क० १२) |
| यतहुँ | यहाँ से | बै० ऐछन यतहुँ परम अभिलाप (गोविन्ददास प० क० त० पद ३९) हि० राम लपन मेरी यहें घेंट, बलि बाळें बहाँ मोहि मिति सीजे (पी० २११२) |
| यव | जव | बै० यव-गोबुनि समय बैसि (विद्यापति प० क० त० पद २०१) हि० तुमसीदास भव नास मिटे तव जव मनि, यहि सकुण घटके (वि० ६१) |
| यबहुँ | जब से | बै० यबहुँ ये भाव उदय कक अन्तरे (प० क० त० पद ३९) हि० मुकमि कहयो सोह सरप, तउ अन्ति परद बचन जबहुँ (वि० ६१) |
| यहि | यहाँ | बै० जर जर जाहा विपन्न बगदर (प० क० त० पद ४८) हि० विवसी उदर रीरि-रि अन्ति मू अहें जने बिरें मसानी (वि० ६१) |
| योक | बिसका | हि० तँहि कि अन्ति अन्ति अन्ति (मा० ७१११२१) |

२००

बाह्य बाघी

बै० जर जर घतर ना बाये पराय
(प० क० उ० पद ३७)

बाही बाही

हि० से मुम्ह कहु मातु ग बन बाळ
(मा० २।२६।४)

बाह्य तैह बाह्य त्यों

हि० घब मेह तेह पररोप बाही तहाँ ते
घब घाबेये (सू चा० १।१२१)

बाह्य बाह्य

बै० मन माहा बचन करि बैधन
(प० क० उ० १०८)

बाह्य बाह्य

हि० निमुंन बहा सगुन मये बीया
(मा० ४।१३।१)

बै० बैधि बिसम्बित येसे कथिमसि
(प० क० उ० पद २१)

बाह्य बाह्य

हि० बाँरु बनिक मनि गुन मन बीसे
(मा० १।३।६)

बै० घुरयति घति सतगति बाह्य बन
(प० क० उ० पद १)

बाह्य बाह्य

हि० बाह्य बाह्य होती फिरो मेरी हेतु हिया
(वि० ३।३)

(२) बाह्य बाह्य

हि० घुसलीबाय बाह्य जीव मोह रजु बाह्य
बाह्यो बाह्य बाह्य (वि० १०२)

बै० हासिया बाह्य बाह्य घंमे
(प० क० उ० पद २७७)

हि० तिहु काल बिनको मसे बै राम रबीसे
(वि० १०२)

बै० रंय रंयिसे रंय बिहरे
(रायबसंत प० क० उ० पद २८२१)

हि० तिहु काल बिनको मसो बै राम रबीसे
(घुसली वि० ३२)

बै० पिबहते घबर रचह सितकार
(प० क० उ० पद ३३)

हि० मिसह रचह प्रबंध विधाता
(मा० २।२३।३)

बाह्य बाह्य

बाह्य बाह्य

| | | |
|---------------------------------|-----------------------|---|
| रंजनु | प्राणन्द कर्क | बै० जाहे जाति गुरू गंजने मत रंजनु (प० क० त० पद १६०४) हि० भुष बिसराम सकल जन रंजनि (मा० १।११।१) |
| रटइ | रटठा है | बै० रंगि निगन रस रंयहि रटइ (प० क० त० पद १३०१) हि० राम राम रट विकल भुषानु (मा० २।१७।१) |
| रणरणि | रनुमुनु | बै० किंकिण्य रणरणि रंगा रंकराज पनि (प० क० त० पद २२७) हि० कहव कपासिय रामससन की बंठहि रैनि बिहानी (गो० २।१८) |
| रयता, राव रयनी रैन रसिकपन | रसिकता | बै० दोहार रसिकपन गुनि गुनि दुहुँ जन (प० क० त० पद २१८८) हि० कहुव कपासिय रामससन की बंठहि रैनि बिहानी (गो० २।१८) |
| रइ | रइकर | बै० बीजन रइ रइ किये जावठ (प० क० त० पद ११८) हि० सोचन असु रइ सोचन कौन (मा० १।२३।१) |
| राजव | सुसोमित होता है | बै० पच्छरि गोरखंर कौहों राजव (प० क० त० पद १७२१) हि० कर्ष है बनाइ मीके राजव निरप है (क० २।१३) |
| रि | उम्बोपन का चिह्न | बै० घाति रि हामर छोहारि किये नहिये (प० क० त०, पद १) हि० परी परी सुन्दर नारि सुहागिनि (सू० सा० १।४४) |
| रिम्ब | प्रसन्न होता है | बै० बम्बक बरली रीम्ब रिम्बमोन (प० क० त० पद २२६६) हि० तुलसी वैहि रघुनाथ से नाथ सपार्य सुषेवठ रीम्ब सोरे (क० ७।४२) |
| रिमि-रिमि | बसे भुमे भम भम भमि | बै० रिमिभिम दरदे बरिये (प० क० त०, पद १४४) |

| | | |
|---------------|---------------|---|
| रुह | वस | बैंं छो मरु हूरव बंदम रुहै सायन (प० क० ट० पद ७००) |
| रेघोड़ि | रेबड़ी | हि० रुख कलपरु छागर छापी तीरै (वि० २३४) |
| रोरुमु रोम | रोरूँ रोकर | हि० कैंकता करम्य रेघोड़ि पदमा (मा० २।११६।२) |
| (ल) लसर | वेसठा है | हि० रोकिहों नयन बिलोकन घोरहि बैंं बहूमिधि तुमा मधि रोय (प० क० ट० पद ३७) |
| लसिमि | लसमी | हि० मुगु दसकंठ कहुअंपन रोपी (मा० २।१।३) |
| लटकत | लटकता है | बैंं बतिस कुजे लखर नाहिनाहि कोर (प० क० ट० पद ३२६) |
| लपटाइ | लपेटकर | बैंं हाटक लसिमि बरए पर डारमु (प० क० ट० पद ४३६) |
| लसकाम | लसक कर | हि० एहि बिमि उपजे लीबिख बर मु बर वासुख मुन (मा० १।२४७) |
| लजाइ | लजबाकर | बैंं कुमुत बंप बर हार लटकत (प० क० ट० पद १३६१) |
| | | हि० यमुबारी घसकाबसी सते लटकन समित लसाट (पी० १।१६) |
| | | बैंं धाया धाप लपटाइ (प० क० ट० पद ९८६१) |
| | | हि० बनम बनम धायाय विरव धित लसिक लपटाइ (वि० ८२) |
| | | हि० लसकत लसिख ब्यों कंयाल पाठरी मुनाब की (क० ६।३०) |
| | | बैंं टैयजिया साय मय भयमान (प० क० ट० पद १३३) |
| | | हि० उपमा कहुवि लजाइ भारती धाजइ (बा० १३८) |

| | | |
|---------|------------------------|---|
| साङ्गति | साबररणीया | बै० लामा साङ्गति रूप रसायण (प० क० त० पृ २६६६) हि० साङ्गिसे सपन हिनु हो बनके (दि० १७) |
| सिये | निमित्त | बै० केसि—कला सिये करत संवान (प० क० त० पृ २८१२) हि० बै बनबासहि कीसिक राम सपन सिए (बा० १३६) |
| सियो | सिया | बै० बंकिम मयने चित्त हर सियो मोर (प० क० त० पृ २१०) हि० सियो सकल मुख हरि प्रंगसंग में (इ० २३) |
| सीखत | सिखता है | बै० वासिनी मानिनि धवनत-बदनहि सीखत (प० क० त० पृ २२१) हि० सिखत सुपाकर गानिधि राहू (मा० ०१२३।१) |
| सीजे | सीजिये | बै० मयल-बयने निरखि मुख सीजे (प० क० त० पृ २८४४) हि० धसमजस में मगन हों सीजे महि बाही (दि० १४७) |
| मुकामनू | छिपामू | बै० पास मोड़ि हाय मुकामनु हाय (प० क० त० पृ ७२८) हि० सबा ज्यों मुकात तुमसी भूटे बाब के (क० ६।६) |
| मुठर | मोटठा है | बै० एकति गहन कु ब माह मुठर (प० क० त० पृ ३६) |
| मुबपाह | मुटकर मोहित होता है | बै० धापन गुन मुबपाह (प० क० त० पृ १९८७) |
| सेपह | सेप करता है | बै० प्रागरे सेपह संग (प० क० त० पृ १२८) |
| सेह | सौह | बै० कस्तुरा करिया सह सदा रिया (प० क० त० पृ १७) |

(घ)

| | | |
|---------|-----|--|
| घतपरिया | जार | बै० मा करह जातुरासि मुहुं घतपरिया (प० क० त० पृ ४११) |
|---------|-----|--|

| | | |
|----------|------------|--|
| धाकर | धक्कर | बै० सुवासित बादि क्षीरि धाकर (प० क० ट० पर २८६५) |
| धियार | धृ पार | बै० मुकुर मेई मक करण धियार (प० क० ट०, पर ८९) |
| धुनइ | धुनकर | बै० धुनइते मकरइ गृहपति वार (प० क० ट० पर ३६) |
| धुनायमु | धुनाई | तौहारि निवान हाम कठमे धुनायमु (प० क० ट० पर १८३) |
| धोइइ | धुधोमित हो | बै० धा पीर बरम धुधोइन मोहन (प० क० ट० पर १३२) |
| (प) | | |
| पंड | साइ | बै० बिसुरस मुकु पंड (प० क० ट० पर २३३२) |
| (स) | | |
| सई | सहित | बै० कटक केनि बिनासधि कानू सई (प० क० ट० पर ८१) |
| संपाति | संपति | बै० मरम ना कह काई प्राण संपाति (प० क० ट० पर ३३) |
| संत | सजजन | बै० संत असंत पुजायत बरे परे (ब्रामबास प० क० ट०, पर १४६२) |
| | | हि० संत समाज पयोभि रमाठी (दुलसी प० क० मा० बा० ३१) |
| सबकोइ | सबसोप | सबहि समरसहि सुख प्रिय (शे० ७५) |
| सबहुँ | सबको | बै० दिनमसि किरण सबहुँ पटु व्यापि (प० क० ट० पर ६६७) |
| | | हि० सबहि समरसहि सुख प्रिय (शे० ७५) |
| | | बै० सहकरि मोह समय समुझायत (प० क० ट०, पर ४३५) |
| समझायमुँ | समझायु | हि० एहिबिनि राम सबहि समुझावा (मा० १।८१) |
| | | बै० धो मुक कर देख समानि (प० क० ट० पर २६१७) |
| सयानि | समझार | हि० धो मुक करि नृप लखि कुँबेरि समानि बोमि मुक-परिबन्ध (१) |

| | | |
|-------------|------------|---|
| घरे | बसे | बै० प्राया समाकार ना घरे साठि (प० क० त० पद २७००) |
| साँच | सत्प | बै० साँचकि मिछ इहबाग (प० क० त० पद ३७३) |
| साँच | साँझ | हि० साँची कहौ कसिकाम (क० ७११०१) बै० घनेक साधेर बीप बिमाइस साँझेर बेस (प० क० त०, पद ३७३) हि० मनहुँ साँझ सरसीकह सोना (मा० ११३५८१) |
| साँमारि | सँमान करके | बै० बेने पुमकित ठनु कह्वि सामारि (प० क० त० पद २२८) |
| साबायसु | साभसु | बै० एत दिन ठनु मोर साब साबायसु (प० क० त० पद १७१२) |
| सिधारन | सिधारना | बै० मनयानिन हिम सिद्धरे सिधारन (प० क० त० पद १७१३) हि० पुनि त्रिजटा निब धवन सिधाई (मा० ६११००११) |
| सिधारि | पमन क्रिया | हि० नौठम सिधारे मूह गौनो सो सिधारके (क० २१६) |
| सियानी | बुखिमान | बै० चातुरी ना कर कानाइ चतुर सियान (प० क० त० पद १३८५) |
| सिरबि | बनाकर | बै० लबहु रसिक-राबै सिरबिया मन माये (प० क० त० पद ४१६) हि० जगदीश जुनति निनि सिरबाहि (मा० २३) |
| सीधे | सीधा | बै० सीधे विन्धामह सुपुर ओर (प० क० त० पद २७३४) हि० लिए छरी बँठ सीधे बिमान (बी० ७१२२) |
| सुपड़-सुबड़ | सुन्दर | बै० राधा करि नरि सुपड़ विरोपणि (प० क० त० १०७२) हि० सुगड़ पुष्ट उन्नत इकाटिका (बी० ७११११) |

सुठन पोशाक विशेष

बै० सुठन सुठन पुन बैजस पाय
(प० क० ठ० पद २६६२)

सुहाय सौम्य

बै० देव देव प्रीतम प्यारिक सोहायै
(प० क० ठ० पद २८३४)

सुप सुप होष हबास

हि० अनुपय माय सौहाय चीन सखन बहु
भूपनभरी (बा० १८)

सैं से

बै० सुप-सुप सब सोय
(प० क० ठ० पद ७१)

सैंबइ सिजन करके

बै० तुया प्रम बिप सैं बइठ मेस अन्तर
(राभासोहम प० क० ठ० पद १६३)

सैंबइ सीप कर सेवा करता है

हि० रघुवर के से बरित (बि० १६)
हि० बीपी सीपी सुयंभु सुमंगल पावही
(बा० २०४)

सैं से

बै० रामबसंत-मन सेबइ अनुसन
(प० क० ठ० पद २४४६)

सीप सीपकर

हि० सेवत सुरपुर बासी (बि० २२)
बै० वनु बापि ब्यासा बिपिन सैं मूमि
(भूपति प० क० ठ० पद ११४)

सैं से

बै० बाहे विर सीपि कोर पर घुठिये
(बोबिन्ददास प० क० ठ०, पद ३२०)
हि० पतिम्ह सीपि बिमती धति कीम्ही
(मा० ११३६१४)

सीपति सपती

बै० सी बरणांम्बुन रति नाहि होमत
(बेन्गुबदास प० क० ठ० पद १)
हि० सी नित सी सानि सानि (क० ६१३०)
बै० अमरण सीपति मान
(बोबिन्ददास प० क० ठ० पद ३०६)

स्मरइ स्मरण करता है

हि० मैं न सखी सीपि सखी भपिनी ज्यों
सेइ है (क० २१३)
बै० स्मरइ धो नय रूप
(प० क० ठ० पद १६२)
हि० पद सरोज सुविरी (बि० १४१)

| | | |
|-------|-----------|--|
| (ह) | | |
| हंस | हंसपत्र | ब० बसु तुम्हार मानस विमल हंसानि भीहा आमु (मा० २।१२८) |
| हठ | बल प्रयोग | ब० हठ करि माह कर्म मठ काम (विद्यापति प० क० त० पद २३६) हि० बिन बाधे निज हठ छठ परबस परयो बीर की गौर (वि० १२०) |
| हम | हम भोग | ब० समय बुद्धि हाम सब समाभव (प० क० त० पद १६७३) हि० हमसल छय मरमू किन कहहु (वि० १।७८।२) |
| हमारा | हमार | ब० मूठ तनु राखनि हमार (राजामोहन प० क० त० पद ४३) हि० पुनिहि बिनि अमिसायु हमारा (मा० २।११।२) |
| हमें | हमको | ब० हमे हेरवैठे तनु भूप (शेखर कवि प० क० त० पद २३६) हि० कंत सिख बेइ हमहि कोठ भाइ (मा० २।१४।१) |
| हरि | हरन करके | ब० जनु मनु मन हरि कनया-कु म भरि (प० क० त० पद २००) हि० करि कृपा हरि भ्रम फंव काम (वि० १४) |
| हासत | हंसवा है | ब० खेने मंद हासि खेने उत्तरोत्त (गच्छरि प० क० त० पद १०३) हि० छिठ मुनन हास भीसा समीर (वि० १४) |
| हासनि | हंसी | ब० महु महु हासनि गरपद भापनि (मोक्षिन्दास प० क० त० पद १) हि० तिमह कहै मुखर हासरस एहू (मा० १।६।२) |
| हिबोर | बूसा | ब० ताहि बनि अपरूप रतन-हिबोर (प० क० त० पद १५६२) |

| | | |
|--------|--------|---|
| हिय | हिय | हि० पसंय पीठ ठबि मोह हिवोघ (मा० २।५८।३) बै० हिय धयेयान तिमिर (प० क० उ० पद १) |
| हिसन | हिसना | हि० हरपहिय समुभयत उब धाये (मा० १।११।५) बै० हिसन कम्पतरु सलित-बिभंभ (प० क० उ० पद ११) |
| हिसायत | हिलाना | हि० बार बार हिलिमिलि दुहुँ माह (मा० २।३२०।३) बै० स्पामर काय धावाहे हिसायत (प० क० उ० पद २८८६) |
| हिलोर | भूलभा | हि० राम प्रेम बिभु तैम जाय बैठे मूपबस बबबि हिलोरे (बि० ११५) बै० बीसत-मदन हिलोर (प० क० उ० पद ३८) |
| हिलोत | तरंग | बै० उहाँ ताहाँ जससई कालिबी हिलोब (प० क० उ० पद ८६) बै० मूस मल धाप हूँ (प० क० उ० पद १०८८) |
| हूँ | हूँ | हि० हूँह पुरारि ठेज एकमारि बत-भासक (मा० १०५) बै० सचक्रि तयने बचन करू हूँ (प० क० उ०, पद ११५) |
| हूँट | मीने | बै० घूरे हूरह मधुमंदल बाघ (प० क० उ० पद २२१) |
| हूरह | देखकर | हि० सीय सनेह-सक्रुष बस पियतम हूरह (रा० ब० मा० बा० १२१) बै० ना हूरहुँ बिच भिज नाह (प० क० उ० पद १२५) |
| हेरिपु | देखपु | बै० छि हेरिपु कदम्ब तमाते (प० क० उ० पद १५५) |

| | | |
|-------|----------------|--|
| हो | प्रत्यय विशेष | <p>ब० निके बनि प्राये हो नर-नुनास (गोविन्ददास प० क० प० पद २४२५) हि० प्यारे नरनास हा (सूरदास सू० सा० १०।१८२४)</p> |
| होइ | होकर | <p>हि० होनहार सहजान सब बिम्ब बीच महि होत (सं० १२६)</p> |
| होत | होता है | <p>ब० सो पुन होत सबिह (प० क० प० पद ३०८) हि० जामत हो कसु मस होनिहारा (मा० १।१२१।४)</p> |
| होयत | होता है | <p>ब० पुनहते गर्भ खम्ब तब होयत (प० क० प० पद १८) हि० निज निज मुखनि कही निज होनी (गी० २।२२)</p> |
| होये | होकर | <p>ब० कि कहिते पुन होय मा जानि (प० क० प० पद १८३३) हि० बीवी है बय किसोरी ओवन होनी (गो० २।२९)</p> |
| हो हो | नामसमूचक धम्मय | <p>ब० री हो होरि (प० क० प० पद १४४१)</p> |

तृतीय अध्याय वैष्णवोत्तर (चैतन्योत्तर) काल

१

इस्लामिक-वंगला साहित्य की परम्परा

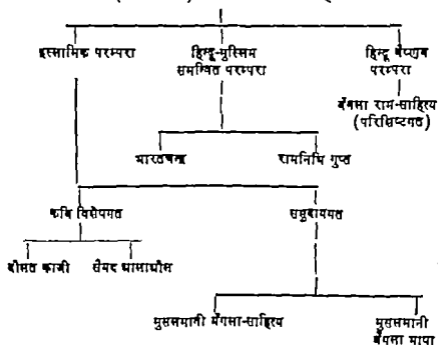
१७००-१८३० ईस्वी

भारत में मुस्लिम आक्रमण तथा मुसलमानी राज्य विस्तार ने भारतीय साहित्य को एक नया मोड़ प्रदान किया है। बंगला और हिन्दी साहित्य की धारों प्रकृतियाँ भी इससे प्रभावित हुई हैं। बंगला से पहले मुसलमानी राज्य हिन्दी-प्रदेश में स्थापित हुआ था। यहाँ हिन्दी के माध्यम से बंगला पर भी इसका प्रभाव पड़ा है। किन्तु सोऊ कबाने परम्परागत रूप में पहले भी विद्यमान थी वैसे उनका इस्लामीकरण बाद में हुआ। सतहर्षी उताम्दी के पहले बंगला में हिन्दू बंप्सुब कवियों की रचना होती रही है। बंप्सुबों का समस्त साहित्य बामिक है। लीकिक श्रु बार को ली बंप्सुब बनतों ने आध्यात्मिक-दृष्टिकोण प्रदान किया है। उभा-दृप्सु की प्रेम-लीला उनके लिए साधारण नर नारी का काम कला विस्तार नहीं है। बंप्सुबों के लिये वह भगवान की लीला है। उनके लिये पुबनीय, चर्षनीय बंदनीय है। दृप्सु यदि बंप्सुबों के लिये पबतार हैं भगवान हैं तो राधा भगवती हैं। यहाँ समस्त बंप्सुब तथाकथित श्रु बारिक-साहित्य बामिकता एवं आध्यात्मिकता से धोतप्रोत है। किन्तु इस्लामी बंगला-साहित्य पूर्णतया लीकिक प्रेम से धोतप्रोत है। बीलत काजी और आलाधोल इसके लोके पपबाद हो सकते हैं जिनके विषय में प्राये विचार किया जायेगा। हिन्दी प्रेमोक्त्यात्मक साहित्य ही बंगला-इस्लामिक सूफी और प्रेममूक्त साहित्य का उत्स है। वैसे कि समादरणीय डा० मुकुमार सेन महोदय लिखते हैं "बंगला-लीलि-कविता पर यदि कुछ सूफी प्रभाव पड़ा है वह सतहर्षी उताम्दी के अतर्क से पहले नहीं है, किन्तु वह हिन्दी के माध्यम से आया है"।^१

१ बंगला गीति-कविताय सूफी प्रभाव यदि किन्तु पढ़िया जाके तबे ताहा सतहर्ष उतकेर दोपायेर पूर्बे तय एबम् तापो आधिपा दिस हिन्दीर माध्यमे।

वयास में सिसहुट चटवींन डाका घारि प्रदेशों और लोमर बर्मा के रोसांन घाराकान घारि प्रदेशों में हिन्दी की सूफी प्रेमसापी-परम्परा के आख्यानों का बहुत प्रचार हुआ है। हिन्दी प्रभाव के कारण ही इस प्रदेश में बँगला-साहित्य के इतिहास में एक नये युग का प्रवर्तन हुआ है। जसा कि डा० सत्येन्द्रनाथ बोपास भी भी सिखते हैं 'इन मुसलमान कवियों को केवल धर्मात्मक काव्य-रचना की घारा परिवर्तन करते ही से घांति नहीं हुई, किन्तु फारसी और प्राचीन हिन्दी से आगत आशात पूर्व धर्मिनक आख्यान समूह के द्वारा बँगला-साहित्य में उन्होंने एक नये युग की सृष्टि की'। अत कमस- इस काल में हिन्दी प्रभाव बँगला में निम्न मानचित्र द्वारा स्पष्ट किया जाता है :

षष्ठ्यवोत्तर (अतम्योत्तर) काल में बँगला पर हिन्दी-प्रभाव



उपयुक्त मानचित्र को विस्तारपूर्वक विवेचन से इस प्रकार हृदयंगम किया जा सकता है।

१. यह मुसलमान कवियों समूह के निरक्षर धर्मात्मक काव्य रचनाएं घारा परिवर्तन करियाइ—घोष हृदयेंन ठाहा महे फारसि को प्राचीन हिन्दी साहित्ये हृदते आशात पूर्व धर्मिनक-आहिनी समूह बँगला-साहित्ये एक नव-युगेर सृष्टि करियेन।

२

दौलत काजी'

इस्लामिक बंगला-साहित्यकारों में सबसे प्रथम साधन विरचित हिन्दी-काव्य 'नैनासत' का सफलम्बन (Adaptation) लेकर सूफी साधक दौलत काजी ने भाराकाल राजसभा में सतरहवीं शताब्दी (१६९२-१६९८ ई०) में धीमुबर्मा (पिरि कु-यम्मा) के राजत्वकाल में अपनी 'सतीमयना धीर और बग़्दानी काव्य की सृष्टि की थी। 'नैनासत का बंगला सतीमयना धीर और बग़्दानी का प्रभाव दिखाने के पूर्व किञ्चित् हिन्दी प्रेमकाव्यमय साहित्य पर एक विह्वलम धृष्टि डालना समीचीन जान पड़ता है। क्योंकि किञ्चित् हिन्दीमूलक प्रेमकाव्यों का उत्पन्न मीढ़-बरबार (पश्चिमी बंगाल) हुसैनशाह के राजत्वकाल में होता है। यद्यपि काव्य-परम्परा ही इनका मूल है जैसे डा० सेन भी इसी मत से सहमत हैं वे लिखते हैं 'किन्तु पश्चिमी बंगाल (मीढ़-बरबार) से उत्पत्ती-पूर्वी बंगाल के प्रवेशों सिमहट और बटगाँव के संघर्षों से स्वामीय मुसलमान आदीरवारों के दरबारों में स्थायीकारित हुई, वहीं से भाराकाल रोजांग के राजाओं और मंत्रियों की समा में इन हिन्दीमूलक कहानियों का प्रवेश हुआ।" * हिन्दी में यह काव्य-परम्परा अपभ्रंश काल में अशुद्धिमान के सन्देशरासक से शुरू होती है, मुस्ता बादर का बंधायन, कुठबन की मूममासती मंमन की मुग्धावती से लेकर मसिक-मोहम्मद पायसी में परिपुष्टता धीर परि पक्वता को प्राप्त होती है, किन्तु अपभ्रंश प्रेमकाव्यमय-काव्य धीर अबधि प्रेममार्गी सूफी साहित्य में एक सूत्रम उत्तर है। अपभ्रंश प्रेमकाव्य-मूर्धतया लौकिक-श्रु गार से प्रोत्प्रेषित है किन्तु हिन्दी सूफी प्रेम-काव्य में लौकिक श्रु गार की रस रंजीनी के आवरस में सूफी सिद्धांतों की समिम्बन्धना है। हिन्दी में यह सूफी साहित्य ११वीं १४वीं और १६वीं शताब्दी तक बसता रहा है। साधन की नैनासत भी इसी परम्परा की उत्पन्न है।

मुसलमानों का राज्य लममग सारे उत्तरी भारत में कम चुका था। पहले कहा था चुका है कि बंगला में सूफी साहित्य और श्रु गारिक साहित्य की लौकिक परम्परा का भीपण्डेय मुसलमानों के द्वारा ही लौकिक प्रेम-कथाओं धीर प्रणय काव्यों द्वारा १७वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में होता है। हिन्दी में भी उस समय रीति कालीन श्रु गारिक परम्पराएं बनने लगी थीं। बंगाल में वैष्णव भक्तों की पदा

१ इतिहास—विशेष अध्ययन के लिये 'धीर और बग़्दानी धी सतीमयना' तथा
Beginning of secular Romance in Bengali Literature
(I Book)

२ डॉ० सा० इ० प्र० ल० पृ० १६४।

कवियों की भक्तकारों की गुंज कम होती जा रही थी। उस समय बहु मुसलमानी प्रेमालम्बक (Romantic) साहित्य बंगला भाषा एवं साहित्य के इतिहास में एक नया मोड़ उत्पन्न करता है।

शाहजहाँ राजसभा में इस समय दो महाकवि बीमत काजी और सैयद शाहासीम उत्पन्न हुए।^१ जिन्होंने हिन्दी छारसी काव्यों का प्रबलम्बन ग्रहण प्रनुरूप एवं अनुवाद से बंगला-साहित्य जगत में नवयुग का सुर्भोज्य किया।

बीमत काजी सूफ़ी साहित्य का ही नहीं अपितु समस्त बंगला-साहित्य का एकितवासी प्रकाश-स्तम्भ है। डा० सुकुमार सेन जी हमारे मत की पुष्टि करते हुए लिखते हैं 'बीमत काजी—बंगाली मुसलमान कवियों में ही नहीं बल्कि उसके पूर्ववर्ती प्राचीन बंगला-साहित्य के एकितवासी कवियों में वे सर्वश्रेष्ठ एवं प्रगल्भ हैं।'^२ बीमत काजी ने रोसाँव राजसभा में राजा श्री सुपर्मा के सरकर बजीर अदरफ़ सौ के अनुरोध से सामन विरचित हिन्दी काव्य 'मैनासत का प्रबलम्बन (Adaptation) लेकर अथवा क्वचित् स्मरों का अविष्कृत एवं अदरफ़ अनुवाद कर अपने बंगला काव्य 'सवीमयना श्री और अम्हानी' का प्रथम किया। इसी प्रथम में शाहन का बीमत काजी पर प्रमाण दिखाने के पूर्व साधन एवं उनके काव्य पर कुछ पंक्तिओं से प्रकाश डालना आवश्यक जान पड़ता है।

शाहन के व्यक्तित्व के विषय में मतभेद है। श्रीहरिहर निवास द्विवेदी इनको मुख्य कवि न मान कर स्त्री कवि, (कवयित्री) मानते हैं।^३ मैनासत के शाह में मुस्मा दाउद के अन्वयन का कबालक भी सम्पूक्त है। श्री हरिहरनिवास द्विवेदी सामन और उनके मैनासत की भाषा को प्रबन्धी न मान कर गौहारि छन्द के बजन पर श्वासिमरी भाषा^४ मानते हैं। जबकि डा० सुकुमार सेन इसकी भाषा को श्री हारि-दाउद के बजन पर बंगाली प्राचीन अथवा मानते हैं।^५ भाषा विषयक प्रसंग में श्वासिमरी भाषा की तो कोई सुदृढ़-साहित्यिक परम्परा नहीं प्रतीत होती। अथवा

१ बंगलाय हिन्दी-छारसी रोमांटिक काव्यशास्त्र प्राचीन हस्तेन रोसाँव दरबारे दुजन समा कवि, बीमत काजी श्री शाहासीम। पृ० ५०। पृ० ५०। पृ० २।

२ बीमतकाजी बंगाली मुसलमान कविदेर मध्ये श्रेष्ठ तबदूरे पुरानों बंगला साहित्ये एकितवासी कविदेर प्रगल्भ तिमि। पृ० ५०। पृ० १२।

३ देसिबे—श्री हरिहरनिवास द्विवेदी सम्पादित 'शाहन इत्य' 'मैनासत' सामन का परिचय पृ० ७१-७८।

४ देसिबे—मैनासत पृ० ११ श्वासिमरी/श्वारियरी/श्वारियरी/गौहारि/पृ० १०१ १२७ (भाषा-विशेषण)।

५ बी० सा० ६०, पृ० १०, पृ० २६६।

की काव्य-परम्परा तो इतिहास सिद्ध तथ्य है। किन्तु इस विषय पर अधिक लिखना अप्रासंगिक है।

मैनासत बहुत छोटा काव्य है किन्तु बीसत काबी ने इसका कुछ पार्थिव कृष्ण भावानुवाद किया है। इस कृमान्तर का समिप्राय लौकिक-प्रेम की कहानियों का प्रकार तथा बन रंजन था। बीसत काबी स्वयं लिखते हैं घरबी फारसी के घनेक उत्तम उपदेश थे। विविध प्रसंग और घनेक कथाएँ थी। गौहारि (गंवारि) घरबी और (खोट्टो) ठैठ ग्राम्य-हिन्दी वाली कहानियाँ थीं। जिनको सुनकर समा सरस्य रसास्वादन करते थे।^१ घररफऊँ हिन्दी-कविता घरबी के मैनासत को सुनकर बहुत प्रसन्न हुए थे तब उन्होंने बीसत काबी से अनुरोध किया यदि इसकी रचना देवी भाषा, (बंगला) में हो जाये तो सबसाधारण भी इसका आनन्द ले सकेंगे। तब बीसत काबी ने मैनासत का अनुवाद "सतीमयना घौ और बन्नामी" के नाम से किया क्योंकि साधन ने ठैठ बोहा खोपाई में अपनी कथा कही थी। बहुत सीय उस गौहारि भाषा का नहीं समझ सकते थे। देवी भाषा (बंगला) में पाँचाली छन्द में यदि इसकी रचना हो जाये तब सब साथ इसको सुनकर आनन्द ले सकेंगे। तब बीसत काबी ने उस प्रार्थना को सुनकर पाँचाली छन्द में मयना की भारती का वर्णन किया।^२

घरबी काव्य मैनासत पहले कुप्तप्राय था किन्तु अब उसकी कई पाण्डु-मिथियों का पता लगा है।^३ कई जगहों से प्रकाशित प्रतिमिथियाँ भी मिलती हैं।^४

- १ घरबी फारसी भाषा उत्तम उपदेश
विविध प्रसंग-कथा आसिस-विशेष ।
गुनियन गौहारि घौ खोट्टो बहुतर
सहबै महन्त सभा आनन्द लोक बहुतर ।

सती० म० ली० ब० पृ० ४८ ।

- २ ठैठा खोपाइया बोहा कहिला साधने ।
ना झूळ गौहारि भाषा कोन कोन जाने ॥
देवी भाषे कहूँ ठाकै पाँचालीर छन्दे ।
सकसे गुनिया केन बुझय सानन्दे ॥
तबे काबि बीसत बुझिया की भारति ।
पाँचालीर छन्दे केहे मयनार भारती ॥

(स० म० ली० ब०, पृ० ४९)

१ वैलिये मैनासत पृ० १३ ।

४ वैलिये—पायरा विरवविद्यालय की हिन्दी-विद्यापीठ की प्रबन्धीपिका में प्रकाशित सन् १९२६ । तथा विद्यामन्दिर प्रकाशन, बालियर, १९२९ ।

बीतल काजी ने अपने-अपने काव्य 'सतीमयना श्री सोर चन्द्रानी' का साधारण 'साधनरूप मीनासत' को बनाया है। दोनों के कथानकों में बहुत समानता है। मीनासत का वर्णन सीधा है किन्तु सोरचन्द्रानी तीन सप्थों में विभक्त है। इनकी कथा पर सिद्दाबसोकन करना प्रासंगिक हो सकता है। प्रथम सप्थ में सती मयना और गोहार देव के राजा लौरक का विवाह होता है। एक दिन एक भोगी ने मोहरा देस की राजकुमारी चन्द्रानी (चन्द्रानी) का चित्र लौरक को दिखाया। चन्द्रानी विवाहिता थी किन्तु उसका पति बामन और नपुंसक था, लौरक सती मयना को छोड़कर चन्द्रानी के देस का गया। वहाँ बामन को मार कर लौरक ने चन्द्रानी से विवाह किया। चन्द्रानी के पिता ने लौरक को राज भी दे दिया।

दूसरे सप्थ में मयना का बिरह वर्णन है किन्तु पड़ोसी राज्य का राजकुमार सातन मामनि को बूट मालकर मयना को धर्म पथ पर ले जाना चाहता है किन्तु मयना बुरी को पीट कर निकाल देती है।

तीसरे सप्थ में सती के परामर्श से एक ब्राह्मण के हाथ में एक पदी भेजकर सती मयना पति को अपनी पूर्व स्मृति मार दिमाती है। राजा लौरक अपने पुत्र के हाथ मोहरा का राज्य समर्पित कर चन्द्रानी के साथ मयना से धा मिलता है।

बीतल काजी ने केवल एक सप्थ पुरा लिखा था; दूसरे सप्थ में म्याह्वेने महीने का वर्णन सिधते ही कवि बीतल काजी का स्वभाव हो गया। दूसरे सप्थ का शेष और पूरा तीसरा सप्थ संवत् चालाधीस ने बीस साल बाद ममनठापुर के मनुष्य से पूर्ण किया था। पहले कहा था चुका है कि मीनासत का अक्षमयन (Adaptation) लेकर बीतल काजी ने सतीमयना श्री लौरचन्द्रानी का सुजन किया। कुछ का साधारण एवं भावानुसार भी है। सम्पूर्ण कथानक तो साधन बिरचित मीनासत से लिया गया है। साधन के मीनासत एवं बीतल काजी की सती मयना श्री सोर चन्द्रानी के तुलनात्मक अध्ययन से मीनासत के प्रभाव का सतीमयना श्री लौरचन्द्रानी के ऊपर स्पष्टीकरण हो सकेगा।

साधन का मीनासत एक छोटा काव्य है। साधन के सप्थ काव्यों की श्रेणी में परिगणित किया जा सकता है। पहले मुष्टप्राय एवं अत्राय था। केवल कवि एवं काव्य का नाम ही शेष रह गया था। साधन इसकी अनेक हस्तलिखित प्रतियाँ पाठान्तरों के साथ उपलब्ध होती हैं। किन्तु बीतल काजी की सतीमयना श्री सोर चन्द्रानी एक बड़ा काव्य है। यह महाकाव्य और सप्थकाव्य के मध्य में टकरता है। इसकी हम एक बृहत् प्रेमावधान काव्य कह सकते हैं। साधनरूप 'हिन्दी-मीनासत' का प्रभाव बीतल काजी पर मात्र एवं भाषा दोनों रूपों में है। विशेष कर बीतल काजी की सतीमयना का द्वितीय सप्थ तो साधन की मीनासत का अनुकरण है।

बीसत काजी की भाषा का साधन की भाषा के साथ बहुत मेल है। कुछ उदाहरण देकर इस कथन की सत्यता प्रकट करते हैं।

१ बीसत काजी—

नरैन्द्र नृपति सुत कपट सहाय सुत नाम तार छातन कुमार ।

(स० म० सौ० प० पृ० १११)

साधन—

सातव बँबर नगर कर पूत कपट बप तारर कर पूत । (मै० स० पृ० ५)

२ बीसत काजी—

'तोमार बनरुबरे, पाई करि बिल मोरे शिशु कासे कुम्ब किनु लीके

(स० म० सौ० प० पृ० ११३)

साधन—

'तोर पिता पाइ ही कीनी बार पनें तोहि कुचो बीनी'

(स० मै० पृष्ठ ६)

३ बीसत काजी—

'शत्रु ना करे हेन बँ करिल सोरे, पयसे बिरह कुचकिया मैस मोरे'

(स० म० सौ० प० पृ० ११५)

साधन—

'करहि न बँर चाँब जो कीन्हा बारि बैसि मोहि कुचकोन्हा'

(स० मै० पृष्ठ ८)

बीसत काजी में साधन के शब्दों का भी हु-ब-हु अनुकरण किया है। कुछ परिवर्तन के बाद वे पर हिन्दी के ही प्रतीत होने लगते हैं। कुछ उदाहरणों से सिद्ध किया जाता है :—

१ बीसत काजी—

तोर कुच बैसि मुइ मरि पाम बोसों सखुदय पाणी ।

मासती भ्रमर बँन समागम, चाब घँता बैम घानि ॥

(स० मै० सौ० प० पृ० ११७)

साधन—

बोल छाड़ि बैहि मोह मनु मना लाओ कहों ।

घानि मिसाओं तोहि मासति कोँ चौरा बिसे ॥'

(स० मै०, पृ० १०)

१ पाठ मेर—तेरे कुच भरत हूँ बोल बचन ई मोहि ।

बत मासति कोँ भ्रमर, घानि मिसाओं लोही ।

पंक्तियाँ १२४ १२८ ।

२ दोसठ कात्री—

भाबप मासठे मयना बड़ गुल सापी ।
रिमझिम बरिदय मनोमब जापो ॥
परतो वष्टु धारा रात्रि धांधियारी ।
सैमय बपुर सने प्रमेर धामारी ॥
श्यामल धबर श्यामल सैल सैति ।
श्याम लसि बधरिद्य निबसक मुति ॥

(स० म० ली० ख० पृ० १२०)

इन पंक्तियों में मासठे 'से 'से' बपुर में से 'र' सने का सन धीर प्रेमेर के 'र' निकाल देते पर यह पद हिन्दी का बन जायेगा । बिना पदों को हम भाबपस के उदाहरण स्वरूप लेते हैं उनमें माया एवं भाव दोनों का ही प्रभाव है । जैसे—

१ दोसठ कात्री—

मंदिरेसे से मासिनी प्रवेश करिम जानि सिहासन बसिला कुमारी ।
हास्य मुझे पूछे रामो समय बड सो मासिनी कीया हनते धापमन तोमारि ॥

(स० म० ली० ख० पृ० ११३)

साधन—

मासिनी जाय मंदिर महि पंठी, मयना जहाँ सिहासन बटी ।
बपक फूल शौसर हाब बीगहा भेठ धर कीमू कुहाब ।
हसि करि पूछे मयना रामो कह भाषायमनु कीनि अपमानी ॥

(स० म० पृष्ठ ६)

२ दोसठ कात्री—

ना रहे बादण मन बित बहे धनुसम हुया मात्र स्मारिते तोमार ।
बेसिसू बदन-बाँध पुबिस मनेर धान्द एतजानि प्राइमु बैसिबार ॥

(स० म० ली० ख० पृ० ११३)

साधन—

मनु न रहे हियरा उठापो धापी बरे तन मोहि ।
सिबरि सिबरि कुच उपरै, बेजत घाई तोहि ॥'

(स० मं० पृष्ठ ६)

३ बीसत काबी—

कुन्नी बचन सुनि चाई हेन सत्य जानि ।
 बापित बोलाई ततकाले ॥
 सुबंधि कुमुम्ब रये मार्जन कराइल अगे ।
 स्नान कराइला सबी पये ॥

(स म० ली० च०, पृ० ११३)

साधन—

मैना बात साधु करि जानि कुन्नी के बोले पतियानी ।
 तबहीं नाईनि बैच कुलाई, कु कु म मरदन कुइनि महवाई ॥

(स० म० पृष्ठ ७)

४ बीसत काबी—

जे पालय प्रेमाकुर जायत बीदन ।
 तार सपि प्रीति सुन बाझाय लुजन ।
 काँचा मुता प्राय जिन्हे प्रेमाकुर बार ।
 कह्यत बीसत काबि से कि प्रेमसार ॥

(स० म० ली० च० पृष्ठ ११५)

साधन—

तिह सों कीबै मैह, बिह सों जर बीबा हीये ।
 साजन कीन सनेह हूटे काबे सुत बी ।

(स० म०)

इस प्रकार भावपक्ष एवं कलापक्ष के अनेक उदाहरण बीसत काबी में साजन से लिये हैं। जैसे—

१ बीसत काबी—

मय लम मोर एइ मास । पैइ बल हास्य बिनाते जोविस ।
 बिच्छीक लेइ उपहास । पिया बिहीन पुत मजुरल करि कत
 भाबुरीह बिपसम ताहे ।

(स० म० ली० च० पृष्ठ ११७)

साधन—

रिटु बरत मानिनि बी भाये, बात कहत मोहि मैकु न भाये ।

(स० म० पृष्ठ २१)

प्रथमा—

रितु अनुरितु रस अनरसह भोहि मनहि न भाव ।

रितु बसंत उदयनि, जब मोरकु धरि भाव ।^१

दोसत काबी का समस्त बाण्डुमासा हिन्दी मीनासत के बाण्डुमासा के आधार पर विरचित है।^२ दोसत काबी ने साधन के काव्य की नाटकीयता पार्श्वों का मनोबैज्ञानिक-विश्लेषण एवं नारी चरित्र के सूक्ष्म-निरीक्षण को धारमसाध किया है। प्रकृति वर्णन मानव एवं प्रकृति का साहचर्य प्रकृति-परिवर्तन के साधन मनोमासों का उतार चढ़ाव और बिच्छूनी की प्रकृति के प्रति प्रतिक्रिया आदि में 'मीनासत का अनुकरण'सतीमयता भी और अन्यायी में है।

माया की दृष्टि से तो दोसत काबी साधन के अन्तर्गत काव्य-विन्यास, कहीं-कहीं विद्यापति ठाकुर, ब्रजबुक्ति के परकता संस्मरणों एवं कहीं-कहीं दीव गोविन्द के उच्यता अपदेव का भी चली है। विद्यापति की शैली के अनुकरण पर दोसत काबी के एक ब्रजबुक्ति के पद का उदाहरण देते हैं—

जसा जकीत बिनि रजनी इम्पति बिनि,
एकाकिनी जामि प्रेम भासेरे ।
सीर बिनि सीर भोर नयने धारिके मोर
तनु रहे मदन — हुताघेरे ॥
अविरत सीर इति अपपति कलाबती
आन मने समतुल न हेरे ।

(स० म० सी० प० पृष्ठ १२२ १२३)

३

“महाकवि सैयद आलाऔल”^३

बंगला के मुस्लिम साहित्यकारों में महाकवि आलाऔल सर्वप्रसिद्ध एवं सर्वप्रिय कवि हैं। साहित्य-शौर्ध्व की दृष्टि से उनका स्वान मुस्लिम-बंगाली

१ पाठ येद—

रित अनरित रस अनरस भोहि चित सीर न भाव ।

रितु सबै रस भावहोँ जब सात्म धर भाव ॥ (स० म० पृ० २८)

२ देखिये—स० म० सी० प० पृष्ठ ११६ १४० दोसत काबी ने साधन के मीनासत के कारण बाण्डुमासा का अनुकरण किया है।

३ डॉ० सा० इ० प्र० डॉ०, पृ० २०४, पृ० ८४, देखिये विशेष अध्ययन के लिए डा० सत्येन्द्रनाथ बोयास का डी फ़िल्मू कसकता विद्वत्विद्यालय का प्रबन्ध—
Beginning of secular Romance in Bengali Literature (II Book).

साहित्यकारों में दोसत काजी से दूसरा है। जिस प्रकार दोसत काजी ने अक्षरफर्मा के धनुरोच से साधन विरहित रीतासत का अवलम्बन कर बंगला 'सतीमयता श्री और चन्द्रानी' की रचना की थी। उसी प्रकार सैयद आतामौस ने भीचन्द्र सुधर्मा (सायब मंभार धर्मात् खो-मिन्तार) के राजत्वकास (१९४१ १९३२ ई०) में श्री कुरेजी मगन ठाकुर के धारण से हिन्दी के सुप्रसिद्ध महाकवि मलिक मोहम्मद जायसी के महाकाव्य पद्मावत का अवलम्बन धर्मात् धारण लेकर बेंगला पद्मावती का सृजन किया था। आतामौस की पद्मावती कुछ मौलिकता लिये हुए है। किन्तु यह हिन्दी महाकाव्य का अधिकतम धनुवाद नहीं है। सधनुष इसमें भाषा एवं भाषों का ग्रहण (Adaptation) है। डा० गुरुनार सेन के शब्दों में आतामौस की प्रथम एवं श्रेष्ठ रचना पद्मावती पाँचाली काव्य जायसी की पद्मावती (पद्मावत् भवता पद्मावती) काव्य का कवचित-स्वाधीन कवचित-सुमानुगत धनुवाद है।^१

कवि ने स्वयं स्वीकार किया है, समा में जायसी के काव्य के प्रसंग में प्रसन्न होकर मगन ठाकुर ने आतामौस को आज्ञा प्रदान की कि इसका बंगालुवाद करो जैसे "इस पद्मावती की सरस रसकथा को रीस ने (जायसी ने) हिन्दुस्तानी धर्मात् हिन्दी भाषा में लिखा था। रोसाय प्रदेश में बूरे सोय इस भाषा को नहीं समझते थे। यदि पवार छन्द में इसकी रचना हो तो सब सोयों की भाषा पूरी हो सकती है। जिस प्रकार दोसत काजी ने चन्द्रानी (श्री चन्द्रानी) की रचना लखकर बजीर अक्षरफर्मा की आज्ञा से लिखी थी इसी प्रकार मेरी आज्ञा (मगन ठाकुर) के धनुवाद पद्मावती की रचना करो।"^२

बेंगला पद्मावती की हस्तलिखित प्रति दुर्लभ है, डा० मोहम्मद गहिदुस्सा के पास अत्युत्तम कवीय साहित्य विचारण द्वारा संवृद्धित ४० प्रतिमाँ फारसी अक्षरों में

१ 'आतामौस प्रथम एवं श्रेष्ठ रचना "पद्मावती पाँचाली काव्य जायसी (पद्मावत पद्मावती) काव्येर कवचित स्वाधीन, कवचित-सुमानुगत धनुवाद"। (बौ० सा० इ० प्र० अंक पृ० १०४)

२ यह पद्मावतीर सरस रस कथा हिन्दुस्तानी भाषे श्रेष्ठ रचिवाये पीया। रीसगिते आन सोरु ना बूये पभाव पवार रचिते पूरे समाकार आत्र। अहेन दोसत काजी चन्द्रानी रचित लखकर बजीर धारणके आज्ञाविल। तेन पद्मावती रच मोर आतामौस। —पद्मावती पृ० २२।

निश्चित पद्मावती की प्रतियोगिता बतसाईं जाती है।^१ किन्तु परस्पर प्रभाव दिखाने के लिए कुछ तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक है। प्रसकार स्वयं स्वीकार करते हैं :—

एतद् भूमे कवि महात्मने करि भक्ति
स्थान स्थाने प्रकाशित निजमन कविते

(पद्मावती पृ० २६)

अर्थात् इसी सूत्र से मोहम्मद कवि की भक्ति करता हूँ स्थान-स्थान पर अपने मन की उचित का भी प्रकाश डालता हूँ। यद्यपि यह कवि की स्वीकारोक्ति है कि वह बामसी का श्रेणी है। मुक्त मुसाधार बामसी ही है। आभासीत में केवल (Adaptation) है। स्वयं कवि का कथन है, बामसी के काम्य का प्रचार आराजाल प्रदेश तक वा मयल ठाकुर ने इसके प्रचार से प्रभावित हो आभासीत को निरस्त का अनुरोप किया। डा० सत्येन्द्रनाथ घोषाल जी हिन्दी कवि का गम्भीर प्रभाव मानते हैं।^२ यद्यपि किञ्चित् तुलनात्मक दृष्टि से प्रभाव का प्रकाशन उदाहरणों के साथ बौद्धनीय है।

बंगला पद्मावती के दो बयान, प्रथम एवं द्वितीय तो बामसी के पद्यावत के अनिकस शब्दों अनुवाद हैं जैसे—

बिजमिस्ता प्रमुर नाम आरम प्रथमे ।

आद्यमूल अिर सिद्ध प्रोमित कल्पने ॥ (पद्मावती, पृ० १)

तथा आभासीत— प्रथमे प्रथम करि एक करतार,

बेई प्रभु जीवनाये स्थापित संसार ।

करिस पुर्वेत् आदि जगतिर प्रकाश

तारवरे प्रकशिस सिई कबिलास । (पद्मावती, पृ० १)

१ सर्वप्रथम पद्मावती का प्रकाशन १८६६ में हबीबी प्रेस से हुआ तीसरा संस्करण (१९३८ बनारस) में प्रकाशित हुआ, सर्वाधिक प्रमाणिक प्रति अभी तक यही मानी जाती है। डा० सत्येन्द्रनाथ घोषाल पध्वल बंगला विभाज पटना विश्वविद्यालय ऐबनागरी शहरों में हिन्दी विश्वपीठ सावरत विश्व विद्यालय से एक प्रति प्रकाशित करा रहे हैं। घोषाल जी के अनुसार यह सर्वाधिक प्रमाणिक प्रति है। इसका पाठ २६ प्रतिष्ठत वे कुछ मानते हैं लेखक के साथ दावि निकेतन में विचार-विमर्श करते समय उन्होंने अपना मत प्रकट किया।

द्विधिये—पुंवि परिचित-बंगला विभाग-शाखा विश्वविद्यालय द्वारा १९२८ में प्रकाशित तथा बंगला पुंवि साहित्य पृ० ७१।

२ द्विधिये—Beginning of Secular Romance In Bengali Literature (II Book)

जायसी—

सौबरो खादि एक करताब,
अहोबिड बीन्ह कीन्ह संसार ।
कीन्हैति प्रथम जोति परमासु
कीन्हैति तेहि विरैल कबितासु ॥ (पद्यावत पृ० १)

आसाफीस ने ईश्वर-महिमा बरुंग में जायसी की पद्यों को अपनाया है।
इश्वरत मोहम्मद की प्रशंसा में भी हिन्दी कवि का आसरिक अनुकरण है।

आसाफीस—

निज सखा मोहम्मद प्रथमे सुजिता ।
सेइ से ज्योतिर भूसे भुवन निम्नता ॥
से सकल ज्ञान कथा कहिते अपार ।
स्वमुखे पुस्तक कथा खाई अतिभार ।
(पद्यावती पृ० ११, १२)

जायसी—

कीन्हैति पुरय एक निरमरा ताजें मुहम्मद पुनिजें करा ।
प्रथम ज्योति बिधि तेहि खंसाजी प्रीतेहि प्रीति सिष्टि उपराजी ॥
(पद्यावत पृ० १)

आसाफीस ने हिन्दी पद्यावत का अनुकरण किया है, यह अनुकरण कहीं
शाब्दिक अनुवाद में है कहीं भावानुवाद में है। समस्त प्रेरणा तो हिन्दी काव्य की
है। बंगला पद्यावती में लौकिक पराधी के बरुंग में एवं सूफी-बार्धनिक प्रवृत्ति की
अभिव्यंजना में हिन्दी पद्यावत की मसक है। कथानक पात्रों का कथोपकथन और
मानव भावनाओं का मनोवैज्ञानिक आरोह-अवरोह में जगमग जायसी की छाया है।
जायसी गुरु संवाद में नाटी-मुसलम क्य-सौन्दर्य सब और ईद्यों का विचित्र आसाफीस
ने जायसी की परिपाटी पर किया है —

आसाफीस—

सत्य कह शुकरर आपार पोकर पदूमिनि तिहुलदोये कैमल सुम्बर ।
गुपति समल गुठ यदि बन आन संतारे किचप खाई आकार समान ।
पद्मावती रूप गुठ भाबिया धंतरे राबीर बरन हेरि कहे बीरे घीरे ॥
कैह तरोबरे नाहि हस्तिर गमन तथा बक हंस दुस्य भावे से आपन ॥
(पद्यावती पृ० ४३)

जायसी—

जी न कहति सत सुमटा तोहि राजा के आन ।
है कोई एहि जगत न्हें मोर रूप समान ।

सँवरी रूप पद्मावती केरा हँसा सुधा रात्री मुल हेरा ।
 केहि सरवर महुँ हँस न पावा बकुली तेहि जल हँस कहावा ॥

(पद्यावठ पृ० ८१)

गारी-सहज रूपा एवं सपत्नी भाव का ममूना द्रष्टव्य है ।
 प्रासाधीस—

हलाहल सुम्य हूल मोर एहि पाकि
 सख मुज छष्ट हैब यदि तोर राखि ।
 पाववा

के जग पोषय पुनि ना हूल ताहार
 एहि बोये हाडे सुनि केजे कारेबार ।
 मुजे कहे एक कथा हूँठार भान,
 मार शुक्रनिपा साखी नाहि केइ स्वान ।

(पद्यावठी पृ० ४३)

पामसी—

बेनु यह सुमटा है भँदवाला मएउ न ताकर जाकर पामा ।
 मुज कह भान वेद बस भाना तेहि धौगुल बस हाउ बिकाना ।
 पख न राखिअ होइ कुमाखी तहँ ते मार जहाँ न साखी ॥

(पद्यावठ पृ० ८३)

पामसी के मुहावरों (प्रवाहों) उपमा रूपकों का भी प्रासाधीस में अपने
 काम्य में प्रयोग किया है । जैसे—

प्रासाधीस—

रुज दुटे हेन स्वय की लयि परिल ।

(पद्मावठ पृ० ४४)

पामसी—

कान दुडे केहि धमरन का ले करव सो सोन ।

(पद्यावठ पृ० ८२)

प्रासाधीस—

किवा राखी किवा बासी किवा धम्य जनि
 बाके स्वामी बया कर सेइ से भावानी ।

(पद्यावठी पृ० १० ४६)

पामसी—

का रात्री का बेरी कोई । जा कहुँ मया करहु भनि सोई ।

(पद्यावठ

भासाभील—

तोमारे बिनते पारे कौन ध्यास भोज
 प्रापन करिके माघ पाय भोमा भोज
 (पद्यावती पृ० ४९)

जायसी—

तुम्ह सी कोइ न बीठा हारे बरबसि भोज ।
 पहिनें धायु जी बोने करे तुम्हारा भोज ।
 (पद्यावत पृ० ४९)

इसी प्रकार धनेक उदाहरण हैं ।

पुस्तोचित काव्यरत्ना का विवरण भासाभील ने जायसी के अनुसार किया है । राजा की मुक के प्रति जिज्ञासा में द्रष्टव्य है ।

भासाभील—

सत्य कहू मुकबर सत्य जममूल
 सत्येर कारये तोर बदन रातुल ।
 सत्येते बाँबिधै सृष्टि सत्यबारी जन
 सत्य हुन्ते सबही बग आनिधौ (ए) कारण ।
 यथा सत्य तबाते साहस सिद्धि पाय
 सत्य हैते सतीगारी स्वामी संगे जाय ।
 (पद्यावती पृ० ४९)

जायसी—

राजे कहा सत कहू सुभा बिनु सत कस जस सेबर भुधा ।
 होइ मुसरत सत की बातः जहाँ सत तहें घरम सपाता ।
 बाँधी तित्ति ग्रहै सतकेरी लखिमि प्राहि सत की बैरी ।
 सत जहाँ साहस सिधि पाबा जी सतबारी पुष्य कहाबा ।
 (पद्यावत पृ० ९०)

पद्यावती के रूप-सौन्दर्य वर्णन में भासाभील ने जायसी के नख-दिल वर्णन का अनुकरण किया है । भासाभील भी जायसी की तरह सूफ़ी शायक थे । पद्यावती के रूप-सौन्दर्य वर्णन में सूफ़ी-वर्णन (प्रेम-उत्पन्न) का प्रतिबिम्ब समस्त विवरण में स्पष्टता है । पद्यावती विरह-सौन्दर्य का मूर्तिमान स्वरूप है । प्रेम की पीर सूफीवाद का प्राण तत्व है । दोनों ही काव्यों में इसकी अभिव्यक्ति है ।

भासाभील के काव्य में जायसी की पद्यावती का काव्य-सौन्दर्य एवं भावा-प्राप्तीय स्वतः ही मान्य है । सबमुक्त यह जायसी की पद्यावती का बंगालीकरण है । भाषा तथा Local-colour भिन्न भिन्न हैं किन्तु उनका काव्यामृत एक ही

है। राजा रतनसेन (प्रियतम साधक) प्रियतमा पद्मावती (ब्रह्म) का रूप-सौन्दर्य हिरामन मुद्रा (गुरु या पीर) से सुन कर भाव बिभोर हो समस्त ब्रह्मांड में उसके ही मूर की मूर्तरूप देखता है। जैसे—
प्रासाधोस—

घोडिया काग्यार रूप नृप उत्सवित
प्रेम भावे शरीर हृदय पुलकित ।
पंडितेर बचन आनित तत्त्वसार
बिभ रूप रहितेक हृदय माग्धर ।
मोहम मूरति परि हूवे प्रवेधिस
घट पुर्न हृदय ज्योतिषय प्रकाशोत ।
चितेर मयन गिरधिस रूप छाया
जल मीन कुम्भ मनी जेन एक छाया ।

आमरी—

(पद्मावती पृ० ४७)

सुनि रवि नाऊ रतन भा रासा पंडित केरि इही कनु बाला ।
तुई मुरम मूरति बह कही बिल मर्ह सायि बिभ होइ रहि ।
जनु होइ मुक्क साइ मन बती, सब घट पुरि हिप परगती ।
परब हीं मुन जाइ बह छाया जल बिनु मीन एकत बिनु कामा ।

(पद्मावत पृ० १३)

पहले कहा जा चुका है कि बंयासी कवि ने आमरी के माव मापा एवं वार्धनिक पोनीय का बहुविध अनुसरण किया है। पद्मावती के रूप-सौन्दर्य का वर्णन समस्त बयत को आचार मानकर किया है। पद्मावती विश्व हृदय एवं धनगत सौन्दर्य दिव्य ज्योति का प्रतीक है। बंयासी कवि ने आमरी के रूपक (सूक्ष्मे दर्शन) को आचार मान कर अपने महाकाव्य का सृजन किया है।
प्रासाधोस ने आमरी के मानव मावनाओं के सूक्ष्म पर्यवेक्षण (Minute observation) को अपनाया है। उनके काव्य में मानव-जीवन का सूक्ष्म

1 आमरी के रूपक 'ततचित उर मन राजा कीर्णा को आचार्य रामचन्द्र गुकल पद्मावत का प्रासाधिक मंसा मानते हैं। (जा० सं०) हि० सा० ३० पृ० १०२। डा० मुकुमार सेन महोदय भी प्रासाधोस के काव्य में इसका ब्रह्म मानते हैं। देखिये—जा० सा० ३० प्र० प० पृ० १८१। डा० बानु देवतारण अद्यमान इसकी प्रशिष्ट मानते हैं पद्मावत संजीवनी-टी का। डा० सत्येन्द्रनाथ पोपास उनका समर्थन करते हैं।

घाम्ययन है कम्पासों का तीर्थ-स्नान में स्नान इसका स्वतंत्र उदाहरण है। मानव जीवन की अस्थिरता दोनों कालों में समान है।

घासाधीन—

घापना मनेसे कम्पा बेजह बिचारि,
पितार पृहेसे कम्पा रहे दिन चारि।
के किपु केनिते घोम्य पाघो घाज केनि
कासि अशुरासे येन कोया पाये रसकेनि।
निज बत ना हइव घापन इच्छामन
सखियन संगे पुनि कोया से मिलन।

(पद्यावती पृ० ३१ ३७)

घायसी—

ऐ राती मनु बेनु बिचारी एहि नैहर रज्जा बिन चारी।
जौ लहि प्रहै पितारकर रज्जु, केनि केतु जौ केनहु पाजू।
पुनि सामुर हम पोखक काती। कित हम कित यह सरवर पाती।

(पद्यावत, पृ० ६१)

घासाधीन ने घायसी के प्राकृतिक सीन्धर्म एवं मानव-हृदय की सर्वत्र प्रति स्वाभाविक आकर्षण को भी हु-ब-हु प्रपत्ताया है। पद्यावती के संय लक्ष्मियों की बल श्रीदा इसकी साक्षी है।

घालाधीन—

एक अग्र बेज घपने निहाकाले बिचसे दोसर अन्न प्रवेशिल जाले।
हेनकाले पद्यावती हास्यर मुनि मजुर बचने कहे मुन सब सखी।
रपामस रपामस संगे पीरी संगे बीरी बुटे बुटे हार लइ केरवार करि।

(पद्यावती, पृ० ३२)

घायसी—

सागी केनि करे मज नीरा। हुंस लयाइ बँठ होइ तीरा।
पद्युमावती कोठुक करि राखी। तुम्ह लसि होठु तराइन लाली।
बाहि मैनि कँ सेल पसारा। हाव बेह जौ सेलन हारा।
सँबरहि सँबरि मोरिहु मोरी। प्राबनि घापनि लीन्हूँ सी जोरी।

(पद्यावत पृ० ६३)

घायसी के परम्परागत भाग्यवाद का ग्रहण भी बँपला पद्यावती में है।

घालाधीन—

घाय प्रभु निराजन त्रिभुवन कर्ता।
अत जीव अमु सफलैर भव वाता।

पायावेरमध्य कीट नहि बिस्मरण
यथा तथा भक्षयाने करहु पालन ।

(पद्यावली, पृ० ३४ ३८)

जायसी—

ए पोछाई तू ऐस बिबाता । जाँबत जोउ सबक मख दाता ।
पाहुन महें न पतग बिसारा । जहँ तोहि सँबर बोहू बुई बारा ।

(पद्यावत पृ० ६६)

रत्नसेन के प्रेम एवं बिच्छू साहित्यिक कार्यों का बर्णन आत्मप्रीति में जायसी के अनुसार ही किया है ।

आत्मप्रीति—

रत्न तुम्य प्राप्ति हैब धनुम्य मायिक ।
अग्र सूर्य मिलने आनन्द हैब बिक ।
मासति अनरा प्राय हृदया चियोपी ।
राज्य पाठ त्यसि साइब हृदय महयोगी ।

(पद्यावली पृ० ३८)

जायसी—

पदिक पदारप सिखी लो जोरी ।
जदि सुबख जसि होइ धंजोरी ।

(पद्यावत पृ० ७२)

डा० मुकुमार सेन का मत है "आत्मप्रीति में हिन्दी पद्यावत का आचार ग्रहण (Adaptation) किया है" । बंगाली भाव में कवि की कुछ मौलिकता भी है । किन्तु थोड़ी पहचान से दोनों काव्यों का तुलनात्मक-दृष्टि से अध्ययन किया जाये तो आत्मप्रीति की मौलिकता नाममात्र की ही मिलेगी । हाँ कुछ प्राकृतिक दृश्य ध्वनिध्वनि बंगमूर्ति के हैं । नारी सौन्दर्य चित्रांकन में कुछ बंगल है । ऐसा होना स्वाभाविक है, क्योंकि कोई भी कवि वर्तमान दण्डकाल परिस्थितियों से भुँई नहीं भोड़ सकता है । प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप में उनका प्रभाव होना अवश्य मावी है ।

आत्मप्रीति—

जखने सुजिन बिधि जगतेर ज्योति
किबित भ्रमक पाइल हिरा रत्न मोति ।

(पद्यावली पृ० २१ २६)

१ सेयक की डा० सेन से इस विषय पर जहाँ हुई । उन्होंने इसको स्वीकार किया ।

बायसी—

बह जो जोति हीरा उपराही ।
हीराबिपहि सो तेहि परिछाहि ।
बैहि बिनबसत जोति निरमई ।
बहुतन्ह जोति जोति जोहि मई ।

(पद्यावत पृ० १०४)

बिरह पीड़ा या प्रेम की पीर ही काम्य की आत्मा है। बैयसा कवि ने हिन्दी काम्य की इस आत्मा को यही प्रकार सुरक्षित रखा है।

भालापील—

तार बाम दासि एक तिल मनोहर
पोतलिर छाया किवा बर्षल अंतर ।
बैह लोक तिल सेइ तिले हुय बरधन
तिले तिले करि अंग करय बाहन ।

(पद्यावती पृ० ५९, ५२)

बायसी—

तेहि कपोल बाँध तिल परा बैई तिल देखसो तिल तिल करत ।

(पद्यावत पृ० १०९)

नख-छाज बर्तन में भी हिन्दी काम्य का अलरस अनुकरण है। शरीर के अंगों के वर्णन की समस्त उपमाएँ बायसी ही से ली गई हैं। भुजा की उपमा कमल बंद से कुर्ची की कमर कटोरा से सदन की कमल पाटक से तथा कटि की छिह से इत्यादि सब हिन्दी-काम्य परम्परा के अनुसार हैं। प्रेम का आदर्श भी बायसी का ही है।

भालापील—

प्रमैर सागरी दात उडिन हिम्नोस प्रेम रूप मूल प्रेम बिनहेर मूल ।

(पद्यावती पृ० १७)

बायसी—

परा सो प्रेम समु ब सवारा लहरहि लहर होइ बिसम्भरा ।

(पद्मावत, पृ० ११२)

भालापील—

गुबर दातव्य दिव्य हरे अग्नि कच मेला ।

प्रग्गबलित करे बैह शिव्य महाजना ॥

(पद्मावती पृ० ९१)

बंदाबोतर-नाम

बायसी—

गुप्त बिरहु बिमयी मेला जो सुलपाइ लेइ लो बेला ।
(पद्यावत पृ० १२०)

धामाधीस—

राज्यपाठ त्येबिया नृपति हैल योगी ।
करैते किंगपुर (किपरी) लइ बाजाय बियोगी ।
शिरे बडा कर्न मुद्रा मध्य कलेबर ।
करी तिया उम्भूर भिजूल सैया कर ।
(पद्यावती पृ० ११ १२)

बायसी—

रजा राज राजामा जोयो, घोर किपरी करयहूँ बियोगी ।
(पद्यावत पृ० १२१)

राकुन-अपघकुन का विचार होनों कवियों में है, मातृ प्रेम की म्मक दोनों
में समान है । माता कहती है—

धामाधीस—

राजा बकबती दुमि संसार माम्भरे ।
तोमात्रिक केबा सुख माध्य संसार ।

पाठ—

राज बकबती दुमि संसार माम्भरे ।
तोमात्रिक केबा सुखी माध्य सत्तारे ।
(पद्यावती पृ० ११ ११)

रत्नसेन कहवा है—

धामाधीस—

परि जाल हृदय संसार सुख भोग ।
राज्य त्यत्रि गोपीचन्द्रना साधित योग ॥
(पद्यावती पृ० ११, १७)

बायसी—

जो मल होत राज जो भोगू ।
गोपीचन्द्र कस सावन भोगू ।
(पद्यावत पृ० १२६)

नारी हृदय का विचार बंमना कवि ने बायसी से ग्रहण किया है—

घालापील—

बेधाल्तरे आयपति शुनि नावपति ।

सजस लयने घाति करित भितति ।

(पद्यावली, पृ० १४)

बायसी—

रोवे नागमती रनिबासु । कोइ तुम्ह कंत बनिह बतबासु ।

(पद्मावत पृ० १२६)

राजा के साथ बतबमन सद्यत अन्य राजकुमारों का बर्णन भी घालापील ने हिन्दी काव्य के अनुसार ही किया है ।

घालापील—

नूपति गमन शुनि हृदया विभोपी ।

पोलघत राजार कुमार हूँत मोपी ।

(पद्यावली पृ० १९)

बायसी—

राय राने सब भये विभोपी । सौरह सहस कुँबर भए जोगी ।

(पद्यावत पृ० १२६)

प्रेमी राजा का विवर्णन बंगला काव्य में हिन्दी काव्य के अनुसार ही है ।

घालापील—

रात्रि हूँते वन मध्ये करेन्त बसति ।

सवे निद्रा आयन्त ज्योन्त भरपति ।

आर हूँते दग्धवसित प्रेम हुताघन ।

किबा ठार निद्रा सुक शयन भोजन ।

(पद्यावली, पृ० १८)

बायसी—

ठाँबहि ठाँब सोबहि सब जेत ।

रात्रा जागे घापु मकेत्ता ।

कैहि के लिए प्रेम रंग जाना ।

का तैहि धुक नीर बितराना ।

(पद्यावत पृ० १३३)

रात्रा पत्रपति का उपस्थान दोनों महाकाव्यों में समान है ।

घालापील—

रत्नसेन हृदय भोमि अति सम्भाविते घाइल शुनि नूप यत्रपति ।

(पद्यावली पृ० १८)

बायसी—

रत्नसेनि भा बोगी बती । मुनि भेदे प्राएउ गजपति ।
(पद्मावत पृ० १३६)

ही देते हैं—
प्रासाधोस—

हिन्दुस्तानी भासे न म घरे एइमत । संस्कृत भासे जेइ गुनह बेकत ।
प्रथमे तबप इमु सुरापूत घार बयि-गुग्य जलान्तर मुनि कहि सार ।
ए सब समुद्र तैजि साहस संयोग, सत मध्ये एक जाय पुष्य फल माय ।
एमन संकट मध्ये यमन तोमार प्रापने भाबिया पाह की बलिब घार ।
+
राजा बसे गजपति मने प्रसिद दिब बार घरे प्रमानत किबा सार बीब ।
+
प्रथमे बीबन तैजि प्रेम पये यम मृत्युक बनर छि करिते पारे जय ।
मुक्त संकल्पिया सेल दुखैर सम्बत सबे परदिस पये नगर सिहल ।
बे बन परिल प्रेमसागर यमिरे । जाल जल सम देखे एइ समुदरे ।
(पद्यावती पृ० १२)

बायसी—

गजपति यह मन सकती सोई । मैं केहि प्रेम कही तेहि बीऊ ।
जों पहिले सिर रे पगुबरई । मुए केर मीबुहि का करई ।
मुष संकल्पि दुख साँबर लीगुहें लोये मान सिपल कहुँ कीगुहें ।
मँबर जान वे संबल पिरौती, केहि मह बिपा येम के बीती ।
घो केहें समुद्र पेनकर देखा, सिई यह समुद्र दुख बव लेखा ।
(पद्यावत पृ० १३८)

प्रबिक उगाहरण देना समीचीन नहीं जान पड़ता है । साराँस में उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि प्रासाधोस ने बायसी के कलापक, नाटकीयता व कथनोपकरण का भी समायोज्य अपने काव्य में किया है । लगभग सब रसों का परिपाक प्रासाधोस के काव्य में हुआ है । क्या कलापस क्या भावपक्ष क्या घलकार विधान क्या प्रेम की वीर एवं क्या मूर्च्छियों की प्रायोज्यिक व्यवस्था समी क्षेत्रों में प्रासाधोस की कला-कल्पना बायसी से प्राप्त एवं प्रसंगिक है । पद्यावत की महिमा डॉ० गुड्डुमार सेन के शब्दों में इस प्रकार है—बायसी का पद्यावत केवल प्रथमी साहित्य का ही नहीं अपितु समस्त प्रथमी भारतीय साहित्य की एक श्रेष्ठ रचना है ।^१

१ बायसीर पद्मावती काव्य गुड्डु प्रथमी साहित्यिक नय-समग्र प्रथमी भारतीय साहित्यिक एकटि श्रेष्ठ रचना । इ० बी० सा० पृ० १० ।

५

“मुसलमानी बंगला साहित्य”

सोमल काबो और आनाधोल की साहित्यिक परम्परा वैसे की दृष्टि से इनके पूर्ववर्ती साहित्यकारों (बैप्लव पदकताओं) से भिन्न नहीं थी। वेदम साहित्यिक मानदण्डों में ही अन्तर था। बैप्लव-साहित्य नामिक (राधा कृष्ण प्रसन्न विपयक) था। किन्तु परवर्तीकाबोल मुस्लिम बंगला साहित्य का विषय लीकिक (इक मन्नाबी) के भावरास में आत्मा-परमात्मा (इक हकीकी) प्रेम था। आरसी के आचार पर आनाधोल ने अपने काबय की रचना की थी। दोनों सूखी-साधक थे।

उनके परवर्ती को मुसलमान मन्नाक भाये थे अधिकतर अनुवाकक थे। उनका साहित्यिक अराठम पूर्ववर्ती कवियों के समान ऊँचा नहीं था। फिर भी बंगला साहित्य में उनका स्थान वीरवपुर्ण है। इनका साहित्य पूर्णकपेण लीकिक प्रेम पर ही आधारित था। उनकी भाषा में भी अन्तर था गया था। उनकी भाषा संस्कृत नमित्त बंगला से कुछ सरस हो गयी थी। वह साधुभाषा से नमित्त भाषा क अधिक निकट था गयी थी। उसका कारण मुसलमानी-साहित्य का सम्पर्क और मुसलमानों का सम्प्रसारण है।

पहले कहा जा चुका है; बहुत मुसलमान उत्तरी पश्चिमी भारत पंजाब उत्तर प्रदेश तथा बिहार से आकर बंगाल के कई प्रदेशों में बस गये थे। विशेषकर अठम-बाका सिलहट एवं भोअर बर्मा के रोसांन आराकान आदि प्रदेशों में बस गये थे। उनकी भाषा बोलचाल के रूप में हिन्दी ही थी। अतः उत्तर प्रदेश एवं बिहार से वे परम्परागत लोक-प्रचलित लोक-कथाएँ भी साथ लाए थे। मुस्लिम काल में आरसी के साथ-साथ हिन्दी को भी प्रोत्साहन मिला था। अतः आरसी, आरसी एवं हिन्दी के सम्पर्क से उक्त भाषा का जन्म हुआ जिसे हम मुसलमानी बंगला कहते हैं। डा० बीनेचण्ण सेन का मत है, “जो वीसी मुसलमानी बंगला कहलाती है, सर्वम आरसी आरसी और उर्दू उर्दू का विकृत बंगला के साथ सम्मिश्रण है।” उक्तही वतावरी है वह परम्परागत साहित्यिक एवं नमित्त भाषा के रूप में परिवर्तन रूप से पत्नी या रही है। जिस प्रकार हिन्दी को खड़ी बोली (कोरबी) के वीसीगत हिन्दी या उर्दू को नैद है। वही तरह बंगला का एक वीसीगत भव

१. Style known as Musalmani Bengali which shows an admixture of Urdu, Persian and Arabic words with corrupt Bengali.

२. इस प्रकार का प्रचलित साहित्य बंगला प्रेम कलाकला से प्रकाशित हुआ है।

बंगलबोलर-कास

मुसलमानी बंगला कहलाता है। किन्तु साहित्यिक परम्परा एवं भाषा की दृष्टि से उन्हें हिन्दी से थोड़ी प्रसंग माली बाने लगी है। किन्तु ध्याकरण एवं भाषातत्त्व की दृष्टि से दोनों एक ही भाषा के दो संजीवित भेद हैं। उसी तरह प्रायः परम्परागत मुसलमानी बंगला में भी यह प्रबलित पतपने लगी है। डा० सुनीतिकुमार चटर्जी लिखते हैं "हिन्दुस्तानी अपने प्रायः ही फारसी और मुस्लिम भावना (Spirit) की उत्तयधिकारिणी और प्रचारक तथा जनक भारत में बनी सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी में उसका प्रवेश बंगाल में हुआ, फारसी शब्दावली को पहले बंगला में अधिकतर प्रयुक्त रूप में प्रायी थी किन्तु प्रायः बहुत परिमाण में हिन्दुस्तानी के माध्यम से बंगला और भारत की अन्य प्रांतीय भाषाओं में प्रवेश जाने लगी।" किन्तु मुसलमानी बंगला में तो यह प्रबलित पहले से ही बनी का रही है। फारसी, फारसी एवं हिन्दी या उन्हें शब्दों का इसमें बाहुल्य है। वाक्य-विन्यास भी हिन्दीनुमा है। कई पद द्विती-निमित्त बंगला के हैं। ऐतिहासिक क्रम से साहित्य एवं भाषा का विवेचन निम्न प्रकार है —

कुतब की मूगावती का अनुकरण

कुतब की मूगावती का अनुकरण भी बंगला में हुआ है। मुहम्मद ज़ावर की मूगावती याचिनीमान की कहानी से परबर्तीवास के इस्लामी बंगला साहित्य पर भी प्रभाव पड़ा है। कहानी छोटी है मामूली पकटा है कि यह किछी हिन्दी काव्य से भी पर है। इसमें हिन्दी मिथित बंगला का प्रभाव है।^१

विविध रोमाण्टिक कहानी

मनोहर मासरी उपन्यास का उल्लेख और बंगाली काव्य के शासामील विरचित संघ में है। हिन्दी में इस विषय की रचना अठारहवीं शताब्दी में जिसती है। इस समय बंगाली कवियों ने भी इसी विषय पर काम बसाई थी। मुसलमान

(Hindustani made itself inheritor and propagator of the Persian and Muslim spirit in India from the 17th and 18th century and came to Bengali Persian words which formerly were brought into Bengali mostly directly now began to be admitted in large number through Hindustani into Bengali and the various other Vernaculars of the land)

O D B L, Appendix D Page 206

२ इतिहास—

कई पद लाइका बने हइको शिवाया।

बेजिया पीर तजे हइको बिबाना।

सेर तजे धाएर करिजे देते देते।

दुत्र पावे मुख ताते हइको तेते।

(बी० सा० ६०, प्र० सं० पृष्ठ ८६२)

कवियों में प्रख्यात मोहम्मद कबीर से। इन्होंने किसी हिन्दी काव्य का अनुवाद घोर अनुसरण किया था। कवि स्वयं लिखते हैं —

एह से मुम्बर (सोना) केकड़ा हिन्दीते प्राप्तिम
 देस भाषाए मुक्ति पावामी करित ;

(६० बी० सा० पृ० ४१)

नवि वंश और जंगनामा

बटगाँव घोर सिलहट से सतरखी घटाभी में इस्लामी पुरान पाँचामी निकली थी। सिलहट के मुसलमान उत्तर पश्चिम के हिन्दी भाषी मुसलमानों के साथ बराबर सम्बन्ध रखते थे। किन्तु फिर भी पूर्णरूप से बंगाली होने या रहे थे।^१ उन्नीसवीं घटाभी तक ये काबली घरतों का व्यवहार करते रहे। इन्हीं घरतों को सिलेटी या सिलहटी नामरी कहते हैं। इसके बाद सतरखी घटाभी में उत्तर बंग में एक इस्लामी मेखक गोष्ठी बनी। सिलहट में घोर पश्चिम राह में उत्तर पश्चिम भारतीय हिन्दी इस्लामी प्रभाव प्रकट हुआ।^२ कवि नवस्त्वा प्रपती रचना की भूमिका में लिखते हैं —

से काबे पारसी भांगि केनुम हिन्दुभाषी।

बुझिबारे बांगाले से किताबेर बाषी। (६० बी० सा० पृ० ४६)

प्रणय-याचा

सिलहट बटगाँव के मुसलमानों में हिन्दीमुसक प्राख्यायिकाओं का प्रचलन था। रोमांटिक साइम्बरविहीन विमुक्त प्रणय-याचा अनेक दिन तक चलती रही। मोत्रपुरी के लोकगीतों में से यह पश्चिमी बंग पूर्व बंग घोर घासाम में बनी गई।

त्रिवेणी के पण्डा की कहानी

त्रिवेणी के पंडा की कहानी का मूल कोई हिन्दी या उर्दू किताब है। कवि स्वयं कहता है—

हिन्दी बजानेते सैह केताब प्राप्तिम

पड़िया सकस भेव मामुम हइल। (६० बी० भा० पृ० १०३)

१ सिलहटेर मुसलमानैरा उत्तर पश्चिमैर हिन्दी भाषी मुसलमानैरैर संगे बराबर मोह रये बने छिनैल। एरा पूरा पूरी बाँवासी हुये उठे पारेसि अनेक दिन घबधि।

हिन्दी प्रभाव की मानक वृष्टय है—

पीरेर काठेर घास्ता करेदेन सीवार
 × × ×
 घास्तार वेपारा पीर शासुकी सोनतान ।
 एयदा माते कठलीक करे कहा मुना
 नाहि बाने कौनरूप मैहात ठिकाना ।
 × × ×
 रेल मुद्रादया बाग देखिया मकान
 एकलेर दिके मिरा घाफघोष करिन
 बहुतर घालेमेर निकटे लाइया
 पुधिदु खबर नूब घाबिजि करिया
 × × ×
 हिन्दी बबानेते सेइ केसाब घादिल
 पड़िया सकल भेर मालुम हइल ।
 एयदा केरामत दिल से पानीर मुनि
 मोर्दा बिले जिन्दा हइत कुबरेते रबबानिय ।

मुद्रगुट-मन्दारन लेखक

परिचयी बयास में इस्लाम की पीठ यही स्वान पाबुया थी। इस्लामिक परम्परा एवं हिन्दी प्रभाव में उत्पन्न कवि भारतभर खयगुणाकर का निवास स्वान भी यही है। यहाँ बड़का पाबी को घाघय करके मुद्रगुट मन्दारन में इस्लामी साहित्य का केन्द्र घटारइकी सथायी में बन गया था। इत साहिरय की भाया की बिधेपठा प्ररबी फारसी एवं हिन्दी सन्ने की प्रचुरता है। इती प्रसंग में बंयानी कवि की इस्लामी बंय की हिन्दी रचना का प्रथम जत्सेख करना उचित है—

माय मिया दिया करे प्रीब
 होया हारामबाइ घाले काबार
 घोम्ते हो बसिचराय पैदा बगाबाइ
 बायके ने घालेते तने हामगाजी ।
 कालानस घैरमु तोड़ने कहे कौन
 सितार(र)देखने साइ कैदाइ सयतान ।

(इ० बी० सा० पृ० १०६)

परीबुस्मा की इफुक जुनेता, घामीर हामजा के जंयनामा के उदाहरण भी देखने योग्य है—

कवियों में प्रप्रखी बोधकवि मोहम्मद कबीर से । इन्होंने किसी हिन्दी काव्य का अनुबाध और अनुसरण किया था । कवि स्वयं लिखते हैं —

एह से सुन्दर (सोना) केबड़ा हिन्दीसे प्राप्त
 वैस भावाए मुक्ति पाँचाली बरिस ।

(६० बी० सा० पृ० ४१)

नवि वंश और जंगनामा

बटपति घोर सिलहट से उत्तरपूर्वी घटाव्सी में इस्सामी पुरान पाँचाली लिखी थी । सिलहट के मुसलमान उत्तर पश्चिम के हिन्दी भाषी मुसलमानों के साथ बराबर सम्बन्ध रखते थे । किन्तु फिर भी पूर्वकम् से बंगाली होने का रहे थे ।^१ उन्नीसवीं घटाव्सी तक ये कापची भक्तों का व्यवहार करते रहे । इन्हीं हठकों को सिधैटी या सिसहटी नामरी कहते हैं । इसके बाद सतरहवीं घटाव्सी में उत्तर बंग में एक इस्सामी शैक्षक घोड़ी बनी । सिलहट में घोर पश्चिम राह में उत्तर पश्चिम भारतीय हिन्दी इस्सामी प्रभाव प्रकट हुआ ।^२ कवि तसस्सा अपनी रचना की सूचिका में लिखते हैं —

ते काबे प्यरखी माँगि कँजुम हिमुपाची ।

बुद्धिबारे बाँवाले से किताबेर बाची । (६० बी० सा० पृ० ४८)

प्रणय-गाथा

सिलहट, बटगाँव के मुसलमानों में हिन्दीमुखक प्रास्थायिकार्यों का प्रचलन था । रोमांटिक प्राइम्बर्चहीन बिगुड प्रणय-गाथा धनेक दिन तक बसती रही । भोजपुरी के सोफनीतों में से यह पश्चिमी बंग पूर्व बंग घोर प्रायाम में बनी गई ।

त्रिवेणी के पण्डा की कहानी

त्रिवेणी के पंश की कहानी का मूल कोई हिन्दी या उर्दू किताब है । कवि स्वयं कहता है—

हिन्दी बजानेसे सैब केताब प्राप्त

बड़िया तकल भेद मामुम हइल । (६० बी० सा० पृ० १०१)

१ सिलहट के मुसलमानों का उत्तर पश्चिम हिन्दी भाषी मुसलमानों के संगे बराबर योग रखे जाने मिलेन । परा पुरा पुरी बांगाली हुये उठे पारेसि धनेक दिन पचसि ।

हिन्दी प्रयाग की मूलक वृष्टि है—

पीरेर जातेर घास्ता करेखेन तैयार
 × × ×
 घास्तार पैयारा पीर घामुखी घोलतान ।
 एयघा माते कतमोक करे कहा गुना
 नाहि जाने कौनकप मैहात ठिकाना ।
 × × ×
 बेत बुड़ाइया जाग देखिया मठान
 एकतेर रिके मेरा घाफखोछ करिल
 बहुतर घाकेमेर निकटे जाइया
 पुछिनु खबर खूब घाबिबि करिया
 × × ×
 हिन्दी बबानैते सेइ केताब घाधिल
 पड़िया सकल भेद मानुम हुइल ।
 एयघा केरामत धिल से पानीर मुनि
 सीर्वा बिले बिम्बा हुइत जुबरेते रबबाणि ।

मुरझुट-मन्दारन-सैसक

पश्चिमी बंगाल में इस्लाम की पीठ यही स्थान पाण्डुया थी। इस्लामिक परम्परा एवं हिन्दी प्रयाग में उत्पन्न कवि भारतचन्द्र धयगुणाकर का निवास स्थान भी यही है। यहाँ बड़का पानी को प्राथम्य करके मुरझुट मन्दारन में इस्लामी साहित्य का केन्द्र घटाखीं शताब्दी में बन गया था। इस साहित्य की भाषा की विशेषता घरबी फारसी एवं हिन्दी शब्दों की प्रचुरता है। इसी प्रसंग में बंगाली कवि की इस्लामी ढंग की हिन्दी रचना का प्रथम उल्लेख करना उचित है—

भाग दिया क्रिया करे घौब
 होमा हारामजाद जाने घाबार
 धोनुते हो बलिजराय पैसा हमाबाज
 बांधके मे धानैछे तने हामयाजी ।
 कानागत सेरकु छोड़ने कहे कौन
 सिताब(र)देखने जाइ केदाइ सपतान ।

(१० वीं ५० पृ० १०६)

परीकुसा की इसुक पुनेसा, घामीर हानरा के उदराना के चरहरर भी देखने योग्य है—

बहर बलैन गाबो तोमाके समझाई ।
 इफ्मुफ नबीर बात धुन मेरा भाई ॥
 × × ×
 घास्तार बरगाय बहर नोघाइया भाभा ।
 कहित सामिस इफ्मुफ-बेलेस्तार कबा ।
 × × +
 तामाम हइस पुपि बाकि बे करिलेस इति ।
 घासा पुष हइस घामार
 बीरहानैर मातारे ये घीर कबैर बिचे
 उत्तारिया छिस बिदि पहाड़ेर भीचे ।

लैला मजनू की प्रेम कहानी

लैला मजनू की प्रेम कहानी समस्त भारत में प्रसिद्ध है। उन्नीसवीं शताब्दी में कसकता में बहुत घस्टे छापाखाने हो गये थे। इनके मासिक और प्रकाशक मुसलमान थे। बंगला के कथा-साहित्य के प्रचार के लिये मुसलमान प्रकाशक ही नहीं हिन्दी भी बहुत उत्साहित थे। अखिलित और अस्वखिलित बनता में विधेयकर नगर-मवासी मास्त्री मस्साह, हुकानदार पंथारी जाकर और बलात्कृत उनके पास घरकी फरसी हिन्दी मिथित इस्सामी-बंगला की छोटी बड़ी पुस्तकों का बाहुस्य था। इसी समय मुरगुट मन्वारन अचल के कवियों का ही प्राणाय था। हिन्दी इस्सामी पद्यति ही अयनायी था रही थी। उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य भाग में मुसलमान प्रकाशकों में सर्व प्रथम काबी सफीजरीन थे। इनके ही प्रदेश के लोगों ने अचिक फारसी एवं हिन्दी से अनुवाद किये थे। फारसी पुस्तक गुलबनोबार के मेमीचन्द्र हठ हिन्दी अनुवाद गुलबनोबम् के बयानुवाद का प्रकाशन १८२१ ई० में हुआ था। मुनावती चाहनामा और तुठनामा का बोलबाला इसी समय था। लैला-मजनू में से हिन्दी बंगला मिथित एक नीव द्रष्टव्य है—

ए महइबत खोइके प्यारी कियतरे मुसिले मोरे
 में तेरा बुबाइये बाचि नारे बाचि नार ।
 अबई बैका हो तुम्हे एस्क वम हइ पुम्हे
 पिलिया महइबत का प्यासा तबई मैं मुसि नारे ।
 घार घाना ए पात्रराइ कइया प्रम नारा ।
 माथ रोके म्हुइबत में पैयारी मुसिले घामारि तेरे ।
 तुति कारति हो तब तुम्हे खोय राणि खोरा
 हामको काररिया बुबाघार बु छ सहेना मोर(६ वा० सा० १२४)

पुरानी रोमांटिक कथा कहानियों का धादधं उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में बहुत था। इस समय की रचना सब पद्य में हैं। विक्रमादित्य का अनाक्षयान, सुति मामा (शुक्र-सप्तति) खडोनामा हाथमलाई, इमुफ बुलेसा एवं मुसबकावती एक ही हिन्दी मुसलमानों की समान रूप से त्रिभ थीं। सरसी फारसी तथा हिन्दी या उर्दू इनका मूल था। गाधेर अमी ने सैसा का प्रथम शब्द लिखा था। इस पुस्तक में बहुत यीठ हैं। उनमें विमुक्त बयसा केवल हिन्दी और हिन्दी बयसा मिश्रित यीठ भी हैं। इस प्रकार हिन्दी प्रभाव के अनेक उदाहरण हैं—

बेलको घर तु करनै बाहे ताहारि सगे मिसल
बहनत छाप्य करो पारं प्रमूह्य रतल
झैए बाल करो बेलको प्रपना तारिकई तरके रह्या।
घरत पावे तारे कि भाष प्रमे कालन।
कोर को बाई बिया एक बार बंझहा ह्य बिबारके बरकार
गुबपब परिषा से प्रभमे करो सेबन।
गाधेरअलि रोकर बुबारी बिया उपर
प्रियाय न पाय तबु बिनै गुधर सामन। (६० वां० सा० पृ० ११२)

हिन्दी मिश्रित बंभसा गीतों के कई उदाहरण हैं —

एस्करि घातछदै बेल बसके काबार हुआ।
छबर तदकित धारा बिये मेरा पया
रत को ना बाघ बेलन बेस्तार पर छोने हू।
पम हुआ घोष बेलदे जानना ह्य तन बदन छारा
एस्तोजारि में तिय्र अंसों छै एर नील बहू देवा।
बतमों कि घासुदे
छाबार मेकालता हू मुझे एवार एवार बोल
बुप बंझाले नामा घाज आतन बुरा हुआ।
बम बरम एकछ कार छाले केराक
गाधेरअलि बेबकर बेहल रहू देवा। (६० वां० सा० पृ० १३२)

मुसलमान रोमांटिक कवियों में अनेक सूझी मठाबसम्बी हैं। उनका परिचय उनकी रचनाओं में मिलता है। समसुदीन खिड का खीनकार का भावनाम और पुरत बाल (दिलरामेर काहिनी) भावनाम में अनेक गीत हैं। विमुक्त बंभसा हिन्दी बंभसा मिश्रित केवल हिन्दी के यीठ भी मिलते हैं। जैसे—

हिन्दी कैताबेते छिन केबद्या बेलाराम
ताझाले लिबियादिल एदमत कालाम

हिन्दुस्थान के दो एक प्राचिन हालवाई
धुन तार कपा बीनासाय लिखे जाई ।^१

ग्रन्थ में समसुद्दीन फरीर के भाष्यात्मिक गीत हैं। हिन्दी के आचार पर बँवसा (हिन्दी-भाँव बंग भाषा) में एबाबतुस्मा ने पुनबकावली लिखी थी। मुरगुट के बासेस्वर ने मूवावली की कहानी लेकर कुरंग भानु लिखा था। धम्मम मबीर के बँवबहार से उदाहृदय लेते हैं—

एयसा केहु बीवसाए सायेर ना करे धार ।
सब तक बुनिया बाहाल—

—३० बी० सा० पृ० १३६ ।

× × ×
करिनु प्रापाब कँषसा (कँषसा) सन् तारिक दिन प्राष्य ।
साङ्काई उम्र मेरा ना जानि कबिता धारा ।

× × ×
मेरा मि सरकार बिबे बहुनेकभापी प्राधि ।
फारसी बाङ्गिया बँव इमरेबी नागरि संघ ।

× × ×
प्रावाते नमक जयैसा हय ।
बोड़ा पोड़ा पङ्गिमुनि केसाब कोरान मुनि

× × ×
मुड ए बीगसा नय हिमिद मिशेकेसाय
ए कारये पर बैधि कब ।

हातमताई के दिस्सा वाहा एबंतुस्मा में भी हिन्दी प्रभाव है—

एय सघालेर कैषसा हइबे सामाम ॥
कलमेर घोड़ा मेरा तुङ्गिया सागाम ।

मुरगुट के बासेस्वर की भी हिन्दी-बँवसा मिश्रित रचना है—

एइ बै साङ्काइ उमरेते
साङ्काई उम्र मेरा ना जानि कबिताधारा ।

बँवबहार की रचना भी इस्लामी बँवसा में हुई थी। कवि स्वयं स्वीकार करते हैं—

शङ्क ए बीवसा नय हिद मिशेके साय ।^२

१ बी० सा० ३० प्र० पं० पृ० १२२ ।

२ एताहि धामार घोडा उमरेतेर खोल
धायनि बतबत इये साते लाने खोल ।

उन्नीसवीं सताब्दी के उत्तरार्द्ध एक बीसवीं सताब्दी के प्रारम्भ में हिन्दी से बनेक छोटे-बड़े किस्से कहानियों के अनुबाह हुए थे। गरीबुस्सा (डाका) की बिभराम की पुस्तक का हिन्दी से अनुबाह हुआ था। यह एक हिन्दी कहानी का स्वाधीन अनुबाह है। जैसे—

हिंद केताबैते दिल कंचड़ा बेलाराम

कैक बिदि किस्सा सयद धासी बाठाराम एवं धनुष भैया हिन्दी से अनुबाह हुए थे। कई पीठों की माया हिन्दी मिभित है। हिन्दी बंजबा मिभित एक गजस का उदाहरण देना अपेक्षित है—

साबाम नेहि भाया मेरी सोभे प्राप्ते बाये पुन
केमपते हूये सोभा फूले बा बतिते कुलकुल ।
बैसबाहा बैकारारि एयार नेहि भाया केयो ।
परं मरि बिल दुबैसा केन्दे केन्दे प्राब बाकल ।
रोमि हूय देल हमारि बैरात बले भाहामरि ।

भायो सानाम मलेकि हार तुमि आमार जाति कल । (इ० बी० सा० पृ० ११२)

बास्तब में मुसलमानी-बंजबा साहित्य को लोक-साहित्य के अन्तर्गत रचना अधिक ग्यामर्धवत है। मेमनसिह नीतिका और पूर्वबंधनीतिका भी मुसलमानी लोक-साहित्य के अन्तर्गत मने ही नहीं धार्ये किन्तु उनपर भी हिन्दी-पम्भावनी की धूप है।

जिस समय बंजबा में इस रोमान्टिक साहित्य की रचना हो रही थी उस समय हिन्दी में भी इसी प्रकार की शृ गार रस-पूर्ये रचनायें हो रही थी। यह प्रवृत्ति उत्कामीन बंयाली रामायणकारों में भी परिभसित होती है^१। ऐसा होना स्वामा

बिदिपा तबियत मेरा करे बेहू तेज
बदिपा जाइते ऐसा ना हूय प्राबैज ।
अपानके कर मेरा सक्कर जिरिन
एबारते करे बेहू रगेते रगोन ।
कामबके कर मेरा आम्बल केसान
कलम के करे बेहू मेय्यारे समान ।
मोलाब कारारा मेरा शोयातके कर
देयाहि आतर धानि तार बिचेधर ।
एधान हइते कण्ठा करिलाम मुह
बोबा कर भादे बल कबितार मुह (इ० बी० सा० पृ० १४८)

१ देखिये—परिसिष्ट में तुमसीबास का बंयाली रामायणों पर प्रभाव—बिपयक-प्रसंग

बिक ही का उस समय मुस्लिम सभ्राटों का राज्य प्रस्त हो गया था। छोटे-बड़े राजाओं और नबाबों के मनोरंजन के लिए कवि लोग दरबारों में ऐसी ही रचना सुनाया करते थे। बंगला में भी यही डा० बोपाम भी की दरशाबनी में सिस्मूलर रोमांस की साहित्यबारा ही सर्वप्रिय थी।

५

मुसलमानी—बंगला भाषा

जिसे मुसलमानी-बंगला कहते हैं, उसकी सृष्टि उन्नीसवीं शताब्दी में हुई। इसके पहले मुसलमान मेलक साहित्य सूत्रन में परंपरागत साधु-बंगला का ही प्रयोग करते रहे हैं। उन्हें बहुत कम फारसी-फारसी—यात्री भाषाओं के शब्दों का समावेश हो पाया था। इन शब्दों को बहुत मुसलमान जानते थे। किन्तु हिन्दू-मुसलमानों के काव्य की भाषा सामान्य परंपरागत संस्कृतमिष्ट साधु-बंगला थी।

कुछ बंगला गद्य में प्रबन्धमेव फारसी फारसी उर्दू शब्द मिलते हैं। जब से गद्य का निर्वर्णन मिलता है तब से ही ये शब्द हैं। सोलहवीं शताब्दी में कोष बिहार के राजा नर नाचमछरिह के संस्कृत बहुल पत्र में फारसी का विताव-विताप है। उस समय से बाद के पत्र बलिनों में भाषा का प्रभाव बढ़ता गया। वह मुद्रित प्रतिलिपियों में मिलता है, और एक ही साल बाद इस भाषा में तथा कवित इस्लामी बंगला के कुछ पाठ उर्फा नमूना फाल्देज कम्पनी के बापरेक्टर के पास १७५६ ई० का लिखा हुआ हरमोहन शर्मा की धर्मी है।^१ पुरानी बंगला में साहित्य सृष्टि पद्य में हुई थी। पद्य की भाषा प्राचीनता का बहुधा अनुसरण करती है। संस्कृत का प्रभाव बराबर विद्यमान है। किन्तु कहीं-कहीं कथा-बाता की भाषा ये बिदेसी शब्दों का प्रवेश बिलकुल ही निषिद्ध नहीं था। धीरे-धीरे फारसी 'मजूर शब्द है, उसमें बंगला के प्रत्यय के योग से ठेरि मजूरिया है। मीण कर्मबाचक धनुष्य रूप में बराबर धीरे-धीरे विजय में मिलता है। सोलहवीं शताब्दी में एकाधिक उल्लेख योग्य रचना बिदेसी शब्दों में नामानु की सृष्टि हुई। बरकल से बरनिया, कुमुप से कुमुपिस (बिदेपण) इत्यादि मिलते हैं। डा० सुकुमार लैन महोदय के अनुसार

१ धीरुन मोसदेज कोम्पानिते प्राबंग बिर भूमेर संजे खरिदेर बाहनी प्राभि मरया टाका प्राबंग बासानी करियाछी धापरेल काहाते एवम् भोकाम मजदूरेर गोमस्ता बापङ्ग धरीब करिदेदिन एवम् कापङ्ग कचक कचक सामबानी हरयाछे एवम् हरिदेदिन दास्त कचकर तइपार हरयाछे एवम् मबलक कापङ्ग धोबार हाते बरघठर कारज रहियाछे—इत्यादि।

(६० वाँ. छा० पृ० १८२)

हिन्दी शब्द और मुहावरों को घननाकर इस्लामी-बैंगला का जो स्वरूप होता है। वह उन्नीसवीं शताब्दी के प्रथम भाग की व्यवहारिक बैंगला फोर्ट विनियम कामेज के पढ़ितों की साधु-भाषा नहीं थी। उस भाषा^१ के साथ पढ़ितों की भाषा का मेल नहीं था। फिर भी यह बिट्टो-पयी एलीज बस्ताबेजों में उसका प्रचुर प्रयोग होता है।^२ किन्तु 'जलित'^३ भाषा में उसका व्यवहार होता ही था। कर्त्तमाया के निम्न नीच से स्पष्ट है—

माई आमार बाहबान किन्तु मुन लख लोके
कमिने धार पुमगत माई पुमुके ।
एक बफाते फीपर हुपेयो
तोफा एक दीयार साथे विरीत करेधि ।
धौर सुकेते फारखति मात्र धमाहुत बदनानि ।

(इ० बी० सा० पृ० १८४)

इस प्रकार कुछ हिन्दी का भी बूट उसमें रहता था जैसे—

तोम बुवा होके खोवाइ बरखतका में घोया,
ना थाया कैया किमारे माई बरकत ना हुइया ।
धौर रुपिया पुपिया बिहाय तोमे
आधोना मार बाधो ना सैरख बुनिया के बिबमे ।
से बितेये लभारे बेच चाहिते ना चाहिते ।

(इ० बी० सा० पृ० १८६)

उन्नीसवीं शताब्दी में संस्कृत और संवन्धी मिश्रित लोग प्राचीन परंपरागत साधु-बैंगला भाषा में ही रचना करते रहे किन्तु शब्द मुसलमान लोभ धारणी उर्दू या हिन्दीमूलक बैंगला का ही पत्र पकड़े रहे।

१ हिन्दी प्रभाव का कुछ भाषा धनात्मिक विवेचन इस प्रकार है —

मुसलमानी बैंगला में हिन्दी शब्दों का बाहुल्य रहा है, जिस प्रकार—मुझे, मुझे, मेरा तेरा एता (इतना) एधो (वह), येता (इतना) एइसा (ऐसा) बइसा बइसा (वैसा) लइसा लइसा (तैसा) धाइया/धाना धाइया/धाना, रीपछा, रीपसा/रीसा, धाबि/धामी जि/जी, तक, बो पाबटा/पाब सइटा/छटा तातटा/साठ थोवा/थुना मण्दर, बाठ ।

१ साधु=साहित्यिक

२ बेटिये—इस्लामी बैंगला साहित्य, पृ० १८३ १८६ ।

३ जलित=बोलचाल की ।

२ हिन्दी धातुओं का व्यवहार —

ऐसा-एइसा माते कठबुरे मेकामिया / निकास बाय / जाना परत्यर्क
 कस्मे बिरीनु / गिर धातु पठनार्थ धामि तुइकेक / तुइ (कसमेर बोड़ा तुइया
 सामान हाथमलाई) हाठी पोडा उठ माये जामिया / जाल सुमारी / सुमारी
 मोडे धेके कुडे / कुव उठे / उठ खेचिल / खेच / खीच सेनाइठ / खिसा जाना
 पीना बिस प्रकार बाहार बाकरि बाजाई / बाजाना धारबाकि धामिभिते,
 धामीर क्यदान परे रहे उठारिया / उठार, सोयामिसे बकिर पोसाक मायाइया
 / मांगा जोरे सेना छाडाइया (कुड़ाना) परे यो पुमाइया / पुमाना मारे कइ
 कोरहाना उपरे मार / मारना भेबिया / भेबना बियाधि भेका हुनुरे सोमार डाका
 दिया / डाका देना हुवेरे बेसाब / बेसा इत्यादि हिन्दी धातुओं के मुसलमानी
 बंगला में प्रयोग के अनेक उदाहरण मिल सकते हैं।

३ विविध हिन्दी शब्दों के अनुसंग 'उपसर्गों का व्यवहार' —

हिन्दी शब्दों के अनुसर्गों और उपसर्गों का व्यवहार भी मुसलमानी बंगला में
 हुआ है।

(क) उबतरे—रे—विभक्ति के समान गीण और मुख्य कर्म में धातु
 सामार तरे—

(ख) बराबर—उपमा योण कर्म के अर्थ में—सूट बराबर मठ धामारि
 धामीर पबन प्राण बराबरि—प्रति के समान—धातुनेर मठ—

(ग) बिच (सप्तमी के अर्थ में)—धातन बाङ्गिर बिच रहे खीयासिते
 अकेसा अगम बिच बहु धारि साये।

इस प्रकार हिन्दी के उपसर्गों एवं प्रत्ययों का प्रयोग इस्लामिक बंगला में
 हुआ है।

किन्तु धातु भी साहित्यिक-स्वरूप में मुसलमानी साहित्यकारों (भारत और
 पाकिस्तान) हिन्दी या उर्दू प्रभावित धातु-बंगला का भी प्रचलन है। किन्तु प्रमुखतः
 साहित्य की रचना परम्परागत संस्कृत गमित बंगला ही है। लोकभाषा या बसित
 भाषा साहित्यिक धातु-बंगला की तरह जनभाषा के रूप में कमरता से बंगाल के

१ अनुसंग = प्रत्यय।

२ मूलतः साहित्य, नजरिय (नजदीक) सिबाय कौट, हुनुर धारि अरर धरबी
 धारसी के हैं। किन्तु हिन्दी या उर्दू में धातु के पूर्णतया प्रारम्भ हो गये हैं।
 धातु के हिन्दी की उपसर्ग माने जाते हैं। हिन्दी के समस्त उपसर्गों में उतका
 अर्थात् स्थान है। देखिये—संक्षिप्त हिन्दी अरर सामर, पृष्ठ ४१ ५१५,
 १५१ १ २१।

धन्य प्रदेशों में फ़ैली है, और देश विभाजन के कारण बाबाक हिन्दुस्तानी या उर्दू का पाकिस्तान के पूर्वी बंगाल और भारत के पश्चिमी बंगाल में प्रत्येक स्कावटों बिरोंबों एवं राजनीतिक घर्षणों के बावजूद भी सहज रूप में नयी की स्वाभाविक घर्षणधारा के रूप में प्रचार, प्रसार एवं प्रभाव हो रहा है।

भारत विभाजन के बाद पाकिस्तान की राष्ट्रभाषा उर्दू का राजकीय एवं जन-स्तर पर प्रसार पूर्वी बंगाल में हो रहा है। बहुत मुसलमान घरखानों उत्तर प्रदेश बिहार, पश्चिमी बंगाल से पूर्वी पाकिस्तान में चले गये हैं। अतः उनकी मातृ भाषा हिन्दी या उससे मिलती जुलती भाषा है। साधु-बैजबा के साध-साध हिन्दी या उर्दूनुमा बंगला जलित भाषा एवं क्वचित् साहित्यिक स्वरूप को भी प्रभावित करने लगी है। हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा होने के कारण साधारणतः समस्त पश्चिमी बंगाल बिलेपतया कलकत्ता-केंद्र में उसका प्रभाव दिन दूना रात चौगुना हो रहा है।

६

“भारतचन्द्रराय गुप्ताकर १७२२ १७६० ई०

भारतचन्द्र रामायण की परम्परा के परवर्ती कवि हैं। वे हिन्दी बैजबा संस्कृत अरसी आदि भाषाओं के पश्चित्त थे। उनकी काम्य-शक्ति का भी विकास उस आतावरण में हुआ था। जो फारसी एवं हिन्दी से घोरघोर थी।^१ हिन्दी परभावनी एवं हिन्दी पर उनकी रचनाओं में मिलते हैं। उन पर हिन्दी प्रभाव का बर्णिकरण वा रूपों में कर सकते हैं —

१ प्रत्यक्ष = हिन्दी

२ अप्रत्यक्ष = शब्दकृति

प्रत्यक्ष रूप में उन्होंने हिन्दी पदों की रचना की है। अप्रत्यक्ष में शब्दकृति के माध्यम से उन पर हिन्दी का प्रभाव पड़ा है। कुछ उदाहरणों से यह स्पष्ट किया जा सकता है —

जय शिव शर्वाह् पाबहि ताता ।

भारत शमक पिताक रतासा ॥

१ बी० भा० सा० पृ० १६६ ६०८। कतकमुक्ति कविनाय भारतचन्द्र हिन्दी की फारसी के आधय करिया रस शृष्टिर प्रभाव करियादेत। बी० सा० ६०, प्र० सं६, पृ० ८३६)

२ सुनलित एवम् रसास शब्द जयने पुम्बबर्ती कविदेर तुलनाय भारतचन्द्रेर योग्यता अविदतर केना इति संस्कृति धाका फारसी की हिन्दी भाषाओं जानियेन। (वही पृ० ८४०)

गाबत भूत बजाओत भैरव ।
 गाओत ताल बैतासा ।
 नन्ही कहे ताताकार मनोहर भु गो
 बाजाओत गाता ॥
 पंगा भरे जनबाद तुबारस
 घनल हलाहल जबासा ।
 भारत के हर संकर-मूरति नाथ कपास कपासा ।
 (मा० पं० पृ० ८० ८१)

ब्रजबुलि का एक उदाहरण उन्नीसवीं है—

शिव-विवाह

जय जय हर रविवा । कर बिलसित निमित्त परशु
 प्रनय कर कुरगिया ॥
 लक लक लकी कटकिराज ।
 लक लक लक रचनिराज
 बक बक एक बहुत साज
 बिलल जपल भजिया ।
 कुमु कुमु कुमु नयन नील
 हमु हमु हमु योपिनो बोल
 कुमु कुमु कुमु बाकिनी बोल
 प्रनय प्रनय सपिया
 भवम् नवम् बवय भाल
 पन राजे सिगा डमक गाल
 ख ताके ताल बेद बैवाल
 भुंयी नाथे पंग भविवा
 सुरपन कहे जय नहेय
 पुनके पुरल लकल बेय
 भारत वाचत भयति बेय
 सरस प्रवत धविवा । (प० पं० पृ० ११ १४)

इस तरह भारतभंग्र संभावनी (धम्मदामंगल) में ब्रजबुलि के अनेक पद हैं ।
 भारतभंग्र बहुभाषाविद के । उन्होंने संस्कृतपूरुषक अनेक भाषाओं की काव्य-रचना
 के लिए कसम खाई । उनही विगुड ब्रजभाषा की रचना का उदाहरण इस तम्प
 को प्रामाणिक करता है —

भाट के प्रति राजा की उक्ति (भाटेर प्रति राजार उक्ति)

गंग कहो गुर्पातपु महीपति मन्वर क्यों नहि प्राया ।
 ओ सब भेद बुझाय कहा कियो महीं तहाँ समुझाय मुनाया ।
 काम लिए तुझे भेद दिया सुधि भूल गया सब मोहि मुसाया ।
 भट्ट हो सब भण्ड भया कबिताई भटोइ में दाग बड़ाया ।
 मयार कहा बहु प्यार किया गज बाजि दिया झिर ताज बराया ।
 डाल दिया लनवार दिया अरपोय किया सब काष्प पड़ाया ।
 यामई नाम महाकवि नाम दिया मन्जिबाम बड़ाइ बड़ाया ।
 काम मया बरबाद सब सब भारती के नहि भेद बनाया ।

भाट का उत्तर (भाटेर उत्तर)

भूप में तिहारि भट्ट काँचिपुर आयके ।
 भूप की समाज माझ राजपुत्र पायके ॥
 हात जोरि पत्र बोहू झीप भूमि मायके ।
 राजपुत्रि की कथा द्वितीय में मुनायके ॥
 राजपुत्र पत्र बाँधि पुधि भेद माय के ।
 एक में हजार लाख मैं कहा बानाय के ।
 बुझके सुपात्र राजपुत्र बित लायके ।
 घामने मया महाबियोगी बित्र बायके ॥
 याहि में कहा मया कहा गया मुनायके ।
 बाप या महाबियोगी देखने न पायके ॥
 घोषि घोषि पाँच माह में तँह गमायके ।
 धापुही कहा हु बात बड़पान प्रायके ॥
 म्याद महीं है महीम में गया बनायके ।
 पुछहु दिवानजी सो बचसि के मँपायके ॥
 बुझके कहे महीप भट्ट को मनायके ।
 जोर कीन है तु बिन्हु बेज बेज आयके ॥
 भूपके निरेश पाय गंग नाम प्रायके ।
 जोर कीन है तु बिन्हु बेज बज प्रायके ॥
 बेज में कहा महीप पात्र यह प्राय के ।
 सोहि एहि है कुमार काँचिराज रायक ॥
 नाम है तिहारी भूज प्राय एहि प्रायके ।
 या समे रहा तिहारि पुत्रि की बिहायके ॥

बोर को मझान में कहा बिघो पठायक ।
 भाग मानि प्राय जाय लायहू ममायके ।
 भट्ट को बहे महीय बिलमोह मायके ।
 सायमे बलै मझान भारती बनायके ॥

(मा० प्र० पृ० ११० १११)

उन्होंने ऐसी भाषा का भी प्रयोग किया है जिसे हम हिन्दी भी कह सकते हैं और ब्रजबुक्ति भी । निम्नलिखित उदाहरण से इस तथ्य को समझा जा सकता है—

मामसिंह की यज्ञोर यात्रा

वाँ बाँ गुड़ गुड़ बाँके नायारा बाँके रबाव मूर्ख बीतारा ॥
 पयबल कसबल भुलल बलमल साजल बनबल परल सोभारा ॥
 बाबिली तक तक बाम को पर बक, मरुमरु मरु मरु करतरबारा ॥
 बाह्य रजपुत कप्रिय राहुत मांयल माहुत रल प्रमिबारा ॥
 मोठ कलावत नाबत पायठ, भारत प्रमिमल गीत मुमारा ॥

(मा० प्र० पृ० १२७)

इसके प्रतिरिक्त हिन्दी भाषा की कविता भी उन्होंने की है—

हिन्दी भाषार कविता

एक समय बूक मानु कुमारी मातपित सन बीठ मैहारी ।
 हये लय प्रायो सब बूठी बो प्रायि नेटबल नम्बलास बोलायि ।
 बैय नहि प्राय्य सुन नहि कान का कुच प्रायि हो प्रायोत प्रायि ॥
 कौहा के कानाया लास कौहा सो पछमू जायू ।
 कौहा तो पु प्रायि है जाक पर तरे बबकि बतने ।
 नाति में प्राय सनायोने प्रायि ।
 कुच बात ए तोत को कुच, बातघोतोत को बातोन सुन ।
 बात हमारि सात सायायि है ।

(मा० प्र० पृ० ४१०)

उनकी विविध कविताओं में हिन्दी का अनुकरण किया गया है । कवि की विविध कविताओं में अनुप्रास पर कविता बीहरी में है । एक हिन्दी का पर इस प्रकार है—

धुम बड़ा धुम किया राने सोने नाहि दिया
 बहूवार घेर लिया कोत्र किति काप्रोया ।

बासबाला कोट किया कानात से घेर लिया ।
 तहुँपान बागा दिया धाय किसि ताओया ।
 बैसने में हुया चूर छोड़ लिया मेरि पुर,
 लौह्यारि भासाई दूर भाओ मेरे बाओया ।
 सुब सिमा नरम सदि जबसिया गरम सदि,
 बिरन जिओ परम सदि बाहबारे हाओया ।

(भा० प्र० पृ० ४४८)

पहले कहा जा चुका है कि भारतबन्धुराय गुलाकर को कई भाषाओं का ज्ञान था। वे सफलतापूर्वक उन भाषाओं में कविता कर सकते थे। उनके अपूर्ण बम्बी नाटक में इसका उदाहरण प्रमाण है। अपूर्ण बम्बी नाटक में एक पात्र संस्कृत पद बोसता है। उत्तर में दूसरा पात्र हिन्दी में बोसता है—

मटी की उक्ति

धुन धुन ठाकुर नित्य बिसारब बतुर समासब सारि,
 नूतन माठके नूतन कबिकत हमि तौहि नूतन नारी ।
 ब्यापसे घातायब भाब भबानी को नीति में समुझे भारि ।
 बानब बलने धारबी मण्डसे तारिबी से भबतारी ।
 सुब सम धीन धोर सम शुभहु सगुप मुरारि ।
 कल्पबन्धु गुप राजा धिरोमभि भारतबन्धु बिचारि ।

महिषासुर की उक्ति

भायगा देवदेवी पाबड़ पाबड़ इन्द्र को बाँब भागे
 नेकत को रीति बेना यमपर धम को धाम को धाय सागे ।
 बापोंको रोब करके करत बरयको धबतू सो धाब भाये ।
 बह्या सौबासुकि सौं कभिनहि मगको जोसौं कुबेरा न भागे ॥

(भा० प्र०, पृ० ४३५)

प्रजा के प्रति महिषासुर की उक्ति

शोन रे योंवार लोप छोड़के उपात रोम् ।
 मानहुँ धानन्ध भोग भैयराज् भोग् में ॥
 धायमें सगाओ धीठ काहे को बबलाओ धीठ
 एक रोज प्यार पिठ भोगएहि लोप में ।
 धायको लयाओ भोग् कामको जयाओ योग
 छोड़बओ भोग भोग, भोत्र एहि लोक में ।

बया दगान् बया बयान् धर्बंगार प्राङ्मान् ॥
एहि ध्यान एहि ज्ञान धार सञ्चरोय मे ।

(मा० वं० पृ० ४२१)

इसी प्रकार एक उदाहरण और द्रष्टव्य है—

एह धानपै धपबठौर कोष प्रबमे हास्य करितैल
कलठ करटठ कलि कला कलठठ रिगपक उमठठ
अपठठ भ्याम् रे ।
यनुमती कम्पठ विरियल नखत बलनिधि भम्पठ बाङ्कबमय रे ॥
विमुचन धुडठ रचिरय टूठठ धम धन कुठठ मेठ परसम रे ।
विबली बठ बठ धर धर धठ धठ धम्पठ मठ धठ धठ
सा बया हाय रे ॥

(मा० वं० पृ० ४२६)

भारतवर्ष हिन्दी इत्सामी प्रभाव की परम्परा की उपाय है^१। व्यक्तिगत रूप में भी वे हिन्दी के ज्ञाता एवं प्रेमी थे। उनकी भाषा में व्याकरणिक एवं उच्चारण सम्बन्धी भाषा की भूटियाँ बबरम हैं। इसका कारण हिन्दी-बंगला का उच्चारण मेर ही है। जैसे उनमें हिन्दी प्रभाव मजबूत था। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण कवि की स्वीकारोक्ति में मिल जाता है।

‘भारतहि पाठभाष हुरल से बानी
उचित से धारकी फारसी हिन्दीबानी
पड़ियाछी सेहमत बनिबार पारो ।

नूतन पुरातन की धुम-धमि पर भारतवर्ष की ठण्ड रामनिधि गुप्त भी
हिन्दी से फलेरिठ हैं उनके विषय में धरनी पंक्तियों में कुछ प्रकाश ज्ञाना लायेगा ।

७

‘‘बामनिधि गुप्त (१७४१-१८३६ ई)’’

प्रणय-भास्वानी की परम्परा मुसलमान कवियों में बसती रही है, भारत
वर्ष पर भी इस परम्परा का प्रभाव रहा है, किन्तु हिन्दी कवियों में सर्वप्रथम

१ इ० बी० सा० पृ० १०६ इस समये फारसी की भाषी (धर्बंग) उच्चारण
बांगाली-सन्तानेर अन्यतम गिबसलीम विषयविज्ञ विरोध करिया कायस्य बङ्गलौकर
बरो । बाङ्गल धरेर उल्लिखनी सन्तान धी फारसी-हिन्दी-पिधित । बाङ्गल उबा
इरण भारतवर्ष । बंगलौकर धमि फारसी धी हिन्दी तुस्य रूपे धधियत हृदयविज्ञ
बनियाइ भारतवर्ष बठानुबधिक साहित्येर एरुनु मोड़ फिदाये पारिया दितेन ।

(बी० सा० इ०, प्र० सं०, प्र० १०७)

रागनिधि गुप्त या निधु बाबू ने ही विपुल प्रणय पीतों की रचना की है। निधु बाबू को इन सभु प्रणय-पीतों अथवा टणों की प्रेरणा हिन्दी-संभव से ही मिली है।

डा० विवेकचन्द्र सेन^१ और डा० सुकुमार सेन इस तथ्य को स्वीकार करते हैं। डा० सुकुमार सेन का मत है, 'बघसासा बबोबस्तेर के समय निधु बाबू छापराय गये थे, वहाँ पर हिन्दुस्थानी संगीत बघची तरह से सीख कर हिन्दों पीतों के आधार पर बँगसा में टप्पा बरबिद् संक्षिप्ताकार पीतों की रचना करते रहे'।

कवि ईश्वरचर गुप्त विरचित रागनिधि गुप्त के बीजन के सम्पादक श्री मन्तोपदात जी ने भी उपयुक्त मत का समर्थन किया है। टप्पा शब्द के हिन्दी में अनेक अर्थ होते हैं^२। किन्तु यहाँ पर टप्पा से अभिप्राय हिन्दी के एक रागविशेष से है जिसमें छान की प्रधानता होती है। शब्द-कोशों में टप्पा की परिभाषा इस प्रकार है—
“श्रुत्यति की दृष्टि से टप्पा शब्द हिन्दी-शब्द से उत्पन्न है जिसका अर्थ होता है

१ ब० भा० सा० पृ० ६३५, हि० ब० का० सिद्० पृ० ६२६, बां० गा०, पृ० ६२८ से तथा ५६९।

२ बघसासा बबोबस्तेर समय निधु बाबू छापराय गिया पढ़ेन सेकाने हिन्दु स्थानी संगीत भागोकरिया चिखिया लइया हिन्दी पान मीमिया बांगसाय टप्पा अथवा संक्षिप्ताकार पान रचना करते थाकेन—(बां० सा० ६०, प्र० लड, पृ० ६७५)

३ देखिये—बु० हि० घ० की पृ० ३२० हि० घ० सा० सं० हि० घ० सा०, पृ० ५३६, बां० मा० घ० पृ० ८६९। Etymologically derived from a Hindi word which means tripping or frisking about with light fantastic toe a tappa means a little song of light nature-H. Musik.

हिन्दी जेयानेर अनुकरणे रचित समित परबहुत संगीत, विशेष सुर लये गेय सभु प्रहृष्टिर् अनुगीत टप्पा गेये कैरियान उठिसेन कुने हेम। टप्पा गृ मार रत प्रवान साहित्य है। संकीर्ण राग में रचा गया है। जिसचित त्रिबट या धीमा त्रिबट त्रिबटा और भूमरा बयैरू तालों में होता है। इसमें स्वाधी और धंतरा दो अथयक हैं। पर धीर बिबर दो ही रंग हैं। स्फुरित, साहसि, प्रत्याहसि—इन ममकों से युक्त लटका मुर्छा प्रयोग बहुत है। योरी निमा ही टप्पे के प्रमुख रचयिता हैं। कहा जाता है कि टप्पे की उत्पत्ति पंजाब में हुई और उँट पालने वाले ही इसकी माते हैं। उसकी पनाबी या पनाबी मिश्रित हिन्दी है। टप्पे का मुख्य विषय है हीर व रोमा व प्रणय-संगीत वास्तव पृ० २४५ बां० ग० पृ० ६३८।

धीम, घस्विर संगूठे से उद्यतता कूनना । टप्पा का घस है—एक छोटा नीत सन्निव
प्रकृति का । हिन्दी स्वास के अनुकरण पर रचित सन्निव पर बहुत संघीत' ।"

कवि बीबनी सेल्फ स्वयं स्वीकार करते हैं 'घररा की कलेक्ट्री कार्य से
केरामी का कार्य ग्रहण करके आसंकात संघीत विद्या के सुप्रसिद्ध एक यवन गायक
को बैठन पर नियुक्त कर अपने घरकास के समय उससे संघीत-शास्त्र की शिक्षा
प्राप्त करले गते । नीत विद्या में नियुक्त मुसलमान उस्ताद आसानी से यकार्थ रूप में
किमी को उपदेश नहीं देते थे । इसके बिन्धु बाबू के कुछ संस्कार उत्पन्न हुए । इस
शिक्षा-काल विषय में शिष्या छाह्व को सलाय करके कहते गये 'मैं आप सोमों के
जातीय माबनिक नीत धीर घाम नहीं करू या अपने लिये हिन्दी नीतों के अनुबाव
पूर्वक राम रामिनी संयुक्त करके बंगलापा में गान करू या । इसके फलस्वरूप जगहिनि
बैसा हो किया घरार्थ जगत मुसलमान गायकों को बिबा कर, अपने घास ही घास
रामिनी ठाल मान के अनुसार बँबसा-नीत रचना करने के लिये प्रवृत्त हो गते' ।
हिन्दी टप्पा के अनुकरण पर निन्धु बाबू ने सरुझों बँगला टप्पों की रचना कर एक
पुस्तक प्रेम-नेव-वशाबनी को अग्र्य दिया । रामनिधि मुत्त को बँबसा का प्रथम

- १ राम निधि मुत्त उर्फ निन्धु बाबू (११४० बंगाल) सारे हुपली भावना,
ग्राम्ये जम्मे 'घारि मिघार' टप्पार अनुकरणे बंगाला टप्पा का प्रकृत संघीत
रचनाए प्रवर्तक 'शैवास घी टप्पा' रबीत मानेर प्रकार भिद (संघीतरान
कल्पद्रुम)

'Tappa unlike कवि नीबानी का याभा was essentially Baitthaki
gan or songs for the drawing room, which was appreciated
chiefly if not wholly by the upper class.

(बी० ना० ग्रामि० प्र० घं० ८२६)

- २ "घररा कलिक्ट्री केरामि कर्म ग्रहण करिया निन्धु बाबू उतकाले तत्प्राय
संघीतविद्याय सुप्रसिद्ध जनेक यवन गायके बैठन दिया नियुक्त करत स्वाकास
समय ठाहार निकट संघीत-शास्त्र शिक्षा करिते सापितेक । नीतविद्या तल्लर
यवनेच प्राय घल्लेह कर सहूने काहाकेह यकार्थरूपे उपदेश करेता । यवन
विद्याय बाबुर विचित सस्कार कम्मिभ ठाल शिष्याकाल विषये शिरकेर
कार्य्य जानिते शिष्या साहेबके सेलाम करिया कहिलेन, 'मासि ठोमारघिनेर
पातीक माबनिक नीत धार मान करिये न । घापमिय बंग भाषाय हिन्दिनीतेर
अनुबाव-पुवक राम रामिनी संयुक्त करिया मान करिये ।' फल ठाहार घम्यब
हिन परे ठाहाई करिलेन घरार्थ जगत मुसलमान गायकेर विदाय दिया आपनिह
राम रामिनी ठाल मान अनुसार बंगाला नीत रचना करे प्रवृत्त हुइलेन ।"
(दरकरकण्य मुत्त बिरदिधि कवि बीबनी पृ० १०२)

प्रापुनिक फ़ासीन गीत-सेखर कह सकते हैं। वे प्रथम हिन्दू बंगला के गीत सेखर हैं जिन्होंने धम धीर परतीकिकता से साहित्य को प्रमग किया। टप्पों के कुछ उदाहरण देना अपेक्षित होया—

“भाल बासिबे बले भासबासिने ।

धामार स्वभाव एई सोमा बइ धार जानि ते

बिधु मुझे लघुर हासि देखते बइ भाल बासि

हाई देखे बेटे घासि देखों रिते घासिने १ ॥”

धर्मार्थ में तुम्हें इसलिये प्यार नहीं करता हूँ कि तुम भी इसके बरसे में प्यार करो। यह तो मेरा स्वभाव बन गया है कि तुम्हें प्यार कर्क केवल तुम्हें। मैं तेरे धर्मों पर मुस्कान देकरा चाहता हूँ। उसके लिये मैं प्रतिदिन यहाँ आया करता हूँ। धी प्रिये, मुझे समझने में धुम मत करो मैं तुम्हें देखने आता हूँ। इसलिये नहीं कि तू मुझे देखे। इसी प्रकार हिन्दी-संगीत क प्रभाव की परम्परा प्रापुनिक काल तक घायी है।

: ८

उपसंहार

बंगला प्रेमास्वातक-काव्य की परम्परा हिन्दी के माध्यम से घायी है। बंगला में यह परम्परा सतरहवीं शताब्दी से शुरू होती है। शोभत काबी धीर घालाधीन इस परम्परा के बंगला के प्रकितघानी मुसलमान कवि हैं। इन पर हिन्दी कवियों का साहित्यिक एवं भाषामूलक गम्भीर प्रभाव रहा है।

शोभत काजी ने हिन्दी-कवि मुस्ता दाउद के खंदायन का कमानक एवं धामन की यैनाघत का धामार लेकर धपनी “सठीमयना धी सौर बन्धामी” की रचना की थी। जयसी के महाकाव्य पद्मावत का धामार लेकर धालाधीन ने बंगला पद्मावती का निर्माण किया था।

१ हि० ब० भा० लि०, पृ० १२१ बी० सा० इ०, प्र० सं० पृ० १७८, संगीत रत्नावली पृ० २१, ब० सा० प०। प्रसंगवधात घोरी मियाँ का भी कुछ परिचय देना समीचीन जान पड़ता है। घोरी मियाँ का मसनी नाम गुलाम नबी था। इनकी पत्नी का नाम घायी था। धपना नाम धीवल रख कर पत्नी के नाम से टप्पों का प्रचार किया। हिन्दी टप्पा रचना धीर गायक के रूप में वे धत्रितीय हैं। टप्पा का उदाहरण देना अपेक्षित है।

रे दिबा माग ना करिये सचि रबते दरिये।

घायी घोरी मिल विधासा घोसे,

समझ समझ पाग घटिये।

(बीनासीर गान पृष्ठ ११९)

किन्तु परबर्ती इस्लामिक बयना-साहित्य के लेखक माव-एन भापा की दृष्टि से हिन्दी से प्रभावित रहे हैं। सचमुच इस युग का साहित्य अनुबाधात्मक है। हिन्दी-मुस्तफ़ी के अनेक अनुबाध बेंगला में हुए थे। मुसल इस युगकालीन बेंगला भाषा और साहित्य का आधार एवं प्रेरणा हिन्दी ही थी। इस साहित्य में से बहुत कुछ की हम लोक-साहित्य के अन्तर्गत परिगणित कर सकते हैं।

इस युगीन प्रसिद्ध हिन्दू कवि भारतचन्द्रराय गुणाकर भी इसी हिन्दी इस्लामिक बेंगला के बाधावरण और इसी परम्परा की स्रजन हैं। इनके काव्य में भी हिन्दी प्रभाव का पुट है। इन्होंने ब्रजकुसि और हिन्दी में सफलतापूर्वक कविताये की हैं।

बेंगला के प्रसिद्ध टप्पाकार रामनिधि गुप्त भी इसी काल की स्रजन हैं। उनको टप्पा रचना की प्रेरणा हिन्दी संगीतकार छोरी मिर्जा के टप्पों से मिली है।

परिशिष्ट

बेंगला रामायणों पर तुलसी रामायण का प्रभाव

डा० बीनेचण्ड सेन लिखते हैं 'जैसे कि मुस्लिम काल में हिन्दी भारत की सार्वजनिक भाषा थी तुलसीदास की रचना सारे देश में पढ़ी जाती थी और वह प्रभावित हुई थी और उसने भारत के अनेक भागों के साहित्यकारों को भी प्रभावित किया था।' हम यह देखते हैं कि चन्द्ररत्न की और उन्नीसवीं शताब्दियों की कुछ बेंगला रामायणों पर तुलसीदास के प्रभाव की कुछ छाप है।^१

श्री कानिदास राव लिखते हैं 'इतिहासी रामायण के भाषी और भाषा के अनुसरण पर परबर्ती रामायणकारों ने अपने-अपने ढंगों की रचना की थी। तब उन्होंने केवल बाधोक्ति का ही आशय नहीं किया किन्तु उन्होंने जैन रामायण अर्थात् रामायण एवं तुलसीदास की रामायण आदि से कुछ-कुछ अर्थ ग्रहण किए थे।'^२

१ As Hindi during the Mohamedan times was the lingua franca of India Talalida's work was read and appreciated throughout India and influenced the writers of other parts of the country. We shall presently see that some of the Bengali Ramayanas of the 18th and 19th centuries were stamped with his influence.
B. R. page 136

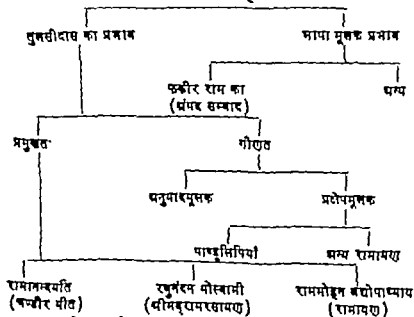
२ इतिहासी रामायण के भाषी और भाषा अनुसरण पर परबर्ती रामायण प्रलेखन रचना अर्थ रचना करियादिनेन—उसे तोहारा एकमात्र बाधोक्ति के आशय केन नाह। तोहारा जैन रामायण अर्थात् रामायण, तुलसीदास के रामायण आदि से हरे की कीन कीन अर्थ ग्रहण करियादिनेन।

यह सुविधा के लिए तुलसीदास की रामायण के प्रभाव का वर्गीकरण इस प्रकार हो सकता है —

- १ बंगला रामायणकारों पर तुलसीदास की प्रभाव की छाप है। जैसे—
 - (क) रामानन्द मति (बन्धीर-गीत रचनाकाल, शकम्ब १९५८—१७९९ ई०)
 - (ख) रघुनन्दन गोस्वामी (रामरघायण रचनाकाल ११६३ बंगाल १७८५ ई०)
 - (ग) राममोहन बघोपाध्याय (रामायण रचनाकाल १७९० शकम्ब १८३८ ई०)
- २ (क) तुलसीदास के कुछ वाहे बंगला-वास्तुत्वियों में पाये जाते हैं।
- (ख) तुलसीदास की समस्त कृतियों का अनुवाद बंगला में हुआ है।
- (ग) तुलसीदास के पावन एवं उच्च व्यक्तित्व तुलसी रामायण की पामिकता एक काव्य-सीट्ठक तथा साहित्यिक धीमदर्य के कारण सामान्य प्रभाव मात्र तक निरंतर मति से जाता आ रहा है।

अथपि बंगला रामायणों पर मुख्यतः तुलसी रामायण का प्रभाव है किन्तु स्वल्प रूप में हिन्दी प्रभाव भी कहीं-कहीं दृष्टिगोचर होता है। किन्तु मात्राधिक द्वारा हिन्दी प्रभाव बंगला रामायणों पर अधिक स्पष्ट हो सकेगा।

बंगला रामायणों पर हिन्दी प्रभाव



अधुनक मानसिक का कश्चित् विवेचन अपेक्षित है।

- १ सापुनिक काल में सतीनाथ भातुकी विरचित डॉ. आई. चरित-मानस पर तुलसी कृत रामचरितमानस का प्रभाव है। यह तुलसीकर रामचरितमानस के अनुकरण पर विरचित है। इसमें बीच-बीच में हिन्दी रामायण के पद भी उद्धृत हैं। हिन्दी की कश्चित् सध्याकभी की उक्त पुस्तक पर छाप है।

का स्पष्ट प्रभाव है। इस प्रभाव के निम्न ऐतिहासिक प्रमाण हैं —
१ श्री रामानन्दयति

श्री रामानन्दयति ने बङ्गीर पीठ लिखा है।^१ इन्होंने स्वयं तुलसीदास

की का अष्टौ स्वीकार किया है। इनके बङ्गीर पीठ में तुलसीदास की का प्रभाव है। जैसे :—
सद्यु बाघ बिबरन ताहे करि रामायण तुलसीदासेर बिबरन ।
कवि स्वयं अपने ग्रंथ में तुलसीदासजी की उल्लेख करते हैं ।

कस भी तुलसीदास महापुरुषायाम । जाके बरदान दिया द्विल प्रभुताम ॥
जिनु काने कवि पातयो दुसन । मयरे तुलसीदास देखाओ करन ॥^२

२ श्री रामानन्ददास गोस्वामी (श्रीमद्भारतमरसायण)
भारतमरसायण तुलसी रामायण की तरह एक भक्ति प्रधान काव्य है। यदि
भारतमरसायण को बंगला की रामचरितमानस कहें तो कोई बल्युक्ति नहीं होती ।
डा० बीनेसबन्ध सेन भारतमरसायण का बहुत कुछ आधार तुलसी रामायण को मानते
हैं। वे लिखते हैं 'कवि की उत्कृष्ट परायणता तो सत्य है किन्तु हिन्दी भाषा
का मेस उनके काव्य में प्रायः सबत्र ही दृष्टियोग्य होता है। जैसे—कहिनु, कैनु,
तिहँ, तबहुँ प्रभृति छोटे-छोटे शब्द उत्कृष्ट की मुग्य पल धीर परिगुज प्रभासी के
मध्य में हिन्दी प्रभाव की पतनोग्युक्त ब्यबा उड़ाते हैं।' वे अपने संश्लेषी ग्रन्थ बंगला
भाषा तथा साहित्य के इतिहास में लिखते हैं 'यह ग्रन्थ केवल भारतीय की रामा

१ एथिवाटिक सोसाइटी प्रायः बंगला की हस्तलिखित प्रति संख्या ८० रामानन्द
यति का बङ्गीर पीठ है। यह फोर्ट बिलियम कासेज की हस्तलिखित पोथियों
में से है। यह सुन्दर रूप में सुरक्षित है।
२ यह प्रसंग काव्य के ग्रंथ में मिलता है।
—बा० सा० इ० प्र० पृष्ठ ५०, ६०८

३ यह तुलसीदास जी के प्रभाव का संतरंग प्रमाण है। हस्तलिखित प्रति पत्र
१०४ १०३ पर मिलता है। यह इसकी प्रमाणित धीर स्पष्ट करते के लिए
पत्रों १०४ १०३ १४१ की प्रतिनिधियों पृष्ठ २३० २६६ के सामने संलग्न
हैं। —डा० मुकुन्दार सेन धीर एथिवाटिक सोसाइटी के धीरग्रन्थ से
४ किन्तु कवि उत्कृष्ट परायणता सत्ये वा हिन्दी भाषापर धिना फाँटों ताहार
कायेर प्रायः सबत्र दृष्ट इय । कहिनु, कैनु, तिहँ तबहुँ प्रभृति सुत्र सब्रगुनि
सतुजेर मुग्य पल धी परिगुज प्रभासीर मध्ये हिन्दी प्रभावेर पतनोग्युक्त ब्यबा
उद्गान्ते छ ।

यस के ऊपर ही आधारित नहीं है किन्तु तुलसीदासजी की हिन्दी रामायण पर भी आधारित है।^१ कवि स्वयं स्वीकार करते हैं "राम की वासन्तोला बचन में भूपण्डी काक का विवरण तुलसीदास की रामायण से ग्रहण किया हुआ है। कवि ने स्वयं स्वीकार किया है। यथा—

धीमाम तुलसीदास निबहरामायण—
उत्तरकाण्डेते इहा करेन वर्णन।^२

अर्थात् धी तुलसीदास जी ने अपनी रामायण के उत्तरकाण्ड में इसका वर्णन किया है। डॉ० दीनेशचन्द्र सेन पुनः लिखते हैं "कवि ने अनेक प्रसंगों में वास्मीकि रामायण का अनुसरण किया है। बीच बीच में कहीं कहीं तुलसी रामायण के अंशों का भी ग्रहण हुआ है।"^३

जिस प्रकार तुलसीदास राम को भगवान बना कर उनकी भक्ति में विभोक्त हो जाते हैं उसी प्रकार रामरसायण में तुलसी रामायण को तरह राम भक्ति से पूर्णतः ओझ ओझ है। डॉ० सेन फिर लिखते हैं, "तुलसीदास की अनुयायियों अथवा उनका बानी अंशों का अक्षरानुबन्ध रूपसे रामायण गोस्वामी अनुसरण एवं अनुकरण करते हैं।" यही प्रक्रिया रामरसायण में तुलसी रामायण की तरह प्रादि से अन्त तक चलती है। कुछ उदाहरणों से स्पष्ट करना अपेक्षित जान पड़ता है—

रामरसायण—

देखि देखि बहुत मनन ब्यामय
कमनीय कसनिधि करिना उदय ।

रामचरितमानस—

सुखन समाज सकस गुन खानी ।
करवै प्रनाम सप्रेम सुखानी ॥
× ×
सुख संगसमय सत समाजू ।
जो जग जयम तोरण पाजू ॥

१ It is based not only on the Ramayan of Valmiki but also on the Hindi recension by Tulalidaa...H. B. B. L. page 169

२ रामेर वास्यमीना वर्णनाय भूपण्डी काकेर विवरण ये तुलसीदासेर रामायण हइते ग्रहण करत हइयाये, ताहा कवि निबई स्वीकार करिया गियायेत—

(बा० सा० दि० लख ५० १५६)

३ कवि अनेकाने वास्मीकि के अनुसरण करिया ऐत मध्ये मध्ये तुलसीदासेर हिंदी रामायण हइते भी कीन कीन अंश गहीत हइयाये ।

(बा० भा० सा० ५० २११)

४ But Raghunandan adheres more closely to the characteristic ways of Tulalidaa's imagery

घठारहवीं तथा जन्मोसवीं खताब्दी के बंगसा रामायणकारों पर तुलसीदास का स्पष्ट प्रभाव है। इस प्रभाव के निम्न ऐतिहासिक प्रमाण हैं —

१ श्री रामानन्दयति

श्री रामानन्दयति ने जग्गीर पीठ लिखा है।^१ इन्होंने स्वयं तुलसीदास जी का ऋण स्वीकार किया है। इनके जग्गीर पीठ में तुलसीदास जी का प्रभाव है। जैसे —

सतु बग्न बिबरन ताहे करि रासायन तुलसीदासर बिबरन।^२

कवि स्वयं अपने ग्रंथ में तुलसीदासजी की बंनसा करते हैं।

कल भी तुलसीदास महापुण्यनाम। जाके बरसान दिया हिम प्रभुराम ॥

दिगु कासे कवि पासयो बृहत्। अग्यरे तुलसीदास बेकायो अरन ॥^३

२ श्री रामुमदनदास गोस्वामी (श्रीमद्भारमरसायण)

भारमरसायण तुलसी रामायण की तरह एक मक्ति प्रधान काव्य है। यदि भारमरसायण को बंनसा की रामचरितमानस कहें तो कोई असुविधा नहीं होगी। डा० बीनेसबन्ध सेन भारमरसायण का बहुत कुछ आधार तुलसी रामायण को मानते हैं। वे लिखते हैं 'कवि की संस्कृत परायणता तो सत्य है किन्तु हिन्दी भाषा का मतलब उनके काव्य में प्रायः सर्वत्र ही दृष्टिगोचर होता है। जैसे—कहिनु कैसू, तिहुँ ठबहुँ प्रभूति छोटे-छोटे अर्थ संस्कृत की मुगु बल धीर परिगुल प्रभासी के मध्य में हिन्दी प्रभाव की पठनोगुल ध्वजा उड़ाते हैं।^४ वे अपने ग्रंथकी प्रथम बंनसा भाषा तथा साहित्य के इतिहास में लिखते हैं 'यह ग्रन्थ केवल वाग्मीकि की रामा

१ एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल की हस्तलिखित प्रति संख्या ८० रामानन्द यति का जग्गीर पीठ है। यह फोर्ट विलियम कालेज की हस्तलिखित पोथियों में से है। यह मुम्बई रूप में सुरक्षित है।

२ यह प्रसंग काव्य के अंत में मिलता है। देखिये पत्र संख्या जग्गीर पीठ १४१।

—बी० सा० इ० प्र० अन्व पु० १७८

३ यह तुलसीदास जी के प्रभाव का अंतरंग प्रमाण है। हस्तलिखित प्रति पत्र १०४ १०५ पर मिलता है। अतः इसको प्रमाणित धीर स्पष्ट करने के लिए पत्रों १४, १०५ १४१ की प्रतिनिधियाँ पृष्ठ २३७ २६६ के तामने संलग्न हैं। —डा० मुकुमार सेन धीर एशियाटिक सोसाइटी के सौजन्य से

४ किन्तु कवि संस्कृत परायणता सत्ये को हिन्दी भाषा के धिटा अंतों ताहार काबेर प्राय सबबद दृष्ट ह्य। कहिनु कैसू तिहुँ ठबहुँ प्रभूति शुद्ध अर्थगुति संस्कृतेर मुगु बल धी परिगुल प्रभासीर मध्ये हिन्दी प्रभावेर पठनोगुल ध्वजा उगारते हैं।

यस के अन्त ही आधारित नहीं है किन्तु तुलसीदासजी की हिन्दी रामायण पर भी आधारित है।^१ कवि स्वयं स्वीकार करते हैं "राम की वासन्तीसा बर्णन में भूपण्डी काक का विवरण तुलसीदास की रामायण से ग्रहण किया हुआ है। कवि ने स्वयं स्वीकार किया है। यथा—

धीमान तुलसीदास निज रामायण—
 अलरकायेते इहा करेन बर्णन।^२

अर्थात् श्री तुलसीदास जी ने अपनी रामायण के अलरकाय में इसका वर्णन किया है। डा० बीनेषचन्द्र सेन पुन लिखते हैं 'कवि ने अनेक अंश में बास्मीकि रामायण का अनुसरण किया है। बीच-बीच में कहीं कहीं तुलसी रामायण के अंशों का भी ग्रहण हुआ है।'^३

अब प्रकार तुलसीदास राम की मनवान बना कर उनकी भक्ति में विलीन हो जाते हैं उसी प्रकार रामरसामण भी तुलसी रामायण की तरह राम भक्ति से पूर्णतः प्रोत प्रोत है। डा० सेन फिर लिखते हैं 'तुलसीदास की अनुप्रास छटा तथा उपमा वाली घेसी का अकमतापुत्रक रघुनन्दन गोस्वामी अनुसरण एवं अनुकरण करते हैं।'^४ यही प्रक्रिया रामरसामण में तुलसी रामायण की तरह पादि से अन्त तक चलती है। कुछ उदाहरणों से स्पष्ट करना अपेक्षित जान पड़ता है—

रामरसामण—

हेसि हेब इनुअ इजन इयामय
 कमनेय कसनिधि करिला उदय ।

रामधरितमानस—

सुजन समाज सकल पुन जानी ।
 करई प्रथम सप्रेम सुजानी ॥
 × ×
 मूर अंगसमय संत समाजू ।
 जो अग अंगम तीरथ राजू ॥

१ It is based not only on the Ramayan of Valmiki but also on the Hindi recension by Tulsidas...H. B. B L. page 100

२ रामेर बास्वमीसा बर्णनाय भूपण्डी काकेर विवरण ये तुलसीदासेर रामायण हइते ग्रहण करा इइयाये, ताहा कवि निजई स्वीकार करिया मियायेन—

(बा० सा० हि० सभ्य पृ० १२६)

३ कवि अनेकाने बास्मीकि के अनुसरण करिया ऐन मध्ये मध्ये तुलसीदासेर हिंदी रामायण हइते मो कीन कीन अंश गृहीत हइयाये ।

(बा० सा० पृ० २११)

४ But Raghunandan adheres more closely to the characteristic ways of Tulsidas's imagery —B R

मठारहीँ तथा उम्नोसबीँ शताब्दी के बंयसा रामायणकारों पर तुलसीदास का स्पष्ट प्रभाव है। इस प्रभाव के निम्न ऐतिहासिक प्रमाण हैं —

१ श्री रामानन्दयति

श्री रामानन्दयति ने बखीर गीत लिखा है।^१ इन्होंने स्वयं तुलसीदास जी का श्रद्ध स्वीकार किया है। इनके बखीर गीत में तुलसीदास जी का प्रमाण है। जैसे —

सतु बन्ध बिबरण साहे करि रामायण तुलसीदासेर बिबरण ।^१

कवि स्वयं अपने ग्रंथ में तुलसीदासजी की बचना करते हैं।

कल श्री तुलसीदास महापुण्यमान । जाके बरखन दिया खिल प्रमुराम ॥

सिधु जासे कवि पासयो बूछन । धम्मरे तुलसीदास देखाओ करण ॥^२

२ श्री रघुनन्दनदास गोस्वामी (श्रीमद्भारामरसामण)

रामरसायण तुलसी रामायण की तरह एक भक्ति प्रमाण काव्य है। यदि रामरसायण को बंयसा की रामचरितमानस कहें तो कोई असुविधा नहीं होगी। डा० दीनेशचन्द्र सेन रामरसायण का बहुत कुछ भाषार तुलसी रामायण को मानते हैं। वे लिखते हैं 'कवि की संस्कृत परचयलता तो सत्य है किन्तु हिन्दी भाषा का मेल उनके काव्य में प्रायः सर्वत्र ही वृष्टियोजर होता है। जैसे—क्रीहिलू, कैमू, तिहूँ तबहुँ प्रभृति छोटे-छोटे शब्द संस्कृत की सुगुलन और परिगुलन प्रजाती के मध्य में हिन्दी प्रभाव की पतनोगुलन ध्वजा उड़ाते हैं।' वे अपने धरंजी श्रम बंयसा भाषा तथा साहित्य के इतिहास में लिखते हैं 'यह श्रम केवल काश्मीकि की रामा

१ एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल की हस्तलिखित प्रति संख्या ८० रामानन्दयति का बखीर गीत है। यह फोर्ट विलियम कालेज की हस्तलिखित पोथियों में से है। यह सुन्दर रूप में सुरक्षित है।

२ यह प्रसंग काव्य के अंत में मिलता है। देखिये पत्र संख्या बखीर गीत १४१।

—डा० सा० इ० प्र० लखन पृ० १७८

३ यह तुलसीदास जी के प्रभाव का धरंरंग प्रमाण है। हस्तलिखित प्रति पत्र १०४ १०५ पर मिलता है। अतः इसकी प्रमाणित और स्पष्ट करने के लिए पत्रों १०४, १०५ १४१ की प्रतिभितियाँ पृष्ठ २५७ २६६ के सामने संलग्न हैं। —डा० सुकुमार सेन और एशियाटिक सोसाइटी के शोकम्य से

४ किन्तु कवि संस्कृत परचयलता सत्ये श्री हिन्दी भाषार छिटा फरंटों ठोहार काबेर प्राय सर्वत्रह वृष्ट हय। क्रीहिलू कैमू, तिहूँ तबहुँ प्रभृति शुद संस्कृति संस्कृतेर सुगुलन श्री परिगुलन प्रजातीर मध्ये हिन्दी-प्रभावनेर पतनोगुलन ध्वजा उड़ाते हैं।

यग के ऊपर ही आधारित नहीं है किन्तु तुलसीदासजी की हिन्दी रामायण पर भी आधारित है।^१ कवि स्वयं स्वीकार करते हैं "राम की वाससीता कथन में मूषण्डी काक का बिबरण तुलसीदास की रामायण से ग्रहण किया हुआ है। कवि ने स्वयं स्वीकार किया है। यथा—

धीमान तुलसीदास निजरामायण—
उत्तरकाण्डेने इहा करेन बर्णन।^२

अर्थात् यी तुलसीदास जी ने अपनी रामायण के उत्तरकाण्ड में इसका बर्णन किया है। डा० बीनेचमण्ड सेन पुन लिखते हैं 'कवि ने अनेक ग्रंथ में वास्मीकि रामायण का अनुसरण किया है। बीच-बीच में कहीं कहीं तुलसी रामायण के अंशों का भी ग्रहण हुआ है।'^३

जिस प्रकार तुलसीदास राम की भवधान बना कर उनकी मक्ति में बिलीन हो जाते हैं उसी प्रकार रामरसायण में तुलसी रामायण की तरह राम व्यक्ति से पूर्णतः भेद भेद है। डा० सेन फिर लिखते हैं 'तुलसीदास की अनुयायिणा तथा उपमा बामी घैसी का अकथनापूर्वक रघुमंददास मोक्षामी अनुसरण एवं अनुकरण करते हैं।'^४ यही प्रक्रिया रामरसायण में तुलसी रामायण की तरह पादि से अन्त तक चलती है। कुछ उदाहरणों से स्पष्ट करना अपेक्षित जान पड़ता है—

रामरसायण—

देषि दब बगुज बानन रामायण
कमनीय कमानिबि करिता उदय ।

रामचरितमानस—

मुजन समरज सकल गुन जानी ।
करई प्रनाम सप्रेम कृपाणी ॥
× ×
मद संयममय संत समाजू ।
जो बग जयम तीरज राहू ॥

१ It is based not only on the Ramayan of Valmiki but also on the Hindi recension by Tulaldas H. B. B. L. page 169

२ रामेर वास्मीकीमा बर्णनाब भूपण्डी काकेर बिबरण ये तुलसीदासेर रामायण इहते ग्रहण करा हइयाये, ताहा कवि निजई स्वीकार करिया गियाऐम—

(बी० सा०, हि० खण्ड पृ० १२२)

३ कवि अनेकाने वास्मीकि के अनुकरण करिया ऐन मन्ने मन्ने तुलसीदासेर हिन्दी रामायण इहते भो कौन कौन अंश गृहीत हइयाये ।

(बी० सा०, सा० पृ० २११)

४ But Raghunandan adheres more closely to the characteristic ways of Tulaldas's imagery —B. R.

इस प्रकार अनुप्रास की छटा समान रूप से दोनों महाकाव्यों में है। तुलसी रामायण का बहुत कुछ साहित्यिक सौन्दर्य अनुप्रास की मासाओं पर अवलम्बित है। निःसन्देह यह सैनीगत प्रभाव तुलसी रामायण का रामरसायण पर है। विराट काव्य श्रीमद् रामरसायण में अनेक ऐसे पद, प्रसंग हैं जिनकी साम्यता तुलसी रामायण से सरमता से हो जाती है। राम केवट संवाद तुलसी रामायण की एक महत्त्वपूर्ण घटना है। अन्य रामायणों में यह घटना नहीं मिलती है। किन्तु रामरसायण में यह मिलती है। कवि स्वयं कहते हैं—

रामरसायण—

एह स्वान एक सीता धुन सर्वजन ।

अिष्ट परंपरा बैलि करिब बर्चन ।

किन्तु एह सीता नहीं रामायणै ।

परम मधुर एह सीता ए कारनि । (पृ० ४७)

अर्थात् एक सीता इस स्वान पर सब लोग सुनें। किन्तु यह सीता रामायण में नहीं मिलती है। अिष्ट परम्परा बैलकर बर्चन करता हूँ। इस कारण से यह सीता परम मधुर है।

किन्तु दोनों के बीच, काल परिस्थितियों में अंतर है। रामचरितमानस में यह घटना राम-वनवास के समय घटती है। रामरसायण में विस्वामित्र के यज्ञ की रक्षा के परवाह बनकपुर की बाते समय होती है। किन्तु यह निश्चित है, यह तुलसीदास से ली गयी है। अंत—

रामरसायण—

बोलयै नाबिक प्रभु कहएकेमन धिजातै काब्येते भेव ना ह्य बरदान ।

सैइ बड़ निरस कठिन प्रान्हीन एह सैइ मततहै कौन रूप भिन ।

रामरसायण—

धरि हरि परधूमि परसे तोमार । नारी हुबे जाबे जीबिका प्रामार ।

अत्यस हरिउ मुई एहेते जीबन यदि नष्ट ह्य तबे बड़ बिपलन ।

रामचरितमानस—

सौनी नाब न केवट घाना । कहइ तुम्हार भरमुम जाना ॥

बरन कमत रज कहुं सनु कहइ । मानुप करनि मुरि कनु घहइ ।

सुमस सिता भइ नारि सुहाइ । पाहमते न काठ कठिनाई ।

सरनिपुं मुनि परिनी होइ जाइ । बाट परइ मोरि नाब-उड़ाइ ।

सैहि प्रतिपालतुं सनु परिवार । नहि जानौं कसु मोर कबाब ।

रामरसायण में अनेक स्थल ऐसे हैं जिनसे तुलसी रामायण के अनेक प्रसंगों से साम्य है। अंत में मयवान् राम जब धनुष तोड़ने के लिये माते हैं तब प्रत्येक व्यक्ति जनका दर्शन अपनी भावना के अनुसार करते हैं।

रामरसायण—

समाते प्राण्ये यत् शान्तिं मुनि जन । परतत्त्व कर्त्तु रामे करे निरीक्षण ॥
 परम ईश्वर कर्त्तु शैल शैलपन । सद्गमैर सक्य रत्न करे उत्साहन ॥
 जनकेर रामी माने निरैर मदन । जानकीर अंतरेते साक्षात् मदन ॥
 कौन कौन मुनि शैल करेन करन । हृदयेते वासरसे निमग्न ॥
 कृत राजा रूप शैल पाइला विध्वंस । जनकेर कन्यादान बीररसोदय ॥
 बृद्ध मारी शैल पर ब्रजे प्रायसन । श्रीरामेर ध्यया मानि कृपापुत्रत मन ॥
 बुद्ध राजा जन तारा शैल रघुवर । निज बान्धव भय जानि सरोय अंतर ॥
 राक्षस असुरे शैल मनेर समान । अकार जन सुपाकर जान ।
 दधानन पुरोहित करये निवन । सुयं अंपकार बसे वैबक वै मन ।
 एह रूपे सवे शैल आर जन मन ।

सुमती रामायण में भी उपर्युक्त विचारों का बर्णन है—

रामचरितमानस—

शिशु के रही मावना शैली । प्रभु पुरति शिशु शैली लीली ॥
 शैली शूय महारन श्रीरा । मनहुं बीर रत्न मरे तरीरा ॥
 उरे कुशिल नृप प्रभुहि निहारी । मनहुं भयानक मूरति भारी ॥
 रहें असुर एक शोनिष शैवा । शिशु प्रभुप्रकट कास समशैवा ॥
 पुरवाशिशु बीन होइ भाई । नर भूयन सोचन सुखराई ॥
 दो० मारि बिलोकाहि हरषि शिष्य निज निज शक्ति प्रभुकुप ॥
 अनु सोहत सिपार बरि मूरति परम प्रभूप ।
 बिकुपहु प्रभु बिराठमय शीला । अनुमुक्त कर पयलोचन सीला ॥
 जनक आति प्रबसोकाहि शैले । सजन सगे प्रिय सागहि बसे ॥
 सहित बिबेह बिलोकाहि रामी । शिसु सम प्रीति न जाइ बनानी ॥
 शोनिगह परम हरवमय भासा । सात सुख सम सहज प्रकासा— ॥
 राजपि जनक की निरासा भी शोनी रामायणों में समान है ।

रामरसायण—

हृष्य हृष्य केह नाहि कर्त्तसे पारिता । बुद्धि एह परतत्त्व निर्धार हृदया ॥

रामचरितमानस—

अब जानि कोउ भाये भवजानी । बीर बिहीन मही न जानी ॥

मारी सुनम सहज भावना भी दोनों काव्यों में समान है । शिष्या विचार करती हैं । राम शीला का पति होने योग्य है ।

रामरसायण—

कौन पुण्यवती कृत पुण्य करियाये । आर भाग्ये हेनपति बिमि लिखीयाये ॥

आर जन कहे सुन बचन आमार । राम योग्य मारी सीता बिने नाहि आर ॥

इस प्रकार अनुशास की छटा समान रूप से दोनों महाकाव्यों में है। तुलसी रामायण का बहुत कुछ साहित्यिक सौन्दर्य अनुशास की भाषाओं पर प्रबलम्बित है। निःसन्देह यह शैलीमय प्रभाव तुलसी रामायण का रामरसायण पर है। बिचट काव्य श्रीमद् रामरसायण में प्रनेक ऐसे पद प्रसंग हैं, जिनकी साम्यता तुलसी रामायण से सरसता से हो जाती है। राम केबट संवाद तुलसी रामायण की एक महत्वपूर्ण घटना है। अन्य रामायणों में यह बटना नहीं मिलती है। किन्तु रामरसायण में यह मिलती है। कवि स्वयं कहते हैं—

रामरसायण—

एह स्वान एक सीता सुन सर्वजन ।

शिष्ट परंपरा बेहि करिब बर्नन ।

किन्तु एह सीता नहीं रामायणे ।

परम मधुर एह सीता ए कारये । (पृ० ४७)

पर्याप्त एक सीता इस स्थान पर सब सोच मुर्नें। किन्तु यह सीता रामायण में नहीं मिलती है। शिष्ट परम्परा देखकर बर्नन करता हूँ। इस कारण से यह सीता परम मधुर है।

किन्तु दोनों के बीच काल परिस्थितियों में अंतर है। रामचरितमानस में यह घटना राम-वनवास के समय घटती है। रामरसायण में विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा के पश्चात् जनकपुर की आठे समय होती है। किन्तु, यह निश्चित है यह तुलसीराज से भी गयी है। जैसे—

रामरसायण—

बोलये भाबिक प्रभु कहएकेमब सिताते काटैते भिर ना हय बरदान ।

तेइ बड़ निरत कटिन प्राणहीन एह तेइ मतनहे कीन रूप भिन ।

रामरसायण—

यदि तरि परपूति परतो सोमार । नारी हवे आवे बीबिका धामार ।

धायत बरिज मुई एहेते जीवन यदि नख हय तने बड़ विघटन ।

रामचरितमानस—

भागी माव न केबट प्राना । कहइ तुम्हार मरमुसं जाना ॥

बरन कमल रज कहुं सजु कहइ । मागुय करनि मुरि कजु पाहूही ।

गुपत सिता भइ नारि मुहाइ । बाहमते न काठ कटिनाई ।

तरनिपं मुनि भरिनी होइ बाइ । बाट परइ मोरि नाव-उड़ाइ ।

येहि प्रतिपासई तनु परिबाव । नहि जानों कजु घोर कषाव ।

रामरसायण में प्रनेक स्थल ऐसे हैं जिनसे तुलसी रामायण के प्रनेक प्रसंगों से साम्य है। जैसे भगवान् राम जब धनुष तोड़ने के लिये आते हैं तब प्रत्येक व्यक्ति उनका दर्शन अपनी भावना के अनुसार करते हैं।

पमरसायण—

समाप्त भाष्ये यत् प्रीति मुनि जन । परतत्त्व करि रामे करै निरोक्षण ॥
 परम ईश्वर करि देखै देखन । सक्षमनैर सक्षय रस करै जन्मासन ॥
 जनकेर रागी माने निजैर मदन । जानकीर प्रंतरेते सामात मदन ॥
 कौन कौन मुनि देखि करैत करन । हृदयेषु बाहरसे नियमन ॥
 कत राजा रूप देखि पाइसा बिष्मय । जनकेर कन्यादान बीररसोदय ॥
 मूढ़ नारी देखि यह ब्रह्मै प्रायसन । श्रीरामेर ध्यया मानि कृपापुस्त मन ॥
 पुष्ट राजा अत तारा देखि रघुबर । निज भाँस मग्न जानि सरोय प्रंतर ॥
 रासस घसुरै देखै मनेर समान । प्रथकार जैन सुधाकर ज्ञान ।
 ब्यागन पुरोहित करये निवन । सूर्य प्रथकार बसे वेबक से मन ।
 एह कये सबै देखै जार जैन मन ।
 तुमसी रामायण में भी उपयुक्त विचारों का बख्त है—

रामचरितमानस—

जिन्ह के रही भावना असी । प्रभु मूरति तिन्ह देखी सीसी ॥
 देखहि भूप महारन धीरा । मनहुं बीर रसु बरे सरोरा ॥
 डरे कुबिल नृप प्रमूहि निहारी । मनहुं भवानक मूरति भारी ॥
 रहै प्रसुर धन द्योनिप बेवा । तिन्ह प्रमुं प्रकट कास समवेवा ॥
 पुरबासिन्ह बोन बोट माई । नर भूयन सोचन सुखदाई ॥
 बो० नादि बिलोकहि हरवि हिय निज निज बधि प्रभुकप ॥
 जनु सोहत तियार करि मूरति परम धनूप ।
 बिदुपन्ह प्रभु बिराटमय बीसा । बहुमुख कर पगलोचन सोसा ॥
 जनक जाति भबलोकहि कंसे । सत्रन लये प्रिय लापहि कंसे ॥
 सहित बिदेह बिलोकहि रागी । तिसु सम प्रीति न जाइ बलागी ॥
 जोपिन्ह परम तस्वमय भासा । तात सुख सम तहुन प्रकासा— ॥
 रात्रपि जनक की निराशा भी दोनों रामायणों में समान है ।

पमरसायण—

हाय हाय केहू नाहि करिते पारिसा । बूझि एह अरातस निम्बीर हइसा ॥

रामचरितमानस—

धर जनि कोउ भाले भटमानो । बीर बिहीन महुो न जानी ॥

नारी सुमम सहज भावना भी दोनों काव्यों में समान है । त्रिदश विचार कछी हैं । राम सीता का पति होने योग्य है ।

पमरसायण—

कौन पुष्यवती कत पुष्य करियाद्ये । जार जाय्ये हेनपति बिधि लिसीयाद्ये ॥

भार जन कहे दुन बचन भ्रानार । राम योग्य नारी सीता बिने नाहि धार ॥

केहू केहू सखी तुमि कहिषे उत्तम । सीता रामे बिबाह हुइसे ह्य सम ॥
सीता सम राम राम सम सीता ह्य

रामचरितमानस—

बेकि राम छवि कोउ एठ कहई । जोनु जानकिहि यह बर प्रहई ॥
जौ तजि इहहि बेस नरनाहू । पन परिहरि हठि करइ बिबाहू ॥
ककेयी मंघरा संबाव में दोनों का स्वर एक ही है । देवता सरस्वती से समान रूप से कँकेयी की मति भ्रष्ट करने के लिये प्रार्थना करते हैं । यदि राम बन नहीं पायेंगे तो देवताओं का धनु राखण कँके से माग जायेगा ।

रामरसायण—

राबन दोरारमा सब जानइ सकसे । तार वस लामि राम प्रकट घूतसे ॥
किनु यदि ना ह्य प्रभुर बनबास । तबे तार धरन छिले हबे घास ॥

रामचरितमानस—

विपति हमारि बिसोकि बड़ि मातु करिय सोइ प्रातु ।

राम जाहिहू बनरानु तकि होइ सकल सुर कातु ॥

राम बनबास के समय राम-सीता सबार राम-सकल संवाद कीधस्या बसराव कँकेयी एवं सुमित्रा प्रायिके बिचार तुलसीदास एवं रामरसायण में समान हैं ।

बनबास-काल में प्रामीण नारियाँ सीता से राम सकल के विषय में पूछती हैं । ये कीन हैं । सीताजी-प्राणी के संकेत से ही उत्तर देती हैं । यह प्रथम रामचरित मानस को अद्भुत खीच्ये प्रदान करता है । मानव प्राणियों का मनोवैज्ञानिक बिस्लेषण दोनों काव्यों में समान है । रामरसायण में भी यह प्रथम तुलसी रामायण के अनुकूल ही है ।

रामरसायण—

कीन कीन ह्याने प्राप्ति मिले नारीपन ।

यदि तारा राम सीता रूप नेत्र भारि । जानकीरे पूछे किनु मनु मनु करि ॥

ह्याम तनु प्राणे पैहू करबेन गमन । बंइमुखि ह्य एह सोमार केहन ॥

जानकी उत्तर दिगु ना बन बधने । किनु मनु हास्य करि जानान नयने ॥

रामचरितमानस—

बो० ह्यामन गोर कितोर बर सु बर सुप्रमा धयन ।

तारैरोनाय मुलु सरख सरोयहू नयन ।

कोहि मनोज लयावन हारे । सुमुखि कहूँ को प्राहि तुगहारे ॥

सुनि सनहमय मंडुल बानी । सजुधि तियमन मठे मुमुकानी ॥

तिगहूँ बिसोकि बिसोकती बरनी । पुहें सकोच सजुचलि बरराती ॥

सजुधि सप्रम बास मृगतपनी । बोली मपुर बचन पिठ घयनी ॥

सहज सुभाय सुमय तव गोरे नाम लखनु सपु देबर मोरे ॥
 यहुरि बचन बिनु प्रबन बाँकी । पिय तन बितहि भोह करि बाँकी ॥
 खजन मनु तिरिछे नयनि निरपति कहेउ तिन्ह सिय सैननि ॥
 बगमन में सुमन को बिबा करते हुए रामचन्द्र जी निवेदन करते हैं कि प्रत्येक को उनके कल्प्य अनुसार मर निवेदन कर देना । भगवान राम का यह निवेदन दोनों रामायणों में समान है ।

रामरसामण—

कहिनेन मपुर बचने सुमन एखानहेते छिरि जामो अयोप्याते धार न खडिब स्पम्बने ।
 बशिष्ठारि बिम्बाने, नृपतिरि श्रीचरणे बिस्तर प्रमाण जानाइबे ।
 कौमल्या कैकयसुता सुमित्रारि अतमाता सब मोर प्रवति कहिबैन ।
 मोर छोके मरपति हबेन बिङ्गल मति करतारे सतत सात्वन ।
 कहिबे मोदेर नामि ना हबेन सोक भागो मोरबने बर सुखी मन ।
 मातामह पुरहीते शोभ धानि श्रीभरत अमियेक करिबे धानि ।
 इह बचन बस तारे, जनकर सेवा करे, समभावहय मातृयज ॥

रामचरितमानस—

विकल बिभोकि मोहि रघुबीरा । बोले मपुर बचन धरि धीरा ॥
 तात प्रणाम तात सन कहेहू । बार बार पर पकज गहेहू ॥
 करबि पार्य परि बिनय बहोरी । तात करिष जन बिता मोरी ॥
 बनमयस मयमंगल कुसल हमारै । कृपा अनुग्रह पुन्य तुम्हारै ॥

छ० तुम्हरे अनुग्रह तात कानन जात सब मुकु पावहीं ।
 प्रतिपाभि आपसु कुसल बेखन पाय पुनि फिर प्राइहीं ॥
 बननी सकस परितोवि परि परि चरण करि बिनति धनी ॥
 तुमसी करेहु सोइ अतनु बैहि कुसली रहि कौसल पनि ॥

सो० गुरसन कहब सबैसु बार बार पर पदुम पहि ।

करब सोइ उपरेसु बौह न सोब मोहि प्रबधपति । १५१ ।
 पुरजन परिजन सकल निहोरि । तात गुनाएहु बिनती मोरी ॥
 सोइ सब भाति मोर हितकारी । जाते रह नरनाहु सुखारी ॥
 कहब सबैसु भरत के आप । नीति न लखिष राजपदु पाए ॥
 पातेहु प्रबहि करम मनबानी । सेएहु मातु सकल समजायो ॥

सुमन के अयोप्या घाममन पर राजा सीता के विषय में पूछते हैं कि हे सुमन सीता ने क्या कहा ? सुमन उत्तर देते हैं—हे राजन ! जनकपुत्री सीता बहुत लज्जालीन है । मुझ्ने कुछ नहीं कहा जबल काठर मन से दोनों नयनों से आँसू

गिराते हुए केवल सबको प्रणाम कहा है। दोनों समानछों में सीठा की य कावरोचित भी समान है।
 रामरसावलि—

जनक नृपति सुता, प्रतिप्रिय लज्जायुता ।
 मोरे कोन कथा ना कहिला ।
 केवल कातर मने, झरझर झुनयने ।
 समा कारे प्रणाम कहिला ।

रामचरितमानस—

कहि प्रतापु कपु कहन लिय लिय सह तिबिल सनेह ।
 यकित बचन सोचन सबल पुलक परलबित बेह ॥

रामरसावलि—
 यद्यपि बारन हरि पाके रामबन कोपेते कहिला

रामचरितमानस—

लज्जन कहे कपु बचन कठोरा । बरजि राम पुनि मोहि निहोरा ॥
 बार बार निज सपक बिबाई । कहबि न तात मजन सरिकाई ॥
 रामरसावलि में प्रनेक देखे स्थल हैं जिनकी रामचरितमानस के भावों के साथ सम्युक्त समानता है। सुमंत्र दण्डव को राम बनयमन के बियम में बताते हैं—

रामरसावलि—

नृपतिरे मंत्रीबर प्रणति करिया । प्रयोमुसे बाँझाइला तीजनि हृदया ।
 नरपति एकाकि देखिबा मंत्रीबरे । रामकोया बसिल पड़िला धूमि परे ।

रामचरितमानस—

दक्षि लखि जय जय कहि कीहेउ इंड प्रतापु ।
 गुनत उठेउ व्यापुल नृपति कहु सुमन कहूँ रापु ।
 इस प्रकार प्रनेक उदाहरण दोनों में समान हैं ।

रामरसावलि—

प्रथम दिनेश कथा कहिके लाये ब्यथा बिपिनते यात्रा करि राम ।
 दिन सबज्ञान कासे ममता नदीर कूले लफ्फते करिला बिभाम ॥

रामचरितमानस—

प्रथम बापु समसा भयउ हुतर सुरसरि तीर ।
 नहाइ रहे जलपापु करि लिय समेत बोउ बीर ।
 क्या कतापदा क्या मावपदा क्या समुद्रास बिधान याहि में रामरसावलि

पर तुमसी रामायण का प्रभाव है। कहीं-कहीं तो शम्भुवती का भी अनुकरण किया गया है। जैसे—

रामरसायण—

ऐहेन बरिबर केश दिये बट बीर । बटा बिरचन कीता कुइ बीर ॥

रामचरितमानस—

होत प्राप्त बटसीर मंगवा । बटामुकुट निज हाप बनावा ॥

जब मुमन राजा को राम-जनबास का बर्णन सुना रहे थे उस समय रानियों ने रोना प्रारंभ कर दिया किन्तु बसिष्ठ ने घाकर सबको सात्वना प्रदान की।

रामरसायण—

एइ रूप महाराती करेन कंडन । केहि तरि ना पारये करिते सात्वन ॥

हेन कासे सेइ रूपाने बसिष्ठ प्रासिया । उठा कराइसा बासीबने प्राता दिया ॥

तबे नागा बाये करि सवारे सात्वन ।

रामचरितमानस—

तब बसिष्ठ मुनि समय सम कहि अनेक इतिहास ।

सोक नेबारेइ सबहि कर निज बिषयान प्रकास ॥

भरत के ननिहाल से अने पर इनको अनेक अपघकुर्णों का प्रभाव होता है। यह हृदयद्रावक वृत्त दोनों रामायणों में एक समान हैं।

रामरसायण—

न जाने हृदयभोर कपि कि कारण । बाम बाहु उस घ्रांखि नाके घनघन ॥

करहुँर घामार घाये करये करन

रामचरितमानस—

असगुम होहि नगर बंधारा । रटहि कुर्माति कुचैत करारा ।

सर सियार बोलहि प्रतिकूला । मुनि मुनि होइ भरतमन सुला ।

भीहत सर धरिता बन बापा । नगद बितेवि अयाबनु सापा ॥

भरत के राजतिसक का भी बर्णन दोनों काव्यों में एक जैसा है।

रामरसायण—

पर बिन प्रभाते बसिष्ठ तपोवन । समाते आइसा संगे मत्री प्रजागन ।

भरते आनिता सेइ समार भितरे । समय उचित रूप कहैन साबरे ।

रामचरितमानस—

मुदिनु सौपि मुनिबर तब आए । सबिब म्हापन सकल बोलाए ।

बैठे राजसभा सब जाई । बटए बोलि भरत होइ भाई ।

रामरसायण एवं तुमसी रामायण में कई-कई बिभाप भरत-गृह संभार वर्णन में अनुभूत समानता है। कहीं-कहीं रघुनन्दन बोस्वामी तुमसीदासजी की नीतिमूलक

उपमामुक्त धनी का भी अनुकरण करते हैं। एक उदाहरण दृष्टव्य है —

रामरसायण—

तिन जन रहिता परम सुखीनन । लक्ष्मण जानकी रहिता सुखरे ।

बिन्दु हाथी इन्द्र बँन सुमेरु शिखरे

रामचरितमानस—

रामलज्ज सीता सहित मोहत परम निकेत ।

बिनि बासब बस धरपुर सधी जयंत समेत ।

रामरसायण में तुलसीदास भी के प्रभाव का बर्णन करने के प्रकार से ही करता है —

१ रामरसायण में प्रकृति बसान तथा अनुप्रास विधान में तुलसीदासजी का प्रभाव है ।

२ रघुनंदन गोस्वामी तुलसीदास जी के संबंदाधी भक्तिवाद से प्रभावित हैं। यद्यपि युग प्रभाव के कारण राम की कथा के आधार पर ही राधाकृष्ण की प्रेम कीसा वर्णन करने लगते हैं। डा० दीनेशचन्द्र सेन भी हमारे मत का समर्थन करते हुए लिखते हैं 'तुलसीदास अपने दो बंगाली शिष्यों रघुनंदन और राममोहन को प्रेरणा प्रदान करते हैं किन्तु वे उनके उच्च धार्मिक दर्शन के घटतल पर स्थिर नहीं हो पाते हैं। संबीत की प्रणाली तुलसीदास की है किन्तु बंगाली कवि उस प्रणाली में अपने ही मीठ माते हैं' ।^१

राममोहन बघोपाध्याय^२

डा० दीनेशचन्द्र सेन का मत है "राममोहन बघोपाध्याय की रामायण तुलसीदासजी की रामायण की जगह है जिससे बंगाली कवि ने कई रूपक साहित्यिक प्रयोग ग्रहण किये हैं। यह हम पहले बता चुके हैं कि कवि अपनी प्रारंभिक कविताओं

१ Tulsiidas inspires his two Bengali disciples Raghunandan and Rammohan. But they cannot stick to the pitch of his high strung religious philosophy. The mode of music is Tulsiidas's, but the Bengali poets sing songs of their own in that mode.

B. R.

२ मेघक की राममोहन बघोपाध्याय की रामायण न तो पाण्डुलिपि रूप में बंदीय साहित्य परिषद तथा अन्य स्वान मे प्राप्त हुई है न कोई प्रकाशित संस्करण प्राप्त हुआ है। जो कुछ सामग्री प्राप्त हुई है वह डा० दीनेशचन्द्र सेन के बंगभाषा धी साहित्य हिस्ट्री प्राब बंगाली सन्देश और मिट्टेरचर बंगाली रामायण तथा बंग-साहित्य-परिषद द्वितीय भाग तथा धी मणीग्र मोहन के बंदिना साहित्य से प्राप्त हुई है।

में इस बात को स्वीकार करते हैं और अपनी यज्ञात्मिक कृतिवास और तुलसीदास दोनों महाकवियों को समान रूप से प्रिय करते हैं^१। उनकी यह यज्ञात्मिक इस प्रकार है —

तुलसी दासैर पर करिया बंदन
प्रथमिया कृतिवास पदितैर वाय ;
भीराममोहन बिप्र रबिन मापाय ।

यर्थात् तुलसीदास जी के चरणों की बंदना करके कृतिवास पदित के चरणों में प्रणाम करके भी राममोहन बिप्र ने माया में (रामायण) रचना की।

राममोहन जी रामायण पर तुलसीदास जी का प्रमाण माना क्यों में है। डा० दीनेशचन्द्र सेन मिलते हैं "किन्तु मैं बिरदास करता हूँ कि बंमाली कवि ने भक्ति के ये शब्दों भाव बालर-देवता के प्रति तुलसीदास की रचना से प्राप्त किये हैं, बिगूँति हनुमान एवं उनके साथियों की स्तुति की है, जो राम के लिए सके थे^२। रामबन्ध हनुमान का प्रसंग बंमाली रामायणों में नया है। कृतिवास जी रामायण में यह प्रसंग है। किन्तु हनुमान की इष्ट-देव का स्वान तो तुलसीदास ही प्रदान करते हैं। तुलसीदास जी को रामायण लिखने की प्रेरणा हनुमानजी से ही प्राप्त हुई थी। तुलसीदास जी के परिवर्तीकालीन घठारहूँ उन्नीसवीं घठारहियों के बंमाला रामायणकारों को हनुमान स्तुति की परम्परा तुलसीदास जी से मिली है। राममोहन इसके प्रवाद नहीं हैं। बंमाली रामायणकार तो कहीं-कहीं हनुमान और राम को एककपता प्रदान करते हैं—

मार्कत लहित रामैर किबित बाही भैर ।

यर्थात् हनुमान के साथ राम का कुछ भी भेद नहीं है। राममोहन हनुमान से प्रार्थना करते हैं —

१ This Ramayana is indebted to Tulsiadas's work, from which Bengali poet borrows many metaphors and this we have already indicated. In this preliminary verses he admits this and pays his tribute of respect to Krithivasa and Tulsiadas both

—R, R

२. But I believe the Bengali poet derived the sentiments of such earnest devotion for the Ape god from Tulsiadas's work, which has hymns addressed to Hanuman and to his comrades who fought for Rama

—B R

रामायण—

बीर्धायु करह मोरे कबवा करिया ।
 माग्यबती धर्या हेतु कृपा बितरिया ।
 तब पर सिद्धि जैन सरणीक हइया ॥
 सुलतान हेतु मोरे कबवा-सरन ।
 मोर बंस सेवे जैन सोमार करय ॥

तुलसीदास जी भी रामचरितमानस में हनुमान की प्रशंसा करते हैं। स्वयं मगवान् रामचन्द्र के मुबारकबिह से हनुमान की प्रशंसा करताते हैं। विनय-वचिका में तो तुलसीदास हनुमान की बड़ी स्तुति करते हैं^१।

रामोवाक्य राममोहन ने तुलसीदास जी की रामायण से क्यक या भाषाणिक प्रयोग (Metaphor) प्रपनाये हैं। दोनों की वर्ण-वर्णन में समानता है। उदाहरण से स्पष्ट किया जाता है—

रामायण—

हुडीरे करेन बास कमल-जोवन । सीता कारसे सवा भीरे बुनयन ।
 साम्बना करेन तवा मुनिना-संतान । तारमुषी राघवैर हेहे रहे माय ।
 धावाहू नबीन मैघ दिन बरसन । पैमन बुबर इमामरा मेर बरन ।
 धन धन धन गज्जं प्रति धतप्रब । पैमन रामेर धनु टंकारेर रब ।
 रये रये सोदामिनि जमके यणै । पैमन रामेर रूप सायकर मने ।
 मपूर करये नृत्य सब मैघ बलि । राम बेबि लज्जन पैमन हय मुषी ।
 तवा जलमारा पड़े परषी उपरे । सीतासागि पैमन रामेर जनु भोरे ॥
 सरतिज गोभाकर हैन लरोबरे । कैमत दीमित राम सेबक अंतरे ॥
 मधु धानै पक्ष्मे धतिबात करे मोदे । कैमत मुनिरमन राघवैर पदे ॥
 जलपाने जातकेर तुबा हूरे जाय । रामपेले कैमत धातना जयपाय ॥
 पुलकित हये मैघ डाके पनेपन । कैमत रामेर डाके नाम परायन ॥
 नदी नद धति बेये लमुग्रे मिधाय । कैमत रामेर धये बीबलय पाय ॥
 धरिति बुधिते बुधौर ताप जाय । कैमत रामेर धमे बीबलय पाय ॥

१ रामचरितमानस एवं विनय-वचिका आदि तुलसीदास जी के ग्रन्थों में हनुमान की महिमा बर्णित है।

इतिधे—विनय-वचिका में पर संख्या २३ से ३६ में हनुमान स्तुति है। जैसे—

संपल मूर्ति धारत नदन सकल धर्मपल सुल-निर्कषन ।

बचनतनय-सतम हितकारी हय विराजत धन्य विहारी।— धं० ३६ वि० ५०।

प्रणय सलिले मीन हृदय निर्भय । राम देये वैमल्य निर्भये जीव रय ॥
 अक्षरित वृद्धिते पुम्बोर ताप जाय । वैमल्य तापित राम नामेते बुझाय ॥

(वर्ग० सा० ५०, प्र० भा० पु० ६०४५)

मोस्वामी तुलसीदास जी का भी बर्पा-बर्णन नीतिमूलक रूपक शैली में रामचरितमानस के किष्किन्वाकाण्ड में इस प्रकार है —

फटिक सिला अति सुख सुहाई । सुख आसीन नहीं ह्यो भाई ॥

कहत अमुक सन कथा प्रनेका । भगति बिरति नृपनीति बिबेका ॥

बरवा काम मेघ नम घाए । परजत सागत परम सुहाए ॥

बो०—नखिमन बैपु मोर गन नाचत बारिद पेखि ॥

यही बिरति रत हुरत बस बिपु भगत कहूँ देखि ॥

घन घमड नम परजत धोरा । प्रिया हीन बरपत मन भोरा ॥

बामिनि बसक रहूँ घन माहीं । जल के प्रीति जवा पिर नहिं ॥

बरपाहिँ जलव भूमि निघराए । जवा नबहिँ कुब बिद्या पाए ॥

बूँद घाघात सहुँहिँ पिरि कैसैं । जल के बचन संन सहुँँ कैसैं ॥

छुड़ नबी भरि जनी तोराई । बस पोरहुँँ बन बस इतराई ॥

भूमि परत भा डाबर पानी । अनु जीबहिँ माया लपटानी ॥

समिदि समिदि जल नरहिँ तसावा । बिबि बरगुन सज्जम पहिँ पावा ॥

सरिता जल जमनिधि महुँँ जाई । होइ अचल बिबि जिब हरि पाई ॥

तुलसीदास जी की श्रद्धावली का प्रभाव इस रामायण पर मर्म ही न हो, किन्तु उनकी उपमा रूपक या सांकेतिक एवं नीतिमूलक काव्य-शैली का रामसीहान की रामायण पर प्रत्यक्ष प्रभाव है ।

तुलसीदास जी के मण्डितवाद से बंगाली कवि बहुत प्रभावित हैं । यद्यपि बंगला रामायणकारों ने रामकथा के आचरण में कृष्ण एवं अतस्य की सीमा के बिना संकित किए हैं । किन्तु मण्डित-भावना की तीव्रता एवं संकीर्णता उन कवियों में तुलसीदास जी से ही प्राची है । तुलसीदास जी की तरह बंगाली रामायणकार केवल मण्डित जाहूँ है । प्रभु के करणारविंदों का मकरंद पान ही अमर मक्त का मनोरथ है जैसे—

भुक्तिर प्राप्तेना नाहिँ करि तबस्याने ।

बैज मत हय तब नाम सुया पान ॥

तुलसीय—

एकल कामना हीन कै राम भवति रसलीन ।

नाम प्रेम पोषुप हब तिगहूँ किए मनमीन ॥

अन्त में कहा जा सकता है । इस रूप पर तुलसीदास जी की कथा का

शीर्षाणि कर्णु मोरे करणा करिया ।
 माम्पवती भार्या वैह कृपा बितरिया ॥
 तव पर सेबि बीन सरत्रीक हृदया ॥
 सुसंतान वैह मोरे कृष्णा-सदन ॥
 मीर ब्रह्म सेबे बीन तोमार बरष ॥

तुलसीदास जी भी रामचरितमानस में हनुमान की प्रशंसा करते हैं। स्वयं मयवान् रामचन्द्र के मुखारविन्द से हनुमान की प्रशंसा करवाते हैं। विनय-पत्रिका में तो तुलसीदास हनुमान की बड़ी स्तुति करते हैं^१। रामोपासक राममोहन ने तुलसीदास जी की रामायण से रूपक या सांख्यिक प्रयोग (Metaphor) मगनाये हैं। दोनों की सर्वा-वर्धन में समानता है। जवाहरण रामायण—

कुञ्जीरे करेन बास कमल-लोचन । सीता आरभे सदा भोरे कुनयन ।
 साग्वता करेन सदा सुमित्रा-संतान । तारपुत्री राघवेर वैहे रहे प्राण ।
 धावाङ्ग बशीत मेघ दिन बरषन । वैमल्य सुबर इयामरा मेर बरषन ।
 धन धन धन पञ्जें धरि धरंमल । वैमल्य रामेर धनु टंकारैर रष ।
 रये रये सोशामिति बमके मगने । वैमल्य रामेर रूप सापकेर मने ।
 मयूर करये मूल्य तव मेघ बकि । राम बेंकि सज्जन वैमल्य रामेर बनु भोरे ॥
 सदा बलपाटा पड़े परबी बपरे । सीतालायि वैमल्य रामेर बनु भोरे ॥
 सरसिज सोनाकर हैंन सरोकरे । वैमल्य धीमिठ राम सेबक धंतरे ॥
 मयु धादो बनुये प्रतिभात करं भोरे । वैमल्य सुनिरमल राघवेर परे ॥
 बलपानै बातकेर तुवा डूरे जाय । रामपेले वैमल्य बाधता कयपाय ॥
 पुलकित हूये मेघ डाके जनैयन । वैमल्य रामेर डाके नाम परायण ॥
 गरी नर धरि बेये समुन्द्रे निघाय । वैमल्य रामेर धये बीबलय पाय ॥
 धररित बृष्टिसे वृक्षीर ताप जाय । वैमल्य रामेर धये बीबलय पाय ॥

१ रामचरितमानस एवं विनय-पत्रिका धादि तुलसीदास जी के ग्रन्थों में हनुमान की महिमा बखिठ है।
 देखिये—विनय-पत्रिका में पद संख्या २३ से ३६ में हनुमान स्तुति है। अंति—
 मंगल मूर्धति धारत नरन सकल धर्मयत मूल-निर्द्धरन ।
 पवनतनय-संतन हितकारी हूय बिराजत प्रबय बिरारी।— सं० ३६ वि० ५०।

प्रदाय सतिसे मीन हृदय निर्भय । राम देये वैमत निर्भये जीव रय ॥
 भविरत वृष्टिते पुष्पीर ताप जाय । वैमत तापित राम नामेते बुझाय ॥

(बाँ० सा० प० प्र० मा०, पु० ६०४३)

गोस्वामी तुलसीदास जी का भी बर्पा-बखुंन मीतिमूलक रूपक धैनी में रामचरितमानस के किष्किम्बाकाण्ड में इस प्रकार है —

फटिक सिला धति सुभ सुहाई । सुख धासोन नहीं ह्यो भाई ॥

कहत मनुज सन कथा मनेका । जयति विरति नृपनीति विवेका ॥

बरवा काम मेघ नम छाए । परबत लापत परम सुहाए ॥

दो०—लक्ष्मिम वैद्यु मोर गन नाचत बारिब वेधि ॥

पुही विरति रत हरय अस विजु जगत कहुँ बेधि ॥

घन घमंड नम परबत घोरा । प्रिया हीन डरपत मन मोरा ॥

बामिनि बमक रह घन माहीं । जल के प्रीति जबा बिर नहाँ ॥

बरवाहि असब भूमि निघराए । जया नबहि बुब बिद्या पाए ॥

बुब भाघात सहाहि मिरि केसे । जल के बचन संत सह भैसे ॥

पुत्र बरी बरि जसो तोराई । अस मोरहुँ जन जस इतराई ॥

भूमि परत भा डाबर पानी । जनु जीबहि भाया लपटानी ॥

समिति समिति जल भरहि तलाया । बिमि सबगुन सम्जन पहि पाया ॥

सरिता जल जसनिधि महुँ जाई । होइ मजल बिमि बिब हरि पाई ॥

तुलसीदास जी की शब्दावली का प्रभाव इस रामायण पर जैसे ही न हो किन्तु उनकी उपमा रूपक या सारणिक एवं मीतिमूलक काव्य-धैनी का रामायण की रामायण पर प्रत्यक्ष प्रभाव है ।

तुलसीदास जी के मन्दिवाह से बंगाली कवि बहुत प्रभावित हैं । यद्यपि बंगला रामायणकारों ने रामकथा के प्राकरण में कृष्ण एवं अंतम्य की सीसा के बिज धंकिठ किए हैं । किन्तु भक्ति भावना की तीक्ष्णता एवं गंभीरता उन कवियों में तुलसीदास जी से ही घायी है । तुलसीदास जी की तरह बंगाली रामायणकार केवल मन्दि चाहता है । प्रभु के चरणार्थियों का मकरंद पान ही भ्रमर मन्त का मनोरम है जैसे—

भुवितर प्रायंता नाहि बरि तबजपाने ।

जैन मत ह्य तब नाम लुपा पान ॥

तुलसीय—

सकल कामना हीन कै राम जयति रसलीन ।

नाम प्रेम पीयूष हृद तिग्गहु किय मनमीन ॥

धन्त में कहा जा सकता है । इस संघ पर तुलसीदास जी की कथा का

बंगला पर हिन्दी का प्रभाव

नीतिमूक उपमात्मक काव्य रीति का एवं भावपद्य की दृष्टि से भक्ति भावना का यही प्रभाव है।

बंगाल में तुमसी रामायण के पठन पाठन की परम्परा पर्याप्त समय से प्रचलित है। किन्तु बंगला में तुमसी रामायण के अनुबाबों की परम्परा प्रायुक्तिक काल में ही विद्येय रही है। प्रायुक्तिक काल में समस्त तुमसी साहित्य का अनुबाव हुआ है। रामचरितमानस के तो कई अनुबाव घनेक विद्वानों द्वारा हुए हैं। संभवतः अन्य रामायणों में तुमसीबाध की से श्रेयक भाषांतरित होकर बने गए हैं। एक से बंगला पाण्डुलिपियों में भी उनका कुछ पर मिलते हैं।^१

बाह्यीक की रामायण की तरह तुमसीहृत् रामचरितमानस का प्रचार और विस्तार सारे भारत में रहा है। प्रायुक्तिक भारतीय धर्म भाषाओं का राम साहित्य तुमसीबाध के प्रभाव से प्रबन्ध अनुप्राणित है।

तुमसीबाध के परवर्ती बंगला रामायणकार भी उनकी रामचरितमानस से न्यूनाधिक रूप में प्रभावित हैं। जिस प्रकार रामदास की के नवतमाल के सुमेरु गोस्वामी तुमसीबाध की हैं। उसी तरह वे राम-साहित्य के भी छात्राट हैं। भक्ति भावना उनके रामचरितमानस की प्रमुख विशेषता है। यह उनकी बिरय-साहित्य को समुपम देन है।

यद्यपि उनकी भक्ति भावना की संघा रामचरितमानस में घनेक बंगला विद्वानों साहित्यकारों और बंगला रामायणकारों ने यही बुद्धियाँ लगाई हैं। स्वयं मुद्देक रवीन्द्रनाथ ठाकुर भी उनके रामचरितमानस से काव्य सीख्यं और महिमा से अभिभूत होकर उनकी मूरि मूरि प्रशंसा और बंगला करते हैं। उनकी गोस्वामीजी के प्रति यद्योक्ति निम्न प्रकार है—वे नवीन बुद्धि से उसी पुरातन उपकरण को नया रूप देकर समस्त देश को प्रदान करते हैं। भक्ति द्वारा जिस व्याख्या से उन्होंने रामायण को नवीन रूप दिया है वह साहित्य को साक्षात्कारण दान है^२। तथा—

देश के सर्वसाधारण के मातस पटल से तुमसीबाध का अधिकार किसी भी काल में नहीं थापेगा। उनका दान स्वामी महान प्रतिभा का विकास लेकर काल के प्रभाव को अधिकमण कर बिरकाल देश को समृद्ध करेगा^३।

१ यी वंशानत मण्डस सम्पादित पुनि-परिचय द्वितीय खण्ड, पृ० २०६ २०७

२ तिन नूतन बुद्धि निये सेइ पुरातन उपकरण के नूतन रूप दान करे परिवेक्षण करैऐन समस्त देश के। भक्तिद्वारा ये व्याख्याय तिन रामायण के नूतन परि एति दियेऐन सेटो साहित्ये असाधारण दान। (१०बी० प० ४० पृ २२३)

३ देवेर सेइ सर्वजनैर बिरकाले येके तुमसीबाधे, अधिकार कोनो कोसेइ बाबे ना। एकर दान स्वामी महान प्रतिभा र विकास निये कोवेर प्रभाव के अधिकम करे बिरकाल देश के समृद्ध करवे। (१० बी० प० ४० पृ २२४)

२ मायामूलक प्रभाव

हिन्दी का मायामूलक प्रभाव बेंगला पर परम्परागत रूप से जसा था रहा है। यह हिन्दी प्रभाव दो रूपों में प्राप्त होता है।

१ हिन्दी भाषा के रूप में

२ ब्रजबुक्ति के रूप में।

बेंगला राम-साहित्य भी हिन्दी के प्रभाव का अथवा नहीं है। श्री मणीन्द्र मोहन वसु का मत इस सम्बन्ध में इस प्रकार है—“राज्यवारों के अनेक प्राचीन पासा हिन्दी के सन्धि में डले हुए मिलते हैं।”

डा० सुकुमार सेन का मत है “मस्तकाबा धारि की समा में नागरी अक्षर और हिन्दी भाषा एक उत्तर-पश्चिम के आचार-म्यबहार का प्रथमतः या उन्हीं के संघस में हिन्दी प्रभाव से राज्यवार कहानी की उत्पत्ति और विकास हुआ था।”

अतः इस हिन्दी प्रभाव के बेंगला राज्यवार तथा पासा प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। श्री फकीर रामदास का अंभरराज्यवार तथा रामनाटक श्री खोद्यान धर्मा का अंभर राज्यवार, श्री रामनारायण का अंभरराज्यवार तथा विभीषणराज्यवार, श्रीमठिराम का कुम्हणोर पासा धारि की रचना हिन्दी प्रभाव की साक्षी है। हिन्दी भाषा में राज्यवार रचयिताओं में फकीर रामदास अग्रतम हैं, खोद्यान धर्मा रामनारायण मठिराम प्रभृति ने उनके ही दृष्टान्तों का अनुसरण किया था। अतः राज्यवारों पर किञ्चित् विस्तारपूर्वक हिन्दी प्रभाव का दिग्दर्शन अपेक्षित है।

१ फकीर रामदास का अंभरराज्यवार (कसकटा विद्वत्विद्यालय पुणे संख्या २८३, तिथि १००८ साल १९०२ ई०) पर हिन्दी प्रभाव स्पष्ट करने के लिये एक उदाहरण आशयक है—

- १ राज्यवारों के अनेकगुनि पासा मीमा हिन्दीके रचित देखिये पाओ या जाय।
(बी० सा० पृ० २०३)
- २ मस्त काबादिगेर समाय नागरी अक्षर हिन्दी भाषा एक उत्तरपश्चिम अक्षरों के आचार-म्यबहार प्रथमतः प्राप्त हैं। ताइ ए अक्षरों के हिन्दी प्रभाव के राज्यवार काहिन्दी उत्पत्ति एवं विकास हुआ।
(बी० सा० पृ० प्र० खंड पृ० १७२)
- ३ राज्यवार अक्षर का अर्थ है, राजद्वार, राजसभा का अर्थ तथा राजस्तुति।
(बी० सा० पृ० प्र० खंड पृ० १७२)
- ४ राज्यवार (अंशुठ राजकाव्य) (बी० सा०, पृ० १०२)
- ५ हिन्दी भाषाय राज्यवार रचयितृदिगेर मध्ये फकीर रामदास प्राचीनतम खोद्यान धर्मा रामनारायण मठिराम प्रभृति ताहारदृष्टान्त अनुसरण करियादिगेत।
(बी० सा०, पृ० १०२)

धर्म को धर्म बलि सब राखत पातिस माया ।
 अत सत राखत होके बघटे चरके धर्मभुत काया ।
 धर्म कोर को धर्म ताकाय सब कोइ राखत भुज्य ।
 तब कोई बिस ह्यत बिसारत बिस (हस्त) नाम बस भुज्य
 (बी० सा० पृ० २०५)

तथा—

कहत भिन्नमात्र कम जात राखतयन कि डैटे ।
 कौन बाउ तेरे काहा पिघा वा बिपबिबद्ध रच भैटे ॥
 कौन बाउ तेरे नहुकिका (१) भूयो कामाया है पाताले ।
 कौन बाउ तेरे बाग्बाघा धम्भुन को बोटकसाले ॥
 (बी० सा० पृ० २०६)

धर्मदराजकार के धर्मरिचय इनके रामनाटक ग्रंथ में भी कुछ हिन्दी प्रभाव है ।

२ श्रीधाम धर्म का धर्मदराजकार (कलकत्ता विश्वविद्यालय २६८ संस्करण पुषि १९८१ ई०) इनके धर्मदराजकार की भाषा का नमूना भी कृप्य है—
 समुग्र चार होके राम आप्पा होके बघठा ।
 धर्मों पर मुक्ति निकले मायाय राखत भौदो ॥
 बलुहि बाम्भुबल यद्ये ननु राबा के गुबरा ।
 बलुकर भौदुर हीमे धोबवार भिन्न बोलरा ॥
 —बी० सा०, पृ० २१० पुषि-परिचय पृ० ६६ प्र० ख० ।

तथा—

लंका धौका देनके धर्मद पातर फिरके प्राये ।
 मयन होके बाये धर्मद रामका दरशन बाये ।
 धीरासन में बैठे प्रभुधि साम्ने बाग्बिबघाब ।
 बलिब तरप में धाई लज्जयन बाये बाम्भुबल ।
 (बी० सा०, पृ० २११)

३ रामनारायण का धर्मदराजकार (कलकत्ता विश्वविद्यालय २१३१ संस्करण पुषि १०६३ संवत्) इसमें भी रावण-धर्मद का प्रबन्धोत्तर कृप्य है—
 इह लंकक पङ्ग-निघङ्ग न साधोत बागध-वैत्य सुरासुर मेला ।
 तेरे बाप बड़े तुह धाय बड़े मुनि ताप बड़े तुह मानव मेला ।
 उह लंक कलक किये तिन मुचन किकर को किये धांकर धोयी ।
 पुरहि चन्द्र सुरैन्द्र पराकित धव बितहि धानी बिरत मोयी ।

(२३५ संस्करण पुषि)

धर का उत्तर—

मेरे रामकि नाम प्रकाम उद्धारण धुनरे संका का प्रबिकारो ।
तेरे बुद्धि ना बुद्धि बिपद्धि न मानत जानकी प्रामकि नारी ॥
इनके बिभीषण रायबार से भी हिन्दी प्रभाव का नमूना दृष्टव्य है ।

बिभिद्यन् राडने कहे ह्यम जोरि ।
धुन नाब मेरे जात संकाधिकारो ॥
रघुबीर जलधिर तोर लेके बपठे ।
संकेमें पपठे ।

(बा० सा० पृ० २१४)

४ मतिराम का कु भकभोर पास में भी हिन्दी प्रभाव है—

मतिराम कर हास कहे
कुछ जाने होया सोम्हारे ।

(क० वि० २७३६ सं० पुमि)

उपा—

कु भकभं बोले कहो मोरे धामि ।
कौनो बीर धायो बचये सीतारि ।
अरि इन्द्र धामत धामि जाड सगै ।
फकी अरि धामत बधि नाग बपै ।

(बा० सा०, पृ० २१६)

किन्तु प्रश्न उत्पन्न होता है इन राजमाटों में हिन्दी में ही इस प्रकार की कविता क्यों की ? जिस प्रकार धर्म्य धर्मों की रचना इन्होंने बंगला में की थी वैसे ही वे रायबारों और पालों की रचना भी बंगला में कर सकते थे । किन्तु श्री मणीन्द्रमोहन बसु इसका उत्तर इस प्रकार देते हैं— “रायबारों की हिन्दी में रचना सोफ-मनोरंजनार्थ हुई थी । अतः हिन्दी रायबारों से बनटा का मनोरंजन होता था । सर्वप्रिय होने के कारण धारव्यक्तवाच भी हिन्दी को अपनाया जाता था ।”

हिन्दी में यह रचना की प्रवृत्ति मात्रावालाओं में भी परिसिद्ध होती है । हिन्दी संगीत का प्रभाव भी इसी काल से बंगला संघीत पर प्रारम्भ होता है, जिसका किचित् विवेचन आगे किया जायेगा ।

चतुर्थ अध्याय आधुनिक काल (१८५०)

१

हिन्दी बंगला का आदान प्रदान और पारस्परिक प्रभाव

बंगला के आधुनिक-साहित्य पर हिन्दी का बड़ा प्रभाव है। इसके ऐतिहासिक एक राजनीतिक कारण हैं। हिन्दी प्रभाव की जो गणभारा बंगला साहित्य सागर में धताम्बियों से मिलीन होती आई है, वह आधुनिक काल के मरस्वस में आकर अकस्मात् पुनरुत्पन्न से समाप्त नहीं हुई है। किन्तु उक्त हिन्दी प्रभाव की वारा में अत्यन्त धीणता भा गई है। इस धीणता के कारण भारत में अंग्रेजों का प्रमुख योद्धीय सम्मता संस्कृति एक साहित्य के गम्भीर प्रभाव तथा अनिष्ट सम्पर्क के कारण बयान में जागृति और बंगला-साहित्य की अमुत्पूर्व उन्नति है। आधुनिक युग में साधारणतया बंगला-साहित्य विधेयतया गुस्सेब रबीन्द्रनाथ ठाकुर का प्रभाव आधुनिक भारत की समस्त भाषाओं के साहित्य पर पड़ा है। संस्कृतियों की उक्त भाषाओं और साहित्यों की धारायें भी अखिरस रूप से बहती रूठी हैं। अतः परम्परा के कारण हिन्दी प्रदेश और बंग प्रदेश का सम्पर्क भी आधुनिक काल में रूठा है। हिन्दी तथा बंगला में साहित्यिक तथा भाषामुक्त पारस्परिक आदान प्रदान तथा प्रभाव भी रहे हैं।

अतः परम्परागत हिन्दी प्रभाव की कड़ी आधुनिक-काल में भी अखिरस रूठी है। जैसा कि डॉ० सुभाकर चटर्जी का कथन है "द्विष्टिष्ठ राज में अनेक प्रभाव छापी बंगाली हिन्दी के समर्पक रूप में भागे पाये हैं। वे हिन्दी की सहायता से बंगला साहित्य की सम्पत्ति के लिए प्रयत्नशील थे।"^१

उदाहरणतया आधुनिक काल में राजा राममोहनराय उद्गीकरण मित्र ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, राजनारायण बसु, भूषेब मुञ्जोपाध्याय केशवचन्द्र सेन अकिमचन्द्र चटर्जी मुरदेब ॥ ठाकुर आचार्य क्षितिमोहन सेन भी अमरबन्धु

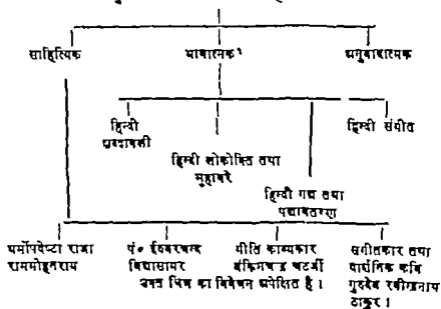
१ - मसे धो मसे
बाप

०६ हिन्दीर समु^१ ०६ एसेट्टेन वा
र प्रयास के

र स्थान

भइ सतीशचन्द्र रय डॉ० मुनीतकृमर षटर्डी इरवारि अनेक येवामी महानुभाष हिन्दी के समर्थक, उन्नायक एवं प्रचारक रहे हैं। ये इससे प्रभावित होकर हिन्दी साहित्य और भाषा की सहायता से बेमसा भाषा तथा साहित्य की उन्नति एवं बिकास में योगदान देते रहे हैं। महपि दयानन्द के धर्म समाज काँग्रेस के राष्ट्रीय आगबोसन तथा हिन्दी या उर्दू भाषी हिन्दू तथा मुसलमान जनसंख्या के भावान प्रदान के कारण भी कुछ-कुछ हिन्दी का प्रसार एवं प्रभाव बेमसा में रहा है। अतः निम्न मानबिष के द्वारा इस प्रभाव को सरसता से समझा जा सकता है —

भाषुनिक काल में बँगला पर हिन्दी प्रभाव



२

धर्मपिदेष्टा राजा राममोहनराय (१७७४-१८३३)

राजा राममोहनराय हिन्दी गद्य-साहित्य के निर्माताओं में एक प्रमुख व्यक्ति हैं। वे हिन्दी के प्रेमी पंडित और उन्नायक थे। उन्होंने हिन्दी गद्य के बेदान्त विषयक धर्मों का अनुबाध करके प्रचार किया था। राजा राममोहनराय की हिन्दी गद्य रचना के विषय में पंडित रामचन्द्र शुक्ल और आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जी के

१ दैतिये—परिचिष्ट में भाषात्मक तथा अनुबाधारत्मक प्रभाव के रूप में।

मत् उत्सेखनीय हैं। शुक्ल भी लिखते हैं, संवत् १८७२ में उन्होंने बैरान्त सूत्रों के माध्य का हिन्दी अनुवाद करके प्रकाशित कराया था। संवत् १८८६ में उन्होंने "बैयवृत्" नामक एक संवादपत्र भी हिन्दी में निकाला; राजासाहब की भाषा में एकपाच अथवा कुछ बैयसापन बकर मिलता है, पर उसका क्या अधिकार में बहो है जो शास्त्रज्ञ विद्वानों के व्यवहार में पाता था।" किन्तु हिन्दीकी राजासाहब की हिन्दी को बंगला मिश्रित नहीं मानते हैं। उनके विचार में वह व्याकरणसम्मत विद्युत् हिन्दी है।^१ राजा राममोहनराय के पूर्ववर्ती फोर्ट बिलियम कासेब के सेवक नीकरी के लिए हिन्दी लिखते थे किन्तु राजा राममोहनराय स्वच्छन्द-शैरित सेवक थे।

राजा साहब द्वारा लिखित हिन्दी वच का नमूना उत्सेखनीय है—' जो सब ब्राह्मण सँग वेद अध्ययन नहीं करते सो सब श्राप्य है यह प्रमाण करने की इच्छा करके ब्राह्मण वर्मपरायण भी सुब्रह्मण्य शास्त्री की न भी पत्र चीन बेदाभ्ययन-हीन अनेक इस देश के ब्राह्मणों के समीप पठाया है उसमें बला जो उन्होंने लिखा है— बेदाभ्ययन-हीन मनुष्यों को स्वर्ग धौर भौद्य होने शक्यता नहीं।' राजा राममोहन द्वारा विरचित सुब्रह्मण्य शास्त्री के सहित शास्त्रार्थ नामक हिन्दी ग्रन्थ का प्रसंग भी उत्सेखनीय है।

हिन्दी की सहायता से बैय साहित्य की प्रसिद्धि में योग देने बार्नों में राजा राममोहनराय एक प्रमुख स्थान के अधिकारी हैं।

३

पंडित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर (१८२०-१८६७ ई०)

पंडित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर हिन्दी के प्रमुख पंडित थे। वे बंबला वच के जनकों में से सर्वप्रधान है। फोर्ट बिलियम कासेब में उनका सम्बन्ध हिन्दी पंडितों के साथ प्रनिष्ठ रहा था। वहीं पर हिन्दी बंगला पञ्चीसी नामक पुस्तक का अनुवाद किया था। वे स्वयं लिखते हैं कलिबर्ष फोर्ट बिलियम नामक विद्यालय के उत्कासीन विद्यार्थियों के लिए बंबला भाषा में हितोपदेश नामक पुस्तक निर्वाचित थी उसकी रचना प्रच्छी नहीं थी। विद्योपत्त उसके कई अंश ब्रुकह एवं प्रसंगत थे। जिनसे तात्पर्य धौर प्रबं स्पष्ट नहीं होता था। उसके बदले में पुस्तक परि वर्तन करना उचित एवं आवश्यक समझ कर उक्त विद्यालय के प्रमुख महापत श्रीपुत मेबर जी० टी० मार्शल महीबय ने कई पुस्तक प्रस्तुत करने के लिए धारेण

- १ बंबला सामयिक पत्र पृष्ठ ३० १८२ ४००।
- २ हि० सा० ६०, पृ० ४२७।
- ३ धातुनिक हिन्दी साहित्ये बायभार स्थान, सामान्यतया द्वितीय परिच्छेद पृष्ठ १०-२१। विद्योपत्तया हिन्दी पत्रे बायला पृ० ११ १७।
- ४ हि० सा० ६०, पृ० ४२७।

क्रिया । तदनुसार मीने वंशास पञ्चीसी नामक प्रसिद्ध हिन्दी पुस्तक का प्रथमम्बन करके यह ग्रंथ लिखा है^१ ।

इस हिन्दी वंशास पञ्चीसी का संयामुवाद वंशास पञ्चविंशति के नाम से हुआ था । छात्रों और जनता में यह पुस्तक बहुत प्रसिद्ध हो गयी थी । पंडित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने इस पुस्तक के निर्माण में न तो संस्कृत का साधय किया न अंगरेजी का । उन्होंने हिन्दी की ही वंशास-पञ्चीसी^२ का प्रथमम्बन सेकर बंगला साहित्य की अभिवृद्धि की ।

५

गीतिकाध्यकार वैकिमचन्द्र चटोपाध्याय (१८३८-१८९४ ई०)

वैकिम बाबू की रचनाओं में हिन्दी प्रभाव की क्वचित् म्मक है । प्रमुखतया उनक दो-चार हिन्दी मिमित ब्रजहुनि के पद मूलाभिनी नाटक एवं बंगदर्शन में प्राप्त होते हैं । ब्रजहुनि परंपरागत रूप से हिन्दी की अक्षिप्त भारतीय प्रकृति का बाहन रही है । अतः सांस्कृतिक काम में भी इसका सुत प्रविधिष्मन रहा है । वैकिम बाबू के कुछ पदों के उदाहरण देकर इसको इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है—

‘मधुरावातिनि मधुरावातिनि इवाम्बितावति-रे ।’

कहुलो नापरि, गैह् बरिह्ति, काह् बिवातिनी-र ॥

बुन्दाबम बम योपिनो मोहन काहे तू तेयापी-रे ।

बेध बेध पर सो इयामसुन्दर, फिरे तुया नागि रे ॥

बिक्रम नमिने, यमुना-पुलिने, बहूत विद्यासे रे ।

सग्नमा शातिनी, या मधुयामिनी, नापिटल भाया रे ॥

- १ कश्मिर भाँव कोर्न बिलियम नामक विद्यालय उत्तराय छात्रवर्षेर पाठार्थे बाँवसा मायाम हितोपदेश नामे ये पुस्तक निदिष्ट छिन, ताहार रचना अति कदम । विद्येपथ कौन-कौन अंग एरूप तुकह् यो अतंसम्भ ये कौन बने अर्थबोध यो वात्पर्य गृह् हुइया उठेमा । तत्परिबर्ते पुस्तकान्तर प्रकलित करा उचित यो आबदवक विवेचना करिया इस्त विद्यालयेर धम्मस महामति थीमुत मेजर पी० टी० मार्शल महोदय कौन नूतन पुस्तक प्रस्तुत करिते आदेश देन । तदनुसारे धामि वंशासपञ्चीसी नामक प्रसिद्ध हिन्दी पुस्तक प्रथमम्बन करिया एह अर्थ निधिवाधिपाम ।

—वंशास-पञ्चविंशति विद्यालय पृ० १ ।

- २ १८०३ ई० में तरिणुवरण मित्र ने इसका संपादन किया था ।

—विद्यासागर प्रभाषनी पृ० ६ ।

सानिद्या समरि, कहतो नु बरि काहा मिले बेसा रे ।

मुनि दासाये धरि बाजयि मुरसी बने एका-रे ॥

(मस्यामिनी पृ० १३, १४)

इस प्रकार मुद्यामिनी में एक पद घीर है—

'घरु बाह तर माठ फिरि फिरनु बहु बरा ।

काहा मिर कामत बरन काहा राज बेघ ॥

हिपा पर रोपनु पंकज केनु यतन भारि ।

सोहि पंकज काहा मोर, काहा मुजास हामारि ॥"

(मुद्यामिनी पृ० १६)

बंकिम बाबू के हिन्दी मिश्रित ब्रजबुजि के बार पद बंगबर्जन में भी प्राप्त होते हैं । उनमें से भी उदाहरण देना अपेक्षित है ।—

बेक सखी नापर राखे । धो मुख मुग्ध हेरि बिभुबर असरे मुजास साजे
मरकत भाति धिनि तनु काति धुपित बनफूल साजे

बलमे सुरये तरस तररी, मूपुर खु खु बाजे । सखनि नब मुजाबने मरन
बिराजे ।

तथा—

फुलत घातबन सरे घीर साजस उपवन नबबभू साजे ।

फुलत घनिबल मुदल परिमल मुदल यतये बातासे ॥

कैतकी हासल पिककुल भासल मंगममाबकी घासे ।

साहे सहि पुन पुन प्रबपति । निरदण खर लोचन सर करत बिबार ।

कैसे भीमब सखि प्राण हुमार ।

बंकिम बाबू ने हिन्दी मिश्रित ब्रजबुजि में रचना करने की सफल चेष्टा की है । पर उनका बंगला गीतिकाव्य को यह भोगदान है ।

१. शेष पद इस प्रकार हैं—

अपर बिकाशित मजुरिम हासे, सारि रमभीमब प्रमक फलि ।

×

×

×

सखिरे कैंसे राखब मब कुलधील माने ।

तथा—

मपूर मुरसीबर तान बरिसे मुरछत मुनि मन बारत बरिसे ।

×

×

×

अपमय बोले पीरिति हिनीले फुलत रसे प्रतिगाइ,

सखि कैंसे रहब घरे मानये छाइ ॥

— बग वर्जन पृ० अष्ट पृ० ८३, १२८१ बंवाख ।

५

संगीतकार तथा दार्शनिक कवि गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर (१८६१ से १९४१ ई०)

साहित्यिक बंगला-साहित्यकारों में समस्त सर्वाधिक हिन्दी प्रभाव गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर पर ही पड़ा है। गुरुदेव वर यह हिन्दी प्रभाव अनेक छोटों से पड़ा है। प्रमुखतया यह हिन्दी प्रभाव त्रिभुक्ती है। रवीन्द्र-संगीत (गीतिकाव्य) के उत्थम और विकास में हिन्दी संगीत का दार्शनिक-जनक प्रभाव है। गुरुदेव ने स्वयं नाम भानुसिंह ठाकुर रख कर 'भानुसिंह ठाकुरे वदावसी' का सूत्रन किया था। यह 'भानुसिंह ठाकुरे वदावसी' परम्परा प्राप्त ब्रजबुद्धि माया में निरचित है। ब्रजबुद्धि के माध्यम से भी कुछ हिन्दी प्रभाव गुरुदेव पर पड़ा है। गुरुदेव हिन्दी-संघ साहित्य के धारणिक प्रदर्शनक और पुनारी रहे हैं। अतः इस त्रिभुक्ती हिन्दी प्रभाव का बर्णनकरण इस प्रकार हो सकता है :—

१ हिन्दी संगीत का प्रभाव।

२ भाषा रूपगत (ब्रजबुद्धि का) प्रभाव।

३ हिन्दी-संघ-साहित्य का प्रभाव।

उक्त बर्णनकरण का इस प्रकार हृदयंगम किया जा सकता है।

१ हिन्दी संगीत का प्रभाव

रवीन्द्र संगीत के निर्माण में हिन्दी-संगीत का बोधदान अनुपम है। इस तन्म को गुरुदेव ने मुखकण्ठ से अनेक बार स्वीकार किया है जिस परिवार में उन का जन्म हुआ था उसमें हिन्दी-संगीत की परम्परा अभी छा रही थी। क्योंकि महारमा राममोहनराम ने धार्मिक हिन्दी संगीत के अनुकरण पर ब्रह्म संगीत का सूत्रपात किया था^१। अतएव ब्रह्म-समाज और गुरुदेव के पूज्य पिता महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर को भी यह हिन्दी संगीत की परम्परा पैतृक-संपत्ति के रूप में प्राप्त हुई है।

श्री दाम्भिकदेव बोध का अर्थ है 'गुरुदेव के पिता महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर स्वयं ही उच्चारण^२ हिन्दी संगीत के विधेय भवत थे। मुना जाता है बीकान स्ट्रीट में एक मकान किराये पर लेकर अस्ताव रजकर याना-बजाना करते थे। बास्यकाम में साहब मास्टर के पास पियानो सीखा करते थे। मोटे रूप में वे वा सकते थे। हिन्दी गीतों के सम्बन्ध में बोझा बहुत उनका ज्ञान स्पष्ट था। उनके द्वारा रचित प्रत्येक

१ हिन्दी उच्चारण संगीतक अनुकरणे ब्रह्मसंगीतक सूत्रपात करेन महारमा राममोहनराम।
—रवीन्द्र-संगीत, पृ० ४०।

२ धार्मिक हिन्दी या हिन्दुस्तानी संगीत।

सानिआ समरि, कहुतो सु बरि काहा मिसे बेछा-रे ।

हुनि दाघायै बलि बाजयि मुरसी बने एका रे ॥

(मूलाक्षिणी पृ० १३, १४)

इस प्रकार मूलाक्षिणी में एक पद धीर है—

‘घाट बाट तट माठ फिरि फिरनु बहु बेरा ।

काहा मेर कास्त बरन काहा राज बेछ ॥

हिमा पर रोपनु पंकज कहु पतन मारि ।

सोहि पंकज काहा मोर काहा मूजात हमारि ॥”

(मूलाक्षिणी पृ० १६)

बकिम बाबू के हिन्दी मिश्रित ब्रजकृति के चार पद बंगवर्द्धन में भी प्राप्त होते हैं । उनमें से भी उदाहरण देना अपेक्षित है ।—

बेछ सको नागर राखे । श्री मुञ्ज सुन्दर हेरि बिजुवर चलवे मुकाय साने
मरकत भक्ति बिनि तनु कति भूपित बनफूल साने

बसने सुरवि तरल तरंगी नूपुर खु खु बाने । सजनि नव मृग्यावने मवन
बिराने ।

उदा—

फुल छतबन सरे भीर सानल जपवन नवनबू साने ।

बुलन घतिबल मुदल परिमल फुल मसपे बातासे ॥

केतकी हासल पिककुम बासल संपलमाघरी भासे ।

साहे सहि पुन पुन ब्रजपति । निकरन कर लोचन दर करत बिचार ।

सेसे भीमब सति प्राण हमार ।

बकिम बाबू ने हिन्दी मिश्रित ब्रजकृति में रचना करने की सफल चेष्टा की है । यद्यपि उनकी बंयसा पीठिकाव्य को यह योगदान है ।

१. छेप पद इस प्रकार हैं—

अथर बिकायित मपुरिम हासे सारि रजनीमय प्रमक फति ।

× × ×

सखिरे कैंसे राखव दब कुलसीत माने ।

उदा—

मपुर मुरलीवर तान बरिसे मुरझल मुनि मन जात बरिसे ।

× × ×

इयमम बोले पीरिति क्षितीले फुलन रसे घतिपाइ

सधि कैंसे रहव बरे मानवे घाइ ॥

— बंय वर्णन पृ० ८३ १२८१ बंयसाव्य ।

५

संगीतकार तथा दार्शनिक कवि गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर (१८६१ से १९४१ ई०)

धार्मिक बंगला-साहित्यकारों में संभवतः सर्वाधिक हिन्दी प्रभाव गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर पर ही पड़ा है। गुरुदेव पर यह हिन्दी प्रभाव अनेक स्रोतों से पड़ा है। प्रमुखतया यह हिन्दी प्रभाव त्रिभुक्ती है। रवीन्द्र-संगीत (गीतिकाव्य) के जन्म और विकास में हिन्दी संगीत का आत्पर्यवर्जनक प्रभाव है। गुरुदेव ने छत्रम नाम धानुसिंह ठाकुर रच कर 'धानुसिंह ठाकुरे पदावली का सूत्रन किया था। यह 'धानुसिंह ठाकुरे पदावली परम्परा प्राप्त ब्रजबुक्ति भाषा में विरचित है। ब्रजबुक्ति के माध्यम से भी कुछ हिन्दी प्रभाव गुरुदेव पर पड़ा है। गुरुदेव हिन्दी-सत साहित्य के अत्यधिक प्रसिद्ध और पुजारी रहे हैं। सत इस त्रिभुक्ती हिन्दी प्रभाव का सर्वाङ्गण इस प्रकार हो सकता है :—

- १ हिन्दी संगीत का प्रभाव।
- २ भाषा रूपगत (ब्रजबुक्ति का) प्रभाव।
- ३ हिन्दी-सत-साहित्य का प्रभाव।

उक्त सर्वाङ्गण का इस प्रकार हृदयबन्धन किया जा सकता है।

१ हिन्दी संगीत का प्रभाव

रवीन्द्र संघीत के निर्माण में हिन्दी-संघीत का योगदान अनुपम है। इस समय को गुरुदेव ने मुक्तकण्ठ से अनेक बार स्वीकार किया है जिस परिचार में उन का जन्म हुआ था उसमें हिन्दी-संघीत की परम्परा जमी धा रही थी। क्योंकि महारना राममोहनराय ने धार्मिक हिन्दी संघीत के अनुकरण पर ब्रह्म-संघीत का सूत्रपात किया था^१। अतएव ब्रह्म-समाज और गुरुदेव के पुत्र्य पिता महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर की भी यह हिन्दी संघीत की परम्परा वीतक-संपत्ति के रूप में प्राप्त हुई है।

श्री धानुसिंह भोप का मत है 'गुरुदेव के पिता महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर स्वयं ही सञ्चान^२ हिन्दी संघीत के विशेष भक्त थे। मुता जाता है बीकन स्ट्रीट में एक मकान किराये पर लेकर बस्ताद रखकर वाणा-बजाया करते थे। बाम्यकाल में साहब मास्टर के पास पियानो सीखा करते थे। मोटे रूप में वे पान सकते थे। हिन्दी पीठों के सम्बन्ध में चीजा बहुत उनका ज्ञान स्पष्ट था। उनके हाथ रचित प्रत्येक

१ हिन्दी उच्च संघीतेर अनुकरणे ब्रह्मसंघीतेर सूत्रपात करेन महारना राममोहन राय।

—रवीन्द्र-संघीत पृ० ५०।

२ धार्मिक हिन्दी या हिन्दुस्तानी संघीत।

सागिसा समरि, कहूँ तो मु बरि काहा मिले बेका रे ।

मुनि माघायै बलि बाजयि मुरली बन एका-रे ॥

(मूणामिनी पृ० १९, १४)

इस प्रकार मूणामिनी में एक पद धीर है—

‘घाट बाट तट माठ चिरि फिरनु बटु बेघ ।

काहा मेरे काम्त बरघ काहा राज बेश ॥

हिया पर रोपनु पंऊज कंनु बतन भारि ।

सोहि पंऊज काहा मोर, काहा मूणास हामारि ॥”

(मूणामिनी पृ० १६)

बंकिम बाबू के हिन्दी मिश्रित ब्रजबुजि के चार पद बंगदर्शन में भी प्राप्त होते हैं । उनमें से भी उदाहरण देना प्रवेक्षित है ।—

बेक सखी बायर राबे । प्रो मुछ मुम्बर हेरि बिपुबर बलबे मुकाय साबे
मरकत भाति जिनि तनु काति भूयित बनफूल साबे

बलने सुरये तरल तरने गूपुर स्नु धनु बाबे । सजनि नब वृन्दाबने मदन
बिराबे ।

तथा—

फुटल अतबल सरे धीर साबल अपबन नखबपू साबे ।

बुडल अतिबल मुडल-परिमल फुटल मलये वातासे ॥

केतकी हातल निककुल भासल मंगलबाबबी भासे ।

टाहे लहि पुन पुन प्रबपति । निकरन कर लोचन घर करत बिचार ।

केसे भीयब सखि प्राण हमार ।

बंकिम बाबू ने हिन्दी मिश्रित ब्रजबुजि में रचना करने की सफल चेष्टा की है । घट बनका बंयसा गीतिकाम्य को यह योगदान है ।

१ शेष पद इस प्रकार हैं—

मबर बिकासित मजुरिम हासे, सारि रमबीबन प्रमक फति ।

× × ×

सखिरे केसे राखब अब कुलसील माने ।

तथा—

मजुर मुरसीबर टान बरिबे मुरझत मुनि मन बारत बरिसे ।

× × ×

बममय बोसे पीरिति हिन्दीके फुडल रसे प्रतिगाइ

बलि केसे रहब बरे माबबे छाइ ॥

— बंय दर्शन पृ० शब्द प० ८३, १२८१ बंगार ।

५

संगीतकार तथा दार्शनिक कवि गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर (१८६१ से १९४१ ई०)

साप्ताहिक बँपना-साहित्यकारों में संभवतः सर्वाधिक हिन्दी प्रभाव गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर पर ही पड़ा है। गुरुदेव पर यह हिन्दी प्रभाव अनेक स्रोतों से पड़ा है। प्रमुखतया यह हिन्दी प्रभाव त्रिमुक्ती है। रवीन्द्र-संगीत (गीतिकाव्य) के उत्पन्न और विकास में हिन्दी संगीत का प्राथम्यजनक प्रभाव है। गुरुदेव ने छत्रम नाम भानुसिंह ठाकुर रख कर 'भानुसिंह ठाकुरेश पशावती' का जन्म किया था। यह 'भानुसिंह ठाकुरेश पशावती' परम्परा प्राप्त ब्रह्मबुद्धि भाषा में विरचित है। ब्रह्मबुद्धि के माध्यम से भी कुछ हिन्दी प्रभाव गुरुदेव पर पड़ा है। गुरुदेव हिन्दी-सत साहित्य के दार्शनिक प्रवर्धक और पुजारी रहे हैं। अतः इस त्रिमुक्ती हिन्दी प्रभाव का सर्वाकारण इस प्रकार हो सकता है :—

- १ हिन्दी संगीत का प्रभाव।
- २ नाया रूपवत (ब्रह्मबुद्धि का) प्रभाव।
- ३ हिन्दी-सत-साहित्य का प्रभाव।

अतः सर्वाकारण का इस प्रकार हृदयंगम किया जा सकता है।

१ हिन्दी संगीत का प्रभाव

रवीन्द्र संगीत के निर्माण में हिन्दी-संगीत का मानवान अनुपम है। इस तन्त्र को गुरुदेव ने मुखरकण्ठ से अनेक बार स्वीकार किया है जिस परिवार में उन का जन्म हुआ था उसमें हिन्दी-संगीत की परम्परा बनी या रही थी। क्योंकि महाराम राममोहनराय ने धार्मिक हिन्दी संगीत के अनुकरण पर ब्रह्म संगीत का सूत्रपात किया था^१। अतएव ब्रह्म-समाज और गुरुदेव के मुख्य पिता महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर को भी यह हिन्दी संगीत की परम्परा पैदा-संपत्ति के रूप में प्राप्त हुई है।

श्री धान्तिदेव शोष का मत है, 'गुरुदेव के पिता महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर स्वयं ही ब्रह्मांग^२ हिन्दी संगीत के विद्येप भवत थे। सुभा जाता है बीडन स्ट्रीट में एक मकान फिराये वर निकर उस्ताद रखकर माना-बजाया करते थे। वास्तविक में साहब मास्टर के पास पियानो सीखा करते थे। थोड़े रूप में वे जा सकते थे। हिन्दी यीतों के सम्बन्ध में थोड़ा बहुत उनका ज्ञान स्पष्ट था। उनके द्वारा रचित प्रत्येक

१ हिन्दी ब्रह्म संगीतेश अनुकरणे ब्रह्मसंगीतेश सूत्रपात करेन महाराम राममोहन राय।
—रवीन्द्र-संगीत, पृ० ५०।

२ धार्मिक हिन्दी या हिन्दुस्तानी संगीत।

सावित्रा समरि कहतो तु बरि काँहा मिले बेजा रे ।

मुनि याप्राये बनि, बाबयि मुरली, बने एका-रे ॥

(मूणाविनी पृ० १३, १४)

इस प्रकार मूणाविनी में एक पद भी है—

“घाट बाट तट माठ फिरि फिरनु बनु बेसा ।

काँहा मर कागत बरन काँहा राज बेस ॥

दिया पर रोपनु पंकज केँनु पतन भारि ।

सोहि पकज काँहा मोट, काँहा मूजात हमारि ॥’

(मूणाविनी पृ० १६)

बंकिम बाबू के हिन्दी मिथित ब्रजबुजि के चार पद बंनवर्तन में भी प्राप्त होते हैं । उनमें से भी उदाहरण देना अपेक्षित है ।—

बेज सखी नायर राजे । श्री मुख सुम्बर हेरि बिपुबर बलवे मुकाय साजे

मरकठ भाँति जिन तनु काँति श्रुति बतपूत साजे

बलने सुरी तरत तरि, नूपुर नु नु बाजे । सत्रदि नव ब्रुवावने मदन

बिराजे ।

तथा—

कुल सतवन सरे घोर, साजत बपवन नवबपू साजे ।

कुल प्रतिबल मुलत परिमल कुलत मलये बाताते ॥

केतकी हासल पिककुल भासल प्रयसमावधी भासे ।

ताहे सहि पुन पुन ब्रजपति । निबदच कर लोचन घर करत बिचार ।

केसे भीयब सखि प्राण हमार ।

बंकिम बाबू ने हिन्दी मिथित ब्रजबुजि में रचना करनी की सफल चेष्टा की

है । अतः उनका ब्रजभाषा की शक्ति का यह योगदान है ।

१ शेष पद इस प्रकार है—

अथर विकसित मजुरिम हासे, सारि रमणीयन प्रक फति ।

× × ×

सखिरे केँसे राजब धन कुलसीत माने ।

तथा—

मपुर मुरलीवर ताल बरिबै मुरझत मुनि मन जारत बरिबे ।

× × ×

अमय बोले नीरिति हिन्दीने कुलस रसे प्रतिपाद

सखि केँसे रहब घरे मापये छाड़ ॥

— बंग दर्शन पृ० सप्त पृ० ८५, १२८१ ब्रजभाषा ।

५

संगीतकार तथा दार्शनिक कवि गुरुदेव देवेन्द्रनाथ ठाकुर (१८६१ से १९४१ ई०)

साधुनिक बौद्ध-साहित्यकारों में संभवतः सर्वाधिक हिन्दी प्रभाव गुरुदेव देवेन्द्रनाथ ठाकुर पर ही पड़ा है। गुरुदेव पर यह हिन्दी प्रभाव अनेक स्रोतों से पड़ा है। प्रमुखतया यह हिन्दी प्रभाव त्रिभुक्ती है। रबीन्द्र-संघीत (वीथिकाव्य) के उदय और विकास में हिन्दी संगीत का आश्चर्यजनक प्रभाव है। गुरुदेव ने छन्द नाम माधुसिंह ठाकुर रच कर 'माधुसिंह ठाकुरे पदावली का सृजन किया था। यह 'माधुसिंह ठाकुरे पदावली' परम्परा प्राप्त ब्रजभुक्ति भाषा में विरचित है। ब्रजभुक्ति के माध्यम से भी कुछ हिन्दी प्रभाव गुरुदेव पर पड़ा है। गुरुदेव हिन्दी-संघ साहित्य के दार्शनिक प्रसंगक धीरे-धुंधले रहे हैं। अतः इस त्रिभुक्ती हिन्दी प्रभाव का सर्वाकारण इस प्रकार हो सकता है :—

- १ हिन्दी संघीत का प्रभाव।
 - २ भाषा रूपरूप (ब्रजभुक्ति का) प्रभाव।
 - ३ हिन्दी-संघ-साहित्य का प्रभाव।
- उक्त सर्वाकारण का इस प्रकार हृदयंगम किया जा सकता है।

१ हिन्दी संगीत का प्रभाव

रबीन्द्र संघीत के निर्माण में हिन्दी-संघीत का योगदान अनुपम है। इस तथ्य को गुरुदेव ने मुखकण्ठ से अनेक बार स्वीकार किया है जिस परिचार में उन का अग्र हुमा का अर्थमें हिन्दी-संघीत की परम्परा बली या रही थी। स्वर्गीय महारामा राममोहनराय ने शास्त्रीय हिन्दी संघीत के अनुकरण पर ब्रह्म संघीत का सूत्रपात किया था^१। अतएव ब्रह्म समाज और गुरुदेव के पुण्य पिता महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर को भी यह हिन्दी संघीत की परम्परा वैतृक-संपत्ति के रूप में प्राप्त हुई है।

यही धार्मिकभाव भाषा का अर्थ है 'गुरुदेव के पिता महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर स्वयं ही उच्चारण^२ हिन्दी संघीत के विधेय मन्त्र थे। सुभा जाता है बीडन स्ट्रीट में एक मकान किराये पर लेकर उस्ताद रसकर गाना-बजाना करते थे। बास्वकाल में साहब मास्टर के पास पियानो सीखा करते थे। मोटे रूप में वे गा सकते थे। हिन्दी गीतों के सम्बन्ध में बोझा बहुत उनका ज्ञान स्पष्ट था। उनके ज्ञान विरचित प्रत्येक

१ हिन्दी उच्चारण संघीत के अनुकरणे ब्रह्मसंघीत के सूत्रपात करने महारामा राममोहन राय।

—रबीन्द्र-संघीत, पृ० ४०।

२ शास्त्रीय हिन्दी या हिन्दुस्तानी संघीत।

सामिष्ठा समष्टि, कहूँ तो तु बरि काँहा मिले बेबा रे ।

मुनि याप्राये सलि बाकपि मुरली बने एका-रे ॥

(मृणालिनी पृ० १३, १४)

इस प्रकार मृणालिनी में एक पद प्रीर है—

“घाट बाठ लठ माठ किरि किरनु बहु बेस ।

काँहा मेरे काम्ल बरब काँहा राज बेस ॥

हिपा पर रोपनु पंकज कीनु यतन भारि ।

सोहि पंकज काँहा मोर काँहा मृणाल हमारि ॥”

(मृणालिनी पृ० १६)

बंकिम बाबू के हिम्वी मिथित ब्रजबुक्ति के चार पद बंनस्यंत में भी प्राप्त होते हैं । उनमें से भी उदाहरण देना प्रयोजित है ।—

बेज सखी नाबर राबै । प्री मुख सुन्दर हेरि विनुबर बसबे मुखाय नाबे

भरकत माँति बिनि तनु काँति भूयित बनफूम साबे

बलने सुरने तरल ठरी मुरुर खु खु बाबे । सजनि तब मुखावने मदन

बिराबे ।

तथा—

फुलत अठबल सरे प्रीर साबल उपबल तबबबू छाबे ।

बुलत प्रतिबल मुलत-परिमल फुलत मलबे वातासे ॥

केतकी हासल पिकुलत भासल मंगलभायबी भासे ।

ताहे सहि पुन पुन बजपति । निकरब कर लोचन घर करत बिचार ।

केसे बीयब सखि प्राण हमार ।

बंकिम बाबू ने हिम्वी मिथित ब्रजबुक्ति में रचना करने की सफल चेष्टा की है । घट उनका बंनसा पीतिकाम्य को यह योगदान है ।

१. दोप पद इस प्रकार हैं—

अबर बिकाहित मपुरिम हासे, सारि रमबीबन प्रमक कसि ।

×

×

×

सखिरे कीसे राजब अब कुलसील माने ।

तथा—

मपुर मुरलीबर तान बरिबे मुरछत मुनि मन करत बरिसे ।

×

×

×

डगमप बोले पीरिति हिमीले फुलत रसे प्रतिपाड

सलि कीसे रहब वरे माबबे छाड ॥

—बंन दरंत पृ० अष्ट पृ० ८३ १२८१ बंनसा ।

५

संगीतकार तथा दार्शनिक कवि गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर (१८६१ से १९४१ ई०)

प्राथमिक बंगला-साहित्यकारों में संभवतः सर्वाधिक हिन्दी प्रभाव गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर पर ही पड़ा है। गुरुदेव पर यह हिन्दी प्रभाव धनेक स्रोतों से पड़ा है। प्रमुखतया यह हिन्दी प्रभाव त्रिमुखी है। रवीन्द्र-संघीत (वीतिकाव्य) के उत्पन्न और विकास में हिन्दी संगीत का आरम्भजनक प्रभाव है। गुरुदेव ने छदम नाम भानुसिंह ठाकुर रत्न कर 'भानुसिंह ठाकुर पदावली' का सृजन किया था। यह 'भानुसिंह ठाकुर पदावली' परम्परा प्राप्त ब्रजकृति भाषा में विरचित है। ब्रजकृति के माध्यम से भी कुछ हिन्दी प्रभाव गुरुदेव पर पड़ा है। गुरुदेव हिन्दी-संघ साहित्य के धार्मिक प्रसन्न और पुजारी रहे हैं। यद्यपि इस त्रिमुखी हिन्दी प्रभाव का बर्णिकरण इस प्रकार हो सकता है :—

१ हिन्दी संघीत का प्रभाव।

२ भाषा रूपगत (ब्रजकृति का) प्रभाव।

३ हिन्दी-संघ-साहित्य का प्रभाव।

उक्त बर्णिकरण का इस प्रकार हृदयंगम किया जा सकता है।

१ हिन्दी संगीत का प्रभाव

रवीन्द्र संघीत के निर्माण में हिन्दी-संघीत का योगदान अनुपम है। इस तथ्य को गुरुदेव ने मुखकण्ठ से धनेक बार स्वीकार किया है जिस परिवार में उनका जन्म हुआ था उसमें हिन्दी-संघीत की परम्परा बनी या रही थी। क्योंकि महात्मा राममोहनराय ने धार्मिक हिन्दी संगीत के अनुकरण पर ब्रह्म संघीत का सूत्रपात किया था^१। यद्यपि ब्रह्म-समाज और गुरुदेव के पूज्य पिता महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर को भी यह हिन्दी संघीत की परम्परा वितुक्त-संपत्ति के रूप में प्राप्त हुई है।

श्री धाम्निदेव शोष का मत है गुरुदेव के पिता महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर स्वयं ही ब्रह्म संघीत के विद्येय भक्त थे। सुना जाता है बीडन स्ट्रीट में एक मकान किराये पर लेकर उस्ताद रखकर गाना-बजाना करते थे। बाल्यकाल में साहब मास्टर के पास पियानो सीखा करते थे। मोटे रूप में वे गा सकते थे। हिन्दी गीतों के सम्बन्ध में योड़ा बहुत उनका ज्ञान स्पष्ट था। उनके द्वारा रचित प्रत्येक

१ हिन्दी उच्च संघीत के अनुकरणे ब्रह्मसंघीत के सूत्रपात करने महात्मा राममोहन राय।

—रवीन्द्र-संगीत, पृ० ४०।

२ धार्मिक हिन्दी या हिन्दुस्तानी संगीत।

बैंगला उपासना संगीत हिन्दी-उच्चारण संगीत के अनुकरण पर विरचित है। उपासना धीरे-उत्सवों के लिये धीरे-उच्चारण हिन्दी संगीत की पद्धति को ही उपयुक्त मान कर रखे गये थे। अधिक क्या कहूँ वे इस परिपाटी की ही प्रचलता प्रदान करते थे। इनकी इच्छा धीरे प्रभाव से ही उनके पुत्र द्विवेन्द्रनाथ सत्येन्द्रनाथ धीरे ज्योतिरिन्द्रनाथ ने उच्चारण हिन्दी संगीत के अनुकरण पर बहुत बहु-संगीत की रचना की थी। उसमें भी झुपड़ की संस्था ही अधिक थी।^१

अतएव गुस्सेब को भी यह हिन्दी संगीत की परम्परा उत्तराधिकार के रूप में प्राप्त हुई थी। गुस्सेब स्वयं सिखते हैं 'हमारे घर के बंभुथी कण्ठ बाबू दिन रात गानों में ही लक्ष्मीन रहते थे, ये धीरे सिखाते नहीं थे प्रदान करते थे। न मामूम कम थे गीतों में ही मान हो जाते थे यह मैं नहीं जानता ठीक तरह नहीं कह सकता वे लड़े होकर नाच-नाच कर वितार बजाते थे—हँस-हँस कर बड़ी बसती हुई साम साम घाँसे निकाल कर गीत पाते थे—'मैं छोड़ों ब्रजकि बासरि' साब-साब मुझसे भी बिना गाने नहीं रहा जाता था।^२ अज्ञातनामा गायक का स्मरण करते हुए गुस्सेब लिखते हैं—'प्रातःकाल मध्याह्ने में से उनके गीत सुना करते थे—दियमानुसार सीखा हुआ

१ गुस्सेबेर पिता महर्षि द्विवेन्द्रनाथ जिसे द्विवेन्द्र बराबर उच्चारण हिन्दी संगीत के विषय मन्त्र। छोना बाबू बिरजम स्ट्रीट एकटी बाड़ि भाड़ा करे उस्ताद रेखे गान बाजना करते। द्विवेन्द्रनाथ साहेब मास्टार के लिये पियानो खेलेन। तिन मोटी मुटि भाबे पाइते पारतेन। हिन्दी गाने बाबोमब बोब तार बेध परिष्कार द्विवेन्द्र तार रचित प्रत्येकदि बैंगला उपासना संगीत हिन्दी उच्चारण संगीत के लिये रचित। उपासना धीरे उत्सव गाने उच्चारण हिन्दी संगीत के ठमकेइ उपयुक्त माने करतेन। बसे तिन तार बेसि प्राचाग्य बितेन। तारइ इच्छा धीरे प्रभाबे तार पुत्र द्विवेन्द्रनाथ सत्येन्द्रनाथ ज्योतिरिन्द्रनाथ उच्चारण हिन्दी संगीत में बहुत बहु-संगीत रचना करेद्विवेन्द्र तार मध्ये झुपड़े संस्थाइ अधिक।

—रबीन्द्र संगीत पृ० १२।

२ आमाबेर बाड़ि बंभु श्रीकण्ठ बाबू दिन रात गाने मध्ये तसिसे पावतेन। तिन ठो मान खेजातेन ना मान तिन बितेन कसन सुने नितुम जानते पारतुमना। पुरत मसन राखते पारतेन ना बाड़िये उठतेन लिये लिये बाबाते पावतेन सेतार हासिते बड़ी बड़ी भीख ज्वस् ज्वस् करत गान पारतेन 'मय छोड़ों ब्रजकि बासरि' संगे सवे आमिषो ना पाइलै हाकतेन ना।'

—रबीन्द्र संगीत पृष्ठ १४।

पाद नहीं प्रातःकाल मही स्वर बसा करता था । बंसी हमारी रे ।^१
 अर्थात् प्राय २१ बप की उन्नत तक गान रचना के लिये उन्नती विज्ञा का मया युग
 था । इस प्रायु तक सुर योजना के लिये माना प्रकार हिन्दी राग रागिनी ही केवल
 उन्नतका अवसम्बन्ध थी ।^२ इस काल तक उन्नती रचना में हिन्दी-राम सपीत का बहुत
 प्रभाव है ।^३

गुरुदेव स्वयं स्वीकार करते हैं—“मैं बचपन से ही पूब हिन्दुस्तानी गान
 सुनता आया हूँ । इससे अधिक क्या कहूँ ? इसका महत्व और माधुर्य पूर्ण हृदय से
 स्वीकार करता हूँ । सुन्दर हिन्दुस्तानी गान मुझे गम्भीर भाव से मुग्ध करता है ।
 विषय वस्तुहीन छवि का विमुक्त रूप मुझे अस्वाभाविकता है जिस प्रकार वाक्य-विहीन
 छनीत का आभास । वस्तुतः मेरा मुकाब इसी धोर है । वीरव से ही हिन्दुस्तानी सुरों
 से मेरे ज्ञान और प्राण मरे मरे हैं । मैं बाल्यकाल से ही ध्रुपदगान सुनने का अभ्यस्त
 हूँ उसका आभिजात्य अपनी बृहत् सीमा में अपनी मर्यादा की रक्षा करता है इस
 ध्रुपद गानों में मुझे दो वस्तुमें प्राप्त हुई एक धोर उन्नती विपुलता गम्भीरता एक
 धोर उन्नत आरम-दमन—सुसंघति के मध्य में अपने बचन की रक्षा करना ।”

१ अज्ञाना गायके स्मरण करे गुरुदेव लिखते हैं— ‘मोर बेला मझारि येके ठने बेर
 करे तार मान धुनवेम, निममेर सेला यादेर घातेनेइ, तादेर शख धनियमेर
 सेध्याम—सकाल बेमार सुरे बसत — बंसी हमारि रे—।’ —बही पृष्ठ ६४ ।

२ अर्थात् प्राय २१ बरबर बयस पर्यन्त गान रचनाय तार सिता गविसिर मुग
 एइ बयस पर्यन्त सुर योजनाय माना प्रकार हिन्दी राग रागिनीइ दिन तार
 एकमात्र अवसम्बन्ध ।
 —बही पृष्ठ ३६ ।

३ उन्नत पर्यन्त तार रचनाय हिन्दि रागसंगीतेर प्रभाव पूबवेधि ।
 —रबीन्द्र संगीत पृ० ३६ ।

४ देवेबेला येके मानो हिन्दुस्तानी गान सुने अर्थात् बसे तार महत्व धो माधुर्य
 सगस्त मन दिवेइ स्वीकार करि । मानो हिन्दुस्तानी गान आमारके गम्भीर भाव
 मुग्ध करे । “अति बाल्यकाल येके हिन्दुस्तानी सुरे आमार कान एव प्राण अर्ति
 हयेछे ।” —विषय वस्तुहीन छविर निष्कृष्ट विमुक्त रूप आमार मानोइ मागे
 पैमन मानो मागे वाक्य हाण संघीतेर आभास । वस्तुतः आमार निजेर अर्थ
 ए न्नि के । “आमरा बाल्यकाले ध्रुपद गान सुनते अभ्यस्त तार आभिजात्य बृहत्
 सीमार मध्ये आप मर्यादा रखा करे । एइ ध्रुपद माने आमरा बुटो जिनिस
 देवेधि—एकदिके तार विपुलता गम्भीरता, आर एक दिके तार आरम-दमन
 सुसंघतिर मध्ये आपन बचन रखा करा ।”
 —बही, पृ० ३६ ।

यह जनश्रुति है कि मैं हिन्दुस्थानी गान न तो जानता हूँ न समझता हूँ। मेरे प्राथमिक रचित गान हिन्दुस्थानी झुबपठति की राम रागिनियों का छात्री दस प्रति विपुल प्रमाण के साथ दूरभाषी सताब्दी के प्रगतिवाहियों के विचारण वाद विवर्धन के लिये प्रेषित करता है। इच्छा होने पर भी इस संगीत का मैं प्रत्याख्यान नहीं कर पा रहा हूँ। उही संगीत से मैंने प्रेरणा प्राप्त की है जो इस बात को नहीं जानता है वह हिन्दुस्थानी संगीत को भी नहीं जानता है।^१

इस प्रसंग में अस्मय्य रबीन्द्र संगीत विशेषज्ञ विद्वानों की समामोचना भी हिन्दी संगीत का रबीन्द्र-संगीत पर प्रभाव के विषय में उल्लेखनीय है।^२ सुधी इन्डिरादेवी चौपुरानी लिखती हैं, 'वास्तविकता से उनके घर पर बहुत हिन्दुस्थानी संगीतवेत्ताओं का आवागमन रहता था। यदु मद्द, मोलाबक्स प्रादि के तो केवल मैंने नाममात्र सुने हैं। विष्णुराम चक्रवर्ती हमारे समय तक संगीत के प्रेमी रहे हैं। इसके पश्चात् नाना देश के अनेक अन्धे बुरे उस्तादों से सुनने का सीमाय्य हममें से अनेकों को प्राप्त हुआ है। सुतराम किसी विशेष उस्ताद के पास रीति अनुसार शिक्षा न प्राप्त कर सब कुछ हिन्दु संगीत की मूल नीति के एक मोटे रूप से समझने का अवसर उनको अनेक बार मिला था। सुन्दर हिन्दी-गाता-बजाता सुनकर वे बहुत आनन्दित होते यह तो सब सोच जाते हैं। प्रादि ब्रह्म समाज का ब्रह्म-संगीत सकल प्रकार से हिन्दी सुर्तों का रत्नाकर-विशेष है यदि उसका संयन किया जाये तो ऐसी कोई हिन्दी राम-रागिनी नहीं है जो नहीं प्राप्त हो। उसके द्वारा गान के प्रथम

१ जनश्रुति प्राप्ते, ये प्राणि हिन्दुस्थानी गान जानते बुझते। आमार प्रादि युवेर रचित गाने हिन्दुस्थानी झुबपठतिर रागरागिनीर छात्रीदस प्रति विपुल प्रमाण-सह दूरभाषी सताब्दीर प्रल तास्त्रिकद्वेर विचारण वाद विवर्धन जन्मे प्रेषित करे प्राप्ते। इच्छा करसेधो छेइ संगीत के प्राणि प्रत्याख्यान करते पारिसे छेइ संगीत केकेइ प्राणि प्रेरणा सात्र करि एकदा बारा जातेगा तासइ हिन्दु स्थानी संगीत जाने मा।
—रबीन्द्र संगीत पृ ४०, २८०।

२ शिष्ये—रबीन्द्र संगीत (सांतिदेव चौप) रबीन्द्र संगीतेर भारा (शुभपूह ठाकुर) रबीन्द्रगाथेर नाम (सोमेन्द्रनाथ ठाकुर सांघीतिनी (श्री बिभीपकुमार राय)—संगीत परिष्कार (नारायण चौबरी) प्रादि अर्ध एव श्री इन्डिरादेवी चौपुरानी श्री भुज्जटिप्रसाद मुखोपाध्याय प्रादि के लेखों में रबीन्द्र संगीत पर हिन्दी-संगीत के समीर प्रभाव के विषय में विस्तृत विवेचन है।

तीन भागों को छोड़ कर शेष रबीन्द्र रचित है।^१ भागे फिर लिखती हैं—कवि के पीठों के साथ जिनका बीड़ा बहुत भी परिचय है वे जानते हैं कि गुरुदेव हिन्दी-गीतों की गठन प्रणाली को सदा मान कर बसते थे। अर्थात् पुराण गान प्रास्थायी, अन्तरा सचारी आभोग आदि चार भागों का व्यक्तिक्रम नहीं करते थे।^२

श्री भुवनेश्वरप्रसाद मुखोपाध्याय लिखते हैं, “मुमुर्षु हिन्दुस्थानी दरबारी संगीत को देखी सुर के रस से संजीवित करते हुए रबीन्द्रनाथ ने जीवन धर्म का ही अनुपमन किया था।” भागे लिखते हैं—रबीन्द्रनाथ के गीतों के संबंध में इस कथा को स्मरण रखते हुए देखा जाय कि उनका हिन्दुस्थानी संगीत की चारा के विषय में जाना तो दूर रहा। उसी चारा को देखी संगीत (बंगाली संघीत) के संस्पर्श से श्रीर व्यक्तिगत भावों ने नया-जीवन प्रदान किया।^३

१ छेमेनेना केके ठहिर बाड़ीते भाम हिन्दुस्थानी संघीत बेत्तार यातायात छिन्न। यहु भट्ट मोसाबकस-एसब नाम भामादेर काने होना मात्र है। विष्णुपदम अक्षरती भामादेर कान पर्यन्त से संघीतेर केर बने एनेछिमेन, एवम् पार परे नामा देखे नामा भासमन्त्र उस्ताद सोनवार सीभाम्य भामादेर अनेकरइ ह्यथे। सुतराम कौन विधेय उस्तादेर काछे रीतिमत छिन्ना ना पैसे धो सब गुह्य हिन्दू संघीतेर मूस नीति सम्बन्धे एकटो मोटामुटि चारणा नाम करवार सुयोग ठौर यथेष्ट ह्येछिस एवम् भाम हिन्दी गान बाबना मुनठे तिन सुबह मास बासवेन ठासकनेह जानै। आदि ब्रह्मसमाजेर ब्रह्मसंगीत सकस प्रकार हिन्दी सुरेर एकटि रत्नाकार विधेय ता मन्थन करल हैन हिन्दी राग-ताल नैह या पाधोया जाय ना। एवम् पार डाबस मायेर प्रथम तिन भाम बाद द्विसे शेष नय मायेर अक्षिकाव यानह बोध ह्य रबीन्द्र रचित।

—रबीन्द्र जयन्ती, पृ० ४२।

२ कबिर जानेर छेमे और किमुमान परिचय काछे, तिनह जानै ये तिन हिन्दी जानेर गठन प्रणाली सर्वबबा मैने जसेन, अर्थात् पुराण जाने, प्रास्थायी अन्तरा, सचारी आभोग एह चार भायेर व्यक्तिक्रम करल ना। —वही पृ० ४२।

३ मुमुर्षु हिन्दुस्थानी दरबारी संघीत के देखी सुरेर रस्ते संजीवित कराते रबीन्द्र नाथ जीवन-बधेरे अनुपमन करसेन।

—रबीन्द्रनाथेर संघीत, जयन्ती उत्सव पृ० ४३१।

४ रबीन्द्रनाथेर जानेर सम्बन्धे एह कथति मोटो कथा स्मरण रासने देखा जावे ये तिन हिन्दुस्थानी संघीत-चारार विषये आधोया दूरे बाहुक छेह चाराकेह देखी संघीतेर संस्पर्श धो व्यक्तिगत भावेर सम्पर्क एने नूतन जीवन शिषेन।

—वही, पृष्ठ ४३३।

श्री गारावण जीवनी का विचार है कि कवि के प्रारंभिक जीवन की रचनाओं में हम क्या देखते हैं कि वे द्रुपदयानों के संस्कार से विशेष रूप से प्रभावित हैं और उनके गीतों में यह प्रभाव पूर्ण मात्रा में प्रतिफलित हुआ है। जोड़ासाँकोर की ठाकुर बाड़ी में द्रुपद संगीत की विशेष चर्चा हुमा करती थी। 'जीवन-स्मृति' में देखते हैं कि कवि कि वास्तविकता में तत्कालीन विख्यात द्रुपदगायक यदु मट्ट ठाकुर बाड़ी में प्रतिदिन धामा जाया करते थे। धर्म्य संगीतज्ञों का बड़ा नियमित रूप से धामा जाना रहता था। स्वामाधिक रूप में इसका प्रभाव बालक रबीन्द्रनाथ पर विशेष कार्यकर हुआ। उन्होंने इस तरह प्राथमिक भाव से द्रुपदांग गानों की शिक्षा भी ग्रहण की। इसी का फल है कि रबीन्द्रनाथ प्रथम जीवन की शुरु शोभनाओं में स्पष्ट ग्राह्य द्रुपद के संस्कार द्वारा उत्प्रेरित हैं। कवि के तत्कालीन विरचित गानों में हिन्दुस्थानी द्रुपद गानों का ही अनुचित ब्रजभाषा रूप है। केवल भाषा में ही पार्यन्त नहीं हो तो पंक्ति-विन्यास का प्रकरण बृहत् एक ही है। कवि का बड़ा सहीत इस तथ्य का प्रमाण है।^१

श्री वास्तविक बोध का कथन है, 'हम रबीन्द्र संगीत की राग रागिनियों को लेकर जब धामोचना करते हैं तब हमें मन में यह विचार रहता होता कि उन्नीसवीं हिन्दी गीतों के जिस प्रकार स्वात प्राप्त किया था। उस तरह विचार करना उचित नहीं है। यदि हम इस तरह विचार करते हैं तो गुदबैर के गीतों के सम्पर्क में धनेक भ्रात बारासाधों के उद्भव होने की सम्भावना है। कारण यह है कि उन्नीसवीं

१ जीवन-स्मृति पृ० २६ विष्णु चक्रवर्ती (१९११-१२०१)

२ कविर प्रथम जीवनेर संगीत रचनाय धामरा की देखते पाई ? देखते पाइये, तिमि द्रुपद गानेर संस्कार द्वारा विशेष भावे प्रभावित एवम् उर गाने के प्रभावपूर्ण मात्राव प्रतिफलित। जोड़ासाँकोर ठाकुरबाड़ीते द्रुपद संगीततेर विशेष चर्चा हत। "जीवन-स्मृति" से देखते पाइ, कविर वास्तव्य वयसे तबा नीतम विख्यात द्रुपद गायक यदु मट्ट ठाकुर बाड़ीते नियम माधोवा धामा करतैन धार धी धनेक संगीतेर सेखाने नियमित धामाधोमाक्षित स्वभावतइ एरैर प्रभाव बालक रबीन्द्रनाथेर उपर विशेष कार्य करी हूदेक्षित। तिमि एरैर कारयो काल केके प्राथमिक भावे द्रुपदांग गानेर शिक्षा धी ग्रहण करिगिजेत। एर फल हूयेक्षित एह में रबीन्द्रनाथ प्रथम जीवनेर शुरु शोभनाय स्पष्ट ग्राह्य भावे द्रुपदेर संस्कार द्वारा जालिन हन। कविर तबानीन्तन कालेर रचित बाल येन हिन्दुस्थानी द्रुपद गानेरइ तर्जमाकरत ब्रजभाषा रूप। गुदु भाषाय मा पार्यन्त नहूने पंक्तिविन्यास का प्रकरण बृहत् एक। कविर बृहत्संगीत मुनि ए कपार प्रमाण।

साप्ताहिक काल

घाताग्नी के उतरारण्य में बंगाल में हिंदी-गीत जिस नियम रीति से प्रचलित थे उनके साथ अब प्रचलित हिंदी गीतों के क्षेत्र में बहुत प्रसार पा गया है। गुरुदेव के प्रथम जीवन में बंगाल में प्रचलित हिंदी उच्छ्वांस संघीत किस रूप में या धीरे गुरुदेव के रूपर किस तरह उसका प्रभाव हुआ था। यहाँ इस विषय की विस्तार मात्र से ध्यानोचना करना आवश्यक है।^१

यद्यपि उन्होंने शिष्यों की तरह निष्ठा से किसी मुक्त विरोध के पास हिंदी संघीत को शिक्षा प्राप्त नहीं की थी। जब कभी नाना प्रकार के हिंदी गीतों का स्वर उनको ध्यानपूर्वक प्रदान करता या तब से उस स्वर को बंगला भाषा में सुरसित रखने की चेष्टा करते थे।^२ गुरुदेव ने वास्तविकता से बुझाकर या तब धनैक हिंदी राग रागिनियों के अनुकरण पर बंगला साहित्य के माह्वार को मरा था। उनमें से कुछ प्रसिद्ध राग रागनी इस प्रकार हैं—टोड़ी भैरवी बाघावरी भैरव कासंगड़ा चारंग, भूपाली इतकस्याण छायानट, बिहंग लम्बाज बाघेधी बहार, परब हैण पिनू काशी कानड़ा, प्रझाना गुरबी मुक्तान मस्तार, सहाना बिनाप हनीर, केदार बन्दाबनी सारम बँ-बँवली सिन्धु, धी भीमपला धादि।

उक्त राग रागिनियों के प्रतिरिक्त उन्होंने धनैक संगीतकारों गान रचना की विभिन्न पद्धतियों के संतों धीर मन्त्रों के पदों धीर मन्त्रों का अनुसरण अनुकरण धीर अनुवार भी किया है। इनको हिंदी भाषा बांगला गान भी कहा जाता है।^३ यद्यपि संघीत में भाङ्गाना रागनी में एक प्रचलित गीत जो हिंदी गीत के आधार पर निर्मित हुआ है इस प्रकार है—

१ सामरा रबीन्द्र संघीतर राग रागिनी निये यद्यत ध्यानोचना करब तत्कन ध्यानदेर मने रक्षते हबे ये उच्छ्वासेर हिंदी गाने ये मत् प्राणाम्य वेयेधे से मते एर बिचार करा उचित नय। से भाव बिचार करते येत गुरुदेवेर नाम सम्पके धनैक प्राप्त कारणार उद्भव हबे। कारण उन्निबन्ध घताब्धीर सेवार्ये बांगला हेतै हिंदि गाने ये नियम जसतिदिधन तार सी धनुना प्रचलित हिंदि पातेर धनैक लेने पार्यवय धटे धे। गुरुदेवेर प्रथम जीवने बांगला हेतै प्रचलित हिंदी उच्छ्वासेर संघीत की जाने गई उदेषिय धीर गुरुदेवेर उपरे की माने ता प्रभाव विस्तार करेदिधन विषयधितर गुरुदेवघत विस्तार माने एताने ध्यानोचना करा बरकार।

—रबीन्द्र संघीत पृ० ४६।

२ यहि धो धिनि साकरदेर मते निष्ठा निये गुरर काधे गान धनेन नि तनु धो नाना प्रकार हिंदियानेर मुर यस्तनि ताके ध्यानम्ब वियेधे तगनि तिन से गुरके बांगला भाषा बरे राखवार चेष्टा करेदिन। —रबीन्द्र संघीत पृ० ४७।

३ हिंदी भाषा बांगला गान का धर्म है हिंदी-गीतों के अनुकरण पर विरहित बंगला गान—भाषा का धर्म है १ टुटा हुआ २ अनुकरण।

मन्दिरे मम के प्राप्तिसे है ।
 सकल गयन प्रामुत मयन
 विधि विधि मेल निधि प्रमातिधि दूरे दूरे ॥
 सकल हुयार प्रापनि कुनित
 सकल प्रवीप प्रापनि क्वनित
 सब बीधा बाधिन सब लख दुरे ॥ (गीत-विठान, पृ० १५२)

हिन्दी गीत इस प्रकार है :—

तुम्हरे सामोरी है पियरबा
 लखस खपल खजल लखल
 बोरे बोरे मोरे मोरे
 फिर मुसुकानी बाधी ॥ (रबीन्द्र संगीत पृ० १२९)

सेनेबेला पुस्तक में रबीन्द्रनाथ ने काशी रामनी के भूपद का अनुकरण करके
 मिस्र सपासना का बंगला गीत लिखा था—

भूम्य हाते फिरि हे नाप बने पने फिरि है द्वारे द्वारे
 बिर भिन्नारि हूदि मम निधिबिन बाहु करै ॥
 बिल ना प्राप्ति जाने तुष्ना ना तुप्ति माने—
 पद्दा पाइ ताइ हाराइ प्राप्ति प्रमुबारे ॥
 सकल प्राप्ति बलियेन बहि गेल सब बैला ।
 प्राप्ति तिमिर प्राप्तिनी, बधिया गेल बैला—
 कत पप प्राप्ति बाकि माव बलि भिन्ना राधि
 कीबा क्वले पृह प्रवीप कौन तिषु पारे ॥

(गीत-विठान पृ० १९४ १९५)

हिन्दी गीत—

सब भूम बरके प्राप्ति बरबा दिया बिबैत मोरि,
 बर बर क्वतिया न निधबिन सन भावे ।
 नैन न नीच प्रावे बापनि बसक सावे
 क्वनबिन कस न पकत नाप नाच बारे ।

(रबीन्द्र संगीत पृ० १२२)

किसी किसी बंगला गीत का भाव प्रारंभ में हिन्दी गीत के भाव से मेल
 खाता है, किंतु अन्तिम पंक्तिर्वा मिस्र हो जाती है । जैसे—सिंधु रागिनी पर प्राप्ति
 विठ बंगला गीत इस प्रकार है —

बरन क्वनि भुनि लख नाप बीबन तरी
 कत मोरब निजने कत मधु समीरे ॥

बचने प्रह तारा बय अनिमैवै आहि रव ।
 भावनाभोत हृदये बय बीरे एकाम्पै बीरे ॥
 आहिया रहे आधि मम तुम्हातुर पाबिसम ।
 अक्षय रयैसि मेसि बिल ममीरे ।
 कीन शुभ प्राते बाँझा वे हृदि-भाभे,
 मुसिब सब बुझ सुख दुबिया घालव तोरे ॥

(गीत-बिठान पु० ११४)

हिंदी गीत—

सुरती ध्वनि शुनि आइ माइ ममुना लीरे
 तब लो हाय तन मन पीवन बिकाई ॥

(रबीन्द्र संगीत पु० १२३)

मेरी राग में निम्न उपासना बँसना गीत हिंदी गीत के अनुकरण पर बिर
 चित है —

मन जापो मंगल सोके
 अमल अमृतमय नख आसोके
 कपोलि बिभासित जोके ।
 हेरे गवन मरि जाये सुम्बर
 जाये तरये बीचन सागर
 निर्मल प्राते बिशेर साये
 जाये अमय अयोके ॥

(गीत-बिठान पु० ११६)

हिंदी गीत—

जापो मोहन प्यारे
 साँबरि सुरत मोरे मन भावे
 सुम्बर लाल हमारे ।

(रबीन्द्र संगीत, पु० १२३)

हिंदी गीतों के भावों के साथ बँसना यानों का मेल नहीं है ऐसी बात नहीं है।
 न्यूनाधिक रूप में मेल अवश्य है। हिंदी गीतों की माया के साथ भी मेल है।
 मुझसे ने हिंदी गीतों की माया का भी अनुकरण किया है। प्रेरणा तो प्राप्त की
 ही है। निम्न बँसना मान बिहाय रायिनी के हिंदी गीत के आधार पर बिरचिंत
 है—जिसमें भाव के साथ कहीं-कहीं भाषा का भी अनुकरण किया गया है।

तिबिर बिभाबरी काटे जेमने
 बीर्ष मबने, धूम्य बीचने—

हृदय झुकाइल पैम विहने ।
 एहन आचार करे पुनके पुन हवे
 ओहे आनन्दमय, तोमार बीचारवे—
 पदिवे पराने तब सुपय बसत पवनने ॥

(गीत-विठान पृ० १७२)

तब आपमोचन का निम्न भीत भी हिन्दी गीत के समुकरण पर निर्मित
 हुआ है—

हे बिरही, हाय बंसस हिया तब
 भीरवे जानो एकाही मूख्य मंदिरे—
 कौन से निरवैस जापि प्राधु जाहिया ।
 स्वप्न रूपिनी आनोक सुन्दरी
 अलक्षय अलक्षायरी—निवासनी
 ताहार मूरति रचिते बेदनाय हृदय माझरे ॥

(आपमोचन संयोजन—रबीन्द्र रचनाबसी द्वारिच अष्ट पृ० १०९)

हिन्दी भीत—

कैसे कहूँगी रचना सो मिया बिना
 एकेलि जापि सखनि प्राधु मोरा
 नवन में निद न आबै छोड़ि सेवा ॥

—रबीन्द्र संपीठ पृ० १२१

हिन्दी बर्पा भीत के आचार पर बंयता भीत की रचना हुई थी—इस प्रकार
 कुछ भीत बर्पा संगत में भी प्राप्त होते हैं। यहाँ एक बंयता भीत बिना का
 पदा है—

प्रकण्ड पर्वने आसिल एक बुद्धि—
 बाबल धनधरा अदिरस अछनि तर्जन ॥
 धन धन आमिनी-मुर्खय अत आमिनी,
 अम्बर करिबै अग्य नयने अशु-वरिवन ॥
 छाड़ी रे अका जायी भीब अत्तस
 आनदे अवासी अन्तेरे अकति ।
 अकुष्ठ आदि मिति हूरो प्रधीत-बिराचित
 म्हात्मय-म्हासबै अपरुप मृत्यु अपरुपे भयहरन ॥

—भीत-विठान पृ० २२, १०१ ।

हिन्दी गीत—

प्रथम गजल साजस बरपा प्रभु
 काम धपम धता बिरहिणी जीपम तजम ।
 भट धत बामिनी मतंप मग यामिनी ।
 धरुम चाय कचरुता बुग्य बामि बरिजन ।

—रबीन्द्र समीत पृ० १२४ ।

कवि का सर्वप्रिय बँगला गीत भी हिन्दी गीत के अनुकरण पर विरचित हुआ था । बँगला गीत इस प्रकार है —

बीया बाबाओ है मम धन्तरे ।
 सजने बिजन बाग्य सुलै कुसे बिपद—
 धानदित ताल गुनाओ हे मम धन्तरे ॥

—गीत विद्याल पृ० ११८ ।

हिन्दी गीत—

बीप बजाह रे मन से गयो ।
 मपुर मपुर ध्वनि धपर न धरर
 रस भर ताल गुनाह र मन से गयो ।

—रबीन्द्र समीत पृ० १२४ ।

हिन्दी के टैमना गान के मुर और दरों से अनुपाणित निम्न बँगला गीत है :—

मुञ्जहीन निदिहित परापीत ह्ये भ्रमिर्दे बीन प्रानी ।
 सतत हाय भावना सत सत निपत भीत पीहित
 धिर नत कत धपबाभे ॥

जान मा रे धप-उधेर बाहिर धन्तरे
 धीर तोरे नित्य रात्रे सेह धमय धामय ।
 तोसो धानत गिर त्यजो रे भय धार,
 सतत तरत-चित्त बाहो तारि प्रम मुञ्ज-पान ॥

—गीत विद्याल पृ० १७६ ।

हिन्दी के नटमन्ना गीत की मुर सिपि देना धपेक्षित है ।

बारा बीप बारा बीम् बाराबीम् बारा ताबारे बानि-बानि
 ताना ना बेर बेर तोम् ता नाना ताना
 तीम् बेर तबारे बानि ताबानि ताता बानि बानि बानि बानि ॥

—रबीन्द्र समीत पृ० १२२ ।

भीरुबाई के एक मन्त्र को रूपान्तरित करके यह बँगला गीत निम्न

था —

‘कलन दिसे परायै स्वप्न बरपमासा व्यथार माता—’

हिन्दी पीठ की प्रथम पंक्ति कुछ इस प्रकार है —

“किन्हे बेका कहैया, प्यारा कि बंसी बाला”

किन्तु मुद्रित प्रतियों में मीराबाई का यह पीठ इस प्रकार प्राप्त होता

है —

किसने बेका करैया प्यारा मुरली बाला

अमुना के तीर मेनु बराबे कमि कामनिया कासा ॥

मोर मुकुट पीताम्बर सोभे कुम्बल भलकत लाला ॥

मीरा के प्रभु गिरधर मावर । प्रकतन के प्रति पाला ॥

—मीरा सुभा सिन्धु, पृ० १८६ ।

बास्मीकि प्रतिमा में भूपकस्याण का बैपला गीत हिन्दी के चतुरंग पीठ के आधार पर बना है :—

एइ बेला सबे निसे बल हो बल्लो हो बल्लो हो

झूटे भाय सिकारे के रे पाबि नाय

एमन रजनी बहे पाय ये ।

पनुबाबि बल्लम लये हाते भाप भाप भाप रे ।

राजा भिग घन बन अये कपिबे बन—

आकास फेदे पावे अमकि से पनु पाबि तने ।

झूटे जावे कानने कानन बार बिके घिरे ।

याव पिसे पिसे हो हो हो हो—

—बास्मीकि प्रतिमा रबीन्द्र रचनावली द्वितीय अंक पृ० २१० ।

मुस्वीब को जो हिन्दी पीठ सुन्दर प्रतीत होता था उसकी ये बैपला भाषा की निधि बनाने का प्रयत्न करते थे । अनेक टप्पा पीठों का भी उन्होंने अनुकरण किया । अचलामठन में उनका एक टप्पा पीठ जो सोरीमियाँ के टप्पों के अनुकरण पर निर्मित हुआ था वह यहाँ दिया था रखा है —

पा ह्वार ता ह्वे ।

ये आमाके कडिय से अमनि छेने से ।

पप हते ये मूजिये आने

पप ये कोबाय सेइ ता जाने

घर ये छाकाय हात से बाकाय

सेइ ती घरे लबी ।

—रबीन्द्र रचनावली एकादश अंक

अचलामठन पृ० १११ ।

गुरदेव धर्म्य व्यक्तिवों से भी हिन्दी गीत सुनकर बैंगसा में स्थापित करने का प्रयत्न करते थे। निम्न बैंगसा गीत का आधार हिन्दी गीत नाद-बिद्या परब्रह्म रस जानरे है। बैंगसा गीत इस प्रकार है :—

बिन्दुबीजा रवे बिन्दुबज्र मोहिदि
 स्पष्टे बले नमते बने उपबने
 नदी नवे गिरि गुहा पारावर
 नित्य जाये सरस समीत मपुरिमा ॥
 नित्य नित्यरस भंगिमा—
 मय बसते मय धामन्य पस्तब मय।
 प्रति मरुतुल गुनि मरुस मु बन कु जे।
 पिक कूजन गुप्यवने बिजने।
 मुहु बापु हिमोस—बिमोस बिमोस
 बिभास सरोवर माने,
 कल गीत सुसन्नित जाके—।

—बाँगासीर मान पु० १७०।

मुद मानक के हिन्दी गीत के अनुकरण पर गुरदेव ने इस ब्रह्म संगीत की रचना की थी। यह गीत इस प्रकार है —

मगनेर पाते रवि बगु बीपठ बने
 तारका मण्डल धमके जोति रे।
 धूप मस्यानिल पवन धामर कर
 सहस बनरात्रि पुढस्त ज्योति रे।
 कवन धारति है मय लण्डन तब धारति
 बनाहत धवर बाजल मेरी रे ॥१४६॥

—ब्रह्म संगीत पु० १७७ १७८।

हिन्दी गीत की दृष्टि है —

गमन में पापु रवि-बंजु बीपठ बने तारिका मण्डल बनक मोती।
 धूप मलधामनो पवनु चबरो करे समन बनराह कूलत जोती ॥
 कैसी धारती होइ मयलंडना तरी धारती धमता सयब बाजल मेरी।
 सहस तब मंत्र नन नन हृदि तोहि कड सहस मूरति ननो एहूतोही ॥
 सहस पर बिमल मन एक पर गपबिनु सहस तब गय इव चततमोही।
 सम माहो जोति जोति है सोइ तितरे जाननि सम माहि जाननि होइ ॥
 गुर साती जोति परमदु होइ जोसे तितु भावे मु धारती होइ।

हरि बरख कँवल मकरंद मोहित माने प्रनविनो मोहि छाही पियासा ॥

हुपा जमु बेहि मामरु सारिग कउ होइ जाते तेर नाइ बासा ?

—संत-सुधा-सार, पृ० २१६ ।

गुरुदेव ने नाना स्रोतों से हिन्दी शीतों को एकत्रित कर, उनका अनुकरण प्रबलम्बन एवं अनुवाद करके बंगला गीतिकाव्य के मन्दार को मरा है। परत हिन्दी संगीत का मन्मीर प्रभाव रबीन्द्र गीतिकाव्य पर माना जा सकता है।

२ भाषा रूपगत (ब्रजवृत्ति का) प्रभाव

गुरुदेव जिस प्रकार हिन्दी-संगीत के प्रेमी रहे हैं उसी तरह बास्यावस्था में ब्रजवृत्त-पदावलिओं के भी मस्त रहे हैं। उनकी भानुसिंह ठाकुर 'पदावली' इसका प्रमाण है। उन्होंने ब्रजवृत्त पदावलिओं के भाव-माधुर्य और भाषा सौंदर्य की ओर ध्यान देकर इस पदावली का सुजन किया था।

गुरुदेव लिखते हैं, उनके (विद्यापति) पर और गीत मेरे लिए बचपन के धारकण के जिनसे बीबनावस्था में मेरी कवि कल्पना सबीब हुई। मैंने उनको संगीत पर बासा^१ ।”

आगे फिर लिखते हैं, “विद्यापति की दुर्बोध बिहृत मैथिली पदावली प्रस्पष्ट थी। इसलिए मेरा धारकण इसके प्रति हुपा। मैंने टीका के ऊपर निर्भर न रहकर मूल को समझने का प्रयत्न किया^२ ।” पहले लिख चुका हूँ शीघ्रतः प्रकाशनायक सरकार और सारबाचरख मित्र महाशय द्वारा संकलित प्राचीन काव्य संग्रह मैंने विशेष ध्यान के साथ पढ़ा था। उसकी मैथिली मिथित भाषा मेरे लिये दुर्बोध थी। इसलिये अध्ययनसाथ से मैंने समझने का प्रयत्न किया।^३ बाबू नयेन्द्रनाथ गुप्त का

१ भागु+सिंह+ठाकुर=भागु=रवि सिंह=इन्द्र ठाकुर=ठाकुर भानुसिंह ठाकुर=रबीन्द्रनाथ ठाकुर ।

२ His Vidyapati poems and songs were one of the earliest doll ghts that stirred my youthful imagination and even had the privilege of setting one of them to music

H M. L. Vol. I page 172-173

३ विद्यापतिर दुर्बोध बिहृत मैथिली पदावलि प्रस्पष्ट बलियाइ बेशकरिया आमार मनोपोष टानित आमि टीकार उपर निर्भर ना करिया निद्वे बुद्धिआर बेप्टा करिआम ।

—बीबन-स्मृति, पृ० ७८

४ पूर्बइ लिखियाइ शीघ्रतः प्रकाशनायक श्री सारबाचरख मित्र महाशय कर्तृक संकलित प्राचीन काव्य संग्रह आमि विशेष ध्यान देइ रहित पढ़िआम । ताहार मैथिली मिथित भाषा आमार पक्षे दुर्बोध छिन किन्तु सेइ बन्धेइ एत अध्ययन सायेर छये आमि ताहार मध्ये प्रवेश बेप्टा करियाइआम ।

—बीबन स्मृति, पृ० ६४ ।

कथन है कि मयिप्त कवियों का अध्ययन कर उन्होंने मयिप्ती भाषा पर पूर्ण अधि-
कार कर लिया। बचपन में छद्म नाम धानुसिंह रखकर बजबुसि में अनेक कविताएँ
कीं। रबीन्द्रनाथ प्रथम व्यक्ति हैं जो मयिप्त कवियों विद्यापति और बोधिस्यदास^१
का ज्ञान स्वीकार करते हैं। उनके प्रकाश में ही रबीन्द्रनाथ की प्रतिभा को प्रकाशित
किया एवं उनके चारों ओर एक नये प्रगल्भीय जगत का निर्माण किया।^२

श्री प्रथमनाथ बिस्ती का मत है "किछोर रबीन्द्रनाथ का चण्डीदास के
परिणत^३ शिष्य की ओर आकृष्ट न होकर विद्यापति की प्रसंकारमयी पदावली की
ओर झुकना स्वाभाविक ही था। उन्होंने विद्यापति की शिष्य रीति और भाषा को
ग्रहण किया।" श्री उपेन्द्रनाथ बट्टाचार्य का विचार है, "विद्यापति की विकृत मयिप्ती
पदावली और अग्र्याय्य पदकृतियों द्वारा व्यवहृत बजबुसि भाषा की ओर रबीन्द्रनाथ
पम्पीर मात्र से आकृष्ट हुए।"^४

ईश्वर-पदकृतियों में साधाकृष्ट्य के प्रथम को एक पाथिक-रूप की दृष्टि

१ बोधिस्यदास के विषय में बहुत मतभेद है। देखिये प्रस्तुत प्रबन्ध पृ० १०८ से
११० तक।

२ By studying the poems of the Maithili poets he acquired a
wonderful command over the Maithili language. He was
in his teens when under pseudonym of Bhanu Singh (Bhanu
being a synonym for Ravi the son) he wrote a number of
lyrics in the Maithili language.

Ravindra Nath would be the first to acknowledge the
debt that he owes to the great Maithili poets—Vidyapati and
Govind Das. "But it is their light that has illuminated the
genius of Ravindra Nath Tagore and brought an admiring
world around him.

—H. M. L. vol. I. P. 172.

* परिणत=परिपक्व वा० भा० धर्म०, पृ० ११०।

३ किछोर रबीन्द्रनाथ के चण्डीदासके परिणत शिष्य आकर्षण या करिवा के
विद्यापतिके प्रसंकारमयी पदावली आकर्षण करिये—इहा पुरुष स्वाभाविक
तिनि विद्यापतिके शिष्य रीति, विद्यापतिके भाषा अधि बहुत करिया टिन।

—रबीन्द्र काव्य प्रवाह, पृ० ४३।

४ विद्यापतिके विकृत मयिप्ती पदगुमि ओ अग्र्याय्य पदकृतिये व्यवहृत बजबुसि
भाषा रबीन्द्रनाथके पम्पीर मनोयोग आकर्षण करियादिन।

—रबीन्द्र साहित्य परिचय, पृ० ३२।

हरि बरब केबस मकरंद तोमित माने अनबिनो मोहि आही पियासा ॥

हुपा बसु बेहि नानक सारिए कइ होइ जाते तेर माइ बासा ?

—संत-सुभा-सार, पृ० २३१ ।

गुरुदेव ने माना स्रोतों से हिन्दी शीतों को एकत्रित कर, उनका अनुकरण, प्रथमम्बन एवं अनुवाद करके बेसमा नीतिकाम्य के भण्डार को मघा है। अतः हिन्दी संगीत का मन्धीर प्रभाव रबीन्द्र नीतिकाम्य पर माना जा सकता है।

२ भाषा रूपगत (ब्रह्मवृत्ति का) प्रभाव

गुरुदेव जिस प्रकार हिन्दी-संगीत के प्रेमी रहे हैं, उसी तरह बास्नाबत्सा में बँदुख-पदावसियों के भी भक्त रहे हैं। उनकी भानुसिंह ठाकुर 'पदावली' इसका प्रमाण है। उन्होंने बँदुख पदावसियों के माव-भावुयं शीर भाषा सीश्य की ओर धाकट होकर इस पदावली का सुजन किया था।

गुरुदेव लिखते हैं, 'उनके (विद्यापति) पर शीर यीत मेरे लिए बपन के धाकर्षण के जिनसे यीवनाबत्सा में मेरी कवि कल्पना खबीब हुई। मैंने उनको संगीत पर बाला' ।"

आगे फिर लिखते हैं, "विद्यापति की दुबोंब बिहूठ मैबिली पदावली धस्पष्ट थी। इसलिये मेरा धाकर्षण इसके प्रति हुपा। मैंने टीका के ऊपर निर्भर न रहकर मूस को समझने का प्रयत्न किया। पहले सिख चुका हूँ शीमुत प्रसवचन्द्र सरकार शीर सारबाचरण मित्र महाशय द्वारा संकलित प्राचीन काम्य संग्रह मैंने विशेष ध्यापह के साथ पढ़ा था। उसकी मैबिली मिमित भाषा मेरे लिये दुबोंब थी। इसलिये धम्मवसाय से मैंने समझने का प्रयत्न किया। बाबू नगैरनाथ गुप्त का

१ भानु + सिंह + ठाकुर = भानु = रवि सिंह = इन्द्र ठाकुर = ठाकुर भानुसिंह ठाकुर = रबीन्द्रनाथ ठाकुर।

२ His Vidyapati poems and songs were one of the earliest delights that stirred my youthful imagination and even had the privilege of setting one of them to music

H. M. L., Vol. I, page 172-173.

३ विद्यापतिर दुबोंब बिहूठ मैबिली पदावलि धस्पष्ट बलियाइ बैलकरिया धानार मनोमोक टानित धामि टीकार उपर निर्भर ना करिया तिजे भूमिधार बैष्ठा करिताम।

—बीबन-स्मृति, पृ० ७८

४ पूर्वइ मिखियाधि शीमुत प्रसवचन्द्र धो सारबाचरण मित्र महाशय कर्तुक संकलित प्राचीन काम्य संग्रह धामि विशेष ध्यापहुर सहित पड़िताम। ठाहार मैबिली मिमित भाषा धामार पसे दुबोंब बिलि किन्तु रैइ अन्येइ एत धम्मव सायेर संगे धामि ठाहार मध्ये प्रबैध बैष्ठा करियाधिसाम।

—बीबन स्मृति पृ० १४ ।

कथन है कि मैथिल कवियों का अध्ययन कर उन्होंने मिस्री भाषा पर पूर्ण अधि-
कार कर लिया। बचपन में इदम नाम जानुसिंह रहकर ब्रजकुमि में घनेक कवितामें
की। रबीन्द्रनाथ प्रथम ध्यमित हैं जो मैथिल कवियों विद्यापति और गोविन्ददास^१
का श्रेष्ठ स्वीकार करते हैं। उनके प्रकाश में ही रबीन्द्रनाथ की प्रतिभा को प्रकाशित
किया एवं उनके चारों ओर एक नये प्रसंखनीय जगत का निर्माण किया।^२

श्री प्रमथनाथ बिषी का मत है, "किशोर रबीन्द्रनाथ का बन्धीदास के
परिणत* विषय की ओर साहृष्ट न होकर विद्यापति की धनकारमयी पराबन्धी की
ओर कुरुता स्वाभाविक ही था। उन्होंने विद्यापति की शिष्य रीति और भाषा का
ग्रहण किया।" श्री ज्येष्ठनाथ ब्रह्मचर्या का विचार है, "विद्यापति की विकृत मैथिली
पराबन्धी और श्याम्य परकृतियों द्वारा व्यवहृत ब्रजकुमि भाषा की ओर रबीन्द्रनाथ
बन्धीर भाव से साहृष्ट हुए।"^३

वेणुब-परकृतियों में साहृष्ट के प्रणय को एक धामिक-रूप की दृष्टि

१ गोविन्ददास के विषय में बहुत मतभेद है। इन्हिये प्रस्तुत प्रबन्ध पृ० १०८ से
११० तक।

२. By studying the poems of the Maithili poets he acquired a
wonderful command over the Maithili language. He was
in his teens when under pseudonym of Bhanu Singh (Bhanu
being a synonym for Ravi the son) he wrote a number of
lyrics in the Maithili language

Ravindra Nath would be the first to acknowledge the
debt that he owes to the great Maithili poets—Vidyapati and
Govind Das. — But it is their light that has illuminated the
genius of Ravindra Nath Tagore and brought an admiring
world around him

—H. M. L. vol. I P 172.

* परिणत=परिपक्व बी० भा० धमि०, पृ० ११०।

३ किशोर रबीन्द्रनाथ के बन्धीदासके परिणत मिल आकर्षण का करिया से
विद्यापतिके धनकारमयी पराबन्धी आकर्षण करिये—इहा गृह्य स्वाभाविक
विनि विद्यापतिके शिष्य रीति, विद्यापतिके भाषा धमि ग्रहण करिया टि।

—रबीन्द्र काव्य प्रवाह पृ० ४३।

४ विद्यापतिके विकृत मैथिली परकुमि ओ श्याम्य परकृतिये व्यवहृत ब्रजकुमि
भाषा रबीन्द्रनाथके दम्मीर मनोपेय आकर्षण करिया टि।

—रबीन्द्र साहित्य परिचय, पृ० १२।

से बेला का। किन्तु गुस्सेव ने इस प्रणम व्यापार को अपने २० वर्षों^१ में बिना किसी धार्मिक दृष्टि की धाप के प्रकृत किया है।

भामुसिंह ठाकुरैर पदावली की माया में कुछ हिम्बी रूपों का भी पुट है। उदाहरण एवं विवेचन से यह प्रभाव स्पष्ट हो सकेगा।

यह्न कुसुम कुसुमाभे
मृदुल मधुर बंधो बाधे।
बितरि जास लोच लामे
सजनि घाघो घाघोलो ॥
धरो बाध नीलबास,
हरप प्रथम कुसुमरास।
हरिम नेत्र बिमल हास
कुंज बन में घाघोलो।

डाले (रे) कुसुम सुरभि भार
डाले (रे) बिहृप मुञ्ज सार
डाले (रे) इन्दु भमुतवार।
कुंज बन में घाघोलो रजत बिमल रजत भाति रे।
मन्व मन्व भूप मुक्षे
अपुठ कुसुम कुक्षे कुक्षे
फुटल सजनि पुंक्षे पुंक्षे बकुल पूनि जाति रे।
बेलि लजनि श्यामराय
नयने प्रेम अचल जाय
मधुर बदन अमृत सदन
अश्रमाय निम्बिजे
घाघो घाघो सजात कुन्ध
हैरब सजि धी पीबिन्ध
श्याम को पदारविन्द
भामुसिंह बन्धिषे।

—रबीन्द्र रचनावली द्वितीय खंड, पृ० १३।

^१ बचिये—वर्षों के क्षीरक इस प्रकार हैं—बसंत-वासना, धूम-कालम विफल रजनी बिच्छ-वेदना मिथन-सज्जा मिथन-बंसीध्वनि अमिसार, प्रतीक्षा व्याकुलता रसावेश निद्रा अनुत्पत्ता निद्रा सुतो समस्या मरण कीसुई धारि।

यह पदावली 'बास-कवि आटारटन' की तरह 'अग्नि' 'अग्नि' नाम रख कर लिखी थी। गुरुदेव स्वयं लिखते हैं "एक दिन दोपहर की खूब भेष चिरे हुए थे। इस मेधाच्छन्न समय में छायापन के प्रकाश धानम्ब में घर के एक कमरे में लाट पर सेट कर एक स्लेट लेकर लिखने लगे 'गहन कुमुम कुञ्ज माभे। और बहुत प्रसन्न हुआ।"

मूढ-दृष्टि से देखने पर 'मानुसिंह ठाकुरे पदावली' में कुछ ऐसे हिन्दी कवियों का प्रयोग भी प्राप्त होता है। जो अन्य बंध्यक पदावलियों में बिरस दृष्टिगोचर होता है। ऐसा होना स्वाभाविक है जैसा कि गुरुदेव स्वयं स्वीकार करते हैं 'मानुसिंह कोई भी हो यदि उनकी रचना मुझे प्राप्त हो तब भी मैं ठग्या नहीं जाऊँगा। इस बात को मैं बार देकर कहना चाहता हूँ। इसकी भाषा को प्राचीन पदकर्मियों की भाषा कहकर जमा देना असम्भव नहीं था। यह भाषा उनकी मातृभाषा नहीं थी यह एक कृत्रिम भाषा थी विन्त-विन्त कवियों द्वारा कुछ-न-कुछ मिश्रता इसमें हुई।"

अतएव कुछ परिवर्तन मानुसिंह ठाकुरे पदावली भाषा में भी गुरुदेव के द्वारा हुए। कुछ नये शब्दों और वाक्यों का प्रयोग इस पदावली में बिपरीत पड़ता है। इस पदावली में अपना चित्त में हमको मुझको पंथ में घर में पंथ में बग में, बुन्दावन में प्रादि प्रयोग हिन्दी के हैं तथाकथित बंध्यक पदकर्मियों की वज्रबुद्धि भाषा में दिखाई नहीं पड़ते। वज्रबुद्धि में अभिकरण के लिए ए, हि हि और कही कही मध्य शब्द का उद्भव रूप—माह माहे, माभे प्रादि प्रयोग में आते हैं।^१ किन्तु

१ जीवन्-स्मृति पृ० ६४ वाँ सा० इ० तृतीय बंड पृ० २४।

२ एक दिन मध्याह्न खूब भेष करियाए। सेह मेवला दिनेर छायापन प्रकाशधर धानम्बे बाहिर भितरे एक घरे छाटेर उपर उणुइ हइया पड़िया एकटो स्मट सइया लिखिनाम 'गहन कुमुम कुञ्ज माभे। लिखिया मारि सुधि इरमाम।

—जीवन्-स्मृति, पृ० ६४।

३ मानुसिंह गिनिह हउन ठाह्वार सेला यदि बर्तमान धामार हाठे पड़ित तबे धामि निरक्षयइ ठकिताम ना एकपा धामि और कटिया बसिते पारि। उह्वार भाषा प्राचीन पदकर्मि बलिया जालाइया देभोया प्रसंभव दिन ना। कारण ए भाषा ठाह्वारेर मातृभाषा नहे, इहा एकटो कृत्रिम भाषा विन्त विन्त कबिर हाठे इह्वार विष्णु मा किणु मिश्रता बटियाए।

—जीवन्-स्मृति पृ० ६२।

४ सप्तमी वा अभिकरण कारण ए, हि जो हि विमिश्रित प्रयोग दगा याय। बगन जो वा कोन विमिश्रित-विष्णु व्यवहृत हय ना। अनेक स्वयं 'मध्ने शब्देर अर्थनाम 'माहा माह वा माभे' शब्देर प्रयोग द्वारा सप्तमीर अर्थ प्रकाश करत हय।

—प० क० त० पं० सख्त पृ० २४०।

सप्तमी विभक्ति में हिन्दी या मयिली में ही 'में' का प्रयोग मिलता है। कहीं-कहीं वाक्य विन्यास में भी अंतर है। कुछ उदाहरण यहाँ दिये जा रहे हैं^१।

मानुसिंह ठाकुरर पदावली में इस प्रकार कुछ हिन्दी या मैथिली के समस्त कुछ विशेष प्रयोग प्राप्त होते हैं।

शेष शब्द धीरे वाक्य परम्परागत ब्रजशुक्ति भाषा के अनुसार हैं^२। मुख्यतः वे अपने शब्द-रत्न नामक प्रबन्ध में हिन्दी के विशेष कवियों के कुछ उदाहरणों धीरे किंचित हिन्दी की विभाषाओं की तुलनात्मक व्याकरण का भी प्रयत्न किया है^३। मुख्यतः की प्रयोग्य रचनाओं में भी कुछ हिन्दी शब्द प्राप्त हो सकते हैं^४।

३ हिन्दी संत साहित्य का प्रभाव

विद्यापति की परम्परा के पश्चात् मुख्यतः हिन्दी संत कवियों के साहित्य के सम्पर्क में आए। इस प्रसंग में संतों के विषय में लिखना कुछ आवश्यक हो सकता है। संत मत (निर्गुण सम्प्रदाय) का प्रभाव समस्त भारतीय समाज एवं साहित्य पर पड़ा है। कबीर, बाबू गानक, तुम्बरदास एवं रज्जब धारि संत धारे के विभूतियाँ हैं। भारतीय समाज बहन साहित्य सुबन एवं के के मीतिक, सामाजिक धीरे धार्मिक विकास में इन संतों की देन अनुपम है। भारतीय संस्कृति का संज्वाल धारण इन संतों ने प्रकट किया है। संत मत भारतीय समस्त विचार धाराओं का सारोस है। वैदिक एकेस्वरवाद जैन धर्म के बहुस्वभाव बौद्ध-धर्म के धारणावाध पीठस्थिक वैष्णव धर्म की विधास हृदयता सिद्धों का अखण्ड-मखण्ड,

१ 'मोतिम हारे केस बनावे लीखो लबावे भाके'

(रबीन्द्र रचनावली द्वि० अड पृ० १८)

'धम सो मधुराधुरक बंभने ईहू जब रोपत राधा'

(वही पृ० २२)

'धम को इयाम सो मधुरा पर को रास्य मानको होय'

(वही पृ० २३)

पर तके प्रपना होय को तुह बोसवि मोय'

(वही, पृ० २७)

२ परम्परागत ब्रजशुक्ति में प्रचलित कुछ हिन्दी शब्द इस प्रकार हैं

सर्वनाम—सो सब मझ, तोय हम तुम्ह, हमारा धारि।

विशेषण—धम कहि कपु कहीं उब धारि।

क्रिया—कहूठ उठठ, हेरिया, डारिया राखठ बरखठ निकसठ धारि।

३ रबीन्द्र रचनावली आद्य अखण्ड पृष्ठ ३३८-३३७।

४ 'देरि बाला गोप उपग्यास'।

अनन्तकृपण, केशवकृपण, नायों की माद-विन्दु एवं योग-साधना और उमटवासियों का अद्भुत समन्वय सन्त-रचन एवं साहित्य में प्राप्त होता है।

हिन्दी-साहित्य के प्रसार, प्रचार एवं विकास में इनका योगदान बहुत है। अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य पर भी सन्तों का प्रभाव पड़ा है। भारत की महान् विभूतियाँ इनसे प्रेरणा लेती रहीं हैं।

भारत के महाकवि रबीन्द्रनाथ ठाकुर ने भी मुक्तकण्ठ से इन सन्तों की छावना एवं काम्यानुभूतियों की भूरी भूरी प्रशंसा की है। अपने जीवन-वर्तन एवं साहित्य में भी उनकी विचारधारा को धारणसाध किया है। वे भी उनके वैद्यकीय प्रभाव से अभिभूत हैं। बंगाल के बाउस सम्प्रदाय की भी कुछ न कुछ विचार परंपरा सन्तों से प्रभावित है। जैसे तो समस्त सन्तों की बाणी में धारणपूर्ण समरसता, माधुर्य, एकता और एक भावमयता है। किन्तु कबीर सन्त-मत के मुकुट-विहीन सन्नाह हैं, इनका स्वर सबसे बड़, गम्भीर और पीनस्वी है। संत मत का प्रभाव उत्तरी भारत की संस्कृति पर ही विशेष है। विरचकवि रबीन्द्रनाथ ठाकुर का चिन्तन गम्भीर और उनकी कल्पना देह एवं कालातीत है। इसके व्यक्तित्व में पुरातन मध्ययुगीन और नूतन पूर-पश्चिम की विचारधाराओं का समन्वय है। वे दार्शनिक एवं अद्भुत प्रतिभाधारी कवि हैं। अतः यह स्वतः सिद्ध है कि प्रत्येक कवि अपने पूर्वजों का षोड़ा-बहुत ज्ञेय होता ही है। गुरुदेव भी इस सत्य के अनुवाद नहीं हैं। उनके काम्य में संस्कृत कवियों का प्रभाव है। फारसी और रोमान्टिक अंग्रेजी कवियों की उन पर छाया है। यद्यपि वे विरचकवि हैं तथापि उनकी मौलिकता निर्विवाद है। फिर भी भारतीय और पश्चिम के दर्शनों और साहित्यकारों का प्रभाव उन पर स्वतः ही पड़ा है, जिस प्रकार दुष्क में सुगंध और सौन्दर्य का संयोग स्वाभाविक है। गुरुदेव मैथिल-कोकिल, विद्यापति-ठाकुर, बंगाली-वैष्णव पदकर्ताओं एवं बंगाल के बाउस सम्प्रदाय के साहित्य-वरम्पण के परवर्ती कवि हैं। अतः गुरुदेव पर इनका प्रभाव परम्परागत है।

गुरुदेव निराकार निरुंख ब्रह्म के उपासक हैं। उनको यह परम्परा उन नियतों ब्रह्मसमाज और महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर से ईश्वर-सम्पत्ति के रूप में प्राप्त हुई है। किन्तु उनके रहस्यवादी-साहित्य (Mystic-Literature) पर हिन्दी सन्तों का रस भी है। जैसा कि डा० पद्मिनीपण्डित मुन्ड का मत है, "धीपनिधि विक-चित्रपट पर वैष्णव प्रणय कवियों ने बंगाल के मर्त्यिया बातों में और उत्तरी प्रदेश उत्तर भारत के रहस्यवादी संतों कवियों ने उगाहरसतमा कबीर, दादू रजब और बुरसों ने विविध छायाओं के रस और रैत्तारों प्रदान की हैं।"

१ On the Upanisadic canvas the Vaishnava love poets and the mystic Bauls of Bengal and other mystic poets of upper and

प्रोफेसर बी० मसनी का मत है कि कबीर क धार्मिक काव्य का रबीन्द्रनाथ पर प्रभाव के परिमाण-सम्बन्ध उनके ही पदों का अनुवाद है, उन पदों का संक्षय और सम्पादन उन्होंने धार्मिक भाषा भाषी जनता के लिए लिए १९२१ ई० में किया था ।^१

अनुवाद से ही एक कवि का प्रभाव दूसरे कवि पर पड़ जाता है ऐसा कहना वास्तव में सत्य से दूर है । यह बहुत गम्भीर और विभारखीय विषय है । एक कवि पर दूसरे कवि के प्रभाव के अनेक कारण हो सकते हैं, जैसा कि पहले कहा जा चुका है । पूर्ववर्ती परम्परा साहित्य-सीधर्म के प्रति आकर्षण सांस्कृतिक अथवा धार्मिक शौर्य एवं सत्यान-पतन एक जाति का दूसरी जाति पर राजनीतिक प्रमुख धारि कारण हो सकते हैं । किन्तु पुस्तक पर हिन्दी उच्च-साहित्य का प्रभाव आदान-प्रदान की भावना से भाषा प्रतीत होता है । पुस्तक स्वयं लिखते हैं कि मैं हिन्दीभाषी लोगों के निकट सम्पर्क में आने के लिए उत्सुक हूँ । यहाँ हम सोम संस्कृति प्रचार के लिए बितना भी कुछ कर सकते हैं का रहे हैं । हम चाहते हैं कि हिन्दी भाषी लोग धार्मिक, हमारे अनुभव में हिस्सा बढायें और अपने अनुभव से हमें लाभान्वित करें ।^२

यह सत्य है कि प्रत्येक परवर्ती कवि पूर्ववर्ती कवियों से भूमौतिक रूप में प्रभावित हो ही जाते हैं । विरल के बड़े से बड़े कवि इस नियम के अपवाद नहीं हैं । पुस्तक की गगनोपम सम्पुक्त प्रतिभा में भी रंग बिरंगे अनेक महाकवियों क इहानुपों की छटाएँ और छवियाँ हैं ।

रबीन्द्रनाथ ने हिन्दी के निर्गुणमार्गी अर्थों और अनुलोपासक वैष्णव-अर्थों को बहुत बड़ा की दृष्टि से देखा है । वे अनेक स्थलों पर अर्थों और मर्थों की मन्थना करते हैं । वे लिखते हैं । 'मेरे अपरिचित हिन्दी-सत्य के महान में काव्य के विमुख रतक्यादि अब मैंने खोजे इस समय एक दिन सितमोहन महापाप के मुख से बवेमसम्भ के कवि ब्रामदास के एक दो हिन्दी पद 'भापके धोरक से ही गौरवान्वित

northern India viz. Kabir, Dadu, Ruffab and others, have supplied lines and colours of different shades, obscure religious cults.
—Introduction pp 101

१ The influence of Kabir's religious poetry on Tagore is witnessed by the fact that in 1921 he himself edited a selection of these poems for the English-speaking public—prof. V. Lenny Rabinindranath Tagore's works and his personality

२ I am anxious to come in touch with Hindi speaking people we are doing here what little we can for the spread of culture, we want Hindi-speaking people to come here, share our experience and give us the benefit of their experience

हूँ, धारके रूप से ही रूपबती हूँ" मेरे कानों में पड़े मैं बोल उठा यह तो पा गया धार वस्तु, इससे ऊपर और कुछ धार नहीं। ज्ञानदास की कविता जब मैंने सुनी तब यह विचार बार बार मन में धाया, यह तो प्राधुनिकतम है प्राधुनिक बोसते समय में इसी समय की वस्तु नहीं कहता हूँ। यह सब कविता चिरकाल के लिए प्राधुनिक है। इसको किसी काल विशेष की नहीं कह सकते। यह सब कविता चिरकाल प्राधुनिक है।^१

विरोधकर कबीर के प्रति उनकी निष्ठा और आकर्षण विशेष रहा है। सन्तों की विचारधारा कई धर्मों में गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय (सैतन्य वैष्णवधर्म) के साथ मिसली जुसली है। बंसास का बाउम सम्प्रदाय भी शुकून कुछ हिन्दी सन्तों सहजियों तथा मुफ्तिओं के रंग में रंगा है। रबीन्द्रनाथ इसी परम्परा के परवर्ती कवि हैं।

धाचार्य सितिमोहन सेन समस्त रूप में साधु-सन्तों के प्रकाशों में घुसे हैं। सातितिमोहन में उनका प्रागमन सन्तों के ज्ञान मन्थार और काव्यामृत के साथ हुआ। उन्होंने ही सन्त ज्ञान बाणो मन्थार का उद्घाटन रबीन्द्रनाथ के सामने किया। स्वयं गुबदेव ने भी सितिमोहन सेन को सन्तों की बाणी का संकलन प्रकाशन और प्रचार करने के लिये अनुरोध किया था^२। सातितिमोहन में हिन्दी भवन के स्थापित होने के पहले ही सितिमोहन हिन्दी के कल्पतरु बन गये। "हिन्दी को राष्ट्रभाषा का पर राज नीतिरु-स्वतन्त्रता के कारण मिला है, किन्तु उसका सांस्कृतिक-मिथन इससे गुबदेव है रबीन्द्रनाथ ने इस सत्य का साक्षात्कार किया था^३।"

१ धामार धपरिचित हिन्दी-सत्येर महते काबेर बिगुल रसकपादि यधन तु अ सिपुम एमन समय एक दिन धितिमोहन सेन मसायेर मुख येके बयेतलण्डेर कवि ज्ञानदासेर दुइ एकटि हिन्दी पद (तोमार परब धरबिनि धामि रूपसि तोमार रूपे) धामार काने एम। धामि बने उठनुम एइठ पापो या र्थत। साति धिनिस एक बारे धरम धिनिय एर उपरे धार तान धमैना। ज्ञानदासेर कविता यधन धुनधूम तधन एइ कपाटि बार बार मने एम ए ये प्राधुनिकतम। प्राधुनिक बमते धामि एइ कासेरई विशेष सादिर धिनिय बनुधि ना। ए सब कविता चिरकालइ प्राधुनिक।
—दाधू भूमिका।

२ धाचार्य हजादीप्रसाद त्रिवेदी जी का कबीर' नामक समालोचनात्मक ग्रंथ भी गुबदेव की प्रेरणा से लिखा गया था। देखिये—'कबीर' भूमिका।

३ राजनीतिक कारणहेतु प्रायः कालों हिन्दीके राष्ट्रभाषा रूपे प्राधुनिक करिधार काय बेटा बनिठेठे, किन्तु एइ सब धादोसनेर बहुबस्तर पूब सांस्कृतिक दिग्दृष्टि हेतु हिन्दी चर्चार ये सविशेष प्रयोजन धाठे, एकपा रबीन्द्रनाथ स्वीकार करियाधिनेन।
—रबीन्द्र-जीवनी अनुपं सण्ड पृष्ठ १२१।

श्री प्रभासकुमार मुखोपाध्याय का कथन है, "इतको छोड़कर कवि के चर्म सम्बन्ध में जो ज्ञान सब तक उपनिषदों तक ही सीमित या उसका विस्तार मात्र मध्ययुगीय सन्तों के जीवन में हुआ। इस सन्तों की वाणी में कवि ने अपनी प्रकृति की वाणी का प्रतिबिम्ब प्राप्त किया। उन्होंने समझा कि वे भारत की चर्मसाधना की वापस की बहन करते आ रहे हैं। वे निःसंग नहीं हैं।"

श्री सितिमोहन सेन का मत है "जहाँसे विश्वभारती में इस कार्य के लिये रचना करने के लिए सबतर प्रदान किया था। मध्ययुग के साधकों की गम्भीर वाणी के रस-सम्बन्ध में रसानुभव निपुण जनकी जो सभ्य प्रतिभा देखी, इस प्रकार ध्यय नहीं नहीं देखी।"

गुरुदेव हिन्दी-सन्तों के विषय में लिखते हैं 'जब हम भारत की इस पारंपरिक साधना की पारवाहिक रूप में स्पष्ट देखते हैं तब हम भारत के प्रासंगिक इतिहास को पाते हैं, इसके पश्चात् हमें धीरे धीरे नहीं मिसता—सुदृश्य बर सितिमोहन सेन से शाखा प्रशाखा रूप में मध्ययुगीय साधना का रूप में इसका अनुसरण करते हैं।' ध्याने फिर लिखते हैं, "सितिमोहन बान्सू के कस्याय रूप में हिन्दुस्थान के धीरे साधक कवियों के साथ मेरा कुछ परिचय हुआ, साथ मेरा सम्बन्ध नहीं है, जो हिन्दी भाषा में एक बार जिस सीत-साहित्य का आविर्भाव हुआ था। उनके बसे में धमर समा की बरमाता है; धनावर की धोट में साथ वे बहुत प्रामाण्य हैं। उदार करना चाहिए। ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए जो हिन्दी भाषा नहीं जानते हैं वे भी विरकात इस साहित्य

१ ए छाया कविर चर्म सम्बन्धे ये ज्ञान एतकाम उपनिषदेर मध्ये धावत छिन्न, ताहा विस्तार नाम करिष मध्ययुगीय सन्तदेर जीवनैर मध्य। एह सन्तदेर वाणीर मध्ये कवि ताँहार अन्तरेर वाणीर साथ पाइसिन। तिमि कुम्हिलेन ये तिमि भागतेर चर्म साधनार वापस बहन करिया भासिते सेन, तिमि निःसंग नहैन।
—रवीन्द्र जीवनी द्वितीय खण्ड पृ० १८८।

२ " तिमि विश्वभारती ठे एह कार्यर सबतर धो रचना करिया दियासैन (मध्य)। धुनेर साधकदेर गम्भीर वाणी रससंभोगे रसानुभव निपुण ताँहार ये सभ्य प्रतिभा देखियासि एमन धार कहार धो देखिनाह।"
—रवीन्द्र जीवनी चतुर्थ खण्ड पृ० १२२।

३ 'भारतेर एह पारंपरिक साधनार पारवाहिक रूप पश्चि धामय स्पष्ट करे देखते पैतुय ताँहसे भारतेर प्रासंगिक इतिहास ये कोनजाने ता धामारेर योचन हते पावत। सुदृश्य बर सितिमोहन सेन अनुसरण करे रहेसैन [भारतीय मध्ययुगे साधनार वापस] एने भारतवर्षेर सुधीर्षकादेर छह बिलत प्रवाहेर पयटिके धार जिन-भिन्न धावाय।"
—वही पृष्ठ १२२।

को अपना उत्तराधिकार मानकर गीरवाचित हों^१। रवीन्द्रनाथ ने अपनी बहुत रचनाओं के लिए सितिमोहन सेन का ज़रा स्वीकार किया है। उत्तरी भारत के सर्वो धीरे बंधाम के बाबस आदि की बाली का सबान उन्होंने सितिमोहन से प्राप्त किया। सुददेव ने सत्य विचारबादा को बहुत सहृदय-पूण दृष्टि से देखा है, जैसा कि श्री प्रबलिन धंवरहित का मत है "यह कबीर के पीठों का अनुवाद मुख्यतया श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर का कृतित्व है। उनके रहस्यवादी प्रतिभा की प्रकृति जिन्होंने इन कविताओं को पढ़ा है वे देखेंगे कि वे कबीर के दृष्टिकोण धीरे विचारों के विभिन्न सहायुमुक्ति पूर्ण व्याख्याता हैं।"^२

गुरुदेव मध्ययुग के साधक कवियों के विषय में लिखते हैं "मनुष्य के अन्तर्गतों को सुष्टिकर्ता भगवान् का स्वर्ण मध्ययुग के साधक कवियों ने पाया था वह साधक बसित नहीं है। वह मन में प्राण में हृदय में आधिपत्य अर्द्ध परमानन्द स्वरूप है। उनके लिए उनकी मंत्र पढ़ने से पूजा नहीं होती। पीठों से उनका धारोहण होता है। वह सत्य रूप में प्रत्यक्ष सहज सुन्दर रूप में, जीवन में आधिपत्य हुआ। काम्यरूप में प्रकाशित हुआ। हमारे साधक कवियों का हृदय ही उनके पीठों का उत्सव था वे एक राम को आत्मस्वरूप आत्मा में प्राप्त करते थे। सिति बाबू से सुनता हूँ कि हमारे देव में ऐसे लोगों को मर्यादा करते हैं। इनकी दृष्टि इनका स्वर्ण मर्म में है। इनके पास सत्य का बाह्य स्वरूप नहीं है। उसके भीतर का मर्म स्वर्ण है। धातु के मुप में राजा राममोहनराय ही हमारे देव के मुक्ति प्रदाता हैं। जिससे प्रतीत होता है कि कबीर नामक, बाबू आदि ने भारत की सत्य साधना का सहज किया था। उसी

१ सितिबाबू कस्याणु कमे हिन्दुस्थानेर धारो कोनो कोनो साधक कबिर सिये धामार किनु किनु बरिचय हल। धातु धामार कन्देह भाइ ये हिन्दी भाषाय एकरा ये मीठ-काहित्यार आधिर्भाव ह्येके तार पभाय धमर सभार बरमास्य। धनान्देर भाइसे धातु तार अनेकटो आध्दन् उदार करत बाइ, धार एमन ध्यबस्या ह्योया बाहू माठे भारतकपेर दास हिन्दी भाषा जाये ना ठारमो धेन एइ बिरकामेर साहित्ये धापन उत्तराधिकार धीरेव भोग करते पारे।

— बाबू श्री भूमिका। रवीन्द्र जीवनी अनुसंधान संघ पृ० १२२।

२ This version of Kabir's songs is chiefly the work of Mr Rabinranath Tagore. The trend of these mystical genius makes him as all who read these poems will see a peculiarly sympathetic inter reter of Kabir's vision and thought.

— One hundred poems of Kabir introduction p 43.

घाबना का प्रभाव मात्र हमारे प्राणों के क्षेत्र को परिष्कार दिए हुये हैं ।^१

मुख्य पुनः सुन्दरदास घाबनाजी के प्राक्कथन में घबना मत प्रकट करते हैं—
 “दुर्गम से मेरा अधिकार हिन्दी भाषा पर नहीं है । किन्तु बंधुवर घाबनाय सितमोहन सेन जी सहायता से हिन्दी भाषा में लिखित संत-साहित्य के प्रति मेरे हृदय में यंत्री यत्ना एवं समुदाय उत्पन्न हो गया है । इस सम्बन्ध में सब तरह जिस प्रकार की रचनाओं से मेरा परिचय हुआ है । उसकी तुलना और किसी भी साहित्य में नहीं मिल सकती । इस समय देश में ऐसे बहुत लोग हैं जो भारत की राष्ट्रीय साधना की सिद्धि के रूप में हिन्दी भाषा के प्रचार की कामना करते हैं किन्तु प्राथमिक भारत की विभिन्न भाषाओं में ऐसी कोई भी भाषा समुत्पत्ता मस्येष्ट नहीं है, जिसके द्वारा सामयिक प्रवाचनों की पूर्ति हो सके । कोई भी भाषा अपने साहित्य की दृष्टि से ही अपने प्रति यत्ना उत्पन्न कर सकती है । इस प्रकार का विशेष महत्त्व हिन्दी भाषा के साहित्य में मस्येष्ट रूप में पाया जाता है । मध्य-युग के साधक कवियों ने हिन्दी भाषा में जिस भावना का ऐश्वर्य बिस्तार किया है । उसमें असाधारण विशेषता पायी जाती है । वह विशेषता यही है कि उनकी रचनाओं में अल्पकोटि के साधक एवं कवियों का एकत्र मिलन हुआ है । इस प्रकार का संयोग सर्वत्र ही दुर्लभ है” ।

- १ मन्सुवेर अस्तवर्ती सेह सुम्हिकर्ता मध्य-युग साधकदेर मध्ये से मन्सुवेर स्वर्ग पेयेक्षितेन तिमि मने प्राणें हृदये आधिपत्य प्राप्त परमानन्दस्वरूप । सेह अन्धेह मध्ये पके तीर पूजा हुसना नाम बिये तीर साधेहल हल । तिमि प्रत्यक्ष सत्य रूपे बीबने आधिभाव हृयेक्षितेन बने सहज सुन्दरकने काये प्रकाश पैसेन । आमादेर साधक कवियेर संतर देके यानेर उत्स एमनि करेह कुमने तीरा धाम के आनन्दस्वरूप परम एकके आरमार मध्ये पेयेक्षितेन दिदिबाहु काये बुधनि आमादेर देके एन्देर बनेर लीकके बने पाके मरनिवा एवेर दृष्टि; एवेर स्वर्ग मन्मेर मध्ये एवेर काये साधे सत्येर आहिरेर मुक्तिनय तार मन्मेर स्वरूप । प्राक्कर बिने राजा राममोहनराय आमादेर बेसे से अमनोचकता ताते कुमठे पारि ये कबीर, नातक वाहु आरठेर से सत्य साधना के बहल करेक्षितेन धाम यो सेह साधना प्रवाह आमादेर प्राखेर लोत्र परिष्कार करे नि । (बाहु भूमिका)
- २ दुर्गम रूपे हिन्दी भाषाय आमार अधिकार मय किन्तु बंधुवर श्रीपुत सितमोहन सेनैर उक्त भाषाय लिखित संस्केर साहित्येर प्रति आमार यंत्री यत्ना यो समुदाय उत्पन्नाते, एह उपसङ्घे एमन सकल रचनार संहित आमार परिचय बटियाये अपर कौन साहित्ये बाहार तुलना नाह । अनेके प्राथमिक भारतैर राष्ट्रीय साधनार बाहुन रूपे हिन्दी भाषाय प्रचार कामना करेनेन ।

बंगला साहित्य के इतिहासकारी समामोषकों और बिद्वानों का मत भी इस सम्बन्ध में उल्लेखनीय है। बंगला-साहित्य के महान् इतिहासकार डॉ० मुकुन्दर वन का मत है "गीतांजलि गीतामय गीतामि के युग में रबीन्द्रनाथ ने उत्तर-पश्चिम भारत के मरमिया कवियों की रचनाओं का परिचय साम किया था। मरमिया बाउम कवियों की मानस प्रकृति के साथ रबीन्द्रनाथ की उस दृष्टि का साधर्म्य गहन था इस समय इस साधर्म्य ने रचनाओं में प्रकाश पाया"।

डॉ० सतिमूपलशास का कथन है "मध्ययुग के संत कवियों का प्रभाव रबीन्द्रनाथ पर है। कथा श्री काहिनी नामक पुस्तक में 'अपमान कर कविता कवि की कबीर के प्रति श्रद्धा की शोचक है'।" दांडू के पदों का स्पष्ट प्रभाव है मानक का प्रसिद्ध पद "गगन में पामु रवि चंद्र दीपक बने तारिका मण्डल जनक मोति" कविता ब्रह्मसमाज कलकत्ता की प्रसिद्ध कविता है, ब्रह्म-संवीत में इसका अनुवाद— रबीन्द्रनाथ ने "गगनेर बाने रवि चंद्र दीपक जबने" नाम से किया था।^१

संतों में विशेषकर कबीर में लखन-मण्डन की प्रकृति जातिवाद और कड़ियों का विरोध भी पाया जाता है। यह प्रकृति रबीन्द्रनाथ में भी दृष्टिगोचर होती है। रबीन्द्रनाथ और कबीर की विचारधारा में बहुत साम्य पाया जाता है। दोनों ही

किन्तु कौन मापार सांख्यिक प्रयोजन साधनेर उपयोगिता यथेष्ट ध्येय नहे। मापा धापनार प्रति सांख्यिक श्रद्धाशानी करिते पादे। धापनार साहित्येर मूस्य सक्या सेह बिरोध मूस्य हिन्दी मापाय यथेष्ट परिमाणे पाये। मध्ययुगेर साख्य कविता हिन्दी मापाये ये माखरतेर ऐश्वर्य बिस्तार करियादन ताहार मध्ये प्रसामाय बिरोपत्व पाये। सेह बिरोपत्व एहने ताहारेर रचनाय उष्ण धीरेर साधक एवं उष्ण धीरेर कवि एकरे मितित्त हइपायेन। एमन मिसन सर्वत्रह दुमम। —मु० सं० प्रथम गंड प्राकरपन पु० १।

- १ गीतांजलि-गीतामय-गीतामि र युगे रबीन्द्रनाथ उत्तर पश्चिम भारतैर मरमिया कविदेर रचनार परिचय साम करिसेन। मरमिया-बाउम कविदेर मानस प्रकृतिर संघे रबीन्द्रनाथेर उस-दृष्टि र साधर्म्य द्विन निबिह। एगन माधम्य प्रकाश धरतर पाइस रचनाय। — डॉ० सा० इ० पुनीय लह पु० १६०।
- २ मखक की इस विषय पर डॉ० दांडू गुप्त से कलकत्ता-विश्वविद्यालय बंगला विभाग में ११ १२ १८ की चर्चा हुई। उन्होंने इस धार संकेत किया हैनिचे— कथा श्री काहिनी 'अपमान-कर' में 'मरम कबीर सिद्ध पुरय रयाति कड़िया से देये' — पु० ६३ कविता रबीन्द्रनाथ की कबीर के प्रति श्रद्धा की परिचायक है।
- ३ प्रस्तुत प्रबंध अनुप अध्याय पु० २८७ ब्रह्म-संवीत पु० १७७-१७८ बंगला शीर गान पद्य ६३२।

एहसासही होते हुए भी गृहद-आधम को ही सर्वोत्कृष्ट मानते हैं। दोनों पुराणपंथी (Orthodoxy) पर कुठाघात करते हैं। दोनों ही विचार स्वातंत्र्य के पुकारी हैं। दोनों ही निराकार निर्बंध ब्रह्म के उपासक हैं। दोनों ही मानवता के पुकारी हैं। जैसा कि इस संबंध में श्री प्रियदर्शन सेन का मत इष्टम्य है कि रबीन्द्रनाथ ने अपनी अनेक रचनाओं में धर्म के विषय में हमारे विचारों में एक उबार-भ्रष्टिकोण उत्पन्न करने का प्रयत्न किया। निःसन्देह यह सत्य है कि वे अनेक बार सिद्धान्त-विशेष और परम्परागत लकीरों से बहुत ऊँचे होते से उन्हीं इन हर प्रकार के बाँध-पीँधों का विरहाओं के विषय और संशय की घोषणा की। किन्तु इसके साथ वे किसी निश्चित संकुचित मत-विशेष से नहीं चिपके। मध्यकालीन सत और मत्त ब्रह्मदर्शन का कबीर धारि उनके शिष्य कवि रहे हैं। उनके अध्ययन के पुनर्जीवन के लिए उन्हीं यथासक्ति प्रयत्न किये। इसी प्रकार अपना साधर्म्य उन एक ब्रह्म के उपासकों के साथ प्रस्तुत किया। जिन्होंने अपने हृदयों से अत्यन्त मन्त्रितपूर्व पीतों की बर्षा की थी। श्री बुद्धिरामदास का विचार है—वे किसी ब्रह्म सम्प्रदाय के भीतर नहीं हैं उन्हीं अपने मानस का सहज भाव से विकास किया था। उनकी साधना मध्य युग के कबीर, बाहू और मरिचका बाउस के सम्प्रदाय की साधना की कोटि थी। वे इस कविता में स्पष्ट भाव से व्यक्त करते हैं —

कवि धामि शोहर बने—

धामि बाल्य धामि मंत्र हीन,

ब्रह्मदार बन्धीमानाय

धामार नैबैच पीँधना

—रबीन्द्र प्रतिभार परिचय पृ० २६२-७०।

- 1 Rabindra Nath in his various writings has done much in infusing a liberal idea in our thoughts on religion. It is no doubt true he has time and again fought shy of dogma and traditional ways, that he has declared war to the bitter and against hoary-headed superstition in all forms and shapes but at the same time he has refused consistently to hitch his wagon to the yoke of any definite and consequently limited creed.

The medieval sages and devotees, Kabir for example have been his favourite authors and he has done his best in reviving their study thus linking himself to those worshippers of the one God who poured out their hearts in intensely devotional songs."

—Western influence in Bengali Literature Page 266.

मूलत रबीन्द्रनाथ का रहस्यवाद उपनिषदों की पृष्ठभूमि पर खड़ा है विशेषकर धीपनिषिदिक रहस्यवाद बुद्धि प्रधान धार्मिक है किन्तु कबीर का रहस्यवाद जनकी विषय-अनुभूतियाँ हैं। वे सरस हैं किन्तु जहाँ माकतत्मक या रसात्मक रहस्यवाद का प्रश्न है वहाँ मुख्यतः धीर कबीर के भावों में बहुत साम्य है। जैसा कि धी उपेन्द्रनाथ मट्टाचार्य का मतम्ब है कि बूझ किस प्रकार सबसे प्रदूष्य वायु से प्राण वायु ग्रहण कर मिट्टी के भीचे सिक्कड़कर धीर रस पाकर बढ़ता है वैसे ही रबीन्द्रनाथ का कवि मानस भी उपनिषदों की बसवायु से बुद्धि को प्राप्त हुआ है। उपनिषदों ने ही बहुत परिमाण में रबीन्द्रनाथ के कवि मानस का गठन किया है, एक विशेष प्रकार की भाव-दृष्टि का अधिकारी बनाया है। उपनिषदों के साध-साध शैल्युक्त दर्शन के अधिन्यायधियाग्नेय तत्त्व धीर सीताबाब द्वीयेत के आदर्श-व्याप्यवाद (Ideal Realism) मतवाद धर्मशास्त्रों के भीतितत्व धीर—कबीर, शास्त्र प्रभृति मरनी साधुत्वों के आध्यात्मिक रसमूलक कविता का प्रभाव कुछ धर्मों में पढ़कर उनके कवि मानस गठन में सहायता की है।

भारत की मक्ति-सामना रसबाध के साथ उत्पन्न हुई है। जैसा कि धी अधिष्ठानार अकर्मता का मत है, "उपनिषद को ही वेदात्त मन्त्रा श्रेष्ठ विद्या कहते हैं इनके सामने भारत के सकल तत्व-शास्त्र गतमस्तक होकर खड़े हैं। अर्थात् उनको साधकों के यन्मीरतम अध्यात्म उपलब्धि का अग्र्य प्रकाश उद्घोषित कर चिरकाल से भारतधर्म धरता करता हुआ था रहा है। अथवत्पीठा धीमद्विभावत् प्रभृति सकल धार्मिकों से एक धारा तत्वज्ञान की धीर गई है। दूसरी धारा काम्य धीर संवीत की धीर गई है। ये दोनों धारायें ही भारत में चिरकास से परस्पर एक दूसरी को परिपुष्ट करती हुई धा रही हैं। इसी कारण भारत का अष्ट धर्म संगत

१ बासु वैमल लक्ष्मीर असदये बातास हस्ते प्राणवायु टानिया सद्दया धो घाटिर भीचे सिक्कड़ हूहते रस टानिया लिया बपित ह्य रबीन्द्रनाथेर कवि मानस धो उपनिषदेर रस धो वायुते बबित हूहया ये। उपनिषदह रबीन्द्रनाथेर कवि मानस के बहुम परिमाणे गठित करियाये धो एकटो भावदृष्टिर अधिकारी करियाये। उपनिषदेर संनि शैल्युक्त दर्शनेर अधिन्यायधियाग्नेय तत्व धो सीता बाब द्वेयेतेर (Ideal Realism) मतवाद धर्मशास्त्रों के भीतितत्व धो कबिर शास्त्र प्रभृति मरनी साधुत्वों के आध्यात्मिक रसमूलक कविता का प्रभाव ह्यतो किन्तु परिमाणे पढ़िया ताँहार कवि मानस गठने सहायता करियाये।

यूरोपीय बर्म संगीत की तरह प्रकृतियों द्वारा विरचित नहीं है। यह तत्त्वदर्शी साधक कवियों की रचना है।^१

अतः हमारा बर्म-साहित्य भी रस-सौन्दर्य को त्याग्य नहीं ठहराता है। जैसा कि श्री सचिनसेन का विचार है कि रबीन्द्रनाथ ने बर्म संगीत के साथ समृद्ध कबीर के बर्म काव्य का योग प्रत्यक्ष सुस्पष्ट है। यह भारत की भक्ति-साधना के साथ समुक्त है। हमारे साधक भक्त कवियों ने केवल रसहीन मीठबोध का आश्रय नहीं लिया। हमारा बर्म-साहित्य रसरूप रूपी जलरश्मिकार को अस्वीकार नहीं करता। इसी कारण रबीन्द्र काव्य में कबीर के प्रभाव की घोर शक्य करना संभव है। इसी से रबीन्द्रनाथ की भक्त कविता में रूप घोर सौन्दर्य कहीं भी अस्वीकृत नहीं हुआ। कबीर के गीत भी इस ध्यान में गुम्फित हैं।^२

गुरुदेव की साधना का मूलमंत्र है :—

बैराग्य साधने पुनि से आमार तय
प्रसन्न बन्धन माझे मूहानन्दमय
सबिब पुनितर स्वाह

१ उपनिषदके ह बने बैवान्त ओ भेष्ट-विद्या ताहारइ उपर भरकरिया सकल
तत्त्व-शास्त्र भारतवर्षे माया तुलिया बाँझइयाझे। अथवा ताहाके साधकेर
पंभीरतम अम्प्यात्मजपमन्बिर अपूर्व प्रकाशकरिया बिरदिनइ भारतवर्षे अज्ञा
करिया आसियाझे। भगवत्प्रीता श्रीमद्भागवत प्रभुति सकल धारव संबहोई
सेइ एक कथा—ताहा इइते एकबारा मियाझे तत्त्वज्ञानेर दिके अग्ये बारा
पियाझे काव्य ओ संबीतेर दिके। एइ समय बाराइ भारतवर्षे बिरकाल परस्पर
के परिपुष्ट करिया आसियाझे। सेइ अग्ये मागतेर भेष्ट बर्मसंपीत गुनि
जरोपर बर्मसंगीतेर न्याय प्रकृतियेरे द्वारा रचित नहे। ताहा तत्त्वदर्शी
साधक कवियेरे रचना।

—काव्य परिक्रमा पृ० ६२

२ रबीन्द्रनाथेरे बर्मसंगीतेर सहित कबीरेर बर्मकाव्य पुनिर योग प्रत्यक्ष सुस्पष्ट।
भारतेर भक्ति-साधनाए सहित मुक्त इइयाझे। आमायेरे साधकगण भक्त
कवि तांहरा गुण रसहीन मीठबोध के आश्रय करिया बाकेन नाइ। आमा
येर बर्मसाहित्य रस रूपेरे बाबिके अग्रह करे नाइ ताइ रबीन्द्र काव्ये
कबीरेर प्रभाव शक्य करा संभव। रबीन्द्रनाथेरे भक्तकविताय रूप ओ सौन्दर्य
कोबाओ अस्वीकृत हय नाइ। कबीरेर ओ एइ ध्यानदेर सुरे बाँबा।

कबीर का कथन है —

कहै कबीर विभुइ महि नितिहो
क्यों तरवर छोड़ बन माधुरी १।

रवीग्रन्थाव पर कबीर का प्रभाव प्रम्व सतों की प्रवेसा कुछ प्रबिक गहरा पड़ा है। उनके शीतों में रहस्य भाव को व्यक्त करने वाले प्रतीक प्रयिकान्धत कबीर की साधियों से अनुवेरित जान पड़ते हैं^१। अत कुछ उदाहरणों से संत साहित्य का प्रभाव सुदृश पर प्रबिक स्पष्ट हो सकेगा।

कबीर

कबीर का भावमूलक प्रभाव रवीग्रन्थाव के अनेक पद्यों पर है। कबीरवाक की रहस्य-साधना और रवीग्रन्थाव के मयवद् प्रेम के साधर्ष में बहुत साम्य है। इसको स्पष्ट करने के लिए कुछ उदाहरण प्रामरक हैं—

आमि पत तारा तब आकीसे
सबे मोर प्राण-भरि-प्रकासे

(सुदरेव)

सुसनीम—

या घट भीतर जग्न सुर है
बाही में मोलक तारा ।

(कबीर)

जसे—

आमि रूपसावरे भूर्वावयेधि
अरुण रतन साधाकरि

(नीतावली गीत संख्या ४० पृ० ५३)

सुसनीम—

आवहि मूरत बीच समूरत मूरत की बलिहारी^२ । (कबीर)

प्रसय व्यापार में भी दोनों में बहुत समानता है। जैसे—

एकता आमि बाहिर हनेम सोमार अभिसारे
साथे साथे के बले मोर मोरव अंधकारे ।

१ देखिये रवीग्र साहित्य पर परिचय पृ० ७२ ।

२ सामोचना पृ० १३०, २३ अंक जनवरी १९५९, ७ अर्थ अंक १—काव्यालोचन विवेकांक ।

३ रवीग्रसाहित्य पर परिचय पृ० ७३ ।

६०४

छाड़ते जाइ धनेक कर,
पूरे बलि, जाइ ये सरे,
मने करि प्रापद भेदे
प्राबर बैचि तारे ।

परनी से काँपिये बने
बिषय बंभसता ।
सकल कपार मय्ये से जाय
कहुते प्रापन कथा ।
से ये प्रामार प्राणि प्रभु,
लज्जा ताहार नाइ ये कमु,
तारे नियो कौन लाबै वा
याब तोमार द्वारे ।

(पीताम्बरी, नील संख्या १०१, पृ० ११३)

पुसनीय—

पीतम पुतावत प्रहस को पारले
कौन बैधरमी प्राब तैर साय जाइ'

(कबीर)

प्रेम-स्व्यापार में बोलों ही प्रियतम से कोई लज्जा एवं दुःख सिपाव नहीं
रखना चाहते हैं। क्योंकि किसी भी लज्जा एवं दुःख का साबरख प्रेम में बाधक है।

बैचे—

नीताम्बरी किबामात्र तीर केले एस प्राब
केले दिये सब नाब सुनील बने ।

तपा—

केतमो बसन पुबात्नी संवन पर सुनु तीरिये नाम प्राबरने ।
सुर नासिकार बेघ किरन बतन बरिदुर्भ तपुबानि बिकब कमल ।
बीबनेर पोबनेर लाबख्येरे मैला बिबिन बिबनेर माभे बाँझापी एकेला ।

कबीर भी उसी भाव को अभिव्यक्त करते हैं—
मितदिन खेतत रही सखियन संय
मोहि बड़ा हर माये ।
भोरे साहब की जंबी घडरिया
बड़त में त्रियरा करि ॥

देखिये— एबि रविम द्वितीय सङ्घ पृ० १११ ।

तो युक्त चाहे तो लम्बा स्यागी
 प्रिय से हिलमिल जागे
 भूँघट जोस वंगमरि भेदे
 नैन धारती साजे ।

रबीन्द्रनाथ की साधना भयवत् प्रेम का भावस है प्रेम घोर बिरह के सिये
 उसमें स्थान है। कबीर भी प्रेम-बिरह के कवि हैं। रबीन्द्रनाथ के भाव कबीर के
 साथ मिलते हैं। ये भाव मीठांजलि में अत्यन्त समानता रखते हैं। जैसे—

× × ×
 अरुण तोमार क्येर नीलाय जागे हृदयपुर
 धामार मध्ये तोमार प्रकाश एमनसु मधुर
 × × ×
 कत बनें कत गये कत पाने कत छदे
 × × ×
 अरुण तोमार क्येर नीलाय जागे हृदयपुर ।
 धामार मध्ये तोमार दोभा एमन सुमधुर

(मीठांजलि पृ० १२०, पृ० ११९)

गुलामी—

जरा मलके यहि घटमाहिं अंधी धाँकत सुके माहि ।
 यहि घट अंबा यहि घट सुर, यह घट पावै अतह्व तूर

(कबीर)

सुरेश की भक्त धर्मसारिका का बिरह विदबम्भायी है—

हेरि अहरह तोमारि बिरह
 भुजने भुजने राजे है
 × × ×
 सकल जीवन उबास करिया
 कत गाने सुरे गलिया अरिया
 तोमारि बिरह अठिछै मरिया
 धामार हियार माने है ।

(मीठांजलि पीठ २३, पृ० १०)

कबीर में भी यह भाव नाना रूपों में व्यक्त हुआ है—

साईं बिन बर करये होय

छड़ते बाइ धनेक कर,
मूरे बलि, बाइ ये तारे,
मने करि भाष्य वेदे
भाबर बैलि तारे ।

धरनी से कल्पिये बने
विषय बंभसता ।
सकल कपार मध्ये से बाप
कहते प्रापन कथा ।
से ये प्रामार प्राप्ति प्रभु
मन्त्रा ताहार नाइ वे कनु
तारे जिये कौम नाके बा
पाब तोमार हारे ।
(मीठांजलि पीठ संख्या १०१ पृ० ११५)

पुस्तक—

प्रेम-म्यापार में दोनों ही प्रियतम से कोई सज्जा एवं दुष्टम विभाव नहीं
रखना चाहते हैं । क्योंकि किसी भी तरह का भावरण प्रेम में बाधक है ।
नीलाम्बरे किशालाज तीरे कैले एस प्राब
कैले बिये सब नात्र सुनील बने ।

(कबीर)

वैषे—

कैलागे बसत बुबाओ संभल पर मुहु सोवयेर नाम प्राबरने ।
सुर बालिकार बैा फिरब बसत परिपुब तनुजानि बिकच कमल ।
बीबनेर सोबनेर लाकण्येरे मैला बिबिन्न बिबैर माने बाइापी एकेला ।
कबीर भी उठी भाव को धर्मम्यक्त करते हैं —
मिसरिब कैलत रही सखिबल संम
मोहि बड़ा बर लाये ।
मोरे साहब की ओंठी घटरिया
बड़त में मियरा कपि ॥

जो सुख चाहे तो लज्जा त्यागे
 प्रिय से हितमित्र सागे
 पूछत जोस प्रियपरि भेटे
 नैन धारती साजे ।

रबीन्द्रनाथ की साधना भगवत् प्रेम का आदर्श है प्रेम और विरह के मिये
 उसमें स्वान है। कबीर भी प्रेम-विरह के कवि हैं। रबीन्द्रनाथ के मान कबीर के
 साथ मिलते हैं। ये भाव पीठात्रिनि में अधिक समानता रखते हैं। जैसे—

| | | |
|--------------------|--------------|------------|
| × | × | × |
| प्रकृप तोमार क्येर | सीलाय जागे | हृदयपुर |
| आमार मध्ये | तोमार प्रकाश | एमनसु मयुर |
| × | × | × |
| कत बर्षे कत गये | कत गाने | कत धरे |
| × | × | × |
| प्रकृप तोमार क्येर | सीलाय जागे | हृदयपुर । |
| आमार मध्ये | तोमार दोमा | एमन सुमपुर |

(पीठात्रिनि पृ० १२० पृ० ११६)

मुत्तनीय—

बंदा भलके यहि घटमाहि धंधी धाँखन सुभे माहि ।
 यहि घट बबा यहि घट घूर यह घट पावें धनह्व घूर

(कबीर)

पुरुदेव की मकत प्रमिछारिका का विरह बिरहभ्यापी है—

| | | | |
|--------|--------|--------|-------|
| हेरि | अनुच्छ | तोमारि | बिच्छ |
| भुबने | भुबने | राजे | है |
| × | × | × | × |
| सकल | जीवन | उबास | करिया |
| कत | गाने | गुरे | गलिया |
| तोमारि | बिच्छ | उठिषे | भरिया |
| आमार | हियार | माभे | है । |

(पीठात्रिनि पीठ २५, पृ० १०)

कबीर में भी यह भाव माना क्यों में व्यक्त हुआ है—

साईं बिन बब करने होय

दिन बहिं धन रात नहिं निरिया
 कासे कहुं दुःख होय ।
 धायी रतिमां पिपले पहरवा, साईं बिना ठरत यो होय
 कहत कबीर सुको भाई प्यारे, साईं बिने सुख होय ।

तथा—

बाबूदा धाय हमारे मेहरे तुम दिन बुझिया देखे ।
 कबीर की माया सरस है, रबीन्द्रनाथ की धाया धसकार प्रबान है । नि
 माय को कबीर सरसता से ब्यक्त करते हैं मुस्वेव उस माय को ही बाबूदा
 गमीरता और शठ-शय उपमाओं के साथ प्रकृत करते हैं । रबीन्द्र धीपतिरिक्ति
 रहस्यनाय के पुजारी हैं किन्तु उपनिषद् का श्रुति सायब ही कबी बड़ा ही
 बुनहिन बनता हो किन्तु कबीर का तो रमया की बुनहिन बने बिना काय नहीं
 बनता । यही माय रबीन्द्रनाथ ने अनेक रूपकों एवं प्रतीकार्यक शैली में बिरत
 किया है । जैसे—

से ये पायो एसे बसे धिस लखु जागि भी,
 को पूम सोरे देयेदिल हठमापिनी ।
 एसे धिस मोरव राते बीजा जगनि धिस हाते
 स्वप्न माके बाबिये वेस गंभीर राधिकी ।

(गीतांजलि पीठ ६१, पृ० ७२)

सुखमोय—

तोहि मोरि लगत लपामे रे कबिरवा ।
 सोबत ही में बपने धरि नें,
 सम्बत मारि बपामे रे कबिरवा—

तथा—

सपने में साहिं मिसे सोबत निजनाय ।
 बाबि न को

माय-धाय... कबीर की उसी... के साथ-साथ कहीं-कहीं सपना साबुय भी है । मुस्वेव प्रियतम
 के साथ... के साथ-साथ कहीं-कहीं सपना साबुय भी है । मुस्वेव प्रियतम
 कबीर की उसी... के साथ-साथ कहीं-कहीं सपना साबुय भी है । मुस्वेव प्रियतम
 कबीर भरठार, राजाराम साईं, स्वामी प्रिये प्रियतम एवं बाबूदा धायि राधियों का
 प्रयोग करते हैं । उपानाओं में समानता है । रबीन्द्र नाथ, बीणा बाबूदा तथा धनाहव
 नाथ धायि उपकरुणों का धायय सेते हैं । कबीर बीछा, शठ एवं धनहव माय धायि
 प्रतीकों की सहायता सेते हैं । जिस माय की उपमा कबीर बुनरिया से सेते हैं मुस्वेव
 माता से । जैसे—

जो कुछ चाहे तो लज्जा त्यागे
 प्रिय है हितमिल सागे
 भूषट सोल प्रंगमरि भेदे
 मन भारती साबै ।

रबीन्द्रनाथ की सामना भयवत् प्रेम का भावार्थ है, प्रेम और बिरह के लिये उसमें स्थान है। कबीर भी प्रेम-बिरह के कवि हैं। रबीन्द्रनाथ के भाव कबीर के साम भिन्नते हैं। ये भाव गीतांजलि में अधिक समानता रखते हैं। जैसे—

| | | |
|--|---|---|
| × | × | × |
| अरुण तोमार क्येरे सीताय जाये हृदयपुर | | |
| आमार मध्ये तोमार प्रकाश एमनसु मधुर | | |
| × | × | × |
| कत बधे कत पये कत गाने कत छरे | | |
| × | × | × |
| अरुण तोमार क्येरे सीताय जाये हृदयपुर । | | |
| आमार मध्ये तोमार सोमा एमन सुमधुर | | |

(गीतांजलि पृ० १२० प० ११६)

दुसरीय—

अबदा अस्के यहि घटमहि धंधी धांजन सुभे माहि ।
 यहि घट अंबा यहि घट सुर यह घट पाये धनहब सुर

(कबीर)

मुसदेव की भक्त अभिसारिका का बिरह निरवस्थापी है—

बासिनकों में समान रूप है पाह प्रहरह तोमारि बिरह
 अनैर मानुष मनरे मान्नामे है
 एक बार बिष्य असु सुके बैदत पाबि सब टो.
 सब ठाई मोर घर प्राये प्राप्ति से घर हरि प्रोजिय
 हैरी बेरो मोर बैस प्राये प्राप्ति सेइ बेस बुझिया ।

दुसरीय—

हरियाब की लहर हरियाब है बी
 हरियाब और लहर में निम्न कोयम ।

+ + +

बस्त की धर सब बस्त परब्रह्म में^१

बान कर बैज मान गोपम ।

(कबीर प्रभावमी पृ० १०)

मृत्यु के समक्य में दोनों ही कवियों के विचार एक जैसे हैं । जैसे—

केवसइ—एइ बुयार दुकु पारे हते संशय

अय प्रबानार अय ।

(दीर्घ)

गुहनीय—

अनम-मरण बीच देखी घतर नहीं

बन्ध और वाम यू एक प्राही ।

अनम मरण अहां तारो पड़त है

होत धानस्य तहें समय पाबै ।

उठत भगवदार तहें नाइ अतह्य घरे—^१

मृत्यु गुहनीय है और मन्वान का बरदान है । दोनों ही कवि एक ही स्वर में इस मृत्युद्वेष का अभिनय करते हैं । जैसे—

मिलत हवे तोमार साथे

एकठि भ्रुम बुधि पाते

बोबत बबू हवे तोमार

नित्य अनुपता ।

मरण प्रामार मरण तुमि

कसो प्रामार कषा ॥

बरष माना गाँया प्राछै ।

प्रामार चित्त माभ ।

करो नीरव हास्य—मुझे

प्राछै बरेर साथै ।

से दिन प्रामार रहे ना घर

केइ बा प्राप्न केइ बा अपर

बिजन राते पतिर साथे

मिलवे पठिबता ।

मरण प्रामार मरण तुमि

कसो प्रामार कषा ।

(गीतावलि वीथ संख्या ११६, पृ० १३२ ३३)

१ सरय्येन्द्रनाथ मणिसंस्कृता पृष्ठ ३४ ।

गाधो गाधोरी कुसहिषी मंगल चार ।
 हम धरि धाये हो रामा राम भरतार ।
 तन रत करि में मन रत करि हू पचतत बराली ।
 रामदेव मोर पशुन धाये में जोवन में माती ।

× × ×
 कह कबीर हम व्याहि बले
 पुख्य एक ध्याहि बले
 ध्याहि बले

तथा—

(सत सुभा सार, पृ० ११)

बा मरम मरण से जग डर मेरे मन धामन्द—
 बिना मर को पाहि है पुन परमानन्द ।

दादू

कबीर^१ की तरह अन्य सन्तों का भी गुरुदेव पर कुछ प्रभाव है। दादूबाखी का प्रभाव कहीं-कहीं दृष्टिगोचर होता है। उरसर्ग के निम्नलिखित पद में दादू के एक पद का प्रभाव स्पष्ट है। यह पद रबीन्द्र काव्य में एक रूपक माना जाता है। प्रहृष्टिप्र प्रतिष्ठाप में सत्यासी की उक्ति में भी यही भाव है^२।

पुन आपनारे मिलाइते बाहे गये
 संप से बाहे भूरेरे रहिते बुड़े ।
 गुर आपनारे मरा दिते बाहे छि
 छि किरिया छूटे दैते बाय गुरे ।
 नाय पेटे बाय क्येर माम्भारे छाड़ा ।
 रूपपेटे बाय भाबेर माम्भारे छाड़ा,
 प्रसीम से बाहे सीमार जिबिङ्ग संप
 सोमा बाय हुते प्रसीमेर भाभे हारा ।

१ देखिये—रवि रहिम द्वितीय पाण्ड पृ० २६ ।

२ धारामं विठिमोहन सेन पर भी हिंदी सन्तों का प्रभाव माना जा सकता है। गुरुदेव के पतिव्रित्त श्री हरिरंजन राय श्री भूमानन्द स्वामी, श्री धीरेन्द्र कुमार संघोसी श्री मीठिभास राय मुपगुर्क पूर्णचन्द्र मुखर्जी योगेन्द्र मन्त्रमदार आदि सज्जन भी कबीरदास आदि सन्तों के पदों व धारमकथा आदि की परम्परा बंगाल में गुरुद्विष्ट रसे हुए हैं।

३ ए जगत मिथ्या नय बुझि सत्य हूबे
 प्रतीम हतेधे व्यक्त—सोमा रूप धरि—।

प्रलये सुखने ना जाति ए कार मुक्ति
भाब हुते क्ये धरिभराम बाघोया बाघा
बग्म किरिछे कुबिया बापल मुक्ति
मुक्ति मापिछे बांधनैर माफे बाघा ।

(उत्तरवर्ग गीत सख्या १७ पृ० ३८ ३९)

बाहु का पद इस प्रकार है —

बास कहे हम फूल-को पीठें
फूल कहे हम बास ।
भाव कहे हम सत् को पीठें,
सत् कहे हम भाव ॥
क्य कहे हम भाव को पाऊँ
भाव कहे हम क्य ।
बापस में बोज पूजन बाहे—
पूजा बापस—अनूप ॥^१

(बाहु पृ० २११)

रबीन्द्रनाथ के अनेक गीतों पर बाहु के भावों की छाया है —

ए बोभा बामार नायापो बंजु बायापो
बाबेर बैगैते ठेलिया बनेधि,
ए बाबा मोर बायापो—

(बैवा, मार)

यही भाव कबीर और बाहु के पदों में भी पाया जाता है । बाहु में यह भाव
इकार है —

ओ हम बापहि हाब से
ओ तुम सिया पतार ।
ओ हम कैबहि प्रीति सी
ओ तुम्ह बीया डार ।^२

(बाहु)

^१ देखिये—रवि रसिम द्वितीय खण्ड पृ० ४८-४९ ।

रबीन्द्र काव्य परिचय प्रथम खण्ड पृ० ३१० ।

सेवाक की बाहु का यह पद किसी हिन्दी की मुद्रित प्रति में प्राप्त नहीं हुआ ।

रवि रसिम पृ० १०४ ।

वीरगणेश के निर्मासिद्ध गीत के साथ शत्रु के एक पद का भाव-साम्य है—

जपत बुड़े पवार सुरे
 मानंद गान बाजे,
 से पान कबे नगौर रवे
 बाजिके हिवा मान्दे ।
 बातात जल भाकाठ भासो
 सवारै कबे बासिब भासो
 हुष्य सभा बुकिवा तारा
 बसिबे नावा साजे ।

(गीतांजलि, गीत संख्या १५, पृ० १८)

तुलसीदास—

शत्रु घट में सुख भानव है सब सब छाहर होई ।
 घट में सुख भानव बिब सुखी न बैस्या कोई ॥
 ये सब भरित तुमहारे मोहन मोहे सब ब्रह्मचरि जग्या ।
 मोहे कबन कबन पानी परमेश्वर सब मुनि मोहे रविचम्पा ॥
 सागर सप्त मोहे बरबो पारा घट कुमा परबत मैव मोहे ।
 तिन लोक मोहे जपजीवन-सकल कबन कैरी सेर मोहे ॥
 नयन अपोकर अपर अपरपार जो यह तैरे भरित न जानहि ।
 यह घोसा सुन्दर सोहर सुन्दर बलि बलि बाज शत्रु न जानहि ॥

(रवि रविव ५० १०४)

ज्ञानदास बघेलसखी

ज्ञानदास बघेलसखी के पदों का प्रभाव रबीन्द्रनाथ के अनेक गीतों पर है ।
 डॉ० मुकुन्दर सेन लिखते हैं, "निम्न उद्धृत ज्ञानदास बघेली के कई पदों के मार्गों
 और उत्प्रेक्षा का आभाव रबीन्द्रनाथ के अनेक गीतों और कविता में देखा जाता है ।"
 जैसे—

‘ना जानि करे बैसिपाधि,
 बैसिधि कर मुज ।
 प्रसादे प्राज बैसिधि तार बिठि ।

१ निम्न उद्धृत ज्ञानदास बघेलीर पदटिप्पणी के अन्तर्गत ज्ञानदास रबीन्द्र
 नाथ के अनेक पदों में कविताय देखा जाय ।

वेयेछि ताइ गुले प्राति

वेयेछि एइ गुय । १

(उत्सव गीत संख्या ११ पृ० २४)

गीतांजलि के निम्नलिखित गीत में भी यही भाव है —

जगते प्रानंद-यज्ञे प्रामार निर्यज्ञय ।

बन्धु हन धन्य हन मानव जीवन ।

मयन प्रामार जपेर पुरे

साव मित्राय बैडाय धुरे

धन्य प्रामार गभीर सुरे

हयेये मगन । २

(गीतांजलि गीत संख्या ४४ पृ० १२)

हिन्दी गीत इस प्रकार है —

फरार में जब प्राया पलको

पुशाक जुम्हली तैरी

धमक मर जब इबाँत लपाया

बिठ जगाया मेरी ।

धूप में हम को किया जडाता

बया पीड़ दूर समाया

गाया मेझ्या मुर मपरबी

मरन सा रैन प्राया ।

कागज काना हरक जमाना

बया भारी खत पाया

इसी रोनक बयो रै यन्त्री

तुही याव धुलाया

भारी जलसा प्राबम दाबत

तुही इक मेहमान

जन्क जन्क मे दात है कीती

मपकर हम फरमान । ३

१ रवि रविम द्वितीय खंड पृ० १८ १९ ।

२ " " पृ० १०८ ।

३ बं०सा०इ० सृ० सं० पृ० १६ ११ रवि रविम द्वितीय खंड पृ० १८ १९ ।

ज्ञानदास बचैनी का यह पद मेरठ को किसी हिन्दी प्रति में प्राप्त नहीं हुआ ।

इस पद का मान रवीन्द्रनाथ की प्रत्येक कविताओं में पाया जाता है। नीतिमात्य की निम्नलिखित कविता में ज्ञानदास के एक प्रथम पद का प्रमाण है —

“ओगो पचिक विनेर सेये
 बसेये ये एमन बैसे
 के प्राये वा सेइजाने।”
 “के जाने माइ के जाने।
 बुकेर काये प्रायेर सेठार
 पुकारि नाम कहे ये तार,
 पुनैपिनाम क्योस्तरातेर त्वज्जे।
 अपूर्ब तार ओलेर चाओया
 अपूर्ब तार गादेर हाओया
 अपूर्ब तार धासा धाओया पोवन।”
 + + +

“ओगो पचिक विनेर सेये
 बसेये ये सेइ वा एसे
 पय सेइजाने सेइजाने।”
 “के जाने को के जाने।
 पुनपि सेइ एकदि बाओ
 पय देला बार मबलावि
 कैला प्राये सकस प्राकाश माझे पो
 से मग्ग एइ प्रायेर पारे
 प्रमहत्त बीभार तारे
 गभीर सुरे बाजे सकाल-सामे पो।”

(नीतिमात्य की कविता ११ पृ० १८ १९)

हिन्दी की इस प्रकार है —

हरण-कर्मण के सात परस्पर
 सब सुर सुरभि सोने
 बीज करत करत कर्मण वा
 बीज कोइत सब बोले।
 प्रकाश हिरदय तिरि परापर
 सब तार तितार बाये।

बेलि-बमेलिके महक फिरि फिरि
सब घर परबेस मारो ॥^१

गुरु नामक

गुरु नामक के कुछ पदों को मुस्वीब रबीग्रनाब ने अपने बीठिकाव्य की निधि बनाया है।^२ ये पद इस प्रकार हैं :—

बाबै बाबै रम्य-बीबा बाबै
अमल कमल माझे श्योत्सना रबनी माझे निधि भांषार माझे,
काजल धनु माझे
कुनुम-नुरमि-माझे बीतरणन मुनिये
प्रेमे प्रेमे बाबै ॥
नाबै बाबै रम्य ताळे नाबै
नबी समुद्र नाबै
तपन तारा नाबै, युगपुनात्त नाबै
जन्म मरण नाबै
भक्त हृदय नाबै विश्व झन्डै मातिये
प्रेमे प्रेमे नाबै ॥
साबै साबै रम्य बेष्टै साबै
परबी भूति साबै बीग हुषी साबै
प्रभत बिल साबै बिम्ब शोभाय मुदाये
प्रेमे प्रेमे साबै ॥ (बीठ-बिठान पृ० ११३)

हिन्दी बीठ की प्रथम पंक्ति में कुछ भेद है —

बाबै बाबै रम्य बीष पाबै ।

मीरावाई

मुस्वीब ने लार्डनर की एक कविता में मीरा के एक पद की छाया ग्रहण कर सिद्धी पी ऐसा सम्भव है। बीसा कि डाक्टर बुलाबराय लिखते हैं—“इसी भाव

१ बा० सा० इ०, वृ० खण्ड पृ० ११२ ।

२ मिलाक को यह हिन्दी पद किसी भी मुद्रित हिन्दी पुस्तक में प्राप्त नहीं हुआ ।
३ लेखक को यह पद हिन्दी में इस रूप में देखने को नहीं मिला । किन्तु मुद्रण साहित्य में इस प्रकार का एक पद नामदेव की का मिलता है उसकी प्रथम पंक्ति इस प्रकार है — ‘जन जन हो रम्य बीण बाबै, मधुर मधुर म्वनि मनहर गाबै ।

की छाया लेकर कवि सम्राट रबीन्द्र बाबू ने घपनी Gardner नाम की कविता की जिसमें बायबान रानी से उसके यहाँ मौकरी करने की प्रार्थना करता है। बेतन पूछे जाने पर वह कहता है—एक माता निरय समर्पित करने का अधिकार—मीरों के सुमिरण पादों सरसी (बैब नर्च) का ही भाव है।^१ मीरों का एक दव यहाँ दिया जा रहा है —

स्याम । म्हुने बाकर राजोत्री पिरपारीसाल । बाकर राजोत्री

बाकर रहसु बाग लगामु, मित उठ हरसन वामु
 विम्बावन की कुल गतिन में—मोबिब सीला गामु
 बाकरी में हरसन पादें सुमिरण पादें सरसी
 माव गति बागीरी पादें तीरु बातों सरसी
 मोर मुगट पीताम्बर सोहे पन बैबंतीमासा ।
 विम्बावन में येनु चरावे मोहन मुरली बासा ॥
 ऊँचे ऊँचे महस बनाऊँ । बिब बिब रामु बारी ।
 साबरिया के हरसन पादें, पहर कुमुमो सारी ।

(मीरों-मुषानसिधु पृ० १५२)

पाठनर में यह कविता इस प्रकार है —

The service of your idle days, I will keep fresh the grassy path where you walk in the morning where your feet will be greeted with praise at every step by the flowers eager for death I will swing you in a swing among the branches of the Saptpran. Where the early moon will to kiss your spirit.

I will replenish with scented oil the lamp that burns by your bedside and decorate your foot stool with sandal and saffron paste in wondrous-designs.

What will you have for your reward ? To be your... ..to hold your little fists like tender lotus-beds and slip with flowers over your wrists to tinge the soles of your feet with the red juice of Ashok petals and kiss away the speck of dust that may dance to linger there.....Gardner p. 2-3

मुल्देव ने बंगला ब्रजबुक्ति और पंजबी में कविता की है, किन्तु हिन्दी में उनका कोई पर दृष्टिदोषर नहीं होता । हाँ कहीं कहीं कोई भीत हिन्दी की स्वर सहृषी और राय रागिनी में सिखा हुआ मिलता है । भीतबुक्ति का निम्नलिखित

गीत घसावटी राग में यहाँ दिया जा रहा है बितका साम्य हिन्दी के साथ प्राप्त होता है —

घन्तर मम विकथित करो
 घन्तरघर है ।
 निर्मल करो, बन्धनन करो
 मुन्वर करो हे
 जाघत करो कघत करो हे ।
 मन्बल करो निरलस करो
 मि संघय करो हे
 घन्तर मम विकथित करो ।

(गीतांजलि गीत ३, पृ० ९)

गुरुदेव ने मुरदास पर भी कविता लिखी है^१ तुलसीदास की रामायण और बिनय-वर्जिका की घोर भी उनका प्राकंपण रहा है। तुलसीदास भी पर भी कविता लिखी है।^२ भक्तमाल से भी एक दो कथानक लिखे हैं^३। राजस्थानी साहित्य के प्रति भी उनका प्रेम रहा है।

घन्त में हम कह सकते हैं कि रवीन्द्रनाथ के रहस्यवाद का घन्तों की प्रेम साधना के साथ स्वामाधिक-आत्मिक मेल है। घन्तों की भाषा सरल है किन्तु उनके भाव गूढ़ हैं। गुरुदेव उसी गूढ़ भाव को कलात्मक स्वरूप प्रदान करते हैं। संत पहले साधक हैं बाद में कवि हैं। गुरुदेव संनम कलाकार होते हुए भी साधक हैं। घन्तों की कविता उनकी साधना को प्रकट करने का माध्यम है। गुरुदेव कविता को साधना का घसंकार बनाते हैं।

घन्तों के साथ उनका भाव-साम्य ही मिलता है। किन्तु भाव साम्य को कवियों में होना स्वामाधिक है। जो बिदेसी घषका घसमकालीन पूर्ववर्ती परवर्ती कवियों में भी भाव साम्य हो सकता है। किन्तु भाव-साम्य की एक दो परों में ही प्राप्त हो सकता है। जब भाव-साम्य बहुत घधिक परों में प्राप्त हो तब उसकी प्रभाव मानना ही उचित होना। गुरुदेव घोर घन्तों के घनीक परों में भाव-साम्य है। गुरुदेव ने स्वयं ही घन्तों के घनेक गीतों घोर घन्तों का घन्तार घैकर घोर घन्तुवाद करके घपने गीतों की रचना की है। घत घन्तों के साथ गुरुदेव का यह भाव-साम्य प्रभाव ही माना जाना चाहिये।

१ मुरदासेर घार्यना गैरबी गान 'डाकी डाकी टानिया बसन घामि कवि मुरदास) — रवीण्ड रचनाबली, द्वितीय बण्ड मानसी पृ० २१२।

२ स्वामी माघ पृ ७२। (कथा घी काहिनी)

३ गुरुदेव ने र्विगता नवतमान से इन कथानकों की प्रेरणा भी है।

सत्य रसस्वरूप एव ध्यानदस्वरूप ब्रह्म में सदा ठस्वीन रहते व । गुरदेव सत्यन् ज्ञानम् धनत ब्रह्म के पुजारी हैं ।

सन्तों ने अपनी ब्रह्मोपासना अपने पीछों में धर्मियकत की है । गुरदेव ने अपने जीवन और साहित्य में इसको 'सत्यं विव सुन्दरं' के रूप में मूर्तिमान स्वरूप प्रगल किया है ।

६

उपसंहार

साधुनिक काल में बँगसा का प्रभाव साधुनिक भारतीय भाषाओं क साहित्य पर स्पष्ट है किन्तु परम्परागत हिन्दी प्रभाव की अवर्धता भी विमुक्त नहीं हुई । राजा राममोहनराय ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, बकिमचन्द्र चटर्जी, गुरदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर और साचार्य सिधिमोहन सेन पर न्यूनार्थिक हिन्दी प्रभाव पड़ा है । इनमें से गुरदेव पर हिन्दी का प्रभाव त्रिविध रूप में पड़ा है । प्रथमतः वे हिन्दी समीत के प्रमी रहे हैं । उन्होंने हिन्दी की राग-रागिनियों के अनुकरण पर बँगसा पीछों की रचना की है । ब्रजबुक्ति के माध्यम से कुछ हिन्दी का प्रभाव उन पर पड़ सका है । धप्रपला रूप में कुछ हिन्दी शब्द भी उनकी कृतियों में पाये जाते हैं ।

दोसर वे हिन्दी सत साहित्य के प्रमी रहे हैं । हिन्दी सतों की साधना और साहित्य की परम्परा का प्रभाव उन पर पड़ा है । दोनों के साध्यात्मिक सिद्धांतों में साम्य होने के कारण गुरदेव का सतों से प्रभाव ग्रहण करना स्वाभाविक है । जा भाव की उगारता सतों में मिलती है वही भाव की उदारता कवीग्र रवीग्र में दृष्टिमोचर होती है ।

इस पर्यवेरण से यह सिद्ध होता है कि गुरदेव पर सतों का प्रभाव जाहे पोड़ा हो है किन्तु है धवरप । उन्होंने उसको बिस्तार देकर और कलात्मक रूप प्रदान कर उसकी सुन्दरता भी और संपन्नता की धर्मिवृद्धि की है । सोन्दय-बोध और गुणसाहचरता के सिधे सतकवि यही करते हैं । वे प्रनाओं क प्रति मुक्त डार रख कर धनता भी योगदान करते हैं और मूल-स्रोतों को धाने बढ़ाते हैं ।

धर्मसाधना के साध प्रबाहित त्रिध रूप-रस-वीन्द्य की रंगा में सतों ने यही दुबकिया लयाई है । गुरदेव में भी गान्धम् त्रिकम् धर्मतम् के रूप में धनते ध्यचित्तव और कृतित्व में उषी का धरणाहन किया है ।

परिशिष्ट

साहित्यिक एक अन्य विधाओं पर प्रभाव

१ बंगला में हिन्दी शब्दावली

जब एक भाषा के साथ दूसरी भाषा का सम्पर्क होता है। तब एक भाषा से शब्द दूसरी भाषा में बने जाते हैं। इसको भाषायी उधार लेना (Linguistic borrowing) कहते हैं। भाषा में सरसतम प्रभाव का स्वरूप एक भाषा से दूसरी भाषा में शब्दों का ग्रहण करना ही होता है। निम्न की भाषाओं और भारतीय भाषाओं में भी यह नियम लागू होता है। हिन्दी और बंगला भी इसके अपवाद नहीं हैं।

समान उच्चम स्थान वाली इन दोनों भूमतियों में भी साहित्यिक धाराएं प्रभाव के साथ-साथ बनिष्ट भाषायी पारस्परिक प्रभाव भी रखा है। यद्यपि हिन्दी के शब्द बंगला में आदिकाल से ही मिलते पाये हैं। प्राचीन बंगला में यह प्रवृत्ति स्पष्ट कृष्टिगोचर होती है। सिद्ध-साहित्य और कथाओं में इनकी छटा ऐसी आ सकती है। वैष्णव-युग में हिन्दी शब्दावली की बंगला पर गहरी आप है। इस्लामिक बंगला में भी कुछ-कुछ हिन्दी शब्द प्राप्त होते हैं। किन्तु आधुनिक बंगला साहित्य और विद्येयतः बंगला भाषा में हिन्दी के शब्द मिलते हैं। यह प्रवृत्ति बंगला लोक-साहित्य या बोलचाल की बंगला में अधिक है। बंगला साहित्यकारों की रचनाओं में भी कुछ हिन्दी शब्द डूबे आ सकते हैं। इस विषय में उचित मात्र ही पर्याप्त है।

प्रमुख बंगला भाषा के शब्दकोशों (प्रमिचानों) का नामोस्तेज आवश्यक है। श्री हरानचन्द्र बन्धोपाध्याय के बंगला में व्यवहृत धरवी फारसी व उर्दू की शब्दावली की टालिका बंगीय साहित्य परिषद् पत्रिका में ही है।^१ किन्तु सेबाक उन उर्दू शब्दों को हिन्दी के ठेठ शब्द शब्द मानता है। क्योंकि धरवी फारसी तुर्की संस्कृत शब्दों की और अन्य विदेशी या भारतीय प्राचीन भाषाओं को छोड़कर जो शब्द उर्दू में बच जाते हैं वे हिन्दी के ठेठ शब्द शब्द हैं। सामारण बोलचाल की हिन्दी और उर्दू में कोई अन्तर नहीं है। जयपु वत भाषाओं के शब्द मन्डार को छोड़कर उर्दू में जो शब्दावली बच जाती है वह हिन्दी की ही निधि है। जो शब्द बंगला में ठेठ उर्दू के माने जाते हैं वे हिन्दी के ही हैं।

यद्यपि बंगला के अनेक शब्दकोशों (प्रमिचानों) में हिन्दी शब्दावली मिलती है। श्री बानेन्द्रमोहन दास के 'बंगला भाषा प्रमिचान' में हिन्दी की शब्दावली पर्याप्त

१ बंग भाषा व्यवहृत उर्दू फारसी धी धरवी-अध्वर टालिका श्री हरानचन्द्र बन्धोपाध्याय बंगीय-साहित्य परिषद् पत्रिका तृतीय संख्या पृ० १६२, बंगला १९०८।

परिमाण में प्राप्त होती है। कोषकार ने भी इनको हिन्दी के ही घट्ट माना है। उन्होंने सगमम समस्त हिन्दी शब्दों को लिया है जो आरम्भिक काल से भाषुनिक काल तक बँगला भाषा और साहित्य में ब्यहूठ हुए हैं। अन्य बँगला शब्दकोषों में भी सगमम हिन्दी के ये शब्द ही संकलित हुए हैं। वंगीय शब्दकोष और बसन्तिका में भी इस प्रकार के ही शब्द हैं।

२ वँगला प्रवादों और वाग्धाराओं पर हिंदी कहावतों एवं मुहावरों का प्रभाव

विश्व की अनेक भाषाओं के लोकोक्ति साहित्य में परस्पर बहुत साम्य है। कई लोकोक्तियाँ और मुहाबरे तो देश काल की परिस्थियों को छोड़ कर सार्वकालिक और सार्वभौम बन गए हैं। भारतीय-भाषाओं एवं विश्व की भाषाओं के लोकोक्ति साहित्य में अद्भुत साम्य है। भारत की भाषाओं के लोकोक्ति साहित्य में भी परस्पर बहुत समानता है। लोकोक्ति साहित्य मानव जाति की वैतृक धान राशि है। संस्कृत की लोकोक्ति साहित्य का भाषुनिक भारतीय आर्य-भाषाओं और द्राविडी भाषाओं के लोकोक्ति साहित्य पर प्रभाव है। भाषुनिक भारतीय आर्य भाषाओं को संस्कृत पानी प्राकृत अपभ्रंश पारसी अरबी एवं अंग्रेजी आदि भाषाओं से यह ज्ञान राशि उत्तराधिकार के रूप में मिली है। भाषुनिक भारतीय आर्य भाषाओं की कहावतों में भी पारस्परिक प्रभाव है। हिन्दी और बँगला इसके अपवाद नहीं हैं। बँगला में अनेक भाषाओं के प्रवादों (लोकोक्तियों), वाग्धाराओं (मुहावरों) का समावेश हुआ है। जैसा कि ब्यास के प्रख्यात विद्वान डॉ॰ सुशीलकुमार दे स्वीकार करते हैं, इस प्रकार हिन्दी मैथिली और तो क्या अंग्रेजी आदि भाषाओं से अनेक प्रवाद वाक्य बँगला में ग्रहण किये गये हैं।^१ हिन्दी कहावतों और मुहावरों का प्रभाव भी बँगला पर है। श्रुत का रूपान्तर हुआ है कुछ जैसे के जैसे अपना लिये गए हैं। डॉ॰ दे ने अपनी 'बँगला प्रवाद' नामक पुस्तक में स्पष्ट रूप से लिखा है अथवा तपाकथित प्रवाद जैसे बाप का बैटा सिपाही का भोज बँगला प्रवादों में मिस गये हैं। उनमें जो सुपरिचित वा नित्य ब्यवहार में प्रचलित हैं केवल उनको ही चयन करके दिये गये हैं।^२ साहित्यिक बँगला की अपेक्षा हिन्दी की ध्वनिक कहावतें बोलचाल की बँगला में ही मिलती हैं।

१ एक रूप हिन्दी, मैथिली, एमन कि अंग्रेजि प्रभुति भाषा हइये भी अनेक प्रवाद-वाक्य इतत बँगलाय पहुँचत हइयाये। (बँगला प्रवाद पृ० ७८)

२ अथवा तपाकथित हिन्दी प्रवाद (अमन, बाप का बैटा सिपाही का भोज) बँगला प्रवादें सामिल होइयागियाये, ताहार मध्ये अणुनि सुपरिचित वा नित्य ब्यवहारे प्रचलित केवल अणुनि चयन करिया देइया हइयाये।

प्रवाद साहित्य मानव-जाति की संचित ज्ञान-राशि है। अतः यह एक जटिल और विचारणीय विषय है कि मुक्त रूप में प्रवाद किस भाषा का है। उदाहरणरूपी संस्कृत वासी प्रकृत अपभ्रंश एवं किसी प्रान्तीय देशी भाषा का है अथवा अरबी फारसी और अंग्रेजी भाषि विदेशी भाषाओं से प्राङ्मुख होकर हिन्दी में उनका समावेश हुआ। अर्थात् जो अस्याम्य भाषाओं की लोकोक्तियाँ हिन्दी और बंगला में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप में प्रबल पायी हैं; जो लोकोक्ति साहित्य हिन्दी की अपनी संपत्ति नहीं है, जो बहुराज्य अस्याम्य भाषाओं से हिन्दी में आई हैं, हिन्दी के माध्यम से बंगला में आई हैं; उनका हिन्दी के लिये प्राथमिक महत्त्व है। क्योंकि यह हिन्दी की आधार ली हुई संपत्ति है।

सबसे उन प्रवादों को ही प्राथमिकता देना है जो हिन्दी के ही स्वयं अपनी देशज परम्परा के अनुसार उत्पन्न की हैं। जो उपयुक्त भाषाओं के नहीं हैं। केवल हिन्दी की ही अपनी साहित्यिक और प्रादेशिक परम्परा से प्रसूत हैं। अर्थात् हिन्दी की अपनी प्रान्तीय क्षेत्रीय मुसामीय भाषाओं विभाषाओं और लोक-साहित्य से प्राङ्मुख हैं।

राजस्थानी पश्चिमी हिन्दी (ब्रजभाषा बाँकू काड़ी बोली) कन्नड़ी कुन्नेली पूर्वी हिन्दी अथवा, बनेली छत्तीसगढ़ी बिहारो भाषा (मोजपुरी मगही मैथिली) पहाड़ी हिन्दी मध्यवर्ती और पश्चिमी भाषि विभाषाओं और इनके प्रादेशिक-साहित्य की कहानतों और मुहावरों को बृहत्तर-हिन्दी-साहित्य की ही संपत्ति माना जायेगा।

उर्दू की कहानतों और मुहावरों को भी हिन्दी के अन्तर्गत मानना चाहिये क्योंकि बोलचाल की भाषा हिन्दी और उर्दू एक ही माँ (बाड़ी बोली) की दो बेटियाँ हैं। जैसे—मुदा बर देता है तो सप्पर फाड़ कर देता है अथवा मिर्चा भीबी पकी तो नया करेवा काकी—आदि कहानतों को हिन्दी की ही माना जायगा।

बंगला में प्राप्त अधिकतर हिन्दी-लोकोक्तिओं और मुहावरों को कुछ को अम्बानुवाद (Loan-translation)^१ की श्रेणी में रख सकते हैं। अम्बानुवाद की सुविधा की दृष्टि से बंगला में प्राप्त हिन्दी कहानतों का वर्गीकरण इस प्रकार हो सकता है—

- १ हिन्दी की वे कहानतें जो बंगला में ज्यों की त्यों (उत्सम रूप में) उद्धृत हैं।
- २ जिनका अनुवाद या अम्बानुवाद बंगला में हुआ है।
- ३ जिनका बंगला में रूपान्तर या वेद-परिवर्तन हुआ है।

४ 'जिनका बँगला में हिन्दीकरण हुआ है।

१ सादृश्य—(क) सहजात सादृश्य (ख) प्रभावपठ सादृश्य।

१ हिन्दी की वे कहावतें जो बँगला में ज्यों की त्यों (तत्सम रूप में) उद्भूत हैं—

हिन्दी और बँगला के उच्चारण भेद के कारण जोड़ा बहुत अन्तर भा बाना नितान्त सम्भव है। दोनों भाषाओं के उदाहरणों से यह स्पष्ट सिद्ध हो जाता है। किन्तु अधिकतर कहावतें बँगला में प्रवेश पाकर भी हिन्दी के समरूप ही रही हैं —

१ भागे राह बतानके पाछे मोठा देय। (बाँ० प्र०—बा० भा० अमि पू० २२०६)

२ भाप मसा तो बय मसा। (" " " ")

३ भाज घमोर, कास फकीर। (" " " ")

४ अपने राम को रीज भजो जाड़े खीज। (" " " ")

५ अपने खि खाना पर खि परना। (" " " ")

मन भाता खाना जय भाता पहनना। (हि० क० इ० हि० डी पू० २८७)

६ ईद का खीद। (बाँ० प्र०—बै० प्र० प० ")

७ लेंबी दुकान फीका पकान। (" बा० भा० अमि पू० २२०७)

लेंबी दुकान फीका पकवान। (हि० क० इ० हि० डी पू० १८१)

८ उसटा खोर कोतबाल को बाटे। (बाँ० प्र० बाँ० भा० अमि पू० २२०७)

९ एक पय दो काज। (" " " ")

१० एक बार जाय योगी दुबार जाय भोभी तीन बार जाय योगी। (" —बाँ० प्र० सं० १००१)

११ कोयसा का मयसा छूटे यब घाय करे परलेय। (" —बाँ० भा० अमि पू० २००८)

कोयसा बोये ना उखरो सागुन लजे ना बोय।

१२ पर की मुर्गी दास बरबर। (" " " ")

१३ पर घाबे घनघरी बात कहे बनाय जानिसो पुरो बैरी। (" " " ")

१४ पार दिन की पाँदनी फिर घन्धेरी राउ। (" " " ")

१५ जब बरसता है तब मरजता नहीं यब मजरता है तब बरसता नहीं। (" " " ")

१६ जहाँ राम ताहाँ अयोध्या। (" —बाँ० प्र सं० ७२७४)

- १७ बीसा को सीसा । (बां० प्र०, बां० भा० अर्थि पू० २२०६)
- १८ डोबी न कहार बीबी है तैमार । (" " ")
- १९ वाठा बान बे भाण्कारी का
पेट पिराव । ("—बां० प्र० सं० ४०४१)
- २० बाल में कुल काला है । ("—बां० भा० अर्थि पू० २२०६)
- २१ बिस्नी का लड्डू यो बामा सो
पख्ताया यो न खावा सोबि
पख्ताया । (" " " पू० २२१०)
- बुर का लड्डू जो बामा सो भी
पख्ताया जो न खावा सो भी
पख्ताया । (हि० क० हि० इ० बी० पू० २२१०)
- २२ दुनिया का बाल मेड़ का पास । (बां० प्र०—बां० प्र० सं० ४११७)
- दुनिया में मेड़ बाल है ।
- २३ डूब का बला-भाठा फूक फूँक
पीठा है । ("—बां० भा० अर्थि पू० २२१०)
- २४ घोबी का कुत्ता न घर का न
बाट का । ("—बां० प्र० सं० ४११४)
- २५ नाच न बाने धायन टेड़ा । ("—बां० भा० अर्थि पू० २२१७)
- २६ नाम बड़ा बर्षन बोड़ा । (" " " ")
- २७ नैह बटव निठ पर बर बाये । (" " " ")
- २८ पत्थर पूज के हरि मिले तो हम
पूर्वे पहाड़ माला अप के हरि
मिले तो हम अपे कु बार । ("—बां० प्र सं० ४५३६)
२९. पबिबी पख्तायि बही जना पुड़
खायेये । ("—बां० भा० अर्थि पू० २२११)
- ३० पितलक कटोरी काम नाहि
आबस उपरही मकमक धार । (" " " ")
- ३१ बबल में सुरी मुहे में राम राम । (" " " ")
- ३२ बाप का बेटा छिपाही का बोड़ा
कुल न हाये तो बोड़ा बोड़ा । ("—बां० प्र० सं० १६४६)
- माँ पर पुठ पिता पर बोड़ा
अधिक नहीं तो बोड़ा बोड़ा । (हि० क०—हि० इ० बी०)

प्राचिनिक काल

- ३३ बाबाजी के बाबाजी
 सरकार के सरकारि ।
 बाबा जी रो बाबाजी
 सरकारि रो सरकारि ।
 (बी० प्र०—बी० प्र० सं० २११७)
 (राजस्थानी कहावत पृ० ११)
- ३४ भैस के प्राये बीन बाबाये
 भैस ठाढ़ी पगुराय ।
 (बी० प्र०—बी० मा० घमि, पृ० २००४)
 (" बी० प्र० सं० १४०२)
- ३५ मन बाँया ठो कठोठा में गया ।
 (" " " " " " " ")
- ३६ मरद की बात हाथी की पीठ ।
 (" " " " " " " ")
- ३७ मयि भीख पूछे मीब का बमा ।
 (" " " " " " " ")
- ३८ नके फौज नाम सरकार का ।
 (" " " " " " " ")
- ३९ सब जास हो जायेगा ।
 (" " " " " " " ")
- २ जिनका भनुबाब या सख्तानुबाब घगसा में हुप्रा है—
 हिन्दी की अनेक कहावतों और मुहावरों का बीमता में भनुबाब हो गया है ।
 भनुबाब को सादृश्य का उदाहरण भी कह सकते हैं । कुछ उदाहरण यहाँ दिये जा
 रहे हैं —
- ४० बिरे बाँव ।
 (बी० प्र० बी० प्र० सं० ७७३)
- ४१ बिरे का बाँव ।
 (" " " " " " " ")
- ४२ कानार देसे एक बोटाइ राजा ।
 (" " " " " " " ")
- ४३ मगधों में काना राजा ।
 (" " " " " " " ")
- ४४ कोयाय राजा भोज कोबाय
 गंगाराम तेसी ।
 (" " " " " " " ")
- ४५ कहीं राजा भोज कहीं गंगाराम तेसी ।
 (" " " " " " " ")
- ४६ खोबा के ना देखा बाय प्राकले
 तार के ना बाय ।
 (" " " " " " " ")
- ४७ बुदा बैसा नहीं जाठा प्रकल से तो
 पहपाओ ।
 (हि० का० हि० इ० बी० पृ० १११)
 (बी० प्र० बी० प्र०, सं० २२०८)
- ४८ चोरेर मुर्गी बास बराबर
 पर की मुर्गी दास बराबर ।
 (हि० क०, नू० हि० को०, पृ० ४०२)
- ४९ चोरेर बघ बिन सापुर एक दिन ।
 सो दिन चोरे के एक दिन साहूकार
 का ।
 (बी० प्र० बी० प्र०, सं० ११४७)
- ४९ छोटे मुह बड़ कया ।
 छोटा मुह बड़ी बात ।
 (" " " " " " " ")
- (हि० क०, नू० हि० को० पृ० ४६७)

- ४० बसे बाघ करे कुमीरेर संघे बाह । (बां० प्र० बां० प्र० , सं० ३३६२)
 बरया में रहना ओर मगर
 मच्छ से बँर । (हि० क० हि०द०बी० पृ० ३१७)
- ४८ ओर बार मुक्क ठार । (बां० प्र० बां० प्र० सं० ३४=७)
 बिछकी नाठी बसकी भैस ।
४९. तुमि फेर बाले बाले
 भामि छिरि पावाय पावाय । (, सं० ३८४४)
 तुम बाल बाल में पाठ पाठ ।
- ५० नियत गुने बरफठ । (, , सं० ४६८८)
 नियत बीसी बरफठ ।
- ५१ मायर नाम बेराकी बीबी
 पूतेर नाम मुलतान खाँ । (, , सं० ६७३३)
 माँ का नाम बेराकी बीबी
 पूत का नाम मुलतान खाँ ।
 माँ भटियायी बाप फलेखाँ बेटा
 तीर धन्धाक । (श्री हरदत्त वर्मा)
- ५२ मानुये मानुये धन्तर कोई
 हीरु कोई पत्थर । (" सं० ६९७७)
 मनुष्य मनुष्य में धन्तर कोई
 हीरु कोई पत्थर ।
- ५३ मारेर घागे भूत माये । (" " सं० ६७३०)
 मार के घाये भूत मागे ।
- ५४ माबी मरह राबी कि करे काबी । (" सं० ६३३४)
 मियाँ बीबी राबी तो क्या करेगा काबी ।
- ५५ मोसार बीड़ मसजिद तक । (" " सं० ६६६८)
 मुस्ता की बीड़ मस्जिद तक ।
- ५६ संबैठ बाला पुडि चाप । (" ' सं० ८१४१)
 सब दिल समान आय ना ।
- ५७ छात काण्ड रामापरु पड़ी । (बां० प्र० बां० प्र० सं० ८२६१)
 छीता कार भार्या ?
 छारी रात रामाबखु पड़ी पर पड़ी
 नहीं पठा राम कौन राबण कौन ?

- ५८ सात नून माप । (बा० प्र०, बा० प्र० सं० ८१७१)
 सात नून माफ ।
५९. छेरेर ऊपर सबा छेर । (" " सं० ८४६१)
 छेर के ऊपर सबा छेर ।
६०. सडि रीङ्ग सन्यासी इहू तिन
 भिये हस कासी । (" " सं० ८०४९)
६१. दुषा बायना सुभर-पिरीत
 बायना बाति भुमे बायना
 छाड पसग बापु बायना बाति । (" बा०मा०प्रमि सं० २१११)
 नीद न देखे टूटी खाट—प्यास न
 देखे घोबी माट मूख ना देखे बासी
 माठ इरक ना देखे काठ कुवाठ ।
- ३ बिमका बँगला में कर्पांतर या बेश-परिवर्तन हुआ है—
 कुछ हिन्दी लोकोक्तियों का बँगला में बेश-परिवर्तन हो गया है, यह प्रयत्न
 सापब के कारण धमबा उच्चारण सेह से हुआ है । निरुपयपुत्रक नहीं कहा जा
 सकता । कुछ उदाहरण सेव देना अपेक्षित जान पड़ता है—
६२. बाभि छाकित कमली छाड़े ना । (बा० प्र० बा० प्र० सं० ५९०)
 हन छोड़ता है कमली नहीं छोड़ता । (" " ")
६३. बाब मगद कम चमार । (" " सं० ११२)
 बाब मगद कम चमार ।
६४. बाये दुष परे मुख । (बा० प्र०, बा० प्र० सं० २६७)
 बाये दुख पीछे मुख ।
६५. भाड़े हाति साये । (" " सं० १५१)
 भाड़े हायों सेना । (हि०मु०, सं० सम्प्रसागर पृ० ४८)
६६. मझाह दिन की बावसाही । (बा० प्र०, बा० प्र० सं० ३४६)
 मझाह दिन की बावसाही ।
६७. भाव गमरी जस करै छम छम । (' " सं० ३२७)
 भाव जस गमरी छमकत जाम ।
६८. बापन हाय बगन्नाय । (" " सं० ४५०)
 भपना हाय बगन्नाय ।
६९. बापनार घोस केड टके बसे ना । (' " सं० ४६६)
 भपनी घोस को कोई सट्टी
 नहीं बद्धता ।

- ७० घामार मीचेइ घांघार । (बा० प्र० बा० प्र०, सं० १४६)
बिया तसे घंभिरा ।
- ७१ एक कामे खोने, एक काम बेरोय । (" ' सं० ८६८)
एक काम से तुनमा, बूसरे काम से
निकाल देता ।
- ७२ एक बिन दटि एक बिन बाँठ
धिरकुटि । (" " सं० १७०)
कभी भी बना कभी मुट्टीमर बना ।
- ७३ ऐक बने बोइ बाबे । (" ' सं० १११)
एक म्याल में हो ठधवार ।
- ७४ एक हाथे ठासी बाबैना । (" ' सं० १०७०)
एक हाथ से ठासी नहीं बबठी ।
- ७५ एवाकि काय्क बा एसाहि कारखाना । (" " सं० १२०४)
घसाही कारखाना ।
- ७६ कयसा पूने दो मयधा बायना । (" " सं० १४०१)
कोयसा होब ना सफेज बाहे
सी मन सानुन होय ।
- ७७ कयसा मयसा छुटे बब घाय करे
परबेस । (" " सं० १४११)
- ७८ काबेर बेसा घाये बाबार बेधा घामे । (" " सं० ११११)
' जाने को उन कमाने को मबगुन । (हि०क० हि०इ०डी० पृ० १७४)

४ जिनका बैंगला में हिन्दीकरण हुआ है—

बैंगला में कुछ प्रभाव ऐसे हैं जिनको हिन्दी का स्वल्प प्रभाव करी का प्रयत्न किया गया है। सम्भवतः यह हिन्दी लोकोक्तिओं के अनुकरण पर हुआ है। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं —

७९. घसटी घटी निम्बे बूत निम्बे
मठबाधा । बेरबा जैसे पुत्र लिये
कोर निम्बे कोठबाधा । (बा० प्र०, बा० प्र० सं० १७७)
८०. घामो बाघो बर वोमरा
कापा मीनो दुस्मत हामरा । (" ' सं० ११९)

- ८१ छठम बाह दिनेक बाह
बस बाबा मन्का बाह । (बी० प्र०, बी प्र० सं० ७८६)
- ८२ एस पार कि उस पार । (" " सं० १२०२)
- ८३ एक बाकीठे सावकर्ता करे
केबस बेगुम मर्ता । (" " सं० ११११)
- ८४ कत साय जामरे प्राण बुकलौ
होदि परब करने । (" " सं० १३२४)
- ८५ कसबी कीसकि बरु, भेइबा
किसका साता । (" " सं० १४७६)
- ८६ कामाये दुपिबासा, साये बुतिबासा । (" " सं० १७४०)
- ८७ कोम्पनी का माल बरिया में बात । (" " सं० २०७१)
- ८८ पोसा पा बासा । (" " सं० २६४८)
- ८९ तेरी मेरी बाबासी कबू साकेर
कायासी । (" " सं० १८६१)
- ९० *पहेसा कुत्ता, बोले होसय कुत्ता
पर बर बोले, तीसरा कुत्ता बर का
माई, बीबा कुत्ता पर बयाई । (" " सं० ६४६४)
- ९१ बा तेरा कुबरत बा तेरा सेम
सूँसू बर सपाये जमेसी का तैल । (" बी० घा० धमि० पू० २२११)
- घजब तेरी कुबरत घजब तेरा सेम
सूँसू बर के तिर में जमेसी का तैल । (हि० क०, हि० इ० बी०, पू० १४६)
- ९२ हापी पर हीवा बोड़ा पर बीग
बस्ति घामो बस्ति घामो बारेन
होस्तिग । (बी० प्र० बी० प्र० सं० ८६६९)
- ९३ हापरे घामड़ा, घांठि घार घामड़ा
कैसा फल घामड़ा । (" " सं० ८७७२)
- २ साबुदम—(क) सहजात साबुदम (ख) प्रभावगत साबुदम
हिन्दी और बँगला की बहुत लोकोक्तियाँ समान हैं, क्योंकि बहुत सोकौ
विषयों को दोनों भाषाओं को संस्कृत या हिन्दी भाषा मायाओं से उत्पत्तिकाएँ के

1 *One day a man is a guest, second day a burden third day a pest

रूप में प्राप्त हुई हैं। अतः समानता होना स्वानाविक है फिर भी कुछ सादृश्य प्रभाव के कारण भी यथा है। दोनों भाषाओं की लोकोक्तिओं सादृश्य के उदाहरण यहाँ दिये जा रहे हैं —

- ६४ धक्करे बाठाराम । (बाँ० प्र० बाँ० प्र० सं० २०)
 धक्कर करे ना आकरी पंखी करे
 ना काम बाछ मजूका कह पये
 छक्के बाठा राम ।
 धक्कर के बाठा राम । (हि० क० हि० इ० डी० पृ० ३६)
- ६५ धमावस्यार चाँब
 झू मरेर फूस । (बाँ० प्र०, बाँ० प्र० सं० १९४)
 ईब का चाँब । (, भी हूप्रसाह बापची)
 (हि० क० हि० घ० छा० पृ० ३६)
- ६६ धागून चाये धंपारा हूये । (बाँ० प्र० बाँ० प्र० सं० २९९)
 धाय चाये धंपारा हुने । (हि० क० , हि० घ० पृ० १३३)
- ६७ धागुने धी बाला । (बाँ० प्र० बाँ० प्र० , सं० २४४)
 धग्नि में धी बालमा । (हि० क० पृ० हि० घ० पृ० १३३)
- ६८ धपनार पाये कु बल मारना । (बाँ० प्र० बाँ० प्र० ")
 धपने पैरों पर कुस्हाड़ी मारना ।
- ६९ काना कु जो खोड़ा तिन धसठेर जोड़ा । (बाँ० प्र० बाँ० प्र० सं० १९५४)
 काना कु जो खोपरा हुरामबाषा
 खोपड़ा । (, " सं० १९३३)
 काना खोड़ा कु जो तिन चले ना उखो (, " सं० १९३६)
 काना खोड़ा (खोडा) एक गुन बाड़ा । (" " सं० १९३८)
 ही में सूरयास, ह्जार में काना
 सबा साब में देखा ठाना । (भी हूप्रसाह बापची)
- १०० कुकुरे पेट धी बरे ना । (बाँ० प्र० बाँ० प्र० सं० १६०२)
 कुत्ते को धी हजम नहीं होता ।
- १०१ साली कसठीर बाबना बड़ । (" सं० २२२७)
 बोधा बना बाये बना । (हि० क० हि० इ० डी० पृ० २२७)
- १०२ चापा कि जाने मबैर सोयाह । (बाँ० प्र० बाँ० प्र० सं० २६६१)
 बन्दर गया जाने धबरक का स्वाध । (हि० क० हि० घ० छा० , पृ० १३२)

- १०३ फिरकाल समान जायना । (बा० प्र०, बा० प्र० सं० ३०२६)
समय एकसा नहीं रहता ।
- १०४ बुरि ठे बुरि घारो बारि बुरि । (, " सं० ३०३८)
घोरी की बोरी घोर सीमाबोरी ।
- १०५ बोले भूलो देसोया । (" " सं० ३०६२)
घाँसों में भूल भौंकना ।
- १०६ छायाते भूत देखा । (बा० प्र०, बा० प्र० सं० ३२११)
छाया में भूत दिखाई देना ।
- १०७ बनेर रेया बनेर पिरीठ । (" " सं० ३४००)
घोड़े की प्रीठ जैसे बासू की प्रीठ ।
घस की प्रीति यथा फिर नहीं । (हि० क०, तुमसी रामायण,)
- १०८ तेस सो पोरबो ना रासाबो
नापबो ना । (बा० प्र० बा० प्र० सं० ३८७२)
न भी मन तैल होना न राधा
नाथेयी ।
- १०९ देयी कुकर मारहटो बील । (" " सं० ४२६२)
कड़वा बसे हुई की बाल घपनी
भी बाल भूल यथा ।
- ११० बेघेर कुकुर बिदेघेर ठाकुर । (, " सं० ४२६४)
बर का बोगी बोमड़ा घान बाँध
का सिद्ध ।
- १११ नाक नेह बेटी बेघर परे । (" " सं० ४२६६)
नाक तो है ना नविया पहनने
की साथ । (हि० क०, हि० क० डी० पू० ११२०)
- ११२ नामे घर्मबास घर्मर नाम नेई । (बा० प्र०, बा० प्र० सं० ४६१६)
घमा का नाम नैनमुख ।
घाँसों का घमा नाम नैनमुख ।
जलम का दुधिया नाम नैनमुख ।
- ११३ निमक रोय निमकहणमो । (" " सं० ४६७७)
नमक साकर नमकहणमी करमा ।
- ११४ मोन घाई वार, गुन नाई वार । (" " सं० ४६१६)
जिसका गाना उसी का गाना ।

११३. नून लैस सकड़ी (बाँ० प्र० बाँ० प्र० सं० १८८१)
 ठेस नून सकड़ी ।
 भूब मये राब रंय भूब मये सकड़ी
 ठीन भीब याब रही मोब ठेस सकड़ी ।
- ११६ लेंगटे बरेर बुरि । (" सं० ४०४६)
 मंवा के बर बोटी ।
- ११७ परेर पिठे बड़ मीठे । (" सं० ४६११)
 मुफ्त की सराब काबी को भी हुमास ।
 मुफ्त का बन्धन बिन्न मेरे नम्बन । (भी हरवत समी)
- ११८ पर भरसा करे से बले बूब मरे से । (" सं० ४८१८)
 बूबरे का क्या भरोसा ?
- ११९ पाँच बने से छाने भयवान से जाने । (" सं० ४९११)
 पंच परमेस्वर ।
- १२० पुरातन पापी । (" " सं० ५११३)
 पुराणा पापी ।
- १२१ पुरुष धीर स्त्री धामुन धीर भी । (" " सं० ५१५०)
 स्त्री धीर पुरुष का मेस धाय ।
 धीर भी का मेस है ।
- १२२ बपसे छुरी मुझे राम राम । (" " सं० ५३९३)
 मुझे मैं राम बनल मैं छुरी ।
- १२३ बड़ाई बूड़ी । (" " सं० ५४४८)
 बड़ी बूड़ी ।
- १२४ बला सहज कछ कठिन । (" " सं० ७२६४)
 कहुना धासान है करना कठिन है
- १२५ बैदिस नीकर दुसमन बराबर । (" " सं० ६०१२)
 बैदिस नीकर दुसमन बराबर । (हि० क० हि० इ जी० पृ० ६३५)
 मूरयसोन्तरबायल (हितोपदेश)
- १२६ बैरातेर धायमधिके छुंका । (बाँ० प्र० बाँ० प्र० सं० ६०३५)
 बिस्ती के भाष से छीका टूटना ।
- १२७ मठ देखे काला कासा (" " सं० ७००६)
 सबाह जैन बापेर घाला ।
 काला कासा सभी बाप का घाला ।

- १२८ राजा मारे दोहाई देव कारे । (बी० प्र० बी० प्र० सं० ७२६२)
 जबरबस्त मारे घोर रोने भी न दे ।
१२९. राजार रानी कानार कानी । (" " सं० ७२६३)
 रानी को राजा प्यारा
 कानी को काना प्यारा ।
१३०. राँड राँड सिन्धी तिन काघोर बेरी । (" " , सं० ७०४९)
 राँड राँड सिन्धी संभ्याली
 इनसे बचे तो सेने कासी ।
१३१. सब सुबुधेर एक दोयाम । (" " सं० ८१७७)
 सब सयाने एक मत ।
१३२. समय मनेक ह्य, प्रसमय केप्रो मा । (" , सं० ८१९२)
 मने मने के सब सापी कुरे का
 कोई नहीं ।
१३३. समुबे छेने मातेकि पिछने ह्यम
 बायकि । (" " सं० ८२६५)
 मुँह पर मुमानी पीठ पीछे गबानी । (हि० क०, हि० इ० बी० पृ० १११७)
१३४. मूद खोर घोर मर खोर समान । (बी० प्र० बी० प्र० सं० ८४०४)
 खोर खोर (मौतेरे) खेरे भाई ।
१३५. हाकिम छिरे त हुकम केरेना । (" " सं० ८२९१)
 हाकिम बना बायगा हुमन र्ह
 बायगा ।
१३६. हाठीर पिछने कुतुर मूले । (" " सं० ८७०८)
 हाथी के पीछे कुत्ते भौकना ।
१३७. हुतुरे चीन हुमरते बंगाल । (" " सं० ८११६)
 हुतर में चीन हुमरत में बंगाल । (हि० क० [हि० इ० बी० , —)
 लोकोक्ति-साहित्य मानव-जाति का सामूहिक उत्तरदायक है । इसी कारण
 विश्व की सम्प्रदाय भाषाओं की लोकोक्तियों में प्रचलित समानता है । किन्तु कभी
 कभी यह विचार का विषय बन जाता है कि प्रथम प्रमुख लोकोक्ति का उत्पन्न किस
 भाषा में हुआ था । भारतीय भाषाओं के साथ ही यह नियम लागू होता है । हिन्दी
 और बंगला की अनेक लोकोक्तियों में समानता है । अतः निश्चयपूर्वक यह कहना
 सरल नहीं है कि मूलतः यह लोकोक्ति हिन्दी की है अथवा बंगला की । क्योंकि
 लोकोक्ति साहित्य दोनों की परम्परागत वंशज है । हिन्दी और बंगला की लोको-
 क्तियों में केवल भाषा में ही समानता नहीं है अपितु भाषा भी बहुत लोकोक्तियों में

समान है। हिन्दी साहित्य-साहित्य का प्रभाव बंगला प्रवाद-साहित्य पर दृष्टि योज्य होता है। साधारणतः यह प्रभाव साहित्यिक भाषा में अधिक दृष्टि योज्य नहीं होता है। विशेषतः जनता या जनित भाषा (बोलचाल की भाषा) में अधिक है। इसका कारण हिन्दी का देशव्यापी प्रचार और प्रसार है। साहित्यिक रूप में हिन्दी समस्त भारत और पाकिस्तान में प्रचलित नहीं है, किन्तु बोलचाल के रूप में इसका प्रसार काश्मीर से कुमायी घाटी तक व पेशावर से ब्रह्म देश की पश्चिमी सीमा तक है।

अतः हिन्दी या उर्दू के कारण अनेक हिन्दी लोकहित और मुहाबरे भारत की अन्य भाषाओं में प्राप्त होते हैं। बंगला में भी बोलचाल की हिन्दी या उर्दू के कारण अनेक लोकहितों और मुहाबरों का समावेश हुआ है।

३ हिन्दी-गद्यावतरण और पद्यवतरण

(१) हिन्दी-गद्यावतरण

बंगला कथा-साहित्य (उपन्यासों और कहानियों) में वहीं-कहीं टूटी-फूटी हिन्दी के गद्यावतरण मिलते हैं। बंगाल के सामाजिक उपन्यासों में यह प्रवृत्ति अधिक स्पष्ट है। इसका कारण यह है कि बंगला की जनसंख्या का निर्माल अनेक तर्कों से हुआ है। हिन्दीभाषी लोगों की संख्या भी उसमें बहुत है। विशेषकर बंगाल के व्यापारिक और औद्योगिक केन्द्रों में भारत के सभी राज्यों के निवासी रहते हैं। फसकता केवल बंगलाभाषी नगर ही नहीं है, अन्य भाषाओं का भी वहाँ बोल बाला है।

अब बंगला-लेखक किसी उपार्थ सामाजिक व्यवस्था का चित्र चित्रित करते हैं तब अवचेतन व्यवस्था में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप में अन्य भाषाभाषी पात्र भी उपस्थित हो जाते हैं। तब पात्रामुक्त भाषा का प्रयोग होता ही है। बंगला उपन्यासों में अंग्रेजी के साथ-साथ पत्र-पत्र हिन्दी की छटा भी दिखाई देने लगती है। क्या बंगाली बाङ्ग, क्या दरबान मीकर चाकर, सिपाही और निम्न वर्ग के लोग कभी-कभी उस भाषा का प्रयोग करते हैं जिसे हम बंगला मिश्रित हिन्दी या बंगाली हिन्दी कह सकते हैं।

बंगला के कुछ प्रसिद्ध लेखकों (उपन्यास लेखकों तथा कहानीकारों) के संघों से उदाहरणस्वरूप कुछ पंक्तियाँ यहाँ उद्धृत की गयीं हैं —

१ श्री अन्नदासकर राम—श्री अन्नदासकर राम की 'चतुर्दश' नामक पुस्तक में कुछ हिन्दी-प्रयोग इस प्रकार हैं —

पैसा—'बोर से बीहव बीहव-बीहव' (चतुर्दश पृ० २)

'क्रोड़ है गाड़ी बीतायो' (" " पृ० १)

रेवा— 'आइबर की बोसाओ, सामान स जायेवा (बनुरासि, प ०६)

मोगिराम मोघपुरिया— 'हुजुर कमकता घहर में' (बनुरासि पृ० १२)
'खेसानकार, हमाय ता बिसकुम मास बन गया
हामा के देठे पूछत ।

२ श्री केदारनाथ बघोपाध्याय— श्री केदारनाथ बघोपाध्याय के 'भाहुड़ी
मघाय' नामक उपन्यास में कुछ हिन्दी गद्य के घरा हैं ।

भायम देड़ भाइम बच्छिन में (पृष्ठ ५)

हिन्दी बंगला मिश्रित भाषा का नमूना इस प्रकार है —

'बाँयाली बाँयासी हामार बड़ा प्रिय घासे (घाछे) एतना मक्ति काइ जातेर
नेह विष विष में घाओ । (पृष्ठ ८६)

३ श्री गोपालचन्द्र राय— श्री गोपालचन्द्र राय की 'घरठभर्रेर बठकी
पस्य' में कुछ ये घबतरण हैं :—

'कार्य नैह हुजुर । कमुर माफ किबिये । तब भागे घामि । (पृष्ठ १२५)

४ श्री गोपाल हासदार— श्री गोपाल हासदार की पुस्तक 'भार एक दिन'
में नमूना इस भाँति है —

कि ठिक नैह है, कामरेड कुलकुन—

पर काह्रा ? माँहा मेरा काम जहा मेरा घाम । (पृष्ठ १४७)

'मजदूर की कोइ मुमुक नैहि हय'—बिना एक मुमुक —हमारा साबियट
देघ—घार माँहा मेरा काम बहो मेरा घाम । हाम बांगाल का मजदूर है—

इजवीका का फिसाम यह लाहीर नैहि । (पृष्ठ १६०)

५ श्री लाराचकर बघोपाध्याय— श्री लाराचकर बघोपाध्याय में यह
प्रकृति अधिक है । उन्होंने अपने एक उपन्यास का नाम ही 'बिस्ती का साइड' रखा
है । उनके 'मधियान' नामक उपन्यास में कुछ हिन्दी गद्यांश इस प्रकार हैं —

'घाछड़ा में कैंठ नैहि पिया रे ? तबियत बाराप हुया ।' (पृ० ४१)

'घामका घर कही है?' (पृष्ठ ४२)

'बरफ का माफिक हिम हय । घाँ । घारे तब कैंठ नैहि पिया ? ए घो
बशाओ । क्या ? इस बरफ पड़ रहा ? मा तिला पनि ? क्यों ? गुम
घमस्ता होओये । जसू काँहा क । (पृष्ठ ४२)

'घाँपुस बाँड़िये पाड़ीवान टोके देखिये से बसले मोहू हामि बारण करसाम
बके बके बारण करसाम माठके भेतर मत जाओ, गाड़ी पाड़ा राओ मोटर के

पीसे। मोटर जमा जायगा तो पाड़ी जासाओ। नेहि गुना हामारा बाव। बोसा कि बुला होया घोर उरुका बाव देखेन तो देखे तो—माठेर अठेर केमन मबा करे याव। देखन तो फिल हाम काना किया। घाप हन दिया डर के मारे मरु मार दिया साफ। बास उरुट गिया बाड़ी। घाव घाप बोसिये तो उरुका कसूर है कि बेहि।” (पृष्ठ ४६)

× × ×

केस हुआ? घोर चार घाबरी के बेस होयेया। सेकेन केस में बाप के बेसा हो गया। पाँव में पठित हुआ। हाम बिबा घाड़ाह दो खपमा उरुके बाप के। घो बेटि को दिया हामारा घाव। हामारा बाड़ी में निके काम करके।” (पृष्ठ ५०)

× × ×

ह माड़ी किसका है? घाप तो झाइवर हैं—लेकिन पाड़ी हामारा है।—टीकसी है, हाँ-हाँ! बाड़ा के मोटर पाड़ी हाससे कोकटि जानता है। सेकेन इपार काँहा जायगा टीकसी?

—बाड़ा जाता है, बिरबरवा पाँव जानता घाप?

—हाँ हाँ! बोहि हामारा पाँव।

—हाँ हाँ! गुनि मेधि कि खनि सोयेर एक सेइका इयाम बाजार में टीकसी किया है? हामारा नाम घाप नेहि गुना? मुखनयम साहू अहर इयामपुर में हामारा पड़ी। वामाकुन बावस के कारखार। बिरबरवा में हामारा दिन चार खरिहार खाठक है। (पृष्ठ ५१)

× × ×

श्री ठाराचकर बंधोपाय्याय के 'बाबी देवता' नामक उपन्यास में श्री निम्न लिखित पद्यांश हैं —

पंजाबी बनिस घोड़ा देखने घाधिपाखि हामसोक। बाबू हामारा पाध एक घोड़ा मिया। बहुत रोज हुआ घो घोड़ा मानुम होठा बातेम हो गया। नया बहुत धन्या घोड़ा हामारे पाध। (पृष्ठ ७१)

× × ×

“बहुत रोज के बाद साठ बरिय हो गया। मासिक बाबू हुनुर हामरा काँहा है। सेसाम तो मेजिये। रमजान देख घाया है। घो घोड़ा हामारा कियर है।” (पृष्ठ ७२)

× × ×

“घोहि कासा बोड़ाठो हाम से घाये थे। हामारा मासिकबाबा का काँहा देखमान घाव एहि हाँ हाँ हाम बहुत छोटे देवा पा। सेसाम हामारा हुनुर मासिक हामारा—कसूर तो माफ होय अनाब हाम घापको पहमेह नेइ पछाना। (पृष्ठ ७२)

१ श्री नारायण संतोषाध्याय—श्री नारायण संतोषाध्याय के 'मङ्ग-मुक्त' से कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं —

'ठारिये ठारिये बाबू हाम बेससा बैठा उसको (पृष्ठ १०३)

इनकी शिवाबिधि में कुछ उदाहरण इस तरह हैं —

'महारमा गौरी की बय' (पृष्ठ ४०)

शिः शिः एसा बंवास'

'एसा बड़ा उठान मे एसा बंवास । (पृ० ७१)

'भंडा ऊँचा रहे हयाय । (पृ० ९१)

'मेरे छोने कि हिन्दुस्तान

तू हामारा शिम् का रोसनी, तू हामारा भान । (पृ० ९४)

७ श्री बंकिमचन्द्र चटोपाध्याय—श्री बंकिमचन्द्र चटोपाध्याय के 'राजसिंह'

में हिन्दी के पद्यावतरण इस प्रकार हैं—

सा ! बाबा भान ! सा सा मैघो ! बैसा काबाब कपनपर से माने के बरत एक रोब बाना बा घोर कमी मैहिन ? बसा ।

'भाम्मा बी । कपनपर का यो केससा घापू करमायेये बोली बी ।

'बुपू ! बह बात् मुहू में मत बापी बापूजान् । मैयने क्रिया बोली बी ? सेबास में बोली बी घायेद् ।'

'बुपू रहैये काहे मानी ? मैसा क्रिया बाठ होगी ?

मा—बुपू के का माफिक बाठ मैहिन बापूजान् ।

ऐसे—उब रहने दिजिये ।

मा—घीर कुछ मैहिन कपनपर वाली कुमारीन कि बाठ ।

ऐसे—बह कुमारीन बड़ा खूबसूरत ? येह बैसा-पुपिरा बाठ ?

मा—सो मैहिन—बाबी कि बड़ा बेमाय । इया मात्सा ! मैयने क्रिया बीस बुका ।

ऐसे—काहा कपनपर मङ्क, काहा उँहाका राजकुमारीन् कि बेमायये बात् घापूका बीसनाइ क्रिया जरूर—हामारा गुननाइ क्रिया जरूर ?

मा—सो बेमाय बापूजान् । लौगडी मै बापूगाइ घासम् को मैहिन मान्ती ।

ऐसे—बापूगाइ घासम् को पानि दिर होगी ?

मा—पानि—बापूजान् ! उससे भी जरूर कुछ ।

ऐसे—उससे भी जरूर ! क्रिया हो सकता ? बापूगाइ घासम् को घीर मार सकता नाइ ।

मा—उससे भी जरूर !

ऐसे—मार है भी जरूर ?

मा—बापूबान—धीर पुत्रिये मठ—मेयने उसकी निमक खाइन् ।

झेले—निमक खाने हो ! किछतरे मा ?

मा—घासखरफि बिन् ?

झेले—काहे माबी ?

मा—उसकी पुताह के बाठ किछिका पास बोसना मनोसेब नेहिन एधुमिये ।

झेले—घासखा बाठ है । मुझको एकठो घासखरफि बखुधिस फरमाइये ।

मा—काहे रे बेटा ?

झेले—नेहिन् त मुझको बोस बिबिये बाए किया है ?

मा—बाए धीर किया बाबसाह का उसबीर-ठोप । ठोप ! बाएठो धाम्ही निकसी बी ।

झेले—उसबीर माँप डाला ?

मा—धारे बेटा साबु से भाँग डाला । ठोप । मेयने निमकहारामी कर चुका ।

झेले—निमकहारामी किया है इधमे ठोम मा मेवने बेटा ! हामरा बोसुनी से निमकहारामी किया है ?

मा—देखिओ बापूबान, किछइको बखिओ मठ ।

झेले—घाप खैतेरजामा रहिये—फिस्इका पास नेहिन बोसोते ।

(राबखिह पृ १९, १७)

×

×

×

“हमएव बेवम साहेबा एस् बकठ कुच मजेने होवैनी” (पृ० २१)

“बुप एव बेवमिब । मेरे नाम हजरत इमलि बेवम ।

निर्मल—बानूते नेहिन ? बह हामारि बेटा नाम्ठी है । देख घायाकी सोने का टिन कसब यो हाउरे पर बसुप बेटा हय बसु पर देव-सन्निधा बैठी है । (पृ० १४८)

बकिम बानू के ‘बगरोबर’ में भी कुछ हिन्दी का नमूना है—

“हम घाया है, किया बोलता है ? (बगरोबर, पृ १५)

“पाकड़ो । पाकड़ो हामारा बिबी ।”

“पाकड़ो । पाकड़ो फस्टर साहाब इनाम देवा” (पृ० ७०)

“दो एक बात हुआ”

“दो बात हुआ दो बात छोड़ कर तीन बात हुआ ।”

“बानू साहाब इये बेवमिब घासमि को बिबा बिबिये । (पृ ५६)

बकिम बानू की ‘देवी बीपुरानी’ में भी कुछ नमूना है—

“कैउ बबजात ? ठोम् गोइन्वा नेहि ? (देवी बीपुरानी पृ० १२४)

बकिम बानू की ‘खीठाराम’ पुस्तक में भी कुछ हिन्दी के उदाहरण मिलते हैं—

“बग्य रायबी, बग्य राम महासय । बय काबि साहेब का ।”

‘तोम कौन हो रे ? (पृ० १६)

‘तोम काहे हिमा बँटू के तोप छोड़ते हो ?

‘घारे पुसलमान घाने से हम सोव घामि होंकाय देते—तोम काहेको बिक क्रिमे हो ? बल हुजुर में याने होमा ।’ (पृ० ७६)

‘कोठवाल साहेब कि हुकुम से तोम्को ठम्का पाघ से जारेंगे ।’

‘हाँ हामलोग ठ इस्को पहचान्ते हैं । येत हमारा गोलन्द्याज पिमारी नास हैं—ये कौहा से घाम ?

‘ये घारमि ठ मन्घा बोलवा है । मो तोम्का पाघ रहेवा वसिको से जाने को हुकुम है । एइ मुरवार तोम्का पाघ है—जसको भातपत् से याने होमा ।

‘जय महाराजाधिराजि जय ।’

‘जय श्री सीताराम राय राजा बाहादुर कि जय ।’

‘जय मन्मीनारायण जी कि जय ।’

‘कापड़ वठार ठेरि मोस्त टुकड़ा टुकड़ करके हाम हुकान में बखेंगे ।

(पृ० १११)

८. बलकूल (बलाई चाँद मुसोपाप्माय)

बलाई चाँद मुसोपाप्माय के ‘अंगम’ के अतुपें-अंजम खण्ड में हिन्दी के पद्यांश हैं —

‘हड़बड़ में ये हुजुर, मुख मि लया था, हासबाइ को कहा—अस्ति करो भाई । धो भुजठै बसा । मैं घाते बसे । कुछ देर में खेयाल पड़ाइ तो मन्ति काम कर रहे हैं, इ घाला तो काष्णा पुड़ि लिता रहा हूँ । खेयाल होने का साथ हि खाना बंद कर दिया—मगर तबनि मोचना पड़ा काशतर बाबू ।

‘बया हुमा ’

‘कष्णा घाटो पेटमें ससक दिया ।’

‘ससक दिया ?

‘ससक दिया । वो रोज बस्त नहि जतरा बाइ तरु मि गायेस टयम्-ठोस । एक डाक्टर को बोलयें । धो घाकर एक मुइ दिहिन, एक पुड़िया दिहिन । पाँच रुपया फिस लेहिन । नैहि जतरा । दूसरा एक डाक्टर बोलयें । इस डाक्टर के दो मुइ दिहिन । एक रिगि दाबाइ बिहिन फिस लिहिन घाठ रविया । कुछ नैहि हुमा । पेट नैवि पूना दिहिस । मैं मार देरि नैहि किया ठकाऊ घट्टर बसे गये । डाक्टर चौपुरी को बोलयें । डाक्टर चौपुरी मन्घाइ तरेसे देयिन पेट में यत्तर बँठाइन बाये फिला लप्टाके प्रिसार देयिन । पैसाब जायिन दिहिन—पाँच रुपया फिस देवा पड़ा पेसाब जायिन का बास्ते । देस मुमकर डाक्टर चौपुरी बहिन देगो—भाई

इसको वो तरफा बकसन है मेरा पास एक बड़ा, एक छोटा । बड़ा बकसन देने से बार घस्टों का धन्वर पाखाना छतर आवेगा । छोटों में वो रोक लगेगा । बड़ बकसन का क्रिमल बोला घाठ रुपैया छोटे का पाँच रुपया अब तुमहारा क्या खाइस कहो ? म्ये कहा बड़ बकसन बीबिये हुनुर, जान या रहा ह्ये । इहा बड़ा एक बकसन बूठक में बाँठ दिहिन । और मिसरिफे सायेक एक बावा ६ चाम्मच सेके परम पानि में धोर के पिसा बिहिन । बहर के सायेक तिया । मयर हो गिया ? एकदम साफ—बोहि बगटे में ।

“बैसक ?

‘भाब हुनुर मेरा बार पर तछरिफ साइये । काहे ?

‘मेरा जानाना को एक बकसन देना पड़ेगा ?”

‘क्या हुमा सनको ?

‘ओ अब बकति फिरति है तब ती ठिक हय कोई तकसिक नहि । मगर जबहि ओ बाब्बे को मोह में सेकर ईठि तब तक सिचारहि तब तकती ठिक रहि मगर जबहि हुम पिलानी को मिये सामनेह मुकि कब—

“एक बन्टो बाब घाभोयेगे ।”

एकठी कड़ा बकसन देने पड़ेगा ।”

“घाब्बा ।”

‘बात तब पाक्का ?”

“पाक्का ।

—अंनम बसुर्ष मो पंचम सख पू० १७७-१७८ ।

६ सतीनाथ मातुड़ी—सतीनाथ मातुड़ी की पुस्तक ‘बावरी’ में भी कुछ हिन्दी की छटा यत्र-तत्र बिसाई पड़ती है —

‘और ऊँचा और भी ऊँचा बकरत पड़े तो घासमान तक मिड़ा हो”

(पृष्ठ ३)

“मकड़ी मिलेया ओ सब महाराष्ट्र में किजिसो इहाँ उसब नहीं खजेया राष्ट्रभाया बोलने नही घाठा है । पूना सहर को पूंके बोलता है । घाउर हिन्दी में बाउ बोलने का सतक है ।”

(पृष्ठ ४४)

१ धरतचन्द्र बट्टोपाध्याय—धरतचन्द्र बट्टोपाध्याय की ‘पपेर बाबी मामक पुस्तक में एक दो बपह हिन्दी की पंक्तिवाँ उपलब्ध होती हैं —

‘कैया सिगबी खबर मानो ?

“भापको कहि जाना दुनिया में कोई रोक सकटा ।” (पृ० २६७)

११ धी सिबराम बकवर्ती—धी सिबराम बकवर्ती की पुस्तके यत्रविवाह

बटिख' में 'हिन्दी में बात सामो' एक प्रथम्य ही सिखा गया है —

'नेहि नेहि—आमरा नेहि—हाम् । रास्ता ठो महि मिसती । घामि एइ कया
बसुधि ये हाम् को गयी ।' (पृ० ६०)

'बैंगली लोक कियतर से बैंगला बोसति सिखना बहुत मुदिम है ।'
(पृ० ६०)

'हिन्दी में बातसामो । फिन् बोसो ।'
(पृ० ६१)

'धीर तुम वहाँ बैठकर, हिमां भा याघो । इधर भाके बैठो ।

'भाहा । नमस्ते क्या अपु मजेमें है तो । तबियत सुघ है ।

(पृ० ६८)

'हाँ ! मेटर सिनेमा को पाठ पहलेसे देखा घान्को पाठक मे हाम् फाँस
यई ।'

'भाषक में हाम् फाँस यह—उहि रोब से मेरा जिम्हगि आपहिको खरण में
कुटा दिया है ।' (पृ० १०१)

इनके पत्रिकत भी प्यारीबत्र मित्र के 'आतासेर बरेर' दुलाल भी परमुरांम की 'कज्जसी' भी प्रभातकुमार मुखोपाध्याय की कहानियों भी पाँचकड़ी चटोपाध्याय की 'पंचपल्लव', भी प्रेमेन्द्र मित्र के 'कबागुच्छ', भी किमूतिमूलण मुखोपाध्याय की रचनाओं धीर भी सरोजकुमार राय जीवरी के 'गू कल' आदि में हिन्दी के इस प्रकार के संस उपलब्ध होते हैं । उहूँ के भी इस प्रकार के कुछ संस बेमसा पुस्तकों में दृष्टिगोचर होते हैं ?^१

बैंगला भाटकों में भी यह प्रवृत्ति बिचार्ई पकती है । कुछ पंक्तियों से प्रकाश
आसना आबस्यक है —

१ भी बीनबन्धु मित्र—भी बीनबन्धु मित्र की 'नीस-दपण' में इस तरह
के कुछ उदाहरण हैं —

'ठोम मय मय करके हाम्को डेरु किया नीस कर साहेब का कोई काम में
कर है ठोमण को मुनासिब ना होय काम छोड़ देयो ।' (पृ० १०१)

१ देखिये—'बहुत मेहरबानि है आपकि । अद् देखिये डाक्टर साब् । आप मसिब का जिकर करते ये खोश उस बातको मन्त्रूर कर रखा है न मामुम कहते । छपर, आप तो जससे में तस्फिरिफ् भायेंगे ।—' अजी । हमारा जिकरका जिकर छोड़ बिजिये जा ताब् । हाम्ठ बिलकुल ना-भायेक है धीर आपके आपिन् हैं । आप बुजुरग है आपका मुह से जो बात निकलेगि उसि बात कायेम हो जायगि । जी हाँ, जससे में बकर हाजिर रहूँगा—'

भी सीतानाथ—'काम्य विनोद' के प्रहसन 'खामाबाबू' से एक जवाहरण दिया जाता है —

"बोलमास मत करो, पाड़ी छोड़ने का टाइन हो गया भावो हिर्बा से ।"
(पृ० ४३)

३ भी अपरेषणत्र मुञ्जीपाय्यास—इसके 'भुमदृष्टि नाटक में भी कुछ पंक्तिवाँ हैं —

"बाबू बोसे एकठो घाघोरल घासे उसको बास्ते गाड़ी बोलाने । काँहा घाडरल हिर्बा एक घाडरल पड़ा है । कोन ठिकाने में पाड़ी बोलता होने ? घोर घीन्ने मेहि मिसला ।"
(पृ० ८)

बिच हिन्दी में प्रवेश बोलते से उसका प्रमाण भी बंगला के महाम् साहित्यकार श्री मार्केस मधुसूदन बस के 'अमिष्ठा' नाटक में मिसला है —

छार—हासी ! अचकीवार—एक घासभी उडार बीड़के मिया मेह ?

बीड़ीवार—मेह झाव हामतो कुछ मेहि देखा ।

छार—घालबत् मिया । हाम देका टोम् बन्दी बरड़ के बाघो सप्टारक देको बाघो बस्वी बाघो इय सुभर ।

बीड़ीवार—कोन हेव रे खाड़ा रेह ।

छार—इबर—इ यू फूल—

बीड़ी०—हाँ घाव इबर !

(घासा बीड़ा तोमारा बास्ते बीड़ के हामारा जान गया ।)

छार—घाइयय टोम् बीड़ा हैय । है इबर मे-मे-मे—पुपराघो इह यू निगर देक साघो टोमारा देवमें किवा हैय ।

बीड़ी०—खाड़ा रघो घासा ।

छार—इह देवमें घीर किया हेम देके या । देस्का खोरि किया ? उसको ठाने में से बला । सो मेह होया टोम् बाने में बलो—किया ? टोम बोये मेह घालबट्ट बाने होया ।

बीड़ी०—बन्ने बाने में बल ।

छार—किया ? टोम मेह मानटो । हाम् देकटो उसका कुछ कसूर मेह, बस्को छोड़ देयो ।

बीड़ी०—टोम् हामको सी कुछ दिवा मेहि—घाब्य बाघो बसा बाघो ।

बीड़ी०—हाँ हाँ ए बाड़ी में—घो बड़ा मवाकि बायुपा हैय ।

छार—देको बीड़ीवार रोपेया का बाट !

बीड़ी०—ओ हुकुम—साबिगु ।

छार—घावि बलो ।

वास्तव में यह एक प्रकार की विभिन्न हिन्दी है जो हिन्दी व्याकरण की दृष्टि से प्रभुत्व है। इसमें निम्न—बचन का कोई ज्ञान नहीं है। इस प्रकार की हिन्दी पाठक के लिए हास्यास्पद है। फिर भी बंगला लेखकों ने हिन्दी की मध्य शैली के अनुकरण का सफल प्रयत्न किया है और यह प्रवृत्ति अभिकांक्ष बंगला लेखकों में पाई जाती है। वार्तालाप के प्रसंग में कहानियों उपन्यासों एवं नाटकों में इस भाषा का प्रयोग हुआ है।

इस प्रकार की बोसभाषा की हिन्दी बयाली-संस्कृति बंगला भाषा और साहित्य का अभिन्न अंग मानी जा सकती है। क्योंकि हिन्दी के अनेक रूप हैं। हिन्दी प्रदेश में उसका कुछ और रूप है अहिन्दी क्षेत्रों में भी कोई न कोई उसका रूप है। इसी कारण भारत की अग्य प्रांतीय भाषाओं के साथ हिन्दी का भी एक रूप होता है। यह प्रदेश विशेष की जनता के उच्चारण पर निर्भर करता है जिस प्रकार अंग्रेजी का रूप सगर के अग्य देशों में कुछ-कुछ बदला हुआ है, चीन में यह 'पिबगिन हगसिस' और अमेरिका में 'अमेरिकन हगसिस' और भारत में 'बाबू हगसिस' कहलाती है। उसी तरह हिन्दी बोसभाषा के रूप में अखिल भारतीय स्तर पर प्राप्त होती है। पंजाब में उसका कुछ और रूप, गुजरात में कुछ और ही रूप एवं संजाल में भी हिन्दी का उपयुक्त रूप उपलब्ध होता है।

(२) हिन्दी पद्यावतरण

हिन्दी पदों का समावेश बंगला में परम्परा से ही होता आया है। यह दो रूपों में हुआ है। एक तो स्वयं बंगला कवियों ने हिन्दी पदों की रचना की है। दूसरे हिन्दी कवियों के पदों का मत बंगला में हो गया है। प्राचिनिक कास में भी गद्य-पद्य दोनों साहित्यिक विधाओं में हिन्दी पद्यावतरणों का सम्मिश्रण हुआ है। कुछ पद तो मापीय अनुकरण पर कुछ हिन्दी संगीत के आधार पर लिखे गये हैं एवं कुछ पद दृष्टान्त रूप में उद्धृत हुए हैं। हिन्दी अन्त साहित्य और मन्त साहित्य में से ही अधिक हिन्दी पद बंगला में गृहीत हैं। उदाहरणस्वरूप कुछ पदों का यहाँ देना आवश्यक है।

१ बंगाली कवियों द्वारा विरचित हिन्दी पद—

बंकिम बाबू के कुछ पद निम्न प्रकार हैं :—

गोरी समझे महामार,

पियाते समझे कालो।

सबो समझे बीरबासा ॥

पंगा पञ्जैन दामु बटपर

परणि बँटत बाबुकी फल में।

पवन होयत अपुन सखा
बीर मजत मुबती मन में ॥

(राजसिंह पृ० १८)

×

×

×

धरम् भरमसे पियारी,
सोम रत बसीपारी
फुरत लीचन से ।
न समझे बोपकुमारी,
देहिन् बँठत पुरारी
बिहारत राह तुमारि ॥

(राजसिंह पृ० ७२)

सोने की पिबिरा सोने की बिबिया
सोने कि बिबिर पयैर में
सोने की खाना सोने कि खाना
महि केडं सेरेक खयेर में ॥

(राजसिंह पृ० १२६)

×

×

×

की द्विजेन्द्रनाम राय ने भी एक-दो हिन्दी पदों की रचना की है। वे इस

प्रकार हैं —

पिरि गोबर्धन बोधुन बारि,
यमुना तीर निकुंज बिहारी
श्याम सुठाम किशोर बिभोधिम
बिस- विमोहन कारी ।
पीताम्बर धनपुष्प बिभूतन
बालन बज्रिबंत, पुरारी बारी,
यिसि बरते मोहित बुन्धानन
उल्लसत यमुना बारि ।
नूपुर धिबित नृत्य विमोहन
कपट बलत अनुरासी
प्रेम निमीलित नयन-बिसोल
कदम्ब बने यतमासी ।
नम्रकि नम्रन माधि यशोबा
नयनांगन बज्रबाल पियारी,

खिसि सायी पि कुल छोड़ि राधा
 धाकुल सब ब्रज नारी ।
 कस बिनाशक मयुरापासि जय
 निधिल - मरुत बन घरण
 कुम्भन पीड़क सखन पासक
 सुर नर बन्धित करण ।
 जय नारायण धीरा बनारन
 जय परमेश्वर, भव भय हारी
 जय कश्यप मधु सूयन जय
 गोबिन्द मुकुन्द मुरारि ।

(द्विजैश्वरनाथ प्रंयावली पृ० १३३)

तथा—

घारे घारे सेइया इसमें केया काम ।
 इसि जाड़ा में मुझको कुछ देना इनाम ।
 हातमे दे बुड़ि पाउर काममे दे ब्रुस
 यनाम दे हासति पाउर नारुके दे फूल
 मेरि जान हो आययि बड़ि मसुपुल
 बड़ि पियार सोमको करेयो हाम् ।

(द्विजैश्वरनाथ प्रंयावली पृ० १८४)

इस प्रकार की हिन्दी में पद्य रचना की प्रवृत्ति धर्म्य बंयासी साहित्यकारों^१ और विशेषकर बैंगसा संगीतकारों^२ में बिलार्ई पड़ती है ।

२ हिन्दी कवियों के उद्भव त पर—

विषय में बिस्तार भय से हिन्दी कवियों के पदों का उदाहरण देना आवश्यक हो सकता है । यथा कृत्रिम परिचय देना ही पर्याप्त है । बैंगसा के अनेक ग्रंथों में हिन्दी कवियों के पदों को उद्भव त किया गया है । श्री दितिमोहन सेन के ग्रंथों

१ श्री धर्मनीन्द्रनाथ ठाकुर का एक गीत इस प्रकार है —

घाड् बाड़ि बाप् बाड़ि बुस बुल बसुमेवार बाड़ि
 कुसुपावका एठ काँबवा घोहि बाड़ि सबसे धावदा ।

(बाकीर गान-हालका हासिर मस्य पृ० २)

२ दैतिये—रूपपाँव परी के हिन्दी गीत बाँगासीर गान पृ० ४१३ ।

महापद्य बिजयचन्द्र महताब पृ० ४८७ गिरीशचन्द्र घोष पृ० १८९,

सारेगदनाथ ठाकुर, पृ० ९०९, बिहारीनाथ चटोपाध्याय पृ० १०१८ ।

भी छद्मीनाथ भाबुड़ी के 'कोड़ाई चरितमानस' की बेबेसदास के रजबाड़ा' और 'राजसी' भाषि में हिन्दी पदों को ग्रहीत किया गया है।

हिन्दी सत और मन्त-साहित्य का व्यापक प्रभाव बंगाल में रहा है। कबीर तुलसी और मीरा पर अनेक स्वतंत्र ग्रंथ लिखे गये हैं। श्री संकरनाथ राय के भारतेर साधक' अध्यापक उपेन्द्रकुमारदास के 'मन्त कबीर' भाषि ग्रंथों में भी हिन्दी पदों का समावेश किया गया है। तुलसीदास के ग्रंथों का केवल अनुबाध ही नहीं हुआ है, अपितु उनके साहित्य से बंगला साहित्यकारों को प्रेरणा भी मिली है। श्री हेमचन्द्र बंधोपाध्याय ने कबीर और तुलसी के पदों का अनुबाध कर अपने साहित्य का ग्रंथ बनाया है^१। मीरा के गीत को बंगाल के घर घर में गाये जाते हैं। श्री धनामनाथ बसु ने मीरा के पदों का बंगला में अनुबाध किया है।

सामान्यतः हिन्दी सत और मन्त साहित्य का प्रभाव अखिल भारत में है। सभी भाषाओं के साहित्य उनके प्रभाव से नहीं बच सके हैं।

बंगला संगीत के विकास में हिन्दी वैष्णव साहित्य का विशेष योगदान है। यह हिन्दी संगीत का बंगला संगीत के ऊपर प्रभाव के प्रकरण में भागे की पंक्तियों में देखा जा सकता है^२।

४ हिन्दी संगीत का बंगाली संगीत पर प्रभाव

हिन्दी संगीत का बंगला संगीत पर प्रभाव के सम्बन्ध में विद्वानों में कुछ मतभेद हो सकता है। कुछ महात्मानुभाब इसका विषय से प्रत्यक्ष संबंध मानने पर आपत्ति कर सकते हैं किन्तु विद्वानों ने साहित्य और संगीत की मूलमूल एकता प्रतिपादित की है। क्योंकि साहित्य अथवा ब्रह्म की और संगीत नावब्रह्म की उपासना के प्रतीक हैं।

यद्यपि साहित्य और संगीत में कृत्रिम विभिनता होते हुए भी दोनों का एक धार्मिकानुभूति ही है। इस सम्बन्ध में साहित्य और संगीत की एकता का प्रतिपादन करने वाले अनेक विद्वानों के मत पठनीय हैं।

संस्कृत में साहित्य और संगीत को सरस्वती के दो कुशों से उपमा दी गई है^३। सरस्वती को बीखापुस्तकधारिणी भी कहा गया है। बीखा संगीत और पुस्तक

१ देखिये—कोड़ाई चरितमानस में तुलसीदास के पदों और पर्वान्त हिन्दी शब्दावली का समावेश हुआ है।

२ हेमचन्द्र बंधोपाध्याय की द्वितीय अथवा बोद्धावली पृ० ११६ १२४।

३ बौधायनीय मान (हिन्दी भाग) पृष्ठ २२१ १००२।

४ संगीतशास्त्रि साहित्य सरस्वत्या कुचययम्।

साहित्य की परिभाषक मानी जा सकती है। मूठहरि महाराज साहित्य और संगीत कलाविहीन मनुष्य को साक्षात् बिना सीम-सूँघ वाले पशु के समान मानते हैं^१। श्री भोलीसहोर का कथन है 'संगीत और साहित्य दोनों के इतिहास एक-दूसरे से इतने मुँके हुए हैं कि उनका पृथक्कीकरण करना मानो जसा की आत्मा को बिलट करना है'^२। श्री कार्लसहम संगीत और काव्य की एकता प्रदर्शित करते हुए लिखते हैं 'काव्य संगीतमय विचार है'^३। श्री कॉपरिज भी इसी मत की पुष्टि करते हैं^४। श्री इरगार प्रज्ञानपो इसको सीदर्य की संगीतमय मण्टि बहते हैं^५। एन साइकलोपीडिया ब्रिटानिका में काव्य को मानव मस्तिष्क का भावमय और संगीतमय (वासमय) भाषा में स्पून और कलात्मक कथन कहा गया है^६। एनसाइकलोपीडिया एमेरिकाना में भी इस मत को इसी प्रकार प्रामिष्यकत किया गया है^७। डा० मुनाब टय जी के शब्दों में 'संगीत साकार प्रज्ञान-काव्य है काव्य साधक संगीत है'^८। श्री नाटयण जीपरी का विचार है वास्तव में संगीत और साहित्य में मूलमय कोई पार्यवय नहीं है^९। इस सम्बन्ध में जयनारायण श्यास का मत भी बृष्टम्य है—'संगीत और साहित्य दो विभिन्न वस्तुएँ हैं। निस्सन्देह एक पर दूसरे का प्रभाव है। प्रत्येक काव्य में संगीत नहीं हो सकता। बँधे ही प्रत्येक संगीत साहित्य नहीं बन सकता।

१ साहित्य संगीत कलाविहीन ।

साक्षात् पशु पुरुष विपाण हीन ॥

२ भारतीय संगीत का इतिहास पृ० १ ।

३ Poetry declares Carlyle We will call musical thought !
William Henry Hudson. An Introduction to the Study of
Literature P 83

४ Biographia Literaria chapter XIV

५ According to Edger Allanpoe It is the rhythmic creation
of beauty ..

६ Absolute poetry is the concrete and artistic expression of the
human mind in emotional and rhythmical language

—Encyclopaedia of Britanica Volume 18 P 106

७ On the side of rhythmical sound it is closely related to music-
but it differs from the latter in its capacity to represent both
concrete and abstract ideas with some exactness. E.A. Vol. 22
p. 276

८ काव्य के रूप पृष्ठ ३६ ।

९ साधने संगीत और साहित्य के मध्ये मूलमय दोनों पार्यवय नेह ।

—संगीत परिष्मा पृ० १४७ ।

सगीत में स्वर ताल की प्रधानता रहती है और सगीत सिखाने के लिए पारोड प्रचरोह सरयमों में ब्यक्त किए जा सकते हैं। जिनमें कोई साहित्य ही नहीं होता। तालने प्रादि सगीत के धङ्ग हैं। पर उनके धर्यों में नाद है धर्य नहीं। नृत्यों की पृष्ठभूमि में धाकिक सगीत भी पाये जाते हैं तो ताल सगीत भी जोले जाते हैं। धत सगीत को नाद-प्रधान ही समझना चाहिए जिनमें रस और ताल दोनों सम्मिलित हैं। धध प्रधान नहीं। वह धत कुछ होते हुए भी साहित्य धर्यों द्वारा सामग्रस उत्पन्न कर सकता है। जैसे दक्षिण भारत के नाट्य-नृत्य की पृष्ठभूमि में पाये जाने वाले तामिल भाषा के सगीत।

सगीत में समय (Rhythm) की प्रधानता होती है। साहित्य में विषय की। किन्तु सगीत और साहित्य दोनों ही माष या रस की एक ही इकाई हैं। साहित्य के एक धय नाटक में तो सगीत के तीनों धयधनों नायन नायन और नृत्य का समानेध हो जाता है। साहित्य का पीठ धंध और सगीत का नीठ-रूप एक ही है।

जो ध्यक्ति एक ही साध सगीतकार भी हो और साहित्यकार भी उसको धार्ध माषा में बाधेयकार (Composer) कहा जाता है^१। हिन्दी और बंगला में भी बाधेयकारों की परम्परा रही है। संकुचित धर्य में हिन्दी सगीत को हिन्दी पीठि काध्य कहा धाकिक उपयुधत जान पड़ता है। बर्षोंकि हिन्दी सगीतकार और हिन्दी काध्य में भेद देबन धामास माष है। हिन्दी में जितने बने-बने कवि हुए हैं वे बधधन सगीत सगीतकार भी थे। कबीर धनहद नाद के साध तामपुरे की ताल भी मिसाते थे। धूरबाध की रङ्गनाथ की के मन्धिर के प्रयुध कीर्तनिया थे। तुलसीबाध का काध्य के सगीत के ज्ञान के विषय में लिखा बया है, "तुलसीबाध का काध्य बर्षों इतना मानव माष में लोकप्रिय हुआ बब हम इत तध्य का विस्तेपण करते हैं तो हम इही निबधय पर पहुँचते हैं कि उनके काध्य की नीध सगीत की पाबन पृष्ठ पर सुबुद्धता से रची हुई है। उनके धर्यों में बहाँ हूयें एक धोर काध्य का धरितीय धीर्धन प्राप्त होता है, बहाँ हुचरी धोर सगीत का उत्कृष्ठ रूप भी मिसता है। उनके धध-धध में सगीत की मधुरिमा बिबधर धई है, हम उध मधुरिमा को उनके काध्य से पूबक नहीं कर सकते।"^२

- १ नीठ धार्ध ब नृत्य ब नय सगीतमुष्यते धर्षत् पीठ बाध और नृत्य तीनों को सगीत कहा जाता है।
- २ नाय या माधु, पीठ साहित्य में धर्यों के नाम हैं। 'विषय' या 'धाधु' धान के प्रकार का नाम है। इन दोनों में जो निपुण हैं वे ही 'बाधेयकार' कहे जा सकते हैं। (सगीत धालन पृ० २२८)

१ भारतीय सगीत का इतिहास पृ० २२६।

मीरा का वो सारा जीवन ही संगीतमय था। संगीत-सम्प्रात जानसन सुपायक होने के साथ-साथ मुक्ति भी थे। स्वामी हरिदास बंजुराचरण कुम्भनदास और हरि राम ध्यास जी भी इस नियम के अपवाद नहीं हैं। जिस प्रकार कामा के बिना छाया का कोई अस्तित्व नहीं है उसी प्रकार हिन्दी-संगीत और साहित्य भी पुन्य के सौंदर्य और सुगम्य की तरह परस्पर अनेक हैं। हिन्दी का समस्त भक्तिमुपीन संत और मन्त्र-साहित्य संगीत की स्वर लहरी से घोलप्रोत है।

बैंगला-संगीत पर हिन्दी-संगीत का प्रभाव दिखाने के लिये हिन्दी संगीत का म्यूजिकल, ऐतिहासिक और सर्वांगिक या शास्त्रीय परिचय देना आवश्यक प्रतीत होता है। वास्तव में हिन्दी संगीत की परिभाषा करना सरल कार्य नहीं है क्योंकि इसी संगीत को हिन्दुस्तानी या उत्तर भारतीय संगीत भी कहा जाता है। हिन्दी संगीत का अर्थ है परम्परागत संगीत प्रणाली के साथ-साथ ध्रुव, बमार, होरी दुमरो एक टप्पा धारि विभिन्न राम रामियों के समिश्रण से मध्यकाल में मध्यदेश (हिन्दी प्रदेश) में हिन्दी कवियों और संगीतवेत्ताओं द्वारा इसका पुनर्गठन और विकास हुआ था। पंडित विष्णुनाथयल मातलभके के शब्दों में इसको परिभाषा इस प्रकार हो सकती है "उत्तर हिन्दुस्तान के गायक जो वीत गाते हैं, उनके नाम—ध्रुवपद, क्याल टप्पा दुमरो होरी तपना और बतुरम धारि हैं।" यमीर कुमरो से लेकर धार तक अनेक परिवर्तनों के तदन्तर भी इस हिन्दुस्तानी या हिन्दी संगीत की धारमा सुरक्षित रही है। मध्यकाल में युसतमानी संस्कृति का प्रभाव भी कम्पानी और मन्त्रों के माध्यम से इस संगीत पर पड़ा है। जैसे हिन्दी नीतिकाम्य का कुछ प्रभाव बैंगला में जाता था रहा था वैसे कि यो स्वामी प्रजानानन्द लिखते हैं— "मिथिला शारंगना प्रभृति स्त्रानों में बैंगला भाषा ब्रह्मकुमि के समिपरा से उस सामित्य प्रदान करने में स्रितीय थी। रामानंद और कबीर के हिन्दी शोहों और साधियों के मधुर गीतों के माध्यम से ही सृष्टि की थी। कीन कह सकता है कि उनका प्रभाव बैंगला गीतों पर नहीं पड़ा। इसके बादबूद भी बैंगाली से अपनी प्रतिमा की मौनिकता को बैंगला गीतों में सुरक्षित रखा। नामदेव जी ने मण्टी साहित्य को कुछ उस सिद्धि कर रखा था। रामाहय्य की सोला कहानी मन्त्रों के बीच में विकास नाम मेवाड़ के राजा की पत्नी साधिका मीराबाई के मधुर कण से मुस्त्रित हुआ। ब्रजभाषा का समिपरा तो सब मन्त्रों में था।"

१ हिन्दुस्तानी संगीत अमिक पुस्तक चौथो प० ४४।

२ मिथिला शारंगना प्रभृति अनेके बैंगले भाषा ब्रह्मकुमि के समिपरा से उस-साहित्य परिवेजने स्रितीय दिन। रामानंद और कबीर हिन्दी शोहा और वशीर प्पावन यानेर माध्यमेद सृष्टि करे दिनेम यो सादेर प्रभाव यो बैंगला याने से पदौति ता के बसते वारे ताहले यो बैंगाली तार स्वकीय प्रतिमाय बैंगला निररवता

पर इस हिन्दी-संघीत का प्रभाव बैंगला संघीत के ऊपर श्री रामप्रसाद और श्री रामनिधि गुप्त के समय से ही पड़ने लगा था और उसका कम प्राकृतिक काल में वृद्धि को प्राप्त हुआ। श्री राविदेव शोष इस प्रभाव का कारण बतलाते हुए लिखते हैं 'मोगल-सम्राट द्वितीय शाह आलम (१७२१—१८०६ ई०) के स्वसोम्युक्त दिल्ली दरबार के श्रेष्ठ गायक गुलीश नागा स्वानों को बसे पड़े। तानसेन के बंशज पूर्व की ओर गये। उनका नाम पुबिया पड़ा तानसेन के सिप्य बंध वाले राजपुताना की ओर गये उनका नाम पछाज बासा पड़ा। तानसेन के वसवरों में काशी के राजा प्रयोध्या के नबाब बैतिया शिवा के राजा और रीवा के राजा और अनेक दरबारों में आश्रय लिया। बंगाल देश में मठारखी सत्ताधी के उत्तरार्ध में हिन्दी के उत्तारों का एक बस कुष्णनगर और कसकता में आया'।

इस हिन्दी संघीत की धारा के कारण परम्परागत बैंगला-संघीत की धारा भी परिवर्तित हो गई। बैंगला के श्री प्रज्ञानानन्द स्वामी लिखते हैं कि बंग प्रदेश की भूमि में परिवर्तनशील शास्त्रीय राग रागिनियों के मध्य में और तनरूपों की सृष्टि हुई थी। इसी कारण बसंत भैरव, रामकली घासावरी घासावरी पुरबी एवं बिहाम आदि की राग रागिनियों के रूप में विकास और रस-परिबोधन में उत्तर भारतीय संघीत पद्धति के कारण एक नयी प्रजाय पद्धति बन गई। उसके पूर्व में जिसकाण मात्र और रसदर्शी संघीत साधकों के दरबार में इनके वास्तविक रूप में समाहर से रक्षा होनी चाहिये। कारण यह है कि परिवर्तन नीति से बातीयकरण का मुख्य अधिक है। जिससे सम्पदा का आच्छाद उज्ज्वल और उत्तम बृद्धिशील होता रहे'।

नबाय देवेक्षित। मराठा साहित्य के नामदेव किशुतो रस विविध करेक्षितेन। रामाकुम्भेर लौसाकाहिनी मजनेर मध्ये-विद्ये विकास साम करेक्षित। मेवार राजा पत्नी साधिका मीराबाइयेर किन्तर कृष्टे। इजमापार समिभरु क्षिब धई सब मजनेर मध्ये।

(राग सो रूप पृ० ४२)

- १ मोगल सम्राट द्वितीय शाह-आलम (१७२१—१८०६ ई०) स्वसोम्युक्त दिल्ली दरबार के श्रेष्ठ गायक गुलीश नागा स्वामी लिखते हैं कि तानसेन-बंशजरेण एतेन पूर्विके उत्तरि नाम हस पुरबीया। तानसेनेर सिप्य बंधीमेरा गैनेन राज पुतानार बिके, नाम हस 'पछाज बासा'। तानसेन—बसवर बैर काशीर राजा प्रयोध्या नबाब बैतियार राजा देसवार राजा श्री प्रयोध्या अनेके दरबारे आश्रय लिसेन। बंगला देशे श्री प्रयोध्या सत्ताधीर दोषिके दिल्लीर सत्ताय बैर आसते देखि कृष्ण नगरे श्री कसकताय। (रबीन्द्र संघीत, पृ० ४१)
- २ बायसार माटिठे परिवर्तनशील शास्त्रीय राग रागिनीयेर मध्ये श्री घापार नब रूपययेर सृष्टि हूवेक्षित—ये बग्य बसंत, भैरव रामकैसी घासावरी पुरबी,

उक्त बात से भागत हिन्दी-संगीत के प्रभाव को बंगला-संगीत और साहित्य पर तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है —

- (१) बंगालियों ने हिन्दी कवियों के पदों को अपनाया है।
- (२) बंगालियों ने हिन्दी-गीतों के अनुकरण पर हिन्दी में गीत रचना की है।
- (३) बंगालियों ने हिन्दी-गीतों के अनुकरण पर बंगला में गीत रचना की है।

१ बंगालियों ने हिन्दी-कवियों के पदों को अपनाया है —

बंगला के अनेक पद्यों में हिन्दी कवियों और संगीतकारों के पीठों का समावेश हुआ है। किन्तु हम 'बांगालीर गान' में ही अधिक गीतों को पाते हैं। मूरराम बंगुराबराय गोपायनायक घोरीमियां गुरु नायक तुमसोराय कबीर नबनकिशोर घोरीमियां दू वी खां बहादुरयाह बिबनारायण अग्निहोत्री बाबिरामसी तानसेन मीराबाई आदि हिन्दी संगीतकारों सतों और कवियों के पद बंगाल में मात्र एक प्रचलित हैं। उनके द्वारा बंगला कवियों और संगीतकारों की साज पारा पर भी प्रभाव पड़ा है। बहुरसंगीत में भी समय-समय पर हिन्दी के पद प्राप्त होते हैं। उनमें से एक इस प्रकार है —

धोर भयो परकसीपल बोसे
 उठ जन प्रभु गुण गामोर।
 सब प्रकाश प्रकृति दिगोका
 बार बार हर्षाओ रे।
 प्रभु कि सुमेर निज मन में
 सरस नामो अपवाओ रे।
 होय हृत्त प्रम में उतक
 नयनन् नीर बाहाओ रे।

बेहाम प्रकृति राग रागिनीदेर रूपे बिचारे धो रस-वर्तिमाने उत्तर भारतीय संगीत पद्धति केरु द्वारा मात्र एषटु मासादा ह्ये पड़े। तामसे धो बिबाराय धो रसबर्ती संदीप-नायकदेर दरबारे एदेर सत्यकारेण समाकर हपता रगित ह्ये कारण ब्रह्मनीतिर केरु बातीयकरणर मूस्यर वैरी। ताते सग्यदेर भाष्यार ह्ये उग्यरस धी ब्रमबिबर्षमान।

(राग धो रग पृ० ८४)

१ दलिय बांगालीर गान पृष्ठ ६६१ (१००६)।

ब्रह्म रूप-सागरम मन को
 बारम्बार बुझाओ रे ।
 निर्मल धीतल लहुरे कै से,
 प्रातम ताप बुझाओ रे ।

(ब्रह्म संगीत पृष्ठ १०११ बाँसाजीर यान पृष्ठ १००१)

इस प्रकार संस्कृतों हिन्दी भीत बंगाल में प्रचलित है। वे बाँसा-संगीत और साहित्य की अभिन्न निधि बन गए हैं।

२. बंगालियों ने हिन्दी-गीतों के अनुकरण पर हिन्दी में गीत रचना की है—

परम्परा से ही बंगाली हिन्दी में गीत रचना करते आए हैं। प्राथमिक काल में भी यह परम्परा प्रचलित है। हिन्दी में गीत रचने वाले प्रमुख संगीतकार श्री रूपचंद्र पक्षी श्री रसिकचन्द्र राय श्री व्यासीचन्द्र मित्र श्री महाशय्याधिराज विजयचन्द श्री विरीसचन्द्र चोप श्री द्विवेन्द्रभास राय, श्री प्रमोदचान बसु, श्री श्रीरोबप्रसाद विद्याविनोद श्री प्रमोदकृष्ण मित्र श्री द्वारकानाथ माँगुसी और श्री रामदेवनाथ बस आदि हैं। इन संगीतकारों और कवियों द्वारा विरचित कुछ हिन्दी गीतों के उदाहरण देना अपेक्षित है :—

रूपचंद्र पक्षी—

काहे रूप डारि हो त्रिभंग मुरारि ।
 सम्भार सम्भार हो बकि ध्यामर,
 मत्त मार विषकारी इबाध शुभेनि
 लनरी भद्रेनि मोरे संझपा
 बेप्रोभि मुझे मारि ॥ (मुरारि)
 छोड़ छोड़ बाद् पानैदे यमुना तट
 रे पिट लानैदे डारि रंगिला छविला
 रे नन्दकुलाता छोड़दे बंझपा हामारि ॥
 (मुरारि) तू केया जान भाला
 पञ्जुपा के गिला हो हो मोयासा विरपारी
 बन बन झँझत मोया बराधोल
 तू केया जानत कैलेमे होरि ॥ (मुरारि)
 काहे पंथिद्वार मन भाषोमे मोर,
 युमल बरष तुम्हारि हो हो त्रिभंग लेझ

रहोनि केरेसे छाड़ा मपुर मुकुट बड़ा
बकि बैहारी ।। (मुरारि)'

महावामिराज विजयचन्द्र—

धाम इपारों हुनिया में सब शायारारी ।
मैरसे मिलना बकि जैसे हुसियारी ॥
तू सोचो हरबम सब ना रहेया बम् ।
तबु बन्नाकि करके केया हय काम् ॥
धामि मेहेर परवि होतो धामियारी,
हुनिया पर करते हो केरना कुमुम
कजा कि बरत सब होगा मामुम
धारे सोचो समुन्धों छोड़ो गुनाहगारी ॥

(बाँयासीर गान पृष्ठ ४८६)

तथा—

इसको जसको बुरा न मानो ।
धामने को ठिक राखो नि ।
ए हुनिया में तबि है भूटा ।
एक भूटा छाक नि ॥
हुनिया हुनिया काहे निघां ।
कहते हो तू हरबमजि ।
बम दूरेया मादिह होबेया
रहेगा कक मोहि मोताजि ।

(बाँयासीर गान पृष्ठ ४८८)

१ रूपचंद परी के कुछ पीठ इस मति निमते हैं —

'भूले भूले भूलन पर इयाबल सुम्बर मुगल किगोर किगोरी हो ।'

(बाँयासीर गान पृष्ठ ४११)

देतते धमुया कांर कानाहया
धामेठ ताक भूम केठे ताक बाजे मरय ।

(बही पृष्ठ ४१४)

एँसे कागुन के बिन छाई सजनी ।
पुर्नमासो धयी भई जकारा बाबनी ॥

(बही पृ० ४१२)

सांजि बहु मनमोहन मुझे,
बाँहा निजि गोयाई ।

(बही पृष्ठ ४१२)

गिरिधरचन्द्र घोष—

कौहूँ मेरा बम्बाबल कौहूँ पछोड़ा माई ।
 कौहूँ मेरा मग्न पिता कौहूँ बसाइ भाई ॥
 कौहूँ मेरि धयली श्यामली कौहूँ मेरि मोहल सुरलि ।
 श्री रामसुदाम राधासगळ कौहूँ मे पाइ ।
 कौहूँ मेरि यमुना-तट कौहूँ मरि बघी बह ।
 कौहूँ गोप नारी भरि कौहूँ हामारा राई ॥^१

(बाँगासीर गान पृ० ५३४)

प्रमूढसाम बसु—

बया मजादार सहर पुसजार
 बेहारा हुरतर बहुत बहुत बाहार ।
 मरबोया छोड़ा बरम बैनाना बापना सरम
 कोई नहि नरम सबको मयख परम ।

(बाँगासीर गान पृ० ८८१)

सीरोबप्रसाद बिद्याविनोद—

घाया हुकुम बरदार
 घाया हुकुम बरदार
 बड़ि काम पियारा हुरबम् लैधो भरपूर कामदार ।
 देखो बैला कासा रंग घाबेर लेला बबर हय ।
 छारा म्हुपट काम करने वाला साबबा समदार ।
 बहुत खोप मेबाजि राखि बिबि मालिक महभावार ।^२

(बाँगासीर गान पृ० ८८१)

द्विवेन्द्रसाम राय—

पुराण प्रेम की नहि जायो भइया हो
 पुराण प्रेम को छाओर धो बिन मिया हो ।

१ यो गिरिधरचन्द्र घोष ने घनेक हिन्दी मीठों की रचना की है—एक बो यहाँ दिए जा रहे हैं—

ब्रज परमेश्वर परम मिछारी । कल्पतट पुब भोग साधारी ॥

(बाँगासीर गान पृ० ५३७)

२ श्री सीरोबप्रसाद बिद्याविनोद द्वारा विरचित घनेक हिन्दी गीत प्राप्त होते हैं—जैसे—

हो हो जानू हयराज । बुनिया में जनम् सिया बयों ॥

(बाँगासीर गान पृ० ८८१)

हो यो बिन गिया हो प्यारे यो बिन गिया हो
भररे देयाला लिये यो बिन गिया हो ।'

(द्विज्येष्ठसात प्रभाषणी पृ० १२६)

तथा —

हम इमानदार परीबी से
सिर मोड़याला-भोजर यो कुछ
ओ काठेर उतको छोड़के पाव ।
हम परीब हों—हो यो कुछ—
हमारा छोटा काम भोजर यो कुछ
इज्जत हय खेमा का पैस
मर्ब सीला हय—हो यो कुछ ।
बया छोटा जाला जाँ हमभोग
परता सुती—घामोर यो कुछ ।
बैभो पैसाम् बैवकूफ को दाब बरजात को
मई मई यो कुछ घामोर जो कुछ
बोलत उनको जो कुछ,
इमानदार हो परीब नहाइत
तबमि पाबशाह हो यो कुछ ।
पाबशाह जानाता हो बैजयान्
घामोर नबाद्—घाजर यो कुछ,
मय इमानदार को जाना न
कोशिस करै मात यो कुछ
हो जो कुछ घाजर यो कुछ
इज्जत उनोका यो कुछ

१ योइ यम् बन में फूस डूडिया हो
धायो छोड़ि सो दूर में सो बिन गिया हो ।
यो दिन नबी में तुम हम पैस किया हो
तबसे बीज में रहुँ माठा बरिया हो ।
मे हात दे हात मुझको मोरा दिया हो
पिउ मि देयाल कर भब यो बिन गिया हो
तोमारि भरौ तुम हम भरौ भेरि घा हो

(द्विज्येष्ठसात प्रभाषणी पृष्ठ १२६)

हुंसा इज्जत बाम का बेमाक

सबसे ऊँचा—हो या कुप्य ।

(द्विज्येन्द्रसाल प्रत्यावली, पृ० १४२ ४३)

मत्सङ्गच्छ मित्र—

पूरा पियासा पियासा सवार पिया

कट्टरा हरबम् बिया साकि भरबम पिया

पूरा जानको बेमनेरा मसमुल बिया ।

पूरा कसेबा कुमकर बेसकल मिया ॥^१

(बाँबासीर गान पृष्ठ ८१०)

धमरेन्द्रनाथ बत—

मिपट कपट तुमा ब्याम

रोये रोये मरे तुहारि बरब बारे (राजा)

ममुन बिबारि छि छि तुहु गुप्बाम ॥

नाब मान हरि यमुना पानिमें बरि

बारि बारि बरि पियासे कुमारि,

बोरा बिल मन बोरे कंठे मिबारि—

कलिबे बाबोरि हरि सिधे सेरि नाम ।

(बाँबासीर गान—पृष्ठ १४०)

बिहारी बट्टोपाय्याय—

जग बोजन हरि तर्हु परिहरि ।

याघोब कही भासा कह मुरारि ॥

राका बनि नैहारि बड़ि फिरे बकोरी ।

काला-बदि नाचामब नाना छदि

पेखि कैसे मीरे निबारे मुरारि—।

(बाँबासीर गान—पृष्ठ १०१५)

इस भाँति अनेक बंभसियों ने हिन्दी में गीत लिखे हैं । संगीत बंधों में भी हिन्दी गीतों का प्रचार मिया गया है । जहाँ बंभसी कवियों ने हिन्दी में कविता की है वहाँ उन्होंने किसी संघ तक हिन्दी को व्यापक भाषा स्वीकार करते हुए हिन्दी

१ मत्सङ्गच्छ मित्र ने कई हिन्दी गीत लिखे हैं—

पियासा का साक होने बेधो, भरो हुसाकी फिन् ।

हाति को पर हाबबा मेरे बोरे कोपर बीन् ॥

(बाँ० गान पृ० ८११)

को प्रज्ञात उपचेतन रूप में स्वीकार किया है। इससे सिद्ध होता है कि दोनों भाषायें कितनी मिसी जुसी हैं और ऐनिक व्यवहार ये बे कितनी एक दूसरे के निपट हैं। वह सम्पर्क प्रज्ञात रूप से प्रभावों का भी जनक होता है। दो भाषाओं के मिसन से प्रभाव अवश्यभावी है।

३ बांग्लादेशों ने हिन्दी-गीतों के अनुकरण पर बंगला में गीत रचना की है—

हिन्दी या हिन्दुस्थानी संगीत का बंगला-संगीत पर प्रभाव एक भुग-परिवर्तनकारी बटना है। इसी हिन्दी संगीत पद्धति के द्वारा बंगला गीतिकाव्य की सम्पदा की प्रादुर्भावजनक उत्पत्ति हुई है।

साधुनिक बंगला गीतिकाव्य पर हिन्दी का सर्वाधिक प्रभाव हिन्दी संगीत के माध्यम से पड़ा है। उत्तर बेप्लव काल प्रथमा इस्लामिक बंगला युग से ही हिन्दी संगीत का प्रभाव बंगला संगीत पर स्पष्ट है। इस संगीत की पद्धति को अपनाकर राजा राममोहनराय ने ब्रह्मसंगीत की आधार घिसा रखी थी। ब्रह्मसंगीत के अनेक गीत हिन्दी गीतों और मायन-पद्धतियों के अनुकरण पर बने हैं। अधिकतर ब्रह्मसंगीत में आराधना और कृतज्ञता के पद गुण मानक तथा अग्न्य अर्थों से प्रभावित जान पड़ते हैं। श्री चाम्पिदेव भाय का कथन है हिन्दीद्रुपद गीतों का मूलभाव भक्ति-पूजा का भाव था। बंग देश में इस भाव को सम्पूर्ण रूप से ग्रहण करके नये भाव से भक्ति और धर्म गीतों की रचना हुई। ब्यास गीतों के मिल्म अंग के अनुसार पूजा और प्रेम के गीत रचे गये थे। तोरी-मियाँ के टप्पे प्रेम के गीत थे, जिम्बू बाबू के गीतों की प्रसिद्धि का भी यही कारण है।^१ हिन्दों गीतों के और मायन पद्धतियों के अनुकरण पर ब्रह्मसंगीत रचे गये हैं। यहाँ कुछ उदाहरणों से स्पष्ट करना आवश्यक है —

स्मिष्टि खमाज दुमरी—
 बिमुपद-कमस पीपूय रहे
 भज रे विपानु मन ममुकर। (ब्रह्मसंगीत पृष्ठ १०५)
 तुसनीय— कित्त तोन् बिबार में बपटे हो
 मन मुप करो भाइ एक दिन को।

१ हिन्दी द्रुपद गानेर मूल भाव हल भक्ति पूजार भाव। बांग्लादेशों ए भावटिके सम्पूर्ण ग्रहण करेइ मुतन भावे भक्ति वा धर्म गान रचित हय। छेदास गानेर भिन्न अंग अनुगारे पूजा ओ प्रेमर मान रचित हये छे बांगला देश। तोरी मियाँर टप्पा छिन प्रेमर गान जिम्बू बाबूर प्रेमर गाने ओ सेइ कारण प्रसिद्ध।
 (रबीन्द्र संगीत पृ० २५)

२ पाठ भेद—घोष=तोष।

जप विन्ता को सब बुर करो
 आधोर त्वाये ध्यान विषय बन् को
 प्रभु पूजा में अनुराग करो
 आधोर प्रस्तुत हो हरि कीर्तन को
 परित्राण के प्रति सब ध्याकुल हो
 तुम धाकुल हो प्रभु दर्शन को ।
 मस्ति आधोर प्रेम के फूलों से
 भरपूर करो हृद-कानन को
 एकान्त सुधा रत्न पान करो
 आधोर सांगति कर आपने मन को ॥

(ब्रह्मसंगीत पृ० १०७)

तथा—

आशाईया-यत—

साथै तोमय बयामय जगते बसे ।
 तुमि पापी बसै त्वजिया धे कारे कोन् काले
 बसल आनि धे दिके माह सख्खदा ठ देखिते पाइ
 (आमाय) कुपब हते बवा करे टानिधे कोळे ।
 धीर पापेर पापोपारा निमियते ठरे तारा
 तोमार धी करण धरण निळे ॥

(ब्रह्मसंगीत पृष्ठ १४३)

सुतनीय—

तू मेरे प्राण-आधार (प्रभुजी)
 मनस्कार बख्खत बानन अनैठवार धो बार (प्रभुजी)
 उठत बैठत धोमत जावत
 एमन तुझेहि चितारे,
 धो तुमि कर सोहि फल आमार *
 तुमि आवे सार (प्रभुजी)
 तुमेरे उठ बम् बुद्धि धम् तुमहि
 तू मेरे परिवार ।

आधोर—धीर ।

आमार—हमारा ब्रह्मसा धीर हिम्बी के उच्चारण भेद के कारण उक्त पद के कुछ अर्थ विवक्षित हो गये हैं ।

मुञ्च कुञ्च सर्वे मनकि, बेरधा
 सेवक नानक गुरु अरपमार (प्रभुजी)

(ब्रह्मसंगीत, पृष्ठ १४३)

नानक जी के इस पद की छाया एक अन्य ब्रह्मसंगीत पर भी है।^१ गुरु नानक की प्रसिद्ध भारतीय गयन के बाल में रवि चन्दु दीपक बसे^२ का प्रभाव हो बैमसा नीतों पर दिखाई पड़ता है। एक गुरुदेव का पद 'ययनेर पाले रवि चन्द्र दीपक प्बसे' है। दूसरा यहाँ दिया जाता है।

तोमारि धारति करे निजिल मुबन
 निरलि कुडाय नाप । पुपस नपन ।
 पनन पाले केमत दीपक रूपे धनुलय
 शोमिधि दाधी तपन हुबपरजन ।
 मुक्तामासा धेत ताय तारका समुदी
 मरि क्किदा शोमा पाय है मब भय भजन ।
 धूप मसय पवन निरंतर समीरण
 करे चामर व्यजन है बिजब कारण
 बन उपवन यत पुल्पद्वैय अद्विरत
 बाजे मेरी धनाहत धुने प्रमिठ पे बन ॥

(ब्रह्मसंगीत पृष्ठ १४७)

उक्त पद में गुरु नानक की भारतीय का माय-साम्य ही नहीं है अपितु सभ्य सादृश्य भी है। जैसे—

| | |
|--------------|----------------------|
| गबनपाले | ⇒ गयन में धामु |
| दीपकरूपे | ⇒ दीपक बसे |
| दाधी तपन | ⇒ रवि चंदु |
| मुक्तामासा | ⇒ अनक मोती |
| तारिका समुदय | ⇒ तारिका मन्थल |
| मब भय-भजन | ⇒ मब दाखना |
| धूपमलय पवन | ⇒ धूपमलयवाधानमो पदगु |

एक पवित्र ठो हुबहु एक बैसी ही है। धूपमलय पवन निरंतर समीरण करे चामर व्यजन = धूपमलयवाधानमो पदगु अचरो। उपवन यत पुल्प द्वैय अद्विरत = सगल बनदाह फुमंत बोठी। बाजे मेरी धनाहत = धनहता दाख बाजत मेरी।

१ इतिथे—प्रस्तुत प्रबंध पृष्ठ २८७ तथा ब्रह्मसंगीत, पृष्ठ १७७।

२ ब्रह्मसंगीत पृष्ठ १४६।

तानपेन के एक बीत के साथ एक ब्रह्मसपीत का केवल राग साम्य ही नहीं
भाव धीर शब्द-साम्य भी है। जयजयबन्धी रागिणी में दोनों बीत इस प्रकार हैं

नाथ तुमि ब्रह्म तुमि नित्य तुमि ईश तुमि महेश
तुम अरि तुम अत तुम अनादि तुम अक्षय ।
बस स्वस मस्त अ्योम पमु ममुष्य ईशतोष,
तुमि अवार सूजनकार ह्वाचार त्रिभुवनेश ।
तुमि एक तुमि पुराण, तुमि अतंत मुख सोपान
तुमि ज्ञान तुमि प्राण तुमि मोक्षदान
पूष हृत्तो मनस्काम लये अरि तव नाम
तव पाय शतवार करि प्रभाम करि प्रभाम ॥

(ब्रह्मसपीत पृष्ठ १७७)

सुमनीय -

तुँहि ब्रह्म, तुँहि बिष्णु, तुँहि शैव तुँहि महेश
तुँहि अरि तुँहि नाथ तुँहि अनादि तुँहि अक्षय ।
बस स्वस मस्त अ्योम तुँहि अकार यम सोम
तुँहि अँकार तुँहि मकार
मिरकार तुँहि अनेश
तुँहि अेष तुँहि पुराण
तुँहि ह्वासीस तुँहि अुराण
तुँहि अ्यान तुँहि ज्ञान तुँहि मुखनेस
तामसेन कहे अयान तुँहि विन तुँहि अयन
तुँहि अरि पत अत, तुँहि अरुण तुँहि विनेस ॥

(बानासीर पाल पृष्ठ १००१)

इस भाँति अनेक बंगला-संघीतकारों ने हिन्दी संघीत^१ के अनुकरण पर बंगला

१ हिन्दी गीतों के स्वरोँ (सुरों) के अनुकरण पर बंगला के अम्य पीत-संघीतों में
बंगला बीत रहे गए हैं। बीतमाला में कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं —

(१) अमात्र-एकताला—

हिन्दी सुर—'सीतापति रामचन्द्र रघुरायी = बंगला नमो ब्रह्म परम
ईस निखिल-बिख कारणे मंगलमय सकल कुशलकारी
मयठारखे । (बीतमाला पृ० २)

(२) " " "भ्रमके अतत रामचन्द्र = अम्य प्रमो अम्य आछामाम्य
महिमा ठोमार । (पीतमाला, पृ० १)

यार्थों का सूत्रन किया है। कुछ प्रसिद्ध बँबसा-संपीठकारों और गायकों का नामोस्तेख^१ आवश्यक है। श्री राबिकाप्रसाद मोस्वामी श्री सानेन्द्रप्रसाद गोस्वामी श्री भीष्म देव चटोपाध्याय श्री तारापद चटोपाध्याय या सत्येन्द्रनाथ गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर, श्री माइकेल, मधुसूदन बस श्री द्विवेन्द्रनाथ राय, काशी नरकल इत्याम श्री विनीप कुमार राय श्री हिर्मासुपथ श्री अजय मट्टाचार्य प्रादि प्रमुख हैं। इनमें से कुछ की संपीठकता का विवेचन प्रपेसित है।

श्री सत्येन्द्रनाथ—

इन्होंने हिन्दी के अनुकरण पर ब्रह्मसंगीत की रचना की है। इनकी एक भिन्नित दुमरी हिन्दी और बँगला दोनों भाषाओं की मानी जा सकती है —

गागोरे अयपति अणवम्बल
ब्रह्म सनातन पातक नाशन।
एक देव त्रिभुवन परिपालक
कृपा-सिधु सुन्दर मम नायक।
सिबक मनोमह-ममल हाता
बिद्या सभ्य बुद्धि बिद्याता।
बाबे अरुण भयत कर जोड़े,
बितर प्रेमसुखा बित बसोरे।

(ब्रह्मसंगीत, पृ० १० बाँयासीर पान ५०६०६)

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर—

हिन्दी संगीत पद्धति का अन्वीयतम प्रभाव गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर पर पड़ा है।^२ हिन्दी शास्त्रीय संगीत^३ ही रवीन्द्र संगीत की पृष्ठभूमि है। जैसा कि श्री उमैय

- (१) " पानी बरण जाति यमुना के घाट—जोवा यनाय बधु
अतिमेर नाथ। (गीतमाला, पृ० ४)
- (४) सुलझा क्या देखी हरपन में तेरे दबा घरम नहीं मन
में—प्रभु है धार कि कब तुमि मन्त्र। हैव मुग्ध नाहि
हेति मुग्ध। (गीतमाला पृ० ४४)
- (५) इत्याद कोई नाहि है, पल राखो रघुबीर—घागार धार
बेह नाहि नाथ, तुमि राघ रघुबीर।

(गीतमाला पृ० १६६)

१ त्रिभुक्ति हिन्दी संगीत के घागार पर बँगला संगीतिकास्य के मागदर को बध है उन कवियों और संगीतकारों की सख्या बहुत बिघाल है अतः उनके परिचय के लिये बाँयासीर पान ५० १ १०४० देखने योग्य है।

२ हेतिये बिस्तृत परिचय के लिये प्रस्तुत प्रबंध पृष्ठ २७५ ३६७।

३ शास्त्रीय हिन्दी संगीत को बँगला में उच्चार्थ हिन्दी संगीत कहा जाता है।

बोली का मत है— अपनी प्रारम्भिक मान रचनाओं में रवीन्द्र ने ध्रुपद-पद्धति का आधार लिया। उनके सभी गीत भारतीय पद्धति पर अवलम्बित हैं। रवीन्द्र संगीत प्रचलन पीठिकाभ्यात्मक अभिनय सृष्टि का दूसरा नाम है^१। उन्होंने नाना रसों के मान हिन्दी राव रागनियों के अनुकरण पर लिखे हैं। उन्होंने हिन्दुस्तानी पीठों का किस माय से अनुभव और साक्षात्कार किया था। यह उनकी रचितियों से प्रकट होता है। उनकी कई रचितियों में हिन्दी राग रागनियों का मानवीकरण भी अभिव्यक्त हुआ है।^२ श्री बिसीपन्डित राय गुस्देव की हिन्दी की परब रागनी के प्रति रचितता का एक उदाहरण देते हुए गुस्देव के ही मत का उल्लेख करते हैं। गुस्देव लिखते हैं 'हे गुस्नी मुझे काला काला कम्बस खरीब दो, राम जपने के लिये मासा जाबो और बसपान के लिये तुम्ही सावो मैं बनानी होने के माते इस मान को इस प्रकार व्यक्त करता हूँ —

ध्रुप आमाम मुक्तिपथैर बेचाभो विधा ।
कम्बल मार सम्बल होक दिवाविधा ।
सम्बल होक जपेर मासा
नाम मखिर बीपत ज्वाला,
तुम्बिते पान करव ये बल
मिटये ताहे विषय वृषा ।

मुसनीय मूल हिन्दी—

कारि कारि कम्बलिया गुस्नी मोड़े योल से से,
राम जपन को मासा से से पानी पिबन को तुम्बरिया गुस्नी।^३
इससे स्पष्ट हाथा है कि गुस्देव हिन्दी संगीत के कितने बड़े प्रेमी थे।

१ भारतीय संगीत का इतिहास पृ ३७६।

२ मुसतान येन ध्रुम गृह्यारिखी विषया सम्पार ध्रुमोचन।

(रवीन्द्र संगीत पृ० ६१)

धर्मात् मुसतान जैसे ध्रुम गृह्यारिखी विषया सम्पार का ध्रुमोचन है।

परब येन धर्मात् राशि रोसर निद्रा विह्वलता। (रवीन्द्र संगीत, पृ० ६३)

धर्मात् परब जैसे धर्मात् राशि रोप की निद्रा विह्वलता।

कानड़ा येन धर्मात्कारे धर्मसारिका निशीचिनीर पथविस्मृति।

(रवीन्द्र संगीत पृ० ६३)

धर्मात् कानड़ा जैसे धर्मात्कारे में धर्मसारिका निशीचिनी की पथ विस्मृति।

३ सांघीतिकी पृष्ठ १४६।

उन्होंने इस पद्यति का अनुकरण करके बंगभारती के गीतिकाम्य के भास्कार को धनुमनीय बना दिया है ।^१

श्री साइकेल मधुसूदन बसु—

इन्होंने श्री हिन्दी साहित्य के अनुकरण पर बँगसा वीरों की रचना की है ।^२
उनका एक गीत यहाँ दिया जाता है—

जय जयेश शंकर सर्व पुष्पाकार
भिताप संहर महेश्वर ।
हस्ताहस्तांकित कण्ठ सुशोभित ।
मोनि विराजित मुपाकर ॥
विनाक बावक भूय विनाशक
विशूल वारक, जयंकर ।
विशिषि वाधिघ्न सुरेश्वर ।
परात्म जूजित वरावर ॥

(मधुसूदन संवाचनी, विविधा पृ० ७९)

श्री द्विवेन्द्रनाथ राय—

श्री मारायण बीपरी इनके विषय में लिखते हैं, 'द्विवेन्द्रनाथ राय के बँगसा वीरों की समृद्धि विषय में जो बड़े दान हैं एक तो हिन्दी क्याम के बंग एकनाम की विधि पर बँगसा वीरों की सृष्टि और दूसरे यूरोपीय पद्यति पर बँगसा में कोरस सुर का प्रवर्तन है'^३ ।

श्री दिनीपकुमार राय श्री द्विवेन्द्रनाथ राय की क्याम प्रेम के विषय में लिखते हैं 'बहुधा देखा गया है कि रवीन्द्रनाथ का बँगसा वीरों के विकास में धुपक की धोर इन्धन गोसाँई श्री की प्रविनायकता के कारण धोर श्री द्विवेन्द्रनाथ का

१ रवीन्द्रनाथ राय-विश्व बाँवसा नाम साँपीलिपी, पृष्ठ १९४ ।

२ हेतिये—मधुसूदन संवाचनी में समिष्टा नाटक पृ० २८, ४३, ६३, ८१, ८२, ८४ तथा एकद बने सम्बन्ध पृ० ३१ परमावती नाटक पृ० ३२, ४२, ६३ एवं हृत्पुत्रुमारी नाटक पृ० २६ ।

३ बाँवसा वानेर समृद्धि विषय में द्विवेन्द्रनाथ बङ्गनाम दुटि-शुक्र, हिन्दी क्यामेर बंगे एकक रायेर भित्तिये बाँवसा नाम सृष्टि, कुछ इयोरुपीय पररुई बाँवसाय कोरसाय सुरेर प्रवर्तन ।

मुकाम प्रथमतः सुरेन्द्रनाथ के अधिनायकत्व के कारण था।^१ इनका एक गीत यहाँ दिया जाता है :—

मोल मयन चन्द्र किरण, तारकायण रे ।
 हेर मयन-हर्षमयन जब मुबन रे ।
 निद्रित सब कूजन-रज नीरज भर रे ।
 मोहन नख हेरि विमल मैदिनी तब रे ।
 काहित बन स्निग्ध पवन व्योत्सना मयन रे ।
 नन्दन बन पुन्य मवन मोहित मन रे ।

(द्विवेन्द्रनाथ प्रंभावली पृ० १६६)

उक्त गीत हिन्दी साहित्य की पद्धति पर रचा गया है। यद्यत्तु भाषा की दृष्टि से भी हिन्दी और बंगला दोनों भाषाओं की सम्पत्ति माना जा सकता है। इन्होंने हिन्दी संगीत पद्धति का अनुकरण कर बहुत बंगला गीतों का निर्माण किया है।^२

काबी नबकल इस्लाम—

रबीन्द्र संघीत के लेखक का विचार है—‘गुस्तेब के समसामयिक और परवर्ती रचयिताओं में श्री द्विवेन्द्रनाथ, श्री प्रतुषप्रसाद और श्री नबकल का नाम ही एकमात्र उल्लेखनीय है। क्योंकि इन्होंने प्रत्येक ने अपने गीतों की कमा की ही रचना की थी। गुस्तेब के घाबर्लनुसार हिन्दी गीतों के बंग और सुर के प्रभाव से ही बंगला में क्याम, तुमरी और गजब माने में रूप देने का प्रयत्न किया था।^३ गीतिकार

१ यह देखा गेल-बांगला गानेर बिकासे रबीन्द्रनाथ अपदेर बिके भोंकन प्रथमतः यौसाइबिर अधिनायकताय धार द्विवेन्द्रनाथ भोंकन खेयानेर बिके प्रथमतः सुरेन्द्रनाथेर अधिनायकताय । (सांघीतिकी पृ० १६१)

२ देखिये द्विवेन्द्रनाथेर कठिपय राघभंयिय गान (सांघीतिकी पृ० १६१-६६) राखा प्रवापसिंह पृ० ५ (धंकरा), पृ० २१ (हमीर) पृ० ११ (समान) पृ० ७४ (मीमपमयी); पृ० ६१ (बरवा), पृ० १२७ (समान), द्विवेन्द्र प्रंभावली (कविता धो गान) पृ० ७७, गान भी पृ० ७६ पुरबी पृ० ५० विहाव पृ० ८१, मीरबी पृ० ८४ जयजयवली, छायानट, गान पृ० १८७ १६१।

३ गुस्तेब के समसामयिक श्री अनुवर्ती रचयितादेर मध्ये द्विवेन्द्रनाथ धनुस प्रसाद और नबकलेर नामह केबसमान करव । कारण ऐंय प्रत्येकह निधेर गानेर कमा धो सुर बुद-इ रचना करेकेन । गुस्तेबेर घाबर्ल ऐंय धो हिन्दि गानेर बंग धो सुरेर प्रभावह बांगला खेयान तुमरी धो गजब माने के रूपे देवार केटा करे छियेव । (रबीन्द्र संघीत पृ० २६)

घोर सुरकार काभी नजरूम के बिषय में समीत परिक्रमा के सेवक का रूप है कि बिज मीठों को हम साधुनिक बँपसा गीत कहते हैं उनमें नजरूम का शान प्रकल है। 'मोर नुमबोने एसे मनोहर नमो नमो साहि मीठ मोर घाहूत पाखीर सम, 'कुह कुह कुह कुह कोयमिया' (राग प्रबान—न मानु'मी नामक सुपरिचित हिन्दी गीत का बँपसा रूप) प्रभृति घनेक मीठों का नामोस्मेल किया जा सकता जिससे नजरूम के घुर की बिरोपता पूर्णमात्रा में प्रकट है।^१ वे भागे छिर मिलते हैं—सुपरिचित हिन्दुस्थानी बगल मीठ के अनुसरण पर रचित बँपसा बगल नजरूम की सांगीतिक प्रतिभा की एक घोर देना है।^२ बिब्रोही कवि ने इस प्रकार हिन्दी मीठों घोर उहूँ यजनों का अनुसरण कर बँपसा गीतिकाव्य को सम्पन्न बनाने में योगदान किया है।

हिन्दी भाषा की मूर्ति हिन्दी संगीत भी ब्यापक है। घत इसी ब्यापकता घोर सांगीतिक श्रेष्ठता के माध्यम से हिन्दी संगीत या गीतिकाव्य का प्रभाव साधुनिक बँपसा संगीतकारों घोर गीतिकाव्यकारों पर स्पष्ट है। बँपसा कवियों घोर साहित्यकारों ने अपनी रचि घोर विशाल हृदयताबल इसको अपनी परमप्रिय बँपसा भाषा साहित्य एवं संगीत का अभिन्न घंघ बनाया है।

४ अनुवादात्मक (बँगला में अनूदित हिन्दी ग्रन्थ)

बिब-साहित्य में सादान प्रदान का सरलतम मार्ग अनुवाद है। जहाँ से संस्कृतियों साहित्यों भाषाओं घोर जातियों का सम्पर्क होता है वहाँ पारस्परिक सादान प्रदान का मार्ग खुल भी जाता है, यह सादान-प्रदान सीसा भी होता है। भाषा-यह अनुवादों के सहारे होता है। अन्य समूह देसों तथा भारत में अनुवादों की यह परंपरा प्राचीनकाल से ही बसी जा रही है। संस्कृत फारसी घोर बेसी-बिबेसी भाषाओं के घंघों का अनुवाद सर्वत्र से होता आया है हिन्दी घोर बँपसा में भी एक घूसरी से अनुवाद हुए हैं।

१ साधुनिक बँपसा बान बलते से श्रेणिर बान बुम्कि काते घो नजरूमेर शान प्रकल घोर घुम घोरे एसे मनोहर नमो नमो साधुनिक मोर घाहूत पाखीर सम 'कुह कुह कुह कुह कोयमिया' (राग प्रबान—न मानु'मि, नामक सुपरिचित हिन्दी बानेर बँपसा रूप) प्रभृति घनेक गानेरई नामकरत बान बाने नजरूमेर नुरेर बबिध्व्य पूर्णकात्राय प्रकट। (संगीत परिक्रमा पृ० ६८)

२ सुपरिचित हिन्दुस्थानी बगल बाने अनुसरण रचित बँगला बगल नजरूमेर सांगीतिक प्रतिभार भारकटि दिक्।

यह विचारणीय विषय है कि अनुवादों को प्रभाव के अन्तर्गत रखा जाय या नहीं। केवल भाषा के रूपान्तर को प्रभाव की कोटि में नहीं रखा जा सकता। भाषान्तर बाहरी वस्तु है पर प्रभाव भीतरी तत्त्व है।

भी सी० रेबिन अनुवाद की परिभाषा करते हैं— अनुवाद वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कथित प्रथमा लिखित कथन एक भाषा जिसमें अनुवाद हुआ हो, धमीष्ट और परिकल्पित कथन अर्थ के साथ उस भाषा में पहले ही विद्यमान हो जिस भाषा से अनुवाद हुआ हो प्रकट हो जाये। इसमें एक अर्थ प्रथमा कुछ सर्वोच्च की ओर संकेत करते हुए संभव भाषा दो विभिन्न तत्वों का समावेश होता है। हम उस भाषा को जिसमें पूर्ववर्ती कथन अंकित हो 'प' तथा उस भाषा को जिसमें अर्थ का परिवर्तन हुआ हो 'ब' कहेंगे।^१

नई अनुवाद पुनसृष्टि (Re-creation) भी होते हैं जैसे—गुरुदेव की अंग्रेजी गीतांजलि केवल बैबला-गीतांजलि का अनुवाद मात्र ही नहीं है वह पुनसृष्टि भी है। इसी Re-creation या Re-construction से मिला-जुटा अनुकूलन (Adaptation) है। नही अनुवाद सर्वोत्तम माना जा सकता है, जो मूल लेखक या कवि के भाव और भाषा को अति पहुँचाये बिना दूसरी भाषा में उसके अर्थ या आत्मा (Spirit) को पहुँचा दे पूर्वतया प्रेषित (Transmit) कर दे।

अनुवाद अर्थ भाषाओं के पारस्परिक-सम्पर्क के द्योतक होते हैं। वे प्रभाव के लिये सामग्री भी उपस्थित करते हैं। किंतु यह धारण्यक नहीं है कि जिस भाषा में अनुवाद हुआ हो उस भाषा को अनुचित प्रथम प्रभावित किया ही हो। इस प्रभाव का नियंत्रण भी निश्चितता के साथ नहीं किया जा सकता। उसके लिये हमें स्वतंत्र साक्षी, भाव और भाषा के सामने से ही निश्चितता के लिये आचार लेना पड़ेगा। जो अनुवाद विचारवाचकों में परिवर्तन लाने भावों में परिष्कार करें या नये प्रयोगों प्रथमा नयी अन्दाजों को प्रकट करें तर्हि साहित्यिक विचारों को अन्तर् में वे ही प्रभाव के अन्तर्गत रखे जा सकते हैं।

अनुवाद अर्थ भी भाषा और भावों में परिवर्तन लाते हैं। क्योंकि यह एक

- 1 Translation is a process by which a spoken or written utterance takes place in one language which is intended and presumed to convey the same meaning as a previously existing utterance in another language.

It thus involves two distinct factors, a meaning or a reference to some slice of reality. We shall call the language in which the first pre-existing utterance is couched language A, and language into which the meaning is transferred language B

सोचने की बात है कि अनुबाद का कोई मूल्य या महत्त्व नहीं हो तो अनुबाद केवल कारी बास्त्य बीड़ा होगी। अनुबाद क भी कारण होते हैं। कुछ कारण इस प्रकार हो सकते हैं —

(१) किसी कवि या ग्रंथ-विशेष का उच्च साहित्यिक गौरव।

(२) भावदयकतावश प्रभाव की पूर्ति के लिये।

१ जो ग्रंथ या कवि साहित्यिक सौन्दर्य सम्पन्न होता है, उसके ही अधिक अनुबाद होते हैं। विश्व के बड़े-बड़े कवि इसके साक्षी हैं। कालीदास तुमसीदास, पेशवपीयर और रबीन्द्रनाथ ठाकुर के ग्रंथों के अनुबाद समस्त विश्व की प्रत्येक उच्च भाषा में प्राप्त होते हैं। गुरुदेव ने कबीर के छी पदों का अनुबाद उनके दार्शनिक पार्थीय और भाव-सौन्दर्य से प्रभावित होकर किया था।

२ श्री ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने हिंदी बंगाल पकरीषी का अनुबाद बंगला में भावदयकतावश प्रभाव की पूर्ति के लिये किया था। अतः अनुबादों से भी एक भाषा का दूसरी भाषा पर प्रभाव होता है। अनुबाद भी अनुकूल पाठार्थों को प्रभावित करते हैं। कबीर के अनुबाद रहस्यवादी विचारधारा को बल प्रदान करते हैं। तुमसी-ग्रंथों के अनुबाद भक्तिधारा को प्रबल पुष्ट करते हैं। मीरा के पदों के अनुबाद दाम्पत्य प्रेम की बस्तरी को रस सिंचित करते हैं। 'बोस्मा से गंगा अनुबादक की साम्यवादी विचारधारा को प्रबल अनुप्राणित करती है। केवल अनुबाद भी उन भावधाराओं को प्रभावित करते हैं जहाँ प्रभाव के पुष्प प्रसूटित हाते हैं।

अतः हिंदी से बंगला में अनुबादों की परम्परा सम्पन्नकाल से ही है। हिंदी मध्यकाल का अनुबाद बंगला मध्यकाल कहा जाता है किन्तु यह पवित्रा घबिकल अनुबाद नहीं है यह Adaptation है। अक्षरबन्ध या धाधार भी (Adaptation) अनुबाद या कान्तर (Translation) का एक रूप कहा जा सकता है। अनुबादों और धाधारित-ग्रंथों (Adapted Works) में भी अन्तर है। अक्षरकल अनुबाद सदसमोच्छी समस्यरी पवित्र प्रति पवित्र अनुबाद को ही अनुबाद कहा जाता है। भावानुबाद का भी अनुबाद नहीं है। भावानुबाद में भाव बही रहता है किन्ती मात्रा में अक्षरबन्धी में प्रबल परिवर्तन हा जाता है। वह अनुबाद पवित्र प्रति पवित्र नहीं होता। धाधार लेकर जो अनुबाद होते हैं उसमें भाषा का तो कान्तर हाता ही है। भावों को भी परिवर्तित अनुकूल कटाया-बड़ाया जा सकता है। धाधार लेकर पुराने भावों को नई भाषा के लोभ में हाता जाता है। नये लोभ में हातने से सामर्थी में भी कुछ परिवर्तन हो जाता है। धाधारित अनुबाद नये प्रभावों के घोटक हाते हैं। ऐसे अनुबादों में अनुकूलन अमगा रहती है।

किसी अम य यह बात भी सही है कि एक अनुबाद का दूसरी भाषा में होने से

कृष्ण तो अपनी मूसभाया की प्रकृति लाता है और कृष्ण अपनी नई भाषा की प्रकृति को ग्रहण करता है। हर एक अनुवाद थोड़ी-बहुत भाषा में एक नवसृष्टि होती है। वह उस भाषा की सम्पन्नता को बढ़ाता है। यह तो विचारने की बात रहेगी कि हिंदी-श्यों के अनुवादों ने बंगला भाषा और साहित्य को कहीं तक प्रभावित किया है। किन्तु उन्होंने बंगमाउली की समृद्धि को प्रबल बढ़ाया है।

हिंदी-श्यों का अनुवाद प्रथम प्रबल बंगला में काफी समय से ही होता आया है। लामावास की के भक्तमाल का आधार लेकर लालबाघ बाबाजी ने साधन की मीनासत का प्रबल लेकर दीनतकाजी ने और बायसी की पचासत का प्रभाव लेकर आसाधीस ने बंगला साहित्य में नयी साहित्यिक परम्पराओं को जन्म दिया जिसके कारण बंगला-साहित्य के इतिहास में एक नया मोड़ उत्पन्न हुआ। हिंदी की अनेक पुस्तकों का आधार लेकर और अनुवाद करके इस्लामिक बंगला-साहित्यकारों ने बंगला साहित्य और भाषा की श्रीश्रद्धि की।

किन्तु बिसे ठीक अनुवाद या आशान्तर करता रहा जाता है, वह धार्मिक युग में ही प्रचार में आयी है। धार्मिक काल में हिंदी-श्यों का अनुवाद बंगला में हुआ है। परन्तु हिंदी से बंगला में अनुवाद समस्त श्यों की तात्कालिक प्रस्तुत करना अपेक्षित नहीं है। यहाँ स्वासी-मुत्ताक म्याय से कुछ पुस्तकों की तात्कालिक भी जाती है।

- १ 'मतासहितयोग'—से० महात्मा गाँधी अनु० विनयकृष्ण सेन १९३२ बंगाल, गैसनस साइबेरी कलकत्ता।
- २ 'भस्वुर्यों की मुक्ति'— " " " " " "
- ३ 'कबीर'—से० आचार्य सितिमोहन सेन गैसनस साइबेरी कलकत्ता।
- ४ 'गोवात'—से० प्रेमचंद, अनु० पी प्रियदर्शन सेन और स्वर्ण प्रभा सेन कलकत्ता सन् १९४२ ई०।
- ५ 'बिचसेवा'—से० मनमतीचरण वर्मा।
- ६ 'सुप्रकाश'—से० लाल कवि।
- ७ 'बपबी'—से० गुब नानक अनु० किरणचंद बरबेस १९१२ ई० बंगाल साहित्य परिषद कलकत्ता।
- ८ 'तुलसी प्रभावसी' दो भाग—से० तुलसीदास।
- ९ 'बाबू बाणी'—से० सप्त बाबू अनु० पी योगेशचन्द्र मजूमदार, १९२८ ई०।
- १० 'बोहावसी'—से० तुलसीदास अनु० ब्रह्मानन्द चटर्जी १९२९ बंगाल।
- ११ 'मन्दरास का भ्रमर गीत'—से० मन्दरास अनु० पी जगदानन्द नाजपैयी।
- 'परमावत'—से० मलिक मोहम्मद जायसी अनु० दीनर आसाधीस।
- 'प्रेमसागर'—से० सन्तुषी नाथ।

BIBLIOGRAPHY

ENGLISH

| Name of the Book. | Author | Price | Library |
|---|--------------------|-------|-------------------------------------|
| Anglo Bengali Dictionary of Colloquial expressions | R.P. Dr | 10/- | Shree Library Calcutta. |
| Beginning of Secular Romance in Bengali Literature. | Dr S.K. Ghosal | 10/- | Shree Kharati, Shree Nandan. |
| Bengali Ramayana. | Dr D.C. Sen | 10/- | Calcutta University Central Library |
| Bengali Literature. | J.C. Ghosal | 10/- | 10/- |
| Chaitanya and his Companions. | Dr D.C. Sen | 10/- | 10/- |
| Descriptive Linguistics | Gleason | 10/- | 10/- |
| Dictionary of Linguistics. | Mado Apel | 10/- | 10/- |
| Eastern Proverbs & Emblems | The Rev I. Long | 10/- | 10/- |
| Element of the Science of Language | J.I.B. Tarapurwala | 10/- | 10/- |
| Encyclopaedia of Religion and Ethics. | James Hastings | 10/- | 10/- |

| No | Name of the Book | Author | Press | Library |
|-----|---|----------------------|--|---------------------------------|
| 11 | Encyclopaedia of Americana. | | The Americana Corporation, New York. | Agra University Central Library |
| 12. | Encyclopaedia of Britannica. | | The Britannica Ltd. | Central Library Agra University |
| 13 | Folk Literature of Bengal. | Dr D C Sen | Calcutta University | National Library, Calcutta. |
| 14. | Folk Literature of Mithila. | Dr J.K. Misra | Tirbata Publication | " |
| 15 | The Grammar of the Hindi Language | S.H. Kallog | Allahabad. Routledge & Kegan-paul 29 Broadway House 68-75 Carter Lane, London. | |
| 16 | A History of Bengali Literature. | Dr Sukumar Sen | Sahitya Akadami New Delhi, 1960 | Sahitya Akadami. |
| 17 | History of Bengali Language and Literature. | Dr D C. Sen | Calcutta University 1954. | National Library Calcutta. |
| 18 | History of Brajbull Literature. | Dr Sukumar Sen | Calcutta University 1935 | ' |
| 19 | History of Indian Philosophy Vol III & IV | S.N Das Gupta | Cambridge Univer sity 1940 | ' |
| 20 | History of Maithill Literature Vol. I. | Dr J.K. Misra | Tirbata Publica tion | |
| 21. | Indian Words in English. | J Subha rao | Allahabad Oxford at the Clarendon Press, 1954. | H.B.L. Agra University |
| 22. | Indian Philosophy Vols I & II. | Dr S. Radha-krishnan | George Allen & Unwin Ltd. London. | |

| No | Name of the Book. | Author | Press | Library |
|-----|--|---|---|----------------------------------|
| 23 | Introduction to the Science of Languages. | A.H.Sayce | | H.B.L. Agra University |
| 24 | Kaleidoscopic Survey of the Indian Languages | V.K. Nara sinphan A.Venketo- charya V.K.N Charl. | India G Directories & Publica tions (P) Ltd. Madras 18. | |
| 25 | Language. | Edward Spir | Harcourt Brace & Co New York 1921 | |
| 26 | | Bloom Field | | |
| 27 | " | J V Vendreya | Routledge & Keganpaul 29 Broad way House 68-75 Carter Lane London. | |
| 28. | Language its nature Development & Origin | Otto Jespersen | | |
| 29 | Linguistic Change. | E. H. Sturtevant | New Haven Yale Uni versity 1936. | |
| 30 | Linguistic Survey of India | J A Greirson | | National Library Calcutta |
| 31 | New Hindustani Eng Dictionary | S. W Fallon | R.C. Temple Trumbre & Co London. | Central Lib |
| 32. | Modern Vernacular Literature of Hindustan | J A. Greirson | Asiatic Society 57 Park St Calcutta 16 1889 | H.B.L. Agra University |
| 33 | Obscure Religious Cults as back ground of Bengal Literature. | Dr S. B. Das Gupta | Calcutta Univer sity 1946. | National Library Calcutta. |
| 34. | One hundred poems of Kabir | Kavindra nath Tagore | MacKellen Co 1916 New York | " |
| 35 | Origin and Develop- ment of Bengali Langu age. Vols. I & II | Dr S. K. Chatterji | University of Calcutta 1926. | |
| 36 | Philosophy of Ravindranath Tagore | Dr S. Radha krishanan Pike | | |

| No | Name of the Book. | Author | Press | Library |
|-----|---|----------------------|--|---------------------------------------|
| 38 | Ramkrishan Commemoration Volumes I, II, III and IV | | | National Library Calcutta. |
| 39 | Rabindra Nath Tagore's Works and Personality | V Lesny | | |
| 40 | Semantics. | Hughr | W.H. Norton Co New York 1941 | H.B.L. Agra University |
| 41 | Subject & Predicate | Manfred Sardmann | Edinburgh the University Press 1954. | |
| 42. | The Religion of Man. | Rabindra Nath Tagore | | National Library Calcutta. |
| 43 | The Vaishnava Literature of Medieval Bengal. | Dr D C Sen | University of Calcutta. | H.P Bagchi, Bani Mandir Library Agra. |
| 44 | The Oxford Dictionary of English Proverbs. | William George Smith | Oxford at the Clarendon Press. 1957 | H.B.L. Agra University |
| 45 | The Concise Oxford Dictionary | | | |
| 46 | The History of Bengali Language | B Mojumdar | University of Calcutta. | H.P Bagchi Bani Mandir Library Agra. |
| 47 | Western Influence in the Modern Bengali Literature. | Priya Ranjan Sen | B.M. Dass Gupta Saraswati Library College St. Calcutta 1947 | |
| 48. | Les Chants Mystiques Les Dohakos as Les Carya. | Dr M. Shadi-dulha | Adrien Maimonnou. Paris. | Hindi Vidya-pith, Agra University |

PERIODICALS

- 1 Asiatic Society of Bengal Journal.
- 2 Modern Review
- 3 The Journal of department of Letters, Calcutta University
- 4 Visha Bharati Quarterly

सहायक ग्रन्थों की सूची

वैंगला

| क्रमांक | ग्रन्थ | प्रणयकार | प्रेस एवं समय | पुस्तकालय |
|---------|--------------------------------------|--|--|---|
| १ | अन्नदामपत्र | मारणचन्द्रराय गुलाकर | बैंगीय साहित्य परिषद् कमरुता (१३३८ ई०) | बाली मंदिर श्री हृद्यसाद बागची बागच। |
| २ | अप्रकाशित पद रत्नावली | श्री सतीशचन्द्र राय | " | बैंगीय साहित्य परिषद् कमरुता। |
| ३ | धाराकान राज समाय बौमला साहित्य | एनामुसहृद घण्डुस करीम साहित्य बिद्यारद | १९३२ ई० | " |
| ४ | धर्मियान | ठाणचंकर बंघोपाध्याय | रंजन पब्लिशिंग हाउस २५।२ मोहन बागान रो कमरुता (१३३२ ई०) | बाली मंदिर बागच। |
| ५ | इस्लामिक-बौमला साहित्य | डॉ० सुकुमार सेन | बर्डेमान साहित्य सभा प्रथम संस्क रण १३३८ ई० | मैदान साइबरी कमरुता। |
| ६ | उत्सव | रबीन्द्रनाथ ठाकुर | बिस्वभारती छाति निकेतन १९०२ ई० | हिन्दी विद्यापीठ पुस्तकालय बागच। |
| ७ | कबीर | श्री जितिमोहन सेन | बिस्वभारती छाति निकेतन कमरुता | मैदान साइबरी कमरुता। |
| ८ | श्री हृद्य कीर्तन | बगदीशाह | बसंतरंजन राय बैंगीय साहित्य परिषद् १३२३ बैंगार | बैंगीय साहित्य परिषद् प्रयागार, कमरुता। |

| क्रमांक | ग्रंथ | प्रकाशक | प्रेस एवं समय | पुस्तकालय |
|---------|----------------------------|-------------------------------|--|---|
| ९. | झरुवा-वीर चिंतामणि | विश्वनाथ चक्रवर्ती | काशीनाथराय बुम्बावन संस्करण १३१३ बं० | बंभीय साहित्य परिषद् धंवागार, कसकता । |
| १०. | शैया | रबीन्द्रनाथ ठाकुर | विश्वभारती, छांति निकेतन । | विश्वभारती छांति निकेतन । |
| ११. | गीत-बंदोदय | गरहूरि चक्रवर्ती | हरिबास बास भीषाम हरि बोस कुटीर, गबड़ीप, प्रथम संस्करण, ४६१ भीषोराब्द । | |
| १२. | गीताञ्जलि | रबीन्द्रनाथ ठाकुर | विश्वभारती छांति निकेतन १९१३ ई० । | |
| १३. | गीताञ्जि | " | " | |
| १४. | गीतिमास्य | " | " | |
| १५. | गीत-विज्ञान गीत खण्ड | " | " | साहित्य परिषद् कसकता । |
| १६. | गोरख संहिता | मज्जात नाम कवि | बाँसा साहित्येर इतिहास से जुड़त प्रथम खंड बर्द्धमान साहित्य समा । | नेशनल लाइब्रेरी, कसकता । |
| १७. | गोपीचन्द्र-नाम प्र० खंड | श्री विश्वेश्वर मट्टाचार्य | श्री वीनेयचन्द्र सेन कसकता विश्व-विद्यालय, १९२२ ई० | बाणी मंदिर, भागद । |
| १८. | गोरखरि चिंतामणि | गरहूरिबास चक्रवर्ती | स्वामी हरिबासबास भीषाम हरिबोस कुटीर, गबड़ीप । | |
| १९. | गोरख छरमिछी | श्री जगबंधु घट्ट | बंभीय साहित्य परिषद कसकता संस्करण १३१० बं० | बंभीय साहित्य परिषद् कसकता । |

| क्रमांक | ग्रंथ | प्रयत्नकार | प्रेस एवं समय | पुस्तकालय |
|---------|--------------------------|---------------------------|---|------------------------------------|
| २० | गोविंद-बाहेर पदावली | गोविन्दबास | बसुमती-साहित्य मंदिर कसकत्ता । | बंगीय साहित्य परिषद्, कसकत्ता । |
| २१ | गोड़ीय-बीप्लव बीबन | श्री हरिदास बास | श्रीबाम हरिबोस कुटीर मन्दीप प्रथम संस्करण ४६२ शैतम्याम् । | नेशनल साइबेरी कसकत्ता । |
| २२ | गोड़ीय-बीप्लव साहित्य | " | " | " |
| २३ | बर्मापद | श्री मणिन्द्र मोहन बसु | कमला बुक डिपो १३—बंकिम बादुर्ग्या स्ट्रीट कानेज स्वबायर, कसकत्ता । | शाली मंदिर, घागरा । |
| २४ | बलंतिका | रामचैसर बसु | एम० सी० सरकार एंड संस लि० १४—बंकिम बादुर्ग्या स्ट्रीट, कसकत्ता २१ । | नेशनल साइबेरी कसकत्ता । |
| २५. | बडीदास पदावली बडीदास | | बसुमति-साहित्य मन्दिर १६६, बहु बाजार स्ट्रीट, कसकत्ता | बंगीय साहित्य परिषद् कसकत्ता । |
| २६ | शैतम्य परिचामुत् | कृष्णदास कबिराज | रामागोविन्दनाथ भक्ति ग्रंथ प्रचार मण्डार, ११ नं० मुदेन ठापुर रोड बालिवंज कसकत्ता १३३३ बंगाम् । | शाली मंदिर, घागरा । |
| २७ | शैतम्य बरिसेर जनादान | बिमानबिहारी मनुमवार | कसकत्ता बिन्व बिद्यालय कसकत्ता १८१८ ई० । | नेशनल साइबेरी कसकत्ता । |

| क्रमांक | ग्रंथ | प्रकाशक | प्रेस एवं समय | पुस्तकालय |
|---------|---|------------------------|---|---|
| २८ | चैतन्य भागवत | बृन्दावनदास ठाकुर | श्री सुबोधचन्द्र मजुमदार देव साहित्य कुटीर २१।१ मद्रास पुस्तक सेन कलकत्ता १३६३ बंगाल | बाणेश्वरी मंदिर, घागुरा । |
| २९ | चैतन्य संकलन | श्री ब्रजानंद | मनेन्द्रनाथ बसु काशीबास नाग, बंगीय साहित्य परिषद् कलकत्ता सं० १९०२ ई० । | बंगीय साहित्य परिषद् कलकत्ता । |
| ३० | जयन्ती उत्सव | बाबूचन्द्र भट्टाचार्य | श्री जयवार्धनराज रबीन्द्र-मरिचम समा कर्तृक-प्रका सित १३३८ बंगाल | बाणेश्वरी मंदिर, घागुरा । |
| ३१ | धीष्ण-स्मृति | रबीन्द्रनाथ ठाकुर | पुलिन बिहारी सेन बिस्वभारती द्वारकाभाष्य ठाकुर सेन कलकत्ता । | " |
| ३२ | डोडाई परिचय मानस (श्री चरण) | सतीनाथ भाबुड़ी | बेन्गल पब्लिशिंग १४ बकिंग साडु पर्या स्ट्रीट, कलकत्ता १२ । | " |
| ३३ | बाहु | श्री सिद्धिमोहन सेन | बिस्वभारती प्राति-निकेतन । | नेछमल साइबेरी कलकत्ता । |
| ३४ | नाथ संप्रदायेर इतिहास दर्शन श्री साधन प्रणामी | कल्याणी मस्मिक | कलकत्ता बिस्व विद्यालय १९३० ई० । | " |
| ३५ | पदकल्पतरु (पाँच पत्र) | श्री बंप्पुबरास | श्री सतीशचन्द्रराज बंगीय साहित्य परिषद् कलकत्ता | बंगीय साहित्य परिषद् प्रभासागर, कलकत्ता । |

| क्रमांक | प्रय | प्रकार | प्रेत एवं समय | पुस्तकालय |
|---------|--------------------------------|--------------------------|--|--|
| ३६ | पद्मावती | संयुक्त धातामौल | १ हबीबी प्रेस मदुबा बाजार, कसकटा १३३८ ब० | बगीच साहित्य परिषद् प्रकाशक, कसकटा । |
| ३७ | पुरुषोत्तम रबीन्द्रनाथ | अमल होम | २ रीबनायरी लिवि डॉ० सत्येन्द्र नाथ घोषास । एम० सी सरकार एंड संघ १४— बंकिम चाटुर्ग्या स्ट्रीट कलकत्ता-१२ १३३२ ब० । | हिन्दी विद्यापीठ, धायरा बिरब विद्यालय । बाणी मंदिर धायरा । |
| ३८ | पुस्तक-परिचिधि | आहमद चरीफ | बायसा-विभाग डाका बिरब विद्यालय १२२५ ई० । | नेशनल लाइब्रेरी, कलकत्ता । |
| ३९ | पुंषि-साहित्य (दो खण्ड) | श्री पंचानन मंडल | बिरबभारती प्रांति निकेतन १२२८ ई० | बिरबभारती पुंषि पाला प्रांति निकेतन । |
| ४० | बंगमाया दो साहित्य | डॉ० दीनेशचन्द्र सेन | कलकत्ता बिरब विद्यालय १२२४ ई० । | कलकत्ता बिरब विद्यालय केंद्रीय पुस्तकालय । |
| ४१ | बंग-साहित्य परि षय (दो भाग) | " | " | नेशनल लाइब्रेरी कलकत्ता । |
| ४२ | बांगसा पुंषि साहित्य | " | डाका बिरब विद्यालय पाकि स्तान १२२८ ई० | नेशनल लाइब्रेरी कलकत्ता । |
| ४३ | बांगसा-त्रिदा पदेर सामिका | डॉ० रबीन्द्रनाथ ठापुर | बिरबभारती प्रांति निकेतन | हिन्दी विद्यापीठ धायरा । |
| ४४ | ब्रह्म सगीत | श्री नाथिक चन्द्र | नं० ११ कार्नका मिड स्ट्रीट ब्राह्म मिशन संन ब्राह्म सम्बन् ६३ । | बाणी मंदिर, धायरा । |

| क्रमांक | प्रप | प्रकाशक | प्रेत एवं समय | पुस्तकालय |
|---------|--|-------------------------------|--|--|
| ४१ | बांगला प्राचीन पुनिर विवरण | पद्मल करीम, साहित्य विचारक | बंगीय साहित्य परिपद् १३२० बंगाल । | बंगीय साहित्य परिपद् ग्रन्था पार । |
| ४६ | बांगला वाङ्मय | श्री सिधिमोहन सेन | कमकता विरव विद्यालय १९२४ ई० । | नेशनल लाइब्रेरी कमकता । |
| ४७ | बांगला बंगाल भाषापत्र मुद्रण मान कवि | श्री मणीमोहन भट्टाचार्य | बुक सोसाइटी बाब इडिया सि० २ बंकिम चटर्जी स्ट्रीट कमकता १९२६ बंगाल । | बाणी मन्दिर, बागर । |
| ४८ | बांगला-बाङ्ग या बाङ्ग पीठ | श्री जयप्रताप भट्टाचार्य | प्रोडिगट बुक कम्पनी ९ स्वाम बजर डे स्ट्रीट कमकता १९ । प्रथम सं० १९६४ बंगाल । | नेशनल लाइब्रेरी, कमकता । |
| ४९. | बांगला विरवकोष | मनेन्द्रनाथ बसु | बंगीय साहित्य परिपद् कमकता । | बंगीय साहित्य परिपद् कमकता । |
| ५० | बांगला भाषा ग्रन्थेर भूमिका | डॉ० सुनीतिकुमार चटर्जी | कमकता विरव विद्यालय प्रथम संस्करण १९४६ । | नेशनल लाइब्रेरी कमकता । |
| ५१ | बांगला साहित्य | डॉ० मनोमोहन घोष | इण्डियन पब्लिशिटी सोसाइटी २१ बजराम घोष स्ट्रीट कमकता । | ” |
| ५२ | बांगला प्रवाद | डॉ० सुधीस कुमार डे | ए मुबर्की एण्ड कम्पनी लि०, २ कासेन स्वामर, कमकता । द्वितीय संस्करण १९५९ बंगाल । | बाणी-मन्दिर, बागर । |

| क्रमांक | ग्रंथ | प्रकाशक | प्रेत एवं समय | पुस्तकालय |
|---------|--|--------------------------|--|--|
| २३ | बाँयासी श्लो बाँयासा साहित्य | प्रमथनाथ बिन्धी | श्री धर्मोत्तरनाथ मुसोपाभ्याय बँगल पब्लिशर्स १४ बँकिम चटर्जी स्ट्रीट, कसकत्ता १२ । | बाखी मन्दिर, भायण । |
| २४ | बाँयासा-साहित्येर इतिहास (चार भाग) | डॉ० सुकुमार सेग | बखेमान साहित्य समा बखेमान । | बनीय साहित्य परिषद प्रयागार, कसकत्ता । |
| २५ | बाँयासी संस्कृति | गोपाल हमधर | प्रफुल्ल राय प्रपणी बुक कसब १९ बुम्बान बसु सेग कसकत्ता १९४७ ई० । | बाखी मन्दिर, भायण । |
| २६ | बाँयासा साहित्येर कपरेखा (तीन भाग) | गोपाल हमधर | ए.पु.बर्जी एन्ड सन्ध प्राइवेट लिमिटेड २-कामेज स्कवायर कसकत्ता १२ १३९२ बङ्गाळ । | बनीय साहित्य परिषद, कसकत्ता । |
| २७ | बाँयासा भाषार परिचय (२ भाग) | श्री आनेन्द्रमोहन दास | श्री इन्डियन पब्लिशिंग हाउस २२।१ कार्तवा लिड स्ट्रीट कसकत्ता १३३३ बँगाळ । | |
| २८ | बाँयासा साहित्येर इतिवृत्ति (कथा) | श्री मूखेव चौधरी | | मैसन साइबेरी कसकत्ता । |
| २९ | बाँयासा साहित्येर कथा (प्रथम भाग) | डॉ० मोहम्मद घहीमुस्सा | पाकिस्तान १९२८ ई० | मैसन साइबेरी कसकत्ता । |
| ३० | बाँयासा साहित्येर कथा | डॉ० सुकुमार सेग | | मैसन साइबेरी कसकत्ता । |
| ३१ | बाँयासा साहित्य (दो भाग) | श्री मखीन्द्रमोहन बसु | श्री धीरोदमानदत्त कससा बुक डिपो, १५-बँकिम चाटुर्जा स्ट्रीट, कसकत्ता (१९४९) | बाखी मन्दिर भायण । |

| क्रमांक | प्रप | प्रपकार | प्रेस एवं समय | पुस्तकालय |
|---------|--|--|--|--|
| ६२ | बांगला साहित्ये मुसममानेर प्रबन्धन सेन | डॉ० बीनेसचन्द्र | | बंगीय साहित्य परिपत्र कलकत्ता । |
| ६३ | बांगालीर नान | श्री पुर्णारास साहिद्री | बमबासी १८।२ भबानी चरणदत्त स्ट्रीट, कलकत्ता (१९१२ बंगाल) । | बाणी मंदिर, घामरा । |
| ६४ | बांगला प्राचीन पुषिर बिबरण तृतीय खण्ड सि०२ | बसंतचन्द्र रंजन श्रीर ताराप्रसन्न भट्टाचार्य | | बंगीय साहित्य परिपत्र कलकत्ता । |
| ६५ | विभिन्न साहित्य | डॉ० मुकुमार सेन | श्री अम्बिका प्रसाद बिस्वास इस्ट एण्ड कम्पनी ३२ कैथन पथ स्ट्रीट, कलकत्ता ८, १९५६ ई० । | बाणी मंदिर, घामरा । |
| ६६ | बतास पंचविधति | श्री ईश्वरचन्द्र बिद्यासागर | श्री सुनीतिकुमार बटोपाध्याय रंजन पबलिशिय हाउस २५।२ मोहन बागान रो कलकत्ता १९४६ बंगाल । | " |
| ६७ | बैष्णव पदावली | डॉ० बीनेसचन्द्र सेन | कलकत्ता विश्व विद्यालय सीसरा संस्करण १९४६ । | नेशनल लाइब्रेरी कलकत्ता । |
| ६८ | बैष्णव महात्म पदावली | श्री उपेन्द्रनाथ मुसोपाध्याय | बसुमति साहित्य मन्दिर कलकत्ता । | श्री बुद्धदेव भट्टा चार्य की निजी पुस्तक । |
| ६९ | बीड मान धो घोहा म० म० घास्त्री | इन्द्रप्रसाद घास्त्री | बंगीय साहित्य परिपत्र प्रयागार १९२४ बंगाल १९११ ई० प्रथमबार | नेशनल लाइब्रेरी, कलकत्ता । |

| क्रमांक | प्रश्न | प्रश्नकार | प्रेस एवं समय | पुस्तकालय |
|---------|---------------------------|------------------------------|---|--|
| ७० | मकरमास प्रश्न | श्री नानदास बाबाजी | श्री धर्मिनाथ चन्द्र मुक्तोपाध्याय कवि भूपण श्री पूर्णचन्द्र धीम, ४० परान हाट स्ट्रीट, कलकत्ता । १३३० बंगालम्ब । | बाण्डी मन्दिर भागरा । |
| ७१ | मकरमास प्रश्न | श्री नानदास बाबाजी | उपेन्द्रनाथ मुक्तो- पाध्याय बसुमती साहित्य मन्डिर ट्रि० संस्करण, कलकत्ता । | बाण्डी मन्दिर भागरा । |
| ७२ | मकित रत्नाकर | नरहरि चक्रवर्ती | स्वामी हरिदासदास नवदीप हरिबोल कुटीर, चैतन्याश्रम ४२९ । | बंगीय साहित्य परिषद कलकत्ता । |
| ७३ | मकर कबीर | धम्मपक उपेन्द्र कुमार दास | भोरिमण्ड बुक कम्पनी ६ क्याम चरण ६ स्ट्रीट कलकत्ता १२ । १२३३ ई० । | बाण्डी मन्दिर, भागरा । |
| ७४ | भारतपत्र संवाहनी | भारतचन्द्रराम गुणाकर | बंगीय साहित्य परि षद् २४३।१ मपर सरकुसर रोड कल कत्ता १३३७ बंगालम्ब । | बाण्डी मन्दिर, भागरा । |
| ७५ | भानुसिंह ठाकुरे बदाबनी | रवीन्द्रनाथ ठाकुर | विश्वभारती प्राणित निवेशन । | विश्वभारती पुस्तकालय प्रान्ति निवेशन । |
| ७६ | भारतेर साधक (चार सख) | चंकरनाथ राय | श्री मुपीर मुक्तजी राइटस संडीकेट, ८७ परमेश्वर स्ट्रीट कलकत्ता—१३ । | बाण्डी मन्दिर, भागरा । |

| क्रमांक | ग्रंथ | ग्रंथकार | प्रेषण का समय | पुस्तकालय |
|---------|------------------------------------|-------------------------|--|------------------------------|
| ७७. | माघेय मध्ययुगेर साधनार धारा | प्राध्याय खिदिमोहन सेन | | नेशनल साइबेरी कसकता । |
| ७८ | भाषार इतिवृत्त | डा० सुकुमार सेन | बर्द्धमान साहित्य सभा बर्द्धमान । | बंसीय साहित्य परिषद, कसकता । |
| ७९. | मध्ययुगेर कवि प्रो काव्य | श्री शंकरप्रसाद बसु | जनरल प्रिन्सिप एन्ड पब्लिशर्स मि० ११९ बर्मिन्गहाम स्टीट कसकता । | बाणी मन्दिर प्रायरा । |
| ८० | मानुयेर बर्म | रवीन्द्रनाथ ठाकुर | बिस्वभारती ग्रन्थालय २ बंकिम बाटुम्बा स्टीट कसकता १९४९ ई० । | बाणी मन्दिर, प्रायरा । |
| ८१ | मीरीबाई | श्री प्रभाकरनाथ बसु | इन्डियन प्रसोसियेटेड पब्लिशिंग को० प्रा० मि० ९३ हरि सन रोड, कसकता-१ कतुर्ब संस्करण १९६४ बं० । | नेशनल साइबेरी कसकता । |
| ८२ | मीरीबाई | श्री ब्रजनन्धसिंह | प्राथम्य कारनार १९३ कार्तबानिस स्टीट कसकता १९३८ ई० । | सेपक के पास |
| ८३ | मूलाभिनी | श्री बंकिमचन्द्र बटर्बी | बंसीय साहित्य परिषद् कसकता । १९४३ बंभाष्य । | बाणी मन्दिर प्रायरा । |
| ८४ | संस्कृत-शैलीका (पूर्व बंसीयशैलीका) | डा० बीनेशचन्द्र सेन | कसकता बिस्व विद्यालय १९३८ । | नेशनल साइबेरी कसकता । |
| ८५. | रवीन्द्र-काव्य प्रवाह | श्री प्रभाकरनाथ बिशी | श्री मीरीसंकर मट्टाचार्य मित्रालय १० इयामचरसु दे स्टीट प्रथम खण्ड १९३३ बंभाष्य, द्वि० खंड १९३६ बं० कसकता । | बाणी मन्दिर, प्रायरा । |

| क्रमांक | पंथ | प्रयत्नकार | प्रेत एव समय | पुस्तकालय |
|---------|---|------------------------------|--|--|
| ८६ | रबीन्द्र साहित्य परिष्कार (प्र० बंड) | उपेन्द्रनाथ मट्टाचार्य | रमाप्रसाद मित्र बुक हाउस, १५ कानेश स्कवायर, कलकत्ता (प्र० संस्कृत १३१४ बंगाल) | श्री बाणी मन्दिर, धापुरा। |
| ८७. | रबीन्द्र श्रीबनी मा साहित्य प्रबोधिका (चार भाग) | श्री प्रभातकुमार मुखोपाध्याय | बिबकमारती-शक्ति निकेतन बिबक भारतीय प्रपाठय स्ट्रीट, कलकत्ता (१३१५ बंगाल) | श्रीदानस साइबेरी कलकत्ता। बाणी मन्दिर, धापुरा। |
| ८८ | रबीन्द्र बिद्यासा | श्री लपनकुमार बंधोपाध्याय | मजीतकुमार बंधोपाध्याय शक्ति नाइबेरी, कलकत्ता। | बाणी मन्दिर, धापुरा। |
| ८९ | रबीन्द्रनाथ | श्री मनिनीकान्त गुप्त | रामेश्वर एण्ड को० कन्वन् नगर, १३४९ बंगाल। | बाणी मन्दिर, धापुरा। |
| ९० | रबीन्द्र काव्य निर्भर | श्री प्रमथनाथ बिधी | श्री सुरेशचन्द्रराज बनरस प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स ११९, बर्मतस्ता स्ट्रीट कलकत्ता (१३१३ बंगाल) | बाणी मन्दिर, धापुरा। |
| ९१ | रबीन्द्र प्रतिभार परिष्कार | शुभी रामराज | २२, कार्नेवालिस स्ट्रीट कलकत्ता ३ (१३१० बं०) | बाणी मन्दिर धापुरा। |
| ९२ | रबीन्द्र बिबिना | प्रमथनाथ बिधी | श्री प्रह्लादकुमार प्रामाणिक, पोस्टल बुक कं० ९, रथामचरण दे स्ट्रीट कलकत्ता १२। | बाणी मन्दिर, धापुरा। |

| क्रमांक | ग्रन्थ | प्रकाशक | प्रथम एवं समय | पुस्तकालय |
|---------|----------------------------------|--------------------------------|--|--|
| ६३ | रबीन्द्रनाथेर शीर्षक दर्शन | प्रवास बीबन बोबरी | श्री प्रमिषरत्न बुधोपाध्याय ए० मुञ्जर्जी एण्ड क० (प्राइवेट) लि० २, कामेश स्वामीर, कमकता १२ । प्रथम प्रकाश (२५ बैसाख १९६३ बंगाल) | बाखी मन्दिर, भाबरा । |
| ६४ | रबीन्द्र दर्शन | श्री हिरण्यमय बुधोपाध्याय । | साहित्य ससद् ३२ ए० अणर, सरकुमर रोड कमकता ६ । (दि० संस्करण १९६३ ई०) | बाखी मन्दिर, भाबरा । |
| ६५ | रवि रविम (दो सख) | बाकबन्धु बंधी- पाध्याय | ए मुञ्जर्जी एण्ड कम्पनी कमकता १९४६ बंगाल । | बाखी मन्दिर, भाबरा । |
| ६६ | रबीन्द्र रचनाबली (समस्त खण्ड) | श्री रबीन्द्रनाथ ठाकुर | विश्व भारती छाति निकेतन । २, बेकिम चादुर्ग्या स्ट्रीट कमकता । पुनर्मुद्रण १९५८ ई० । | नेशनल लाइब्रेरी कमकता भाबरा विश्वविद्यालय हिन्दी विद्यापीठ भाबरा । |
| ६७ | रबीन्द्र संपीठ | श्री छातिदेव घोष | विश्वभारती प्रया लय २ बेकिम चादुर्ग्या स्ट्रीट, कमकता (१९६३ बंगाल) | बाखी मन्दिर, भाबरा । |
| ६८ | रबीन्द्र साहित्येर परिचय | डॉ० सपीन सेन | पिडरु कर्नर ३, छेकर घोष कैम कमकता ६ । | बाखी मन्दिर, भाबरा । |

| क्रम | ग्रंथ | प्रणयक | प्रस एव समय | पुस्तकालय |
|------|--|------------------------------|---|----------------------------------|
| १९ | रवि परिचय | श्री कनक बंधो- पाध्याय | ए मुसुबी एण्ड को० सि० २, कासेज स्वामर कसकता १२ । १३६० बंगाल । | बाणी मन्दिर, धामरा । |
| १०० | राय भा रूप (प्रथम भाग) | स्वामी प्रहलानन्द | श्री रामकृष्ण बेदान्त प्राथम बाजसिम । १९२७ ई० । | बाणी मन्दिर धामरा । |
| १०१ | रामनिधि गुप्त | ईश्वरचन्द्र गुप्त | श्री भक्तोपदत्त १९२८ ई० । | सम्पादक की निजी पुस्तक । |
| १०२ | रामरसायण | श्री रघुनन्दनदास गोस्वामी | भाहिरी टोला कामारपाड़ा स्ट्रीट १०-बिहारल बन्द कसकता । | नेशनल साइबरी कसकता । |
| १०३ | रामायण | कृतिदास घोष | डा० हीनेशचन्द्र सेन बंभीय-साहित्य परिषद्, कसकता । परिषद्, कसकता । | बंभीय साहित्य परिषद्, कसकता । |
| १०४ | विपिन-साहित्य (प्रथम खण्ड) | डा० सुकुमार सेन | श्री अम्बिकापद बिरबास ११५ सीताराम घोष स्ट्रीट कसकता-१ । | बाणी मन्दिर, धामरा । |
| १०५ | विद्यापति पदावली खगेन्द्रनाथ मिश्र एवं विमानबिहारी मजुमदार | | श्री सुधीरकुमारदास गुप्त कमला प्रिंटिंग वर्कस ३ नं० काशीमित्र घाट स्ट्रीट बागबाजार कसकता नूतन संस्करण १९२६ ई० । | नेशनल साइबरी, कसकता । |
| १०६ | विद्यापति अष्टावक्र | बादरचन्द्र बघो पाध्याय | मुक्षोपचन्द्र मजुमदार देव साहित्य बुटीर २२।५ अग्रामानुजुर सेन, कसकता । | बाणी मन्दिर, धामरा । |

| क्रमशः | पुस्तक | प्रकाशक | प्रथम एवं समय | पुस्तकालय |
|--------|---|----------------------------|--|-------------------------------------|
| १०७ | विद्यापति ठाकुरे पदावली | मधुसूदननाथ बसु | बसुमठि साहित्य मन्दिर | बंगीय साहित्य परिषद्, कलकत्ता । |
| १०८ | विद्यासागर संयावली | ईश्वरचन्द्र विद्या सागर | श्री सुनीतिचन्द्र चटोपाध्याय, रजत पब्लिशिंग हाउस २५।२ मोहन बागान रो, कलकत्ता १३६४ बं० । | बाणी मन्दिर, घाघरा । |
| १०९ | पोकस घटकेर बंगला साहित्य | श्री निपुराचन्द्र सैक | एच० बकनर्ती प्रपुस्तकमुद्रक साइ बेरी ५ नं० श्यामा बेरु से स्ट्रीट कलकत्ता १२ । १३६१ बं० । | बाणी मन्दिर, घाघरा । |
| ११० | संवीत परिक्रमा | नारायण शौचरी | इंडियन प्रारो नाइजिय पब्लिशिंग को० लि० ६३ हरिसन रोड कलकत्ता १३६२ बंगाल्य । | बाणी मन्दिर, घाघरा । |
| १११ | संवीत मंजरी | रामप्रसन्न बंधो पाष्याय | ४८ बहू बाजार स्ट्रीट, १३६३ बं० | दिल्ली विश्व- विद्यालय पुस्तकालय |
| ११२ | संवीत श्री संस्कृति (प्रथम तथा द्वितीय भाग) | स्वामी प्रज्ञानानंद | श्री रामकृष्ण बैदान्त मठ, कलकत्ता । १९२३ ई० । | बाणी मन्दिर, घाघरा । |
| ११३ | साहित्य प्रकाशिका | श्री प्रबोधचन्द्र बागधी | कानिबास चटोपा ध्याय विद्याभवन विश्वभारती, शांति निकेतन । | नैशनल साइबेरी कलकत्ता । |
| ११४ | साहित्य साधक चरितमासा (चारों खण्ड) | | बंगीय साहित्य परिषद्, कलकत्ता । | बंगीय साहित्य परिषद्, कलकत्ता । |

| क्रमदा | ग्रन्थ | ग्रन्थकार | प्रस्त एव समय | पुस्तकालय |
|--------|-----------|----------------|---|------------------------|
| ११५. | सांघीतिकी | दिशीपकुमार राय | कलकत्ता विश्व विद्यालय, कलकत्ता १९३८ ई० | बाणी मन्दिर, भारत । |

हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची—

- १ अरण्यसेर बोहा अरण्यसेर बंधीय-साहित्य-परिषद् पुषियासा, कलकत्ता ।
- २ अहीर गीत रामानन्द यति एशियाटिक सोसाइटी भाष्य बंधास कलकत्ता ।
पुषिसंख्या ८० क्रमांक ए २० समय, १७७६ एकाग्र ।
- ३ तुमसीदास कबीरदास रूपसनातन, मीराबाहर बोहा : प्राचीन बैपसा-मुषिर
विबरण द्वितीय भाग (पुषि-परिषय प्रथम एवं द्वितीय खण्ड) श्री पंचानन
मण्डल पुषियासा विश्वभारती छातिनिकेतन १९५८ ई० ।
- ४ मीराबाई कलकत्ता विश्वविद्यालय बैपसा विभाग पुषियासा कलकत्ता ।
- ५ पद्मावती (मासाप्रीत) कलकत्ता विश्वविद्यालय बैपसा विभाग पुषियासा
कलकत्ता ।
- ६ पद्मेद प्रथम पुषियासा विश्वभारती छातिनिकेतन ।
पत्र-पत्रिकाएँ—

- | | |
|--|-----------------------|
| १ उद्बोधन | ५. विश्वभारती पत्रिका |
| २ प्रवासी | ६ मुमान्तर |
| ३ बंधीय-साहित्य परिषद् पत्रिका (१९००—१९६५ ब०) | ७ मुषर्षन |
| ४ बसुमति (मासिक) | ८ घनिबारेर बिठि |

सहायक ग्रन्थों की सूची

हिन्दी

| क्रमांक | ग्रंथ | रचयिता | प्रेस एवं समय | पुस्तकालय |
|---------|----------------------------------|------------------------|---|--|
| १ | अपभ्रंश साहित्य | डॉ० हरबंश कोकण | भारती साहित्य संघ, पुष्पारा विस्ती । संवत् २०१३ वि० । | नेशनल लाइब्रेरी, कलकत्ता । |
| २ | अवधी-कोष | रामाज्ञा त्रिवेदी समीर | हिन्दुस्तानी एकेडेमी उत्तर प्रदेश इलाहाबाद १९३२ ई० । | सुरजमल बाबान समृति मदन पुस्तकालय, कलकत्ता । |
| ३ | अष्टछाप और अस्तम सप्तशय (दो भाग) | डॉ० बीनदयान मुष्ट । | हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग । सं० २००४ वि० | श्री नागरी प्रकाशिका, प्रयाग । |
| ४ | प्रायुक्तिक हिन्दी साहित्य | डॉ० लक्ष्मीसागर शर्मा | हिन्दी परिषद् इलाहाबाद मुनिब सिटी (१९२४ ई०) | हिन्दी विद्यापीठ प्रायरा विश्वविद्यालय, प्रयाग । |
| ५ | उन्नीस हिन्दी अक्षरकोष | केदारनाथ शर्मा | उमनाथपणमान इलाहाबाद १९२३ ई० । | " |
| ६ | उत्तरी भारत की उच्च परम्परा | श्री परमराम शत्रुघ्नी | भारती मंडार, सीडर प्रेस वि० इलाहाबाद । (सं० २००८ वि० । | नेशनल लाइब्रेरी, कलकत्ता । |

| क्रम | प्रयोग | प्रयोगकार | प्रेस एवं समय | पुस्तकालय |
|------|------------------------------|----------------------------------|--|---|
| ७ | कबीर | भाचार्य हजारी प्रसाद त्रिवेदी | हिन्दी प्रगल्भ कर, कार्यालय बम्बई। | नेशनल साइबेरी कसकत्ता। |
| ८ | कबीर प्रयागसी | कबीरदास | श्यामसुन्दरदास, काशी नागरी | श्री नागरी प्रचारिणी समा, प्रचारिणी समा। धारवा। |
| ९ | कबीर का रहस्यवाद | डॉ० रामकुमार बर्मा | साहित्य भवन सि० इलाहाबाद। १९४८ ई०। | नेशनल साइबेरी कसकत्ता। |
| १० | कीर्तिमठा (कीर्तिपत्रिका) | विद्यापति ठाकुर | | |
| ११ | मोरचवाणी (ओमेगुरीवाणी) | डा० पीताम्बरदास बड़मवास | हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग। | नेशनल साइबेरी कसकत्ता। |
| १२ | बायसी प्रयागसी | बायसी | रामचन्द्र गुप्त काशी नागरी प्रचारिणी समा | श्री नागरी प्रचारिणी समा धारवा। |
| १३ | तुमसी प्रयागसी (बो लण्ड) | तुमसीदास | काशी नागरी प्रभा रिणी समा। सं० | नेशनल साइबेरी कसकत्ता। |
| १४ | तुमसी प्रयाग सागर | हरमोहिन्द विहारी | हिन्दुस्तानी एके- डेमी प्रयाग। १९३४ ई०। | श्री मूरजमल आमान स्मृति भवन कसकत्ता। |
| १५ | बाबूबाणी | छठ बाबूनाम | | |
| १६ | दोहाकोष | महापंडित राहुल साहूरायन | राष्ट्रभाषा परि षद् पटना। १९३७ ई० | नेशनल साइबेरी कसकत्ता। |
| १७ | नंददास प्रयागसी | ब्रजलदास | काशी नागरी प्रभा- रिणी समा सं० | हिन्दी विद्यापीठ धारवा विश्वविद्या लय धारवा। |

| क्रमसं | ग्रंथ | प्रणयक | प्रेष एवं समय | पुस्तकालय |
|--------|----------------------------------|----------------------------|---|--|
| १८ | पद्मनाभ | भायसी | डा० बासुदेवचरण प्रभास, साहित्य सदन बिरसाब झोंसी। प्रथम- कृति (सं० २०१२ वि०)। | नेशनल लाइब्रेरी, कसकता। |
| १९ | पुरातत्व निबंधावली | राहुम सांहरमायन | इंग्लिश प्रेस लि०, प्रथम। १९३७ ई०। | हिन्दी विद्यापीठ घाण्ट बिस्वविद्या- लय, घाण्ट। |
| २० | पुरानी हिन्दी | बन्धु बर बर्मा गुलरी | काठी नागरी प्रभा रिखी घमा प्रथम कृति। सं० २००९ वि०। | " |
| २१ | फोटे बिभियम कालेज | डा० लक्ष्मीसापर बाप्लेय | इलाहाबाद युनिव र्सिटी १९४७ ई० इलाहाबाद। | नेशनल लाइब्रेरी कसकता। |
| २२ | ब्रजभाषा मुर कोश (बीच संघ) | डा० बीमदयाल पुण्ड | सखनऊ बिस्व विद्यालय सखनऊ। | दूरबपस जालान स्मृति भवन लाई० कसकता। |
| २३ | ब्रजभाषा | डा० धीरेन्द्र बर्मा | हिन्दुस्तानी एके- डेमी, प्रयाग। १९३४ ई०। | हिन्दी विद्यापीठ घाण्ट बिस्वविद्या लय, घाण्ट। |
| २४ | ईमसा साहित्य की कथा | डा० सुकुमार सेन | हिन्दी साहित्य, सर्वेक्षण प्रयाग, सं० २००९ वि०। | नेशनल लाइब्रेरी कसकता। |
| २५ | बृहत् पर्यायवाची कोश | भोसाणाब तिबारी | किताब महल इलाहाबाद १९३४ ई०। | हिन्दी विद्यापीठ घाण्ट बिस्व विद्यालय, घाण्ट। |
| २६ | बृहत् हिन्दीकोश | कालिकाप्रसाद | ज्ञान मण्डल बना रत। सं० २०१३ वि०। | , |

| क्रमसं | प्रय | प्रणयकार | प्रेस एवं समय | पुस्तकालय |
|--------|------------------------------------|-----------------------------------|--|--|
| २७. | बिहारी भाषाओं की उत्पत्ति और विकास | नसिनी मोहन सान्यास | रामनारायणप्रधान, इलाहाबाद । | नेशनल साइन्स, कलकत्ता । |
| २८ | भक्तमाल | नाभादास प्रिया दास की टीका सहित । | मन्नकिणोर प्रेस मन्नतळ । पंचम बार सन् १९४० ई० । | श्री मामरी प्रभा रिखी समा, भागलपुर । |
| २९. | भक्तकवि व्यासजी | बाबुदेव गोस्वामी | प्रभुदयाल मीठल, धधवास प्रेस, मथुरा, २००९ वि० । | " |
| ३० | भारत का भाषा सर्वेक्षण | जार्ज प्रियंसन उदयनारायण तिवारी | प्रकाशन शाखा सूचना विभाग प्रथम संस्करण १९३९ ई० । | हिन्दी विद्यापीठ भागलपुर विश्व विद्यालय भागलपुर । |
| ३१ | भारतीय धर्म भाषा और हिन्दी | डा० मुनीठिङ्गमार चटर्जी | राजकमल प्रकाशन दिल्ली, १९३४ ई० । | नेशनल साइन्स कलकत्ता । |
| ३२ | भारतीय संघों का इतिहास | समेश जोशी | — | हिन्दी विद्यापीठ भागलपुर विश्व विद्यालय, भागलपुर । |
| ३३ | भारतीय प्रेम काल की परम्परा | परशुराम चतुर्वेदी | राजकमल प्रकाशन, दिल्ली १९३६ ई० । | सूरजमल ज्ञानान स्मृति भवन, कलकत्ता । |
| ३४ | मध्यकालीन धर्म स्थापना | डा० इब्राहीमसाद द्विवेदी | साहित्य भवन, इलाहाबाद सं० २०११ । | नेशनल साइन्स, कलकत्ता । |
| ३५. | मध्यकालीन धर्म स्थापना | परशुराम चतुर्वेदी | धात्माराम एन्ड सन दिल्ली (१९३२ ई०) | " |

| क्रमशः | ग्रंथ | प्रकाशक | प्रेस एवं समय | पुस्तकालय |
|--------|-------------------------------|-------------------------------|---|--|
| १६ | मानस-धर्म सागर | बहीदास प्रप्रबाम । | काशीप्रसाद बिजय कुमार प्रप्रबाम । १९३३ ई० । ८३ बीकन स्ट्रीट, कलकत्ता । | सूर्यमस आशाल स्मृति भवन कलकत्ता । |
| १७ | मिथबंसु विनोद (कार कम्प) | मिथबंसु | ग० पु० भा० मकनठ | श्री नागरी प्रका रिणी सभा, घागरा । |
| १८ | हिन्दी मुहावरे धीर कहावतें | बालमुकुन्द 'धर्म' | विद्या प्रकाशन दिल्ली (१९३७ ई०) | हिन्दी विद्यापीठ घागरा विश्व विद्यालय घागरा । |
| १९ | मुल बीजक | कबीरदास | सेमरान श्रीकृष्ण दास सं०, २००८ दि० । | श्री नागरी प्रका- रिणी सभा घागरा । |
| ४० | मैनासत | साधन | श्री धनरत्न नाहुटा ग्रंथ बीधिका हिन्दी विद्यापीठ घागरा विश्वविद्या लय घागरा । | हिन्दी विद्यापीठ घागरा विश्व विद्यालय घागरा । |
| ४१ | मैनासत | श्री हरिहरनिवास द्विवेदी | श्री उच्च द्विवेदी विद्या मंदिर प्रकाशन, स्वातियर प्रथम संस्करण (१९३९) | डा० सत्येन्द्रजी श्री निधी पुस्तक । |
| ४२ | रबीन्द्र कविता कानन | सूर्यकान्त विपाठी 'निराला' | राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली । (१९३३ई०) | सेकन्ड श्री निधी पुस्तक । |
| ४३ | राजस्थानी कहावतें | डा० कन्हूमानास सहान | भाष्टीय साहित्य मंदिर, दिल्ली । (१९३५) | हिन्दी विद्यापीठ, घागरा विश्वविद्या- लय, घागरा । |

| क्रमांक | ग्रंथ | प्रणयकार | प्रस एवं समय | पुस्तकालय |
|---------|-------------------------------|-----------------------------|---|--|
| ४४ | राजस्थानी-कहावतें (बो माय) | नरोत्तमदास स्वामी | राजस्थानी साहित्य परिषद् कसकता । (१९१७ ई०) | हिन्दी विद्यापीठ भागल विश्वविद्या लय धारवा । |
| ४५ | राजा का विकास | डा० सखी भूपसुदास मुप्त | | |
| ४६ | रामकृपा उत्पत्ति घोर विकास | रैबरेंड फादर कामिल मुसके | हिन्दी परिषद प्रयाग । विश्व विद्यालय, प्रयाग । (१९५० ई०) | मैदानस साइबेरो कसकता । |
| ४७ | रामचरितमानस | डा० माताप्रसाद गुप्त | हिन्दुस्तानी एकेडेमी उत्तर प्रदेश इलाहाबाद । | |
| ४८ | राम पंचाशयायी | नम्बदास | बजरलदास नामरी प्रचारिणी समा काठी । | थी नागरी प्रचारिणी समा, धारवा । |
| ४९ | विनय पत्रिका | योस्वामी तुलसी दास | वियोगी हटि, साहित्य सेवा सदन, काठी (२००६ वि०) | मूरजमल जासान, स्मृति भवन, कसकता । |
| ५० | विद्यापति की पदावली | विद्यापति ठाकुर | बसन्तकुमार मापुर, भापटी भापा भवन दिस्ती । (२००८ वि०) | मैदानस साइबेरी कसकता । |
| ५१ | विद्यापति ठाकुर की पदावली | नगेन्द्रनाथ मुप्त | इंडियन प्रेस एक विपि बिस्तार परिषद् कसकता (१९१० ई०) | मेसज की निजी पुस्तक । |
| ५२ | विद्यापति ठाकुर | जयेशचन्द्र मिश्र | हिन्दुस्तानी एकेडेमी इलाहाबाद । (१९४९ ई०) | मूरजमल जासान स्मृति भवन, कसकता । |

| क्रमांक | ग्रन्थ | प्रकाशक | प्रकाशक का समय | पुस्तकालय |
|---------|--|--------------------------|--|---|
| २१ | विद्यापति (कीर्तिसत्ता) | विद्यापति ठाकुर | बाबू राम चक्रवर्ती, नागरी प्रचारिणी सभा काशी (सं० २०१० वि०) | मैसूरु माइलेरी कलकत्ता। |
| २४ | संगीत शास्त्र | डॉ० बासुदेव सास्त्री | प्रकाशन शाखा सूचना विभाग उत्तर प्रदेश (प्र० सं० १९२५ ई०) | हिन्दी विद्यापीठ, आगरा विश्वविद्यालय आगरा। |
| २५ | संस्कृत साहित्य का इतिहास (दो भाग) | कन्हैयालाल जोशी | नागरी प्रचारिणी सभा काशी। द्वितीय संस्करण (२०११ वि०) | " |
| २६ | संगीत राग- कल्पद्रुम | श्री कृष्णानन्द शर्मा | मोहनराव गुप्त, बंगाली साहित्य परिषद् कलकत्ता (१९२१ ई०) | " |
| २७ | संत सुभा शार | विद्योती हरि | संस्कृत साहित्य मण्डल प्रकाशन दिल्ली (१९२३ ई०) | सुरजमल आशान स्मृति भवन, कलकत्ता। |
| २८ | सिद्ध साहित्य | डॉ० धर्मवीर शर्मा | किताब महल प्रकाशन इलाहाबाद। प्रथम संस्करण (१९२२ ई०) | मैसूरु माइलेरी कलकत्ता। |
| २९ | सुन्दर ग्रंथावली | सुन्दरदास | नागरी प्रचारिणी सभा काशी। | श्री नागरी प्रचारिणी सभा आगरा। |
| ३० | मूर की भाषा | डॉ० प्रेमनाथरायण टंडन | हिन्दी साहित्य संघ, जयप्रसाद रोड लखनऊ (१९२७ ई०) | हिन्दी विद्यापीठ, आगरा विश्व विद्यालय आगरा। |
| ३१ | मूर जनभाषा परिचय (२ भाग) | डॉ० दीनदयाल गुप्त | लखनऊ विश्वविद्यालय संस्कृत विभाग। | सुरजमल आशान स्मृति भवन कलकत्ता। |

| क्रमांक | प्रश्न | प्रश्नकार | प्रश्न एवं समय | पुस्तकालय |
|---------|--|-------------------------------|---|--|
| ६२ | सुरसायन (२ भाग) | डा० लक्ष्मणुलारे बाबुरेयी | नायरी प्रचारिणी समा कापी (प्र० सं० २००७ दि०) | नेशनल साइन्स कमिटी । |
| ६३ | सोमहर्षी शर्मा के हिन्दी और बंगाली बैंगल कवि | डा० रत्नकुमारी | भारती साहित्य मंदिर दिल्ली (१९५७ ई०) | " |
| ६४ | हिन्दी काव्य में निगुण सम्प्रदाय | डा० पीताम्बरदत्त बड़म्वाल | | सुरजमल ज्ञानान स्मृति भवन कमिटी । |
| ६५ | हस्तलिखित हिन्दी ग्रंथों का जयोदय बैंगलिक विवरण (सन् १९२९-२०६०) | डा० श्रीरामदास | नायरी प्रचारिणी समा, कापी । (सं० २०१० दि०) | हिन्दी विद्यापीठ आयतन विश्वविद्या लय, आगरा । |
| ६६ | हिन्दी के विकास में अणु अ का योग | नामचरणसिंह | साहित्य भवन सिमिटेड इलाहा बाद (१९५४ ई०) | नेशनल साइन्स कमिटी । |
| ६७ | हिन्दी और प्रा ऐतिक भाषाओं का वैज्ञानिक इतिहास | अमरचरणसिंह लक्ष्मी | राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली । (१९५७ ई०) | हिन्दी विद्यापीठ आयतन विश्वविद्या लय आगरा । |
| ६८ | हिन्दी उर्दू और हिन्दुस्तानी | | हिन्दुस्तानी एके- डेमी इलाहाबाद (१९५२ ई०) | डी० ए० वी० कातेज बालम्बर । |
| ६९ | हिन्दी काव्यशास्त्र | राहुल शंकरदास | क्रियाक महस प्रकाशन इलाहा बाद (१९५५ ई०) | नेशनल साइन्स कमिटी । |
| ७० | हिन्दी भाषा व्यकरण | पी मोरानचन्द्र बैराव दासजी | बंगाल भाषा एंड केंद्र सोसाइटी कार्नेगिअन स्टूड याम बाजार, कमिटी ४ । | हिन्दी विद्यापीठ आयतन विश्वविद्या लय आगरा । |

| क्रमांक | ग्रन्थ | प्रणेतृकार | प्रेषण का समय | पुस्तकालय |
|---------|---|------------------------------|---|---|
| ७१ | हिन्दी काव्यास कार सुत | शाश्वत राम | डा० गणेश प्रसाधन एंड संस हिन्दी । (१९३३ ई०) | हिन्दी विद्यापीठ, आगरा विश्वविद्या लय, आगरा । |
| ७२ | हिन्दी प्रेमकाव्य काव्य | डा० कमल कुस श्रेष्ठ | मथुरा प्रसाद शिब हरे, अजमेर (१९३३ ई०) प्र० संस्करण । | " |
| ७३ | हिन्दी व्याकरण | कान्ताप्रसाद गुप्त | नागरी प्रचारिणी सभा काशी । | " |
| ७४ | हिन्दी भाषा का इतिहास | डा० भीरेश्वर वर्मा | हिन्दुस्तानी एकेडेमी उत्तर प्रदेश प्रयाग (१९३३ ई०) | " |
| ७५ | हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास | उदयनारायण विश्वकर्मा | साहित्य भवन इला हाबाद (१९३७ ई०) | " |
| ७६ | हिन्दी मुहावरों कोश | श्रीमानाथ विश्वकर्मा | किताब मदन इला हाबाद । (१९३४ ई०) | " |
| ७७ | हिन्दी पर फारसी का प्रभाव | पं० धर्मिकाप्रसाद बाजपेयी | हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग (हि० संस्करण सं० २००२ वि०) | " |
| ७८ | हिन्दी विद्वत्कोश | श्री नरेन्द्रनाथ बसु | ए-विश्वकोष सेम बाय बाजार कल कता (१९२४ ई०) | " |
| ७९ | हिन्दी साहित्य का मासोपनिवेश इतिहास | डा० रामकुमार वर्मा | रामनारायणलाल इलाहाबाद । ब० संस्करण (१९३५ ई०) | " |
| ८० | हिन्दी साहित्य का इतिहास | शाश्वत राम गुप्त | नागरी प्रचारिणी सभा काशी (छठा संस्करण २००७ वि०) | " |

| क्रमांक | ग्रंथ | ग्रंथकार | प्रेस एवं समय | पुस्तकालय |
|---------|---|---------------------|---|--|
| ८१ | हिन्दी साहित्य का बा० गुणाबराय मुबोध इतिहास | | साहित्य रत्न भंडार धारवा (१९२२ ई०) | सेसक की निजी पुस्तक । |
| ८२ | हिन्दी साहित्य का भार्ये हजारी प्रसाद द्विवेदी | | भारतबन्ध कपूर एंड संस कश्मीरी गेट दिल्ली (१९२२ ई०) | हिन्दी विद्यापीठ धारवा बिदबिद्यालय धारवा । |
| ८३ | हिन्दी साहित्य का भाविकाल | | बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पटना (१९२२ ई०) | मैदान साइकरी कमकठा । |
| ८४ | हिन्दी साहित्य की भूमिका | | हिन्दी प्रवर्तनाकर, बम्बई (१९४० ई०) | " |
| ८५ | हिन्दी विद्यापीठ ग्रंथ कीमिका | | डा० बिदवनाथ प्रसाद हिन्दी विद्यापीठ धारवा बिदबिद्यालय धारवा । | हिन्दी विद्यापीठ धारवा बिदबिद्यालय धारवा । |
| ८६ | हिन्दी शब्दसामर | बयानमुन्दर बास | नागरी प्रचारिणी सभा काशी (१९२६ ई०) | " |
| ८७ | हिन्दी साहित्य का राजबन्दी पाण्डेय बृहत् इतिहास (प्रथम भाग) | | नागरी प्रचारिणी सभा काशी (सं० २०१४ बि०) | " |
| ८८ | हिन्दी में उच्चतर साहित्य | मंगसनाथसिंह | राजबन्दी पाण्डेय नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी प्रथम बार (सं० २०१४ बि०) | " |
| ८९ | हिन्दी साहित्य कोष | डा० धीरेन्द्र वर्मा | ज्ञानमण्डल मिनिस्टेर बनारस (प्रथम संस्करण सं० २०१२) | " |

पत्र-पत्रिकायें

- १ अश्विनिका ।
- २ आसीचना ।
- ३ कल्याण (विद्येपीठ) ।
- ४ नागरी प्रचारिणी सभा पत्रिका, काशी ।
- ५ भारतीय साहित्य ।
- ६ विद्यालय भाष्य ।
- ७ सरस्वती ।
- ८ साहित्य सम्मेलन पत्रिका प्रयाग ।
- ९ साप्ताहिक हिन्दुस्तान ।
- १० साहित्य-सन्देश ।

अप्रकाशित ग्रन्थः

- १ मम्मथुपीठ मन्त्रि एवं सूफी साहित्य में वातावरण से० डॉ० सत्येन्द्र लाल १९२७ ई० । (अब प्रकाशित) ।
- २ हिन्दी में अंग्रेजी के भाषण शब्दों का भाषा तालिका प्रथम बार सेल्फ डॉ० कैलाचन्द्र भाटिया अर्धत १९३५ ।

अपभ्रंश

- १ पञ्चमखरिड शिखर—स्वयंभू, डॉ० साधर्म विनिविद्यय मुनि, डॉ० हरिचन्द्रय बुलीमाल भाबाली सिन्धी-बैत-शास्त्री-सिन्धी-सिन्धी—भारतीय विद्या प्रबन्ध, बम्बई । प्रथम भाग वि० सं० २००२ ।
- २ ब्राह्मण-वैदिकय ब्रह्ममोहन शिव ऐतिहासिक शोधार्थी शोध वैधान । १९४० ई० ।

संस्कृत

- १ अष्टाध्यायी
- २ शीघ्रभाष्य
- ३ नारद मन्त्रि सूत्र (पीठाग्रेष गोरखपुर)
- ४ वाक्य परीक्षम्
- ५ महापुरुष
- ६ कर्म्याहंकार
- ७ उद्भवत नीलमणि

सहायक ग्रन्थों की अतिरिक्त सामूहिक सूची

- १ अकबरी दरबार के हिन्दी कवि—डॉ० सरसुप्रसाद ।
- २ काव्य परिक्रमा—श्री अजितकुमार अकबरती विरबभारती अयालय १३६२ ई० ।
- ३ अजयस अताशरीर अरुमारुष श्री अगसा साहित्य - श्री अजयकुमार अंशोपाध्याय श्री अजयप्रसाद गुप्त ।
- ४ कवि अशुभनी—ईदवरअद्र मुक्त अचित, श्री अशुभनी अत अरुमारती १३२८ ई० ।
- ५ अजय का अकसर—डॉ० अशुभनी अरुमारती—श्रीअशुभा अरुमारती अरुमारती १३२८ ।
- ६ अशुभनी अंगीतर अरुमारती—अरुमारती अंशोपाध्याय अरुमारती श्री० अरुमारती ।
- ७ अशुभनी काव्याशुभनी—अरुमारती अरुमारती ।
- ८ अरुमारती अरुमारती—श्री अरुमारती अरुमारती अरुमारती अरुमारती । १३६२ ई० ।
- ९ अरुमारती अरुमारती—अरुमारती अरुमारती अरुमारती १३२८ ई० ।
- १० अरुमारती अरुमारती—श्री अरुमारती अरुमारती अरुमारती ।
- ११ अरुमारती काव्य अरुमारती अरुमारती—डॉ० अरुमारती अरुमारती ।



पत्र-पत्रिकाएँ

- १ प्रवृत्तिका ।
- २ धानोचना ।
- ३ कस्मात् (विशेषांक) ।
- ४ नागरी प्रचारिणी सभा पत्रिका, काशी ।
- ५ भारतीय साहित्य ।
- ६ विद्यालय भारत ।
- ७ सरस्वती ।
- ८ साहित्य सम्मेलन पत्रिका प्रयाग ।
- ९ साप्ताहिक हिन्दुस्तान ।
- १० साहित्य-सन्देश ।

अप्रकाशित प्रबन्ध

- १ मध्ययुगीन भक्ति एवं सूफी साहित्य में भारतवर्ष में डॉ० सत्येन्द्र सन् १९३७ ई० । (अप्रकाशित) ।
- २ हिन्दी में संस्कृति के प्रागुक्त शब्दों का भाषा-शास्त्रिक अध्ययन लेखक डॉ० कैलाशचन्द्र माटिया अर्पित १९३८ ।

अप्रकाशित

- १ पञ्चमहाविद्यालय लेखक—स्वर्णमु, सं० प्राचार्य विभिविजय मुनि डॉ० हरिवरदास बुन्नीसाल भावाली, सिन्धी-वीन-शास्त्री-विद्यापीठ—भारतीय विद्या भवन बम्बई । प्रथम भाग वि० सं० २००६ ।
- २ प्राकृत-वैयस्य चन्द्रमोहन शीव ऐशियाटिक सोसाइटी काँबेज बँकास । १९४० ई० ।

संस्कृत

- १ ऋषभेय
- २ श्रीमद्भागवत
- ३ भारत भक्ति सूत्र (मीताप्रेष मोरङ्गपुर)
- ४ भाष्य परीयम्
- ५ महापुराण
- ६ काम्यालकार
- ७ उद्भवत नीतमणि

सहायक ग्रन्थों की अतिरिक्त सामूहिक सूची

- १ अकबरी दरवार के हिन्दी कवि—डॉ० सरयूप्रसाद ।
- २ काव्य परिक्रमा—श्री भजितकुमार अकबरी, विद्वान्भारती प्रकाशय १९६२ ई० ।
- ३ जनविद्ययाश्रीर प्रबुधार्थ श्री बागसा साहित्य - श्री अशितकुमार बंधोपाध्याय श्री अशितकुमार मुष्ट ।
- ४ कवि श्रीवली—ईश्वरधर मुष्ट अशित श्री भवतोय दत्त सम्पादित १९३८ ई० ।
- ५ भक्ति का विकास—डॉ० सुधीराम शर्मा—श्रीवन्धा विद्यालय, बाराणसी १९३८ ।
- ६ रबीन्द्र सतीतेर भूमिका—कणिका बंधोपाध्याय, एम० सी० सरकार ।
- ७ रबीन्द्र काव्यालोक—अमिता मित्र ।
- ८ रवि प्रवर्धन—श्री मोहितनाथ अनुमदार, नैपभारती प्रकाशय । १९६२ ई० ।
- ९ रबीन्द्रनाथ—भजितकुमार अकबरी विद्वान्भारती १९३८ ई० ।
- १० रवि दीपिका—श्री सुरेन्द्रनाथदास मुष्ट ।
- ११ रबीन्द्र काव्य कालिदासेर प्रभाव—डॉ० विमलकांति समदार ।

